"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৬ ষ্ঠ ভাগ। শকাব্দা ১৮০৫।
৩য় সংখ্যা। আষাঢ়— পূর্ণিমা

ধর্ম্ম।

(মহাভারত হইতে)

বিদ্যাবিত্তং বপুঃশৌর্য্যং কুলে জন্ম বিরাগিতা।
সংসারস্থিতি হেতুশ্চ ধর্ম্মাদেব প্রবর্ত্ততে ॥

বিদ্যা, ধন, শৌর্য্য, কৌলিন্য, আরোগ্য এবং সংসার নিবৃত্তির উপায় তত্ত্বজ্ঞান এতাবৎ সমস্তই ধর্ম্মানুষ্ঠান দ্বারালাভ হইয়া থাকে।

অর্থ সিদ্ধি পরামিচ্ছন্ ধর্ম্মমেব সমাচরেৎ।
ন হি ধর্ম্মাদপৈত্যর্থঃ স্বর্গলোকাদিবামৃতম্ ॥

পরমার্থ সাধনের ইচ্ছা করিয়া ধর্ম্মের অনুষ্ঠান করিতে হইবে, অনুষ্ঠান ভিন্ন স্বর্গলোক হইতে অমৃত পাতের ন্যায় ধর্ম্মের কথা বার্ত্তা কহিলেই কেবল ধর্ম্ম হইতে অর্থ স্বতঃএব অপগত হইবেনা।

যে হ্যর্থা ধর্ম্মেণ তে সত্যা যেঽধর্ম্মেণ ধিগস্তুতান্।
ধর্ম্মং বৈ শাশ্বতং লোকে ন জহ্যাদ্ধনকাঙ্ক্ষয়া॥

ধর্ম্মদ্বারা যে অর্থ (পরমার্থ) সঞ্চিত হয় তাহাই

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातियः ।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

६ष्ट भाग। शकाब्दा १८०५।
३य संख्या। आषाढ़--- पूर्णिमा।

धर्म्म।

(महाभारत से)

विद्या वित्तं वपुः शौर्य्यं कुले जन्म विरागिता ।
संसार स्थितिहेतुश्च धर्म्मादेव प्रवर्त्तते ॥

विद्या, धन, शौर्य्य, कुलमर्य्यादा, अरोगिता वो तत्वज्ञान, जो कि संसार निवृत्ति का उपाय है, समस्तही धर्म्मानुष्ठान के द्वारा मिलते हैं।

अर्थ सिद्धि परामिच्छन् धर्म्ममेव समाचरेत्।
नहि धर्म्मादपैत्यर्थः स्वर्गलोकादिवामृतम् ॥

परमार्थ की इच्छा करके धर्म्मानुष्ठान करना चाहिये, केवल धर्म्म की बचनों से कुछ बनेगा नहीं। स्वर्ग से अमृत गिरने के समान धर्म्म से अर्थ स्वयमेव हात न आवेगा।

येऽर्था धर्म्मेण ते सत्या येऽधर्म्मेण धिगंतु तान्।
धर्म्मं वै शाश्वतंलोके न जह्याद्धनकांक्षया ॥

धर्म्म से जो अर्थ (परमार्थ) मिलता है वही

সত্য প্রশংসনীয় আর অধর্ম্ম দ্বারা যে অর্থ উপার্জ্জিত হয় তাহা বৃথা বা নিন্দিত। এই জন্য বৃথা ধনের লোভে শাশ্বতিক ধর্ম্ম পরিত্যাগ করিবেনা।

ধর্ম্মং চিন্তয়মানোঽপি যদি প্রাণৈর্বিযুজ্যতে।
ততঃস্বর্গমবাপ্নোতি ধর্ম্মস্যৈ তৎ ফলং বিদুঃ॥

ধর্ম্ম চিন্তা বা সাধন করিতে২ অর্থাৎ অসম্পূর্ণাবস্থায় যদি কোন ব্যক্তির মৃত্যু হয়, তথাপি সেই সাধু চিন্তা ফলে তাঁহার স্বর্গ লাভ হইবে। ইহা ধর্ম্মের মাহাত্ম্য। উৎসবাদুৎসবং যান্তি স্বর্গাৎ স্বর্গং সুখাৎ সুখং। শ্রদ্ধধানাশ্চ শান্তাশ্চ ধনাঢ্য কর্ম্ম কারিণঃ॥

যিনি ধর্ম্মানুষ্ঠান করেন তিনি উৎসব হইতে মহোৎসব, স্বর্গ হইতে উচ্চতর স্বর্গ ও সুখ হইতে পরম সুখ প্রাপ্ত হয়েন এবং শ্রদ্ধাবান, শান্ত ও ধনাঢ্য হইয়া থাকেন।

ধর্ম্মঃপ্রজ্ঞাং বর্দ্ধয়তি ক্রিয়মাণঃ পুনঃ পুনঃ।
বৃদ্ধ প্রজ্ঞস্ততো নিত্যং পুণ্যমারভতে পরম্॥

ধর্ম্মের দ্বারা প্রজ্ঞা পরিবর্দ্ধিত হয়, প্রজ্ঞা বৃদ্ধি হইলে পরম পুণ্য পথ মুক্তি পদ প্রাপ্ত হয়।

একটী সার কথা

কোন পণ্ডিত নৌকারোহণে গমন করিতেছিলেন। তিনি নভোমার্গে নেত্র পাত করিয়া নাবিক কে জিজ্ঞাসা করিলেন, নাবিক, তুমি জ্যোতির্ব্বিদ্যা বিদিত আছ? নাবিক বলিল, মহাশয় আমি উহার নামও জানিনা। এতচ্ছ্রবণে পণ্ডিত বলিলেন তবে তোমার জীবনের এক চতুর্থাংশ বৃথা ব্যয়িত হইয়াছে। নদীর উভয় তীরে হরিদ্বর্ণ শস্য ক্ষেত্রের বিচিত্র শোভা সন্দর্শন করিয়া পণ্ডিত পুনঃপ্রফুল্ল মনে জিজ্ঞাসা করিলেন, নাবিক! তুমি উদ্ভিদ্ বিদ্যা জান? নাবিক উত্তর করিল, না মহাশয়। তাহাতে পণ্ডিত বলিলেন, তবে তোমার জীবনের আর এক চতুর্থাংশ বৃথা বিনষ্ট হইয়াছে। ক্ষণ বিলম্বে নদীর প্রবল বেগবতীগতি দর্শনে পণ্ডিত জিজ্ঞাসা করিলেন, নাবিক তুমি গণিত জান? নাবিক বলিল, আমি কোন শাস্ত্রই জানি না। ইহা শুনিয়া পণ্ডিত বলিলেন, তবে তোমার জীবনের চারি ভাগের তিন ভাগ অনর্থক ক্ষয় হইয়াছে। এই রূপ কথাবার্তা হইতেছে, এমন

सत्य-प्रशंसा योग्य है और अधर्म्म से जो अर्थ हाथ लगता वह वृथा वा निन्दित है। एतदर्थ वृथा धन के लालच से परम शाश्वत धर्म्म को न छोड़ना।

धर्म्मं चिन्तयमानोऽपि यदि प्राणैर्वियुज्यते।
ततः स्वर्गमवाप्नोति धर्म्मस्यै तत्फलं विदुः॥

धर्म्म की चिन्ता वा साधन करते २ अर्थात असम्पूर्णावस्था में यदि किसी ने परलोक को सिधारे, तथापि उस साधु चिन्ता के फल से उन को स्वर्ग मिलेगा। धर्म्म की ऐसी महिमा है।

उत्सवादुत्सवं यान्ति स्वर्गात् स्वर्गं सुखात सुखं।
श्रद्धधानाश्च शान्ताश्च धनाठ्या कर्म्मकारिणः॥

जिन ने धर्म्म का अनुष्ठान करता है वे उत्सव से महोत्सव को, एक स्वर्ग से दुसरा उन्नत स्वर्ग को वो सुख से परम सुख को प्राप्त होते हैं।

धर्म्मः प्रज्ञां वर्द्धयति क्रियमाणः पुनः पुनः।
वृद्ध प्रज्ञस्ततो नित्यं पुण्यमारभते परम्॥

धर्म्म से प्रज्ञा बढ़ती है, प्रज्ञा बढ़ने पर परम पुण्य पथ मुक्ति पद मिल जाता है।

एक सार कथा।

किसी पण्डित ने नाव पर चढ़के कहीं जा रहा था। उनने आकाश मार्ग के ओर नेत्रपात करके मल्लाह से पूछा, कि तुम ज्योतिष जानते हो, मल्लाह ने बोला, नहीं महाराज, मैं तो उस का नाम तक नहीं जानता हूं। यह सुनकर पण्डितजी बोले, अरे तब तेरा जीवन का चौथाई तो वृथा व्यतीत हो गयी। नदी के दो किनारे सबजी कीभांति २ विचित्र शोभा देख २ कर पण्डित ने फिर प्रफुल्ल चित्तता से पुछा कि हे नाविक! तुम उद्भिद विद्या कुछ जानते हो? उसने उत्तर दिया कि नहीं महाराज। इस से पण्डितजी ने बोला, हा! तब तो तुम्हारे आयु की और एक चौथाई भी व्यर्थ बीत गयी। क्षण भर के अनन्तर नदी की प्रबल वेगवती गति देख के पण्डितजी ने मल्लाह से फिर पूछा कि गणित जानते हो? मल्लाहबोला मैं कोइ शास्त्र नहीं जानता हूं। इस से पण्डितजी बोले हा तुम परमायु के चार भाग के तीन भाग व्यर्थ ही विनष्ट किये हो। ऐसी बार्त्तालाप हो रही थी, कि

প্রায়, নাবিক জলে ঝাঁপ দিয়া পড়িয়া ও সাঁতার দিতে ২ পণ্ডিতকে জিজ্ঞাসা করিল, তুমি সাঁতার জান ? পণ্ডিত বলিলেন, না। নাবিক বলিল তবে তোমার সমস্ত জীবনই বৃথা বিনষ্ট হইল। তুমি শীঘ্রই ভগবানকে স্মরণ করিয়া মরিবার জন্য প্রস্তুত হও।

যে সকল বিদ্যা মনুষ্যকে মৃত্যু যন্ত্রণা হইতে রক্ষা করিতে পারে না, তাহা শিক্ষা করিয়া অভিমান ও অহংকার করা বৃথা ও মূর্খতা মাত্র। যে পরাবিদ্যা অভ্যাস পূর্ব্বক সাধু গণ সন্তরণ দ্বারা অগাধ গম্ভীর ভব নদীর প্রবল স্রোত অতিক্রম করিয়া পাপ, তাপ, শোক, রোগ, মৃত্যু আদি হইতে নিস্তার পান তাহা সকলের শিক্ষণীয়া।

আগ্নেয় গিরি ও অশ্রু জল।

সেকালের কথা ছাড়িয়া দাও, সে রাম ও নাই সে অযোধ্যাও নাই—সে পুরাতন হিন্দু সমাজও নাই এবং সে ব্রহ্মচর্য্যাদি আশ্রমও নাই। বর্ত্তমান সময়ে নবীন যুবক বিশ্ববিদ্যালয় ছাড়িয়া, ভাল হউক, মন্দ হউক, যাহা শিখিয়াছেন সেই শিক্ষার বোঝা মাথায় করিয়া কত মধুর কল্পনায় কত আশাভরা হৃদয়ে সংসারে প্রবেশ করেন। সংসার তাঁহার সুখস্বপ্ন রঞ্জিত চক্ষে যেন পবিত্র উজ্জ্বল গন্ধর্ব্বপুরী বলিয়া বোধ হয় কিন্তু সংসার প্রবেশ করিলে তাঁহার নয়নের সে ইন্দ্রজাল ভাঙ্গিয়া যায়। তখন বুঝিতে পারেন কল্পনার জগতে ও কার্য্যের জগতে কত প্রভেদ—তখন বুঝিতে পারেন কি ভয়ানক স্থানে আসিয়াছেন। এখানে রোগে ঔষধ নাই, পিপাসায় জল নাই, বিপদে সান্ত্বনানাই ; এখানে প্রণয়ে সেরূপ আত্ম বিসর্জ্জন নাই, দয়ায়, সহানুভূতিতে সেরূপ নিঃস্বার্থপরতা নাই ; এখানে আকাঙ্ক্ষা মিটেনা, সাধ পূরেনা ; এখানে বিপদের উপর বিপদ, স্বাধীন চিন্তায়, স্বাধীন গতিতে পদে পদে প্রতিবন্ধক, এখানে ভগবৎপ্রেম নাই, ঈশ্বরে আত্ম সমর্পণ নাই ; এখানে পদে পদে প্রলোভন, পদে পদে পদস্খলন; এখানে দারুণ বিষয় তৃষ্ণা ও স্বার্থপরতার চক্র অনবরত ঘূর্ণায়মান! হরি! হরি! ইহা সে স্বপ্নের, গন্ধর্ব্ব, পুরী নহে ইহা তীব্র নিরাশ কালিমা ময় পিশাচ পুরী।

সংসারের প্রবলঝটিকায় যখন বিধ্বস্ত, অভিভূত

की डूबती हुई देख कर मल्लाहने जल में कूद पड़ा और पैरते २ पण्डितजी से पूछा कि आप पैरने को जानते हैं ? पण्डितजी ने बोला, नहीं। मल्लाह तब बोल उठा कि, हे महाराज, आप का सारा जीवन व्यर्थ ही विनष्ट हुआ। आप शीघ्रही भगवत को स्मरण कर मरने के लिये प्रस्तुत होइये।

जितनी विद्या मनुष्य को मृत्यु की यातना से बचा नहीं सकती है, उन सब को सिख कर अभिमान वो अहंकार करना वृथा वा मूर्खता मात्र है। जिस परा विद्या की अभ्यास करके साधु गण पैरते हुए अथाह गंभीर भवनदी के प्रबल प्रवाह के पार उतार कर पाप, ताप, शोक, रोग, मृत्यु आदि से बचजाते हैं, वही विद्या सिखा योग्य है।

ज्वालामुखी पहाड़ वो आंसुकी धारा।

प्राचीन कालकी बात तो भला छोड़दो; क्योंकि न वे श्रीरामचन्द्रजी हैं या वह अयोध्या पुरी विद्यमानहै अब वह पुराणा हिन्दू समाज भी नहीं वह ब्रह्मचर्य्यादि आश्रम भी नहीं। आज कलके नव युवक गण विश्व विद्यालय (युनिवर्सिटि) से निकल के, वहां भले बुरे चाहे जो कुछ सिखे हो उस शिक्षा बोझ सिर पर लिए हुए कितनी मधुर कल्पना वो आशा से पूर्ण हृदय से संसारिक व्यापारों में प्रवेश किये करते हैं। संसार उन्हों को सुख स्वप्न रञ्जित आंखों के साम्हने मानो कि एक परम पवित्र उज्ज्वल गन्धर्व्व पुरी है, किन्तु सांसारिक व्यापारों में फसने ही से नेत्र की यह इन्द्रजाल मिट जाती है। तब सूझ पड़ता है कि कल्पना के क्षेत्र से कार्य्य क्षेत्र का क्या प्रभेद है। तब समझ सक्ते है कि किस भयंकर स्थान में आ पड़े हैं। यहां रोग का औषध नहीं, प्यास का जल नहीं, विपद्काल में मिठी वचन नहीं, प्रणय में आत्म विसर्ज्जन नहीं, दया में, सहानुभूति में निःस्वार्थपरता नहीं ; यहां वासना मिटती ही नहीं, अभिलाषा पूरती ही नहीं, यहां विपत पर फिर विपत आजाता, स्वाधीन चिन्ता, स्वाधीन गति में सदा ही बाधा वो विघ्न होता, यहां भगवत प्रेम नहीं, उन के चरण में आत्म निर्भर नहीं ; यहां प्रतिपद विक्षेप में प्रलोभन देख पड़ता, प्रति मूहुर्त्त में पैर फिछलजाता, यहां दारुण विषयतृष्णा वा स्वार्थ परता की चाक्री सदैव चल घुम रही है। राम, राम, कहो!! यह तो स्वप्न की वह गन्धर्व्व पुरी नहीं, यह तीव्र निराशा रूप अन्धकारमय पिशाच पुरी है।

जब संसार की प्रचंड पवन के आघात से हम

ও অবসন্ন হইয়া পড়ি, তখন মন বাহ্য জগতের দ্বন্দ্বে ক্লান্ত হইয়া অন্তর্জ্জগতের আশ্রয় লাভ করে। ফলতঃ চিন্তায় কি সুখ! সংসার মরুতে অতীত জীবনের দুই একটী পবিত্র কার্য্যের মধুর স্মৃতি শ্যামল শস্য পূর্ণ ক্ষেত্র। ভগবানের সর্ব্ববিঘ্ন নিবারক হস্তের নিম্নে রহিয়াছি এই চিন্তা কি সুখ কর!

তাই বলিতেছিলাম মন যখন বড় ব্যাকুল হইয়া যায় তখন চিন্তার আশ্রয় গ্রহণ করি। চিন্তার সাহায্যে কল্পনার চক্ষু ফুটিয়া যায়। তখন যেন দেখিতে পাই সমস্ত সংসার লক্ষলক্ষ আগ্নেয় গিরিতে সমাকুল। প্রত্যেক মনুষ্য এক একটী আগ্নেয় গিরি—হৃদয় তাহার গহ্বর। অগ্নি গিরির অগ্ন্যুদ্গমে হরকিউলিয়ম ও পম্পী ভস্মসাৎ হইয়া গিয়াছে * কিন্তু মানবাগ্নেয় গিরির অগ্ন্যুদ্গমে কত কত লঙ্কা, হস্তীনাপুর, কত কত ট্রয়; মিসর, গ্রীস, রোম; কত কত পবিত্র প্রণয় ভক্তি ও ভগবৎ প্রেম পূর্ণ হৃদয় ভাঙ্গিয়া চূর্ণিয়া গিয়াছে। লক্ষ লক্ষ হৃদয় হইতে অহর্নিশ লক্ষ লক্ষ গিরির অনল লহরী উদ্গীরিত হইতেছে, কত কত রাজ্য, নগর, গ্রাম, বরং তদপেক্ষাও মূল্যবান কত কত মানব হৃদয়কেও উলটি পালটি দগ্ধ করিতেছে, সুখের সংসারকে ভীষণ শ্মসানে পরিণত করিতেছে, পৃথিবীর কষ্ট ও যন্ত্রণা দিন দিন বর্দ্ধিত করিতেছে।

প্রাকৃতিক বিজ্ঞানে পড়িয়াছি, পৃথিবীর আভ্যন্তরিক তাপই অগ্নিগিরির উৎপত্তির নিদান। মানবাগ্নেয় গিরির উৎপত্তির নিদান অনুসন্ধান কর, দেখিতে পাইবে, তাহাও অন্তর্জ্জগতের আভ্যন্তরিক তাপ। বিষয় বাসনা বৃত্তি মনুষ্যের প্রকৃতি গত। এই বিষয় বাসনা ও তাহার অবশ্যম্ভাবী ফল স্বার্থ পরতাই অন্তর্জ্জগতের আভ্যন্তরিক তাপ। ইহাদিগকে চরিতার্থ করিতেই মানবের নিষ্ঠুর ব্যবহার। কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহাদির স্ফুরণই আগ্নেয় গিরির উদ্গারিত অগ্নিশিখা, গলিত ধাতুনিঃস্রব, উষ্ণজল, ভস্ম, ইত্যাদি। হেলেনার রূপের দহনে পুড়িয়া মরিল ট্রয় ও গ্রীস; দশাননের মোহের আগুণে সোনার লঙ্কা ছারে খারে গেল। পরশুরামের ক্রোধের জ্বলন্তবহ্নির ইন্ধন যোগাইল ক্ষত্রিয়কুল; দুর্য্যোধনের মাৎসর্য্যের ফল আজিও আমরা ভোগ করিতেছি (২)। আর ও কত উদাহরণ দেখাইব? আমরা প্রত্যেকেই এক একটী ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র গিরি।

* ইতালি দেশীয় দুইটী নগর; বিসুবিয়সের অগ্ন্যুদ্গমে ভূমি সাৎ হইয়া গিয়াছে!

২। কুরুক্ষেত্র যুদ্ধের পরেই ভারতবর্ষীয় অবনতি বলিতে হইবে।

विध्वस्त, अभीभूत वा अवसन्न हो जाते, उस समय मन इस जगत के युद्ध से थक कर अन्तर्जगत का आश्रय लेलेता है। फलतः चिन्ता से सुख क्या! अतीत जीवन का दो एक पवित्र कार्य्य का मधुर स्मृति मानो कि इस संसार रूपी ऊसर भूमि में श्यामल शस्य क्षेत्र है। भगवान के सर्व्व विघ्ननाशक हाथ की छाया के नीचे मेरा स्थान है, हा! कहाँ यता यह चिन्ता कैसी सुखकरी है।

अभी हम कहरहे थे कि मन जब बहुत ही दिक हो जाता है, उस समय चिन्ता का आश्रय ले लेते हैं। चिन्ता की सहायता से कल्पना की आंखें खुल जाती हैं। उस समय सूझ पड़ता है क्या, यह सारा संसार लाखों लाख ज्वालामुखी पहाड़ों से परिव्याप्त है। प्रत्येक मनुष्य एक २ ज्वालामुखी पहाड़ है, हृदय उसका कन्दरा है। मान लेते हैं कि ज्वालामुखी पहाड़ों से आग निकलने पर दो चार हरक्युलियम वो पम्पी (१) भस्मी भूत होगये, किन्तु मानव रूपी ज्वालामुखी गिरियों की आग उगलने पर कितने लंका, हस्तिनापुर, कितने ट्रय, मिसर, युनान, रोम कितने पवित्र स्नेह, भक्ति वो भगवत प्रेम पूर्ण हृदय टूट फूट होगये। लाखों हृदय से अहर्निश लाखों पहाड़ों के आग की लहर निकल रही है, कितने राज नगर, गांव, बरं उनसे भी अधिक मूल्यवान कितने मानव हृदय को उलट पलट के दाहन कर रही हैं, सुख मय संसार को भीषण श्मसान भूमि बना रही है पृथ्वी के कष्ट वो यातना दिनों दिन बढ़ा रही हैं।

प्राकृतिक विज्ञान में पढ़ चुके हैं, कि पृथ्वी के भीतर का उत्ताप ही ज्वालामुखी पहाड़ों की उत्पत्ति का निदान है। अब ढूंढ़ो, मानव- ज्वालामुखी पर्वत की उत्पत्ति का मूल क्या है? देख लेना कि वह भी अन्तर जगत की भीतर की गर्म्मी से उत्पन्न होता है विषय वासना वृत्ति मनुष्यों की प्रकृति में निहित है। यह विषय वासना वो स्वार्थपरता ही, जो कि उस वासना का अवश्यम्भावी फल है अन्तर्जगत का अन्तरस्थ उत्ताप है, । इन्हीं को कृत कृत्य करने ही के लिये रिपुओं का व्यवहार है। काम, क्रोध, लोभ, मोहादिका कार्य्य में प्रवृत्त होना ही निकली हुई अग्नि शिखा, गली हुई धातु, उष्ण जल, राख आदि हैं। हेलेना की रूपाग्नि से जर मरे ट्रय वो युनान; दशानन के मोहाग्नि से सुवर्ण लंका भस्मीभूत हो गयी, परशुराम के क्रोधरूप प्रचंड आग में जरमरे क्षत्रियकुल; दुर्य्योधन के मात्सर्य्य का फल आजतक हम भोग कर रहे हैं (२)। फिर कितने दृष्टान्त दिखाये जांय? हम सब एक २ मनुष्य एक २ ज्वालामुखी पहाड़ हैं।

(१) ये इतालो के दो शहर हैं। विसुवियस के आग निकले पर जर कर भूमि के सामील हो गये।

(२) कुरुक्षेत्र संग्राम ही के अनन्तर से भारतवर्ष की अवनति होने लगी।

কোন কোন অগ্নিগিরি দুই একবার স্ফুরণ করিয়া চিরকালের জন্য নিবৃত্ত হয়-যেমন বাল্মীকি, বিশ্বামিত্র; কোন কোনটীর বা আগ্নেয় উপাদান সত্ত্বেও একেবারে স্ফুরণ হয়না যেমন বশিষ্ঠ; কোন কোনটী বা চিরকাল ধরিয়া জ্বলিতেছে তাহার উদাহরণের অভাব নাই।

তাই বলিতেছিলাম, সংসার অগ্নিগিরিতে সমাকুল। কদম্ব পুষ্পের কেশরের ন্যায় অগ্নিগিরি মালা সংসারকে বেষ্টন করিয়া রহিয়াছে। কত কাল এই আগুণ জ্বলিবে, কতকাল এই আগুণে সংসার ছারখার হইবে, কতকাল সংসার ভীষণ শ্মশানে পরিণত থাকিবে, ভগবান জানেন। ভারত বর্ষের বৈদিক সময়ে এই অনল অনেকটা নিবিয়া গিয়াছিল—বেদের প্রভাবে, ঋষি দিগের প্রভাবে এই অনলের তীব্রতা অনেক শীতল হইয়াছিল, অনেক আগ্নেয় গিরির বীতোদ্গীরণ হইয়াছিল। কিন্তু হায়! এখন কি হইতেছে? এখন যে এ অনল অপ্রতিহত প্রভাবে জ্বলিতেছে! কোথায় বা সেই অপৌরুষেয় বেদের মহিমা প্রচার! কোথায় বা সেই তেজঃপুঞ্জ ঋষিগণের পবিত্র সান্ত্বনা। ভারত এখন ভীষণ অন্ধকারময় শ্মশানক্ষেত্র। এই ভীষণ অন্ধতমসের মধ্যে আগ্নেয় গিরিমালা ভীষণভাবে জ্বলিতেছে।

হা! এ অনল নিবাইবার কি কোন উপায় নাই? এ আভ্যন্তরিক তাপ শীতল করিবার কি কোন ঔষধ নাই? বেদের মহিমা প্রচার বন্ধ হইয়া গিয়াছে,কিন্তু বেদের মহিমাতো যায়নাই; বেদতো যায় নাই; ঋষিগণ লুক্কায়িত হইয়াছেন—তাঁহাদের অস্তিত্বতো জগৎ হইতে বিলুপ্ত হয় নাই। বেদ যায় নাই, ঋষিরা যান নাই তবে গিয়াছে কি? গিয়াছি আমরা, গিয়াছে আমাদের উচ্চ মনোবৃত্তি রাশি, গিয়াছে আমাদের আমিত্ব। এখন ও উপায় আছে, এখনও ঔষধ আছে। যে উপায়ে, যে ঔষধে বাল্মীকি, বিশ্বামিত্রের তাপ মিটিয়াছিল সে মহদনুষ্ঠানের কথা বলিতেছিনা। যে ঔষধের কথা বলিতেছি তাহা তত কঠোর সাধ্যনহে, সেই ঔষধ অনুতাপের দুই একটী অকপট অশ্রু বিন্দু। মন হইতে আর্য্য শাস্ত্রের ও আর্য্যঋষিদিগের প্রতি অবিশ্বাস কালিমা মুছিয়া ফেল, তাঁহাদিগের প্রতি

किसी २ पहाड़ों ने एक दो बेर मात्र ज्वाला माला निगल के चिरदिन के लिये निवृत्त होता है, जैसा कि वाल्मीकि, विश्वामित्र; किसी २ पहाड़ में ज्वाला के उपादान रहे भी कभी आग निगलतीही नहीं, जैसा की वशिष्ठजी; किसी २ ने निरन्तर जल रहा है, इस के दृष्टान्त की क्या कमी है।

सोही हम कह रहे थे, कि संसार ज्वालामुखी पहाड़ों से भरा हुआ है। कदम्बकेशरों के समान इन पहाड़ों ने संसार वेष्टन करलिया। राम जाने, कि और कितनी दिन तक यह आग लहरती रहेगी, कितनी दिन तक यह आग संसार को राख छार करती रहेगी वो कितनी दिन तक यह संसार भयंकर श्मसान सदृश बना रहेगा। भारतवर्ष के वैदिक काल में यह आग बहुत सी बुझ गयी थी। वेद के प्रभाव से, ऋषियों के प्रभाव से इस आग की तेजी बहुत सी ठंडी पड़ी थी—अनेक ज्वालामुखी पहाड़ों की आग निगलना एकवारगी बंधही हो गयी थी। किन्तु हा! अब क्या हो रहा है। अब तो वह आग बेरोकावट बड़ी प्रचंडता से जल रही है। अपौरुषेय वेदों की महिमा का प्रचार अब कहां! उन तेजःपुंज ऋषियों के पवित्र शिक्षा-वाणी अब कहां सुनने में आती! भारत अब भीषण अन्धकारमय श्मसान क्षेत्र बन गया। इस भीषण अन्धतामस के भीतर ज्वालामुखी पहाड़ समूह भीषण भाव से जल रहे हैं।

हा! अब इस अनल को बुताने के लिये कौन सा उपाय किया जाय? इस अन्तरस्थ उत्ताप को शीतल करने का क्या कोइ औषध नहीं? वेदों की महिमा का प्रचार हो रुक गया किन्तु वेदों की महिमा तो अलोप नहीं हुइ है, वेद भी तो नष्ट न हुए। ऋषिगण अन्तर्धान हुए किन्तु उन्हों की सत्ता या विद्यमानता अब तक संसार से अलोप न हुइ। वेद भी बने बनाये तैयार हैं, ऋषि लोग भी विद्यमान हैं तब नष्ट क्या हुआ? नष्ट हुए हम सब! नष्ट हुइ हमारी उन्नत वो उदार मन की वृत्तियां!! नष्ट हुआ हमारा आत्मत्व!!! अब भी उपाय है, अब भी औषध है। हम उस महत अनुष्ठान की बात नहीं कहते जिस से वाल्मीकी, विश्वामित्र जीका उत्ताप मिटा था। जिस औषध की बात हम कहने चाहते वह उतना कठोर साध्य नहीं वह औषध यह है "पश्चात्ताप से गिरती

অসদ্ব্যবহার ও নিজ নিজ পাপাচারের জন্য অনুতাপের অশ্রু বিসর্জ্জন কর। দেখিবে অনুতাপাশ্রু তোমার মনকে মহৎ করিবে, আর্য্যঋষিগণকে আর্দ্র ও আকৃষ্ট করিবে, তোমার আভ্যন্তরিক তাপ নিবাইবার উপায় করিয়া দিবে। তুমি আনন্দ বিহ্বল হইয়া নৃত্য করিবে তোমার চক্ষু হইতে ভক্তি ও প্রেমবারি নিঃসৃত হইবে, সেই দুঃখের, ক্ষোভের, ভক্তির, প্রেমের একত্রীভূত পবিত্র অশ্রুজল অগ্নিগিরির অন্তস্তাপ নিবাইবে।

মানব! যখন সংসারের দারুণ ঝটিকায় অভিভূত হইবে, যখন সংসারের তীব্র প্রলোভন স্রোতে তোমার উচ্চ প্রবৃত্তি সকল ভাসিয়া যাইবার উপক্রম করিবে, যখন শোকে, দুঃখে, বিপদে নিঃস্বার্থ সহানুভূতি পাইবেনা তখন ঊর্দ্ধে চাহিয়া একবার প্রাণ ভরিয়া ডাকিবে—

"হে নাথ! শরণং দেহি মাং ভক্তং শরণাগতং"

আর দুই এক বিন্দু অকপট অশ্রু সেই প্রার্থনা বাক্যের সহিত মিশাইয়া দিয়া বলিবে

"ভগবন!

অবিনয়মপনয় বিষ্ণো! দময় মনঃশময় বিষয় রসতৃষ্ণাম্"। কঠিন হইওনা-হৃদয়কে উন্মুক্ত করিয়া দাও, তোমার আকাঙ্ক্ষাও ব্যগ্রতা তোমার প্রতি অশ্রুকণাতে প্রতিভাত হউক। একবার প্রাণ খুলিয়া উচ্চৈঃস্বরে ডাক

"অপরাধ সহস্র সঙ্কুলম্পতিতং ভীম ভবার্ণবোদরে অগতিং শরণাগতং হরে কৃপয়া কেবলমাত্মসাৎকুরু"।

হৃদয়কে যদি আরও একটু মহৎ করিতে পার তবে স্থির নিঃশঙ্ক ভাবে বল,—

"নাস্থা ধর্ম্মে নবসুনিচয়ে নৈব কামোপভোগে

যদ্ভাব্যং তদ্ভবতু ভগবন্! পূর্ব্বকর্ম্মানুরূপং"

তাহা হইলে দেখিবে তুমি এক অপূর্ব্ব বল পাইয়াছ, প্রলোভন জালের মধ্যবর্ত্তী হইয়াও প্রলোভন জয় করিতে সমর্থ হইতেছ, তোমার আভ্যন্তরিক তাপ সঞ্জাত হইতে না হইতেই লয় পাইতেছে, তুমি প্রকৃত মহত্ত্বের সোপানে অধিরোহণ করিতেছ। তুমি হৃদয়ের এই ভাবকে যদি পরিস্ফুট রাখিতে পার তাহা হইলে কালে তুমি এক অনাস্বাদিত পূর্ব্ব অক্ষয় সুখ লাভ করিবে।

हुइ निष्कपट आंसुओं दो एक बुंदो"। आर्य्य शास्त्र वो आर्य्य ऋषियों पर जो अविश्वास रुप कालिमा मन में लगो हुइ है उस को मिटा डालो, उन पर जो अयोग्य व्यवहार वो स्वयं अनेक पापानुष्ठान किये हो, तन्निमित्त पश्चात्ताप को आंसु गिराओ। देख लेना इस से तुम्हारा मन बढ़ जायगा, आर्य्य ऋषियों के मन लोभावेगा वो खोंच लावेगा, तेरे भीतर को गर्म्मी मिटाने का उपाय कर देगा। तु आनन्द से विह्वल होकर नृत्य करते रहेगा, तेरे आंखों में से भक्ति वो प्रेम को धारा बहतो रहेगो, उस दुःखो से, चोभ से, भक्ति या प्रेम से इकठ्ठो मिलो वो गिरतो हुइ आंसु का धारा ज्वालामुखो के भीतर का उत्ताप का निवारण करेगो।

हे मानव! जब संसार के प्रचंड झक्कर से विव्रम हो जाओगे, जब संसार के तीव्र प्रलोभन को धारा में तेरी उत्तमोत्तम प्रवृत्तियां वह जाने लगेगो, जब शोक, दुःख वो आपत काल में निःस्वार्थ सहानुभूति न मिलेगो उस समय आंखे को ऊपर उठा कर एकबेर एकाग्र चित्तता से तो पुकारना—

"हे नाथ शरणं देहि मां भक्तं शरणागतं"

औ उस प्रार्थना के सहित दो एक बुंदो अकपट आंसु मिलाये कहते रहोगे "भगवन्।

"अविनयमपनयविष्णो! दमय मन शमय विषयरस तृष्णाम्"

कठोर न बनो, हृदय को खुल दो, तेरी अभिलाषा वो आग्रह तेरी प्रत्येक अश्रु बिन्दु में भासित हो; एक बेर पूर्णहृदय से पुकार के कहो—

"अपराध सहस्र संकुलं पतितंभीम भवार्णवोदरे अगतिं शरणागतं हरे। कृपयाकेवलमात्मसात्कुरु॥"

हृदय को यदि और भी थोड़े बहुत बढ़ा सको तब निटल वो निडर से बोलो—

"नास्था धर्म्मे नवसु निचये नैव कामोपभोगे!

यद् भाव्यं तद्भवतु भगवन्! पूर्व्वं कर्म्मानुरुपम्॥"

इस से तुम को एक अपूर्व्व सामर्थ्य मिलेगो, सूझ पड़ेगा कि प्रलोभनजाल के बीच में रह कर भी प्रलोभन को जय करने में समर्थ हुये हो, तेरा भीतर में सन्ताप प्रगट होने के पहले हो प्रशान्त हो जाता है, तु प्रकृत महत्व को सीढ़ी पर चढ़ रहे हो। प्रफुल्लता से यदि सदैव इस भाव को रक्षा कर सको, तो अन्त को ऐसा एक अपूर्व्व अक्षय सुख मिलेगा, जो कि तुझे कभी न मिला।

আহা ! এমন দিন কবে আসিবে যখন পৃথিবীর প্রত্যেক জীবের হৃদয় হইতে এইরূপ পবিত্র ঔৎসুক্য পূর্ণ প্রার্থনাবাক্য নিঃসৃত হইবে। প্রত্যেক চক্ষু হইতে এইরূপ পবিত্র অনুতাপ ও আকাঙ্ক্ষার অপূর্ব্ব অশ্রুজল নির্গত হইবে, সেই পবিত্র অশ্রুজলে অভিষিক্ত হইয়া, কোটী কোটি জীবের প্রাণের কুসুমস্তবক ভগবানের চরণে উৎসর্গীকৃত হইবে কোটী ২ আগ্নেয় গিরির আভ্যন্তরিক তাপ নিবিয়া যাইবে, কোটী কোটী মনুষ্য দেবতাধিক পূজ্য হইয়া উঠিবে !

ভাই আর্য্যসন্তান ! এস এই অপূর্ব্ব সুখ পাইবার জন্য প্রস্তুত হই, এস আবার মহদাদপি মহৎ হইতে ব্যাকুল চিত্তে চেষ্টা করি-এস মধুর সুখে মধুর তানে গাই—

দেব ! দেব ! কৃপালো ! ত্বমগতীনাং গতির্ভব
সংসারার্ণব মগ্নানাং প্রসীদ পরমেশ্বর ”

শান্তিঃ ! শান্তিঃ ! শান্তিঃ ; হরিঃ ; ওঁ !

তোমার সম্পদ।

(প্রাপ্ত)

মানব ! এই অবনী মণ্ডলে জন্ম গ্রহণ করিয়া আপনাকে সুখী করিবার জন্য তোমার বড় আগ্রহ দেখিতে পাই। তোমার সুখের আশা অতীব বলবতী। আশা মরীচিকায় বিমুগ্ধ হইয়া তুমি সময়ে ২ আত্ম বিস্মৃত হইয়া যাও, তুমি ঈপ্সীত বিষয় লাভের যোগ্যাধিকারী কিনা তাহা তোমার অন্তরে একবারও উদয় হয় না। তোমার যত কেন সম্পদ বৃদ্ধি হউক না তাহাতে আমি দুঃখিত নহি, কিন্তু যতই তোমার সম্পদের মূলানুসন্ধান করি, ততই দেখিতে পাই যে কোন না কোনরূপে অন্যের সম্পদের মূলে কুঠারাঘাত করিয়া তুমি নিজ সম্পদ বৃদ্ধি করিতেছ। দেখিলাম তুমি ভূমিষ্ঠ হইয়াই অগ্রজ ভ্রাতা বা ভগ্নিকে মাতৃস্তন্য হইতে বঞ্চিত করিলে ও হাস্য বিকসিত বদনে স্বয়ং সুখে পান করিতে লাগিলে। কিঞ্চিৎ বয়ঃ প্রাপ্ত হইয়াই বালক বালিকা সহ বাল্যক্রীড়ায় আমোদ অনুভব করিতে শিক্ষা করিলে, দেখিলাম তাহাতেও তোমার সম বয়স্ক গণকে পরাস্ত করিবার ইচ্ছা। বিদ্যা শিক্ষার্থ বিদ্যালয়ে গমন করি-

हा वह शुभ दिन कब होगा, जबकि पृथ्वी तलके प्रत्येक जीवके हृदय से इस भांति पवित्र आग्रह पूर्ण प्रार्थना निकलती रहेगी, प्रत्येक नेत्र से इस भांति पवित्र अनुशोक वो अभिलाषा से अपूर्व्व आंसु गिरतो रहेंगी, उस पवित्र अश्रुजल से सिंचित होकर करोड़ो जीवके प्राण रूपी फुलों की गुच्छा भगवानके चरण पर उत्सर्ग होंगे। करोड़ोंरहां ज्वालामुखी पहाड़ के अन्तरस्थ उत्ताप ठंडा पड़ जायगा करोड़ोंरहां मनुष्य देवता से अधिक पूज्य बन जावेंगे।

हे आर्य्य भाइयों ! अब आइये, हम सब इस सुख के लिये आग्रह पूर्णचित्त से चेष्टाकरें, आइये मधुर आनन्द से मधुर तान जमावें —

“ देव ! देव ! कृपालो ! त्वमगतीनां गतिर्भव: ।
संसारार्णव मग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥ ”

शान्ति: शान्ति: शान्ति: हरि:, ओं ।

तेरा सम्पद्।

(प्राप्त)

हे मानव ! इस संसार में जन्मकर स्वयं सुखी होने के लिये तेरा बड़ाही आग्रह देख पड़ता है। तेरे सुख की आशा बड़ी बलवती है। आशा रूपी मृग तृष्णा में मोहित होकर समय २ पर आत्म विस्मृत हो जाता है। तु जो कुछ चाहता है उस के योग्य अधिकारी तु है या नहीं, सो एक बेर भी नहीं सोचता हैं। तेरा सम्पद् जितना क्यों न बढ़े मैं उस में दुखी न हुं, परन्तु तेरे सम्पद् के मूल जितनाही मैं ढूढ़ताहुं उतनेही देख पड़ता है कि किसी न किसी के सम्पद् के मूल में कुल्हारी मार कर तु अपना सम्पद् बढ़ाता है। देखा कि तु जनम्तेही बड़े भाइ या बहीन को माता के स्तन्य दुध पीने से छुड़ाया औ मसकुराता हुआ तु स्वयं सुख से पीने लगा। जब तुने ५। ७ बरस की अवस्था में और २ लड़कों वा लड़कियों से बाल्य खेल में प्रवृत्त हुआ, उस समय भी देखा कि सहचरों को परास्त करना हो तेरी इच्छा रही। विद्या सिखने के निमित्त विद्यालय में गया, साथ उन्नति के विश्वविद्यालय की विविध

লে, উন্নতির সঙ্গে ২ বিশ্ববিদ্যালয়ের বিবিধ উপাধি লাভ করিয়া একজন অসামান্য প্রতিভাসম্পন্ন লোক হইলে, সহাধ্যায়ীগণকে পরাভব করিয়া স্বয়ং শ্রেষ্ঠ হইবে, এই কুটীল ইচ্ছা তোমার চির সঙ্গিনী রহিল। তুমি কৃতবিদ্য হইয়া বিদ্যালয় হইতে বহির্গত হইলে, দেখিলাম তুমি এক্ষণে বিবিধ পথের পথিক হইয়াছ। যেদিকে ঐশ্বর্য্যের অধিপতি হইবার আশা পাইতেছ, তুমি সেই পথেই গমন করিলে। দেখিলাম কখন তুমি দাস্য বৃত্তি দ্বারা সুখী হইবার আশয়ে বেগে গমন করিতেছ; একখানি আবেদন পত্র হস্তে তুমি যথায় উপস্থিত হইলে তথায় তোমার ন্যায় অনেকে দণ্ডায়মান। সকলেরই লক্ষ্য এক; অন্যান্য আবেদনকারীগণকে বঞ্চিত করিয়া তুমি স্বয়ং কৃতকৃত্য হইবে এই ইচ্ছাটী তোমার হৃদয়ে নৃত্য করিতেছে। আবার দেখিলাম তুমি দাস্যবৃত্তিকে হেয় জ্ঞান করিয়া প্রাড়বিবাকের পথ অবলম্বন করিয়াছ। এপথ দাসত্ব অপেক্ষা ভাল, ধনাগম যথেষ্ঠ, দিবা রাত্রি অর্থ পিপাসার ত্রুটি নাই, অন্যের অর্থী প্রত্যর্থীর সংখ্যা তোমার নিকট অধিক হয় ইহাই তোমার ইচ্ছা চিকিৎসক হও, শিল্পীহও, সর্ব্বত্রই তোমার সম্পদ অন্যের ক্ষতির উপর নির্ভর করিতেছ।

মনের অভাব সত্বে—বাসনা সত্বে—তোমার সম্পদ সুখকর ও অভীষ্ট জনক নহে। তুমি লোভ পরিত্যাগ কর, সমস্ত রত্ন ভাণ্ডারের দ্বার তোমার সম্মুখে উন্মুক্ত হইবে। এখন আত্ম সম্পদ বৃদ্ধি করিবার জন্য অপরের সম্পদে হস্তক্ষেপ করিতে হইবেনা অথবা অপরের সম্পদ বৃদ্ধি করিতে না পারিলে নিজ সম্পদ বৃদ্ধি হইবেনা। যতই স্বার্থের দুর্গন্ধ দুষিত সম্পদ বিসর্জ্জন দিবে ততই আনন্দ উপভোগ করিতে পারিবে। যেখানে তৃষ্ণার সম্পূর্ণ উপশম হইয়াছে সেই দিকে অগ্রসর হও, যেখানে কাহাকেও ভয় করিতে হয় না তথায় গমনকর, যে পদ পাইলে সংসারের সমস্ত সম্পদ তুচ্ছ বোধহয় সেই পদ অবলম্বন কর যে পদ দর্শন করিলে বিপদ সম্পদ এক হইয়াযায় সেই পদ ভক্তি যুক্ত হইয়া সেবন কর।

उपाधि पाकर एक असामान्य प्रतिभा सम्पन्न पुरुष बना किन्तु सहाध्यायियों को पराभव कर स्वयं श्रेष्ट बनेगा, यह कुटील इच्छा तेरे संग बराबर रह हो गयी। तु कृत-विद्यावन कर विद्यालय से निकला, अब तुझे विविध पंथके पथिक होना देख पड़ा। जिधर ऐश्वर्य्य को अधीश्वर बनने की आशा मिलती है, तु उधरही दौड़ता। देखपड़ा कि, कभी तु दास्य वृति से सुखी होनेके आशय से बड़े तेज से जा रहा है; एक आवेदन पत्र हात पर लिये हुए जहां जा पहुंचा, वहां तो तेरे समान बहुत से खड़े है। सब का अभिप्राय एकही ठहरा, अन्यान्य उमीदवारों को वंचित कर तुही स्वयं कृतकृत्य हो जा, यही इच्छा तेरे हृदय में नृत्य कर रही है। फिर देखा कि तु दास्यपन को तुच्छ मानकर वकीलों की राह धरा। यह पथ दासत्व से उत्तम है, धनागम भी बहुत, दिनरात विभव तृष्णा की त्रुटी नहीं; अर्थी, प्रत्यर्थियों की संख्या अन्य वकीलों से तेरे समीप अधिक हो जाय, यही तेरी अभिलाषा है। चिकित्सक बनो, शिल्पी बनो वणिक बनो, सर्व्वत्रही दुसरे की हानि पर तेरे सम्पद की वृद्धि देख पड़ती है।

मन की चाह विद्यमान रहने — वासना बनी रहते — तेरा सम्पद्सुखकर वा अभीष्टजनक नहीं। तु अनासक्त चित्त बन जा — तेरी सम्पद की सीमा न मिलेगी। तु लोभ का छोड़ दे, समस्त रत्न भाण्डार को दरवाजा तेरे सामहने खुल दी जायगी। उस समय फिर निज सम्पद बढ़ाने के लिये दुसरे के सम्पद पर हात न डालना पड़ेगा — अथवा दुसरे का सम्पद बढ़ाये बिना निज सम्पद बढ़ हीगा नहीं! स्वार्थ के दुर्गन्ध से दूषित सम्पद को तु जितना ही बिसर्ज्जन करता जायगा आनन्द उतना ही तुझे उपभोग करने मिलेगा। जहां सम्पूर्ण तृष्णा की शान्ति हुइ, उसही ओर आगे बढ़जा, जहां किसीही की डरना न पड़ता, वहांही चला जा जो पद मिलने से संसार के समस्त सम्पद को तुच्छबुझ पड़ता है, उस ही पद के शरण ले ले — जिस पद कमल को दर्शन करलेने से विपद सम्पद सब समान देख पड़ते हैं, भक्ति भाव से उसी पद की सेवा करते रहो।

রামপুরহাট হরি ভক্তি প্রদায়িনী সভার

ষষ্ঠ বার্ষিক উৎসব।

৭ই হইতে ১১ ই আষাঢ় পর্য্যন্ত ৫ দিন অত্র রামপুর হাট হরি ভক্তি প্রদায়িনী সভার ষষ্ঠবার্ষিক উৎসব মহা সমারোহের সহিত সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

৭ ই আষাঢ়, বুধবার। শ্রীমন্নারায়ণ জীউ, লক্ষ্মী, তুলসী, বাগ্বাদিনী ও গণপতির ষোড়শোপচারে পূজা, হোম এবং তদবসানে বিষ্ণুর সহস্র নাম পাঠ, নিমন্ত্রিত ব্রাহ্মণ ভোজন, ও সায়াহ্নে শ্রীমন্নারায়ণের আরতি তৎপরে সভার সম্পাদক, সহকারী সম্পাদক, সভ্যগণ ও ভারতবর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সংস্থাপক-সম্পাদক সুবিখ্যাত শ্রীমান্ শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহাশয় কর্ত্তৃক সভার উন্নতি কল্পে বাক্যালাপ ও মন্ত্রণা হইয়াছিল। তাহার মধ্যে একটী কথা এই স্থির হইল, যে আজ কাল যেরূপ সময় উপস্থিত, প্রায় দেখিতে পাওয়া যায় যে অনেক মূর্ত্তি পূজন বিষয়ে সন্দিগ্ধ চিত্ত; এই ভ্রম সংশোধন নিমিত্ত যিনি এই বিষয়ে যুক্তি, শাস্ত্র ও বিজ্ঞান পূর্ণ প্রমাণসহ ভালরূপ লিখিতে পারিবেন তাঁহার উৎসাহ বর্দ্ধনার্থ অত্রসভা ৪০৲ পারিতোষিক দিবেন।

৮ই আষাঢ়, বৃহস্পতিবার। পূর্ব্বাহ্নে সভার আচার্য্য দ্বারা শ্রীমদ্ভগবদ্গীতা পাঠ ও ব্যাখ্যা, সংগীত ও সংকীর্ত্তন, তৎপরে উক্ত কুমার কর্ত্তৃক হিন্দি ভাষায় একটি সুললিত ও সুদীর্ঘ বক্তৃতা হইল। বক্তৃতাটি এত উৎকৃষ্ট ও হৃদয় গ্রাহিণী হইয়াছিল যে বেহার ও বঙ্গবাসীরা অবিরল অশ্রু বিসর্জ্জন করিতে করিতে, "ব্রাহ্মণেরা, কুমার! দীর্ঘ জীবী হও " বেহারিরা জীতে রহিয়ে," " মুসলমানেরা খোদা দোওয়া করে," ইত্যাকার শব্দে স্থানটি পরিপূর্ণ হইয়াছিল, বক্তাও অচল অটল ভাবে দুই ঘণ্টার অধিক উত্তেজিত চিত্তে বক্তৃতা করিয়া সকলকে পরিতৃপ্ত করিয়াছিলেন। বেলা ৪টা হইতে

रामपुरहाट हरिभक्ति प्रदायिनी सभा का ६ष्ठ वार्षिक उत्सव।

ज्येष्ठ शुक्ल १५ से लेकर आषाढ़कृष्ण ४ तक लगातार ५ दिन इस रामपुरहाट हरिभक्ति प्रदायिनी सभा का ६ष्ठ वार्षिक उत्सव बड़े धुम धाम वो आनन्द से सुसम्पन्न हो गया।

१म दिन। श्रीमन्नारायणजी, लक्ष्मी, तुलसी, वाग्वादिनी औ गणपतिजी का षोड़श-उपचार सहित पूजा, होम वो तदनन्तर विष्णु सहस्र नाम पाठ, निमन्त्रित ब्राह्मण भोजन औ सन्ध्या को श्रीमन्नारायण की आरति हुए। अनन्तर इस के सभा की उन्नति के अर्थ वार्त्तालाप वो मंत्रणा हुई थी। तत्काल इस सभा के सम्पादक, सहकारी सम्पादक, सभ्यगण वो भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के संस्थापक—सम्पादक सुविख्यात श्रीमान श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय उपस्थित थे। वार्त्तालाप में से एक उत्तम बात यह स्थिर की गयी कि आज कल के समय में प्राय देख पड़ता है, कि बहुत से लोग " मूर्त्तिपूजन " पर सदैव सन्देह उठाये करते हैं; इस विषम भ्रम को मिठाने के लिये जिस किसीने विशेष रूप युक्ति, सास्त्र वो विज्ञान पूर्ण प्रमाण सहित कोइ पुस्तक लिख सकेगा, उन के उत्साह बढ़नार्थ यह सभा ४०৲ चालिस रुपये पारितोषिक देगी।

२यदिन। प्रात:काल में सभा के आचार्य्य महाशय ने श्रीमद्भगवद्गीता पाठ वो व्याख्यान किया, तदनन्तर भजन वो संकीर्त्तन हुआ, अन्त में उक्त कुमारजी ने भाषा में एक सुललित वो सुदीर्घ वक्तृता करी। वक्तृता ऐसी उत्कृष्ठ वो मन लोभावनी हुई थी जो विहार वो बंगदेशीयों के उनकी मोने आंखें में से आंसु गिराते २ ब्राह्मण गण कहने लगे कि कुमारजी दीर्घायु बने रहो, कोइ कहें जीते रहो, मुसलमान लोग कहने लगे " खुदा दोवा करें " इस रीति शब्दों से स्थान परिपूर्ण हो गया। वक्ता भी ने दो घन्टे से अधिक काल तक निश्चल भाव से परम उत्तेजना सहित वक्तृता कर सब को सन्तुष्ट करी थी। दोपहर के उपरान्त ४ बजे से सन्ध्या

শুভ সমাচার।

ভারতীয় ধর্ম্মের বর্ত্তমান দুর্দ্দশা দেখিয়া চিন্তাশীল আর্য্য সন্তান মাত্রেরই হৃদয়ে বেদনা বোধ হইয়াছে। ভারতে কেবল বিবিধ উপধর্ম্মের উৎকট উপদ্রব বৃদ্ধি হইয়াছে তাহা নহে, হিন্দু সমাজের নিজ মর্ম্মদেশে রোগের অভাব নাই। যাঁহারা লোক সমাজে আর্য্য (হিন্দু) বলিয়া পরিচিত, তাঁহাদের মধ্যেও অনেক সমাজানুরোধে হিন্দু কিন্তু কার্য্যতঃ ব্যভিচারী-স্বেচ্ছাচারী ও যথেচ্ছাচারী হইয়া উঠিয়াছেন। এইরূপ সমাজ মধ্যে অধর্ম্মাচারের প্রবল অধিকার দর্শনে চিন্তাশীল ধর্ম্মানুরাগী পুরুষ বর্গ আর স্থির চিত্তে থাকিতে পারিতেছেন না। যাহাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার কার্য্য প্রবাহ প্রবল বেগে চলিতে থাকে, ইহা অনেকেরই মনোগত ইচ্ছা, কিন্তু বিবিধ কারণে তাঁহারা কার্য্যক্ষেত্রে সাহায্য করিতে অসমর্থ। তাঁহাদের সহানুভূতি ও শুভইচ্ছা জন্য আমরা তাঁহাদিগকে ধন্যবাদ প্রদান করি।

আজ আর্য্য ধর্ম্মানুরাগী গণকে একটী শুভসংবাদ দান করিতেছি। পরিব্রাজক শ্রীমৎ স্বামী আত্মা হংস জী মহারাজ অত্র সভার কার্য্যে নিতান্ত প্রীত ও উৎসাহিত হইয়া সনাতন ধর্ম্মের প্রচারার্থ প্রবৃত্ত হইলেন। ইনি পূর্ব্বে একজন বিভব শালী ভূস্বামী ছিলেন। বিষয় কার্য্য তাহার তপস্যা পথের অর্গল স্বরূপ বোধে ইনি তাহা পরিত্যাগ পূর্ব্বক প্রব্রজ্যাশ্রম অবলম্বন করিয়াছেন। ভূসম্পত্তি ও অপ্রাপ্ত বয়স্ক পুত্র একক্ষণে কোর্ট অব্ ওয়ার্ডসের তত্ত্বাবধানের অধীন আছে। হংস স্বামীর ন্যায় উদার, ও অকপট চিত্ত মহাত্মা অতি অল্পই দৃষ্টি গোচর হয়। ইনি এক্ষণে আমাদের ধর্ম্মাচার্য্যের কার্য্য করিবেন।

কাশী নিবাসি শ্রদ্ধাস্পদ পণ্ডিত সাহিত্যাচার্য্য শ্রীযুক্ত অম্বিকা দত্ত ব্যাস "বৈষ্ণব পত্রিকা সম্পাদক" মহাশয়ও ধর্ম্মাচার্য্যের পদ গ্রহণ করিলেন। ইনি একজন সদ্বক্তা এবং সংস্কৃত ভাষায় সুশিক্ষিত, শাস্ত্রজ্ঞ ও ধর্ম্মানুরাগী পুরুষ। ইঁহারা উভয়েই এক্ষণে পশ্চিমোত্তর প্রদেশে কার্য্য করিবেন।

शुभ समाचार

भारतीय धर्म्म की वर्तमान दुर्द्दशा देख कर प्रत्येक चिन्ताशील आर्य्य सन्तान के हृदय में क्लेश अनुभव हो रहा है। भरतखंड में जो केवल बिबिध उपधर्म्म का विषम उपद्रव मच गया, सो नहीं, हिन्दू समाज के निज मर्म्म देश में भी रोग की कुछ कमी नहीं। जो लोग समाज में आर्य्य (हिन्दू) कर माने जाते हैं, उन्हीं के मध्य में बहुतेरे लोग समाज के डर से बाहर२ हिन्दू हैं किन्तु कार्य्य काल में व्यभिचारी, स्वेच्छाचारी वो यथेच्छाचारी बने हुए हैं। समाज में इस भांति अधर्म्माचार के प्रबल अधिकार देखकर चिन्ताशील धर्म्मानुरागी पुरुष गण निश्चिन्त रह नहीं सक्ते हैं। भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा का कार्य्य प्रवाह प्रबल वेग से चलत रहे यही बहुत लोगों की इच्छा है, किन्तु नाना कारण से उन्हों ने कार्य्यकाल में सहायता देने में असमर्थ हैं। उन्हों की सहानुभूति वो शुभ इच्छा के लिये हम उनसब को धन्यवाद देते हैं।

आज आर्य्य धर्म्मानुरागी पुरुषों को हम एक शुभ संवाद देते हैं। परिब्राजक श्रीमत् स्वामी आत्माहंसजी महाराज इस सभा के कार्य्य से नितांत प्रीत वो उत्साहित होकर सनातन धर्म्म प्रचारार्थ प्रवृत्त हुए। ये पूर्व्व में एक विभव शाली जमींदार थे। विषयव्यापार को अपने तपस्यामार्ग की बाधा समझ कर उस को परित्याग पूर्व्वक संन्यासाश्रम ग्रहण किये। जमींदारी वो नाबालक लड़का अब कोर्ट अव वार्डस के अधीन है। हंस स्वामी के समान उदार वो अकपट चित्त महात्मा थोड़े ही देख पड़ते हैं। इनने हमारे "धर्म्माचार्य्य" का कार्य्य करते रहेंगे।

काशी निवासि श्रद्धास्पद पण्डित साहित्याचार्य्य श्रीयुत अम्बिकादत्त व्यास "वैष्णव पत्रिका" के सम्पादक महाशय ने भी धर्म्माचार्य्य का पद स्वीकार किया। इनने बड़े सवक्ता हैं औ संस्कृत भाषा भालीभांति पढ़े हुए, शास्त्रज्ञ वो धर्म्मानुरागि पुरुष है। ये दोनो महात्माओं अब पश्चिमोत्तर प्रदेश में कार्य्य करते रहेंगे।

মুদ্গলপুর

(পূর্ব্বপ্রকাশিতের পর)

অত্যদ্ভুতং শ্রূয়ত এব দেব্যাঃ
জাগ্রৎ স্বরূপত্ব মভীষ্ট সিদ্ধৌ।
অর্থান্ দদৌ তৎ কৃপয়া যথেচ্ছং
রাধাসুতঃ পূর্ব্ব মকিঞ্চনেভ্যঃ ॥ ৪৪ ॥

লোকের অভীষ্ট সাধন বিষয়ে ভগবতী চণ্ডী দেবীর অদ্ভুত জাগ্রৎ রূপতা শুনিতে পাওয়া যায়। পূর্ব্বে রাধা পুত্র কর্ণ ঐ চণ্ডী দেবীর কৃপাতেই অকিঞ্চন দিগকে ইচ্ছামত ধন দান করিতেন। ৪৪।

পুরাকিল প্রত্যহ মেব চণ্ডী—
—স্থানং সমাগম্য নিশামুখেঽসৌ।
প্রজ্বাল্য বহ্নিং ঘৃত পূর্ণমস্মি—
ন্নস্থাপৎ লৌহ কটাহ মেকং ॥ ৪৫ ॥

ঐ কর্ণ পূর্ব্বে প্রতি দিন প্রদোষ সময়ে চণ্ডী স্থানে আসিয়া প্রজ্বলিত অগ্নি স্থাপন করিয়া তদুপরি ঘৃত পূর্ণ এক লৌহ কটাহ স্থাপন করিতেন। ৪৫।

ততঃসমারাধয়িতুং যথাবৎ
দেবীমিমা মারভতেস্ম্য কর্ণঃ।
পূজাবসানে জ্বলদুষ্ণ পাত্র
মধ্যে নিচিক্ষেপ নিজং চদেহম্ ॥ ৪৬ ॥

পরে কর্ণ যথা বিধি দেবীর পূজা আরম্ভ করিতেন। পূজা সমাপন হইলে সেই প্রজ্বলিত উষ্ণ কটাহ মধ্যে আপনার দেহ নিক্ষেপ করিতেন। ৪৬।

মাংসানি ভক্ষয়ামাসুঃ
শিব দূত্যঃ সকৌতুকম্।
তস্য দেহস্য ভৃষ্টস্য
তাস্মিংশ্চ ঘৃত ভাজনে ॥ ৪৭ ॥

সেই ঘৃত পাত্র মধ্যে তদীয় দেহ ভৃষ্ট হইলে পর শিব দূতী সকল কৌতুকের সহিত মাংসভক্ষণ করিত। ৪৭।

সর্ব্বাণি ভক্ষয়িত্বাতাঃ
মাংসানি তস্য ভূপতেঃ।
বারিণামৃত কুণ্ডস্য
জীবয়ামাস তৎপুনঃ ॥ ৪৮ ॥

তাহারা নৃপতি কর্ণের সমস্ত শরীরস্থ মাংসভক্ষণ করত অমৃত কুণ্ডের জল দ্বারা পুনর্ব্বার তাঁহাকে জীবিত করিত। ৪৮।

সপুনর্জীবিতোঽপশ্যৎ
রাধা পুত্রস্ততঃ পরম।

मुद्गलपुर।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

अत्यद्भुतं श्रूयत एव देव्याः।
जाग्रत स्वरूपत्वमभीष्ट सिद्धौ।
अर्थान्ददौ तत्कृपया यथेच्छं।
राधासुतः पूर्व्वमकिञ्चनेभ्यः॥ ४ ॥

सुनने में आती है कि भगवती चण्डीदेवी ने लोगों के अभीष्ट साधन में साक्षात जाग्रत रूपिनी हैं। पूर्व्व में राधापुत्र कर्णजी ने इस चंडीदेवीही की कृपा से दरिद्रों का यथेच्छा धन दान किया करता था। ४४।

पुराकिल प्रत्यहमेव चंडी—
स्थानं समागत्य निशामुखेऽसौ!
प्रज्वाल्यवह्निं घृत पूर्णमस्मि
न्नस्थापत् लौह कठाहमेकम् ॥ ४५ ॥

कर्ण महाराज ने प्रति दिन संध्या को चंडी स्थान में आकर अग्नि प्रज्वलित कर उस पर एक लोहेका कड़ाह धर देता था।

ततः समाराधयितुं यथावत्
देवीमिमा मारभतेस्मकर्ण
पूजावसानेज्वलदुष्ण पात्र
मध्ये निचिक्षेप निजंच देहम् ॥ ४६ ॥

तदनन्तर कर्णजी देवी की यथाविधि पूजा आरम्भ करते; पूजा समाप्त होने पर उस प्रज्वलित तप्त कड़ाह में स्वयं कूद पड़ते थे।

मांसानि भक्षयामासुः
शिव दूत्यः सकौतुकम्
तस्यदेहस्यभृष्टस्य
तस्मिंश्च घृत भाजने ॥ ४७ ॥

उस घृत पूर्ण पात्र मे उनका देह भुनेजाने पर शिवदूतीयां सब आनन्द पूर्व्वक मांस भोजन करतीं थीं ॥ ४७ ॥

सर्व्वाणि भक्षयित्वा ताः
मांसानि तस्य भूपतेः
वारिणामृत कुण्डस्य
जीवयामास त पुनः॥ ४८ ॥

उन सबने राजा कर्ण के शरीर का मांस खा खा कर अमृत कुंड के जल द्वारा फिर उन को जीवाय देती थी।

स पुनर्जीवितोऽपश्यत्
राधापुत्रस्ततः परम्।

পরিপূর্ণং কটাহং তৎ
স্বর্ণ রৌপ্যৈ মহাধনম্॥ ৪৯॥

অনন্তর কর্ণ পুনর্জ্জীবিত হইয়া দেখিতেন সেই লৌহ কটাহ মহামূল্যধন এবং সুবর্ণ ও রৌপ্যে পরিপূর্ণ হইয়া রহিয়াছে। ৪৯।

ত্রিলোক্যাতীব সন্তুষ্টো
ধর্ম্মাত্মা সূত নন্দনঃ।
সমস্ত তদ্ধনং প্রাত
র্দদৌ দীনেভ্য এব সঃ॥ ৫০॥

তাহা দেখিয়া ধর্ম্মাত্মা কর্ণ পরম সন্তুষ্ট মনে সেই সমস্ত ধন লইয়া প্রাতঃ কালে দীন ব্যক্তি দিগকে দান করিতেন। ৫০।

ইতি শ্রীরাজ কুমার তর্করত্ন বিরচিতং মুক্তালোপাখ্যানং সমাপ্তং।

মতিহারী, আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার

৩ য় বার্ষিক উৎসবের কার্য্য বিবরণ।

যিনি নির্গুণ নিরাকার ও আকাশবৎ সর্ব্বব্যাপী হইয়াও কাহারও নয়ন গোচর হয়েন না, যিনি মনো-বুদ্ধির অতীত ও অনুরক্ত ভক্তের ভাবানুসারে যিনি নিজ সগুণ স্বরূপ দেখাইয়া কৃতার্থ করেন আমরা সেই সর্ব্ব সামর্থ্যশীল পরমাত্মাকে নমস্কার করি।

"সৌরাঃ শৈবাশ্চ গাণেশাঃ বৈষ্ণবাঃ শক্তি পূজকাঃ।
মামেব প্রাপ্নুবন্তিহ বর্ষাম্ভঃ সাগরং যথা॥"

১ম দিন। বেলা ১১ টা হইতে সায়াহ্ন ৬টা পর্য্যন্ত সংস্কৃত পাঠশালার বিদ্যার্থী বর্গের পরীক্ষা গৃহীত হইল। ব্যাকরণের ১২ জন ও জ্যোতিষের ৫ জন পরিক্ষার্থী পরীক্ষোত্তীর্ণ হইয়া পারিতোষিক লাভ করিয়াছে।

২ য় দিন। পূর্ব্বাহ্নে শ্রীমন্নারায়ণের ও ভগবতীর শাস্ত্র বিধানানুসারে পূজা হইল। বেলা ১ টা হইতে ৩ টা পর্য্যন্ত ব্রাহ্মণ ও সাধুগণকে দক্ষিণা সহ ভোজন করাইয়া দীন দরিদ্র গণকে অন্ন দান করা হইল। অপরাহ্ন ৫ টা হইতে আরম্ভ করিয়া বঙ্গ দেশী ও বেহার বাসী সকলে একত্রে সম্মিলিত হওতঃ অত্যন্ত উৎসাহ পূর্ব্বক নগর সংকীর্ত্তন করিয়া ৭ টার সময় সভায় প্রত্যাবৃত্ত হইলেন। সন্ধ্যার সময় ভগবতীর আরতি ও নৈবেদ্য ভোগ হইল। তৎ পরে সভায় পণ্ডিত মহাশয় বাগ্বাদিনীর ধ্যান পাঠ করিলেন, আর জগজ্জননী

परिपूर्णं कटाहं त
स्वर्णं रौप्यैर्महाधनम्॥ ४९॥

अनन्तर कर्ण ने पुनर्ज्जीवित होकर देखते कि वह लोह के कड़ाह महामूल्य धन औ सुवर्ण वा रुपा आदि मे परिपूर्ण है।

त्रिलोक्यातीव सन्तुष्टो
धर्म्मात्मा सूतनन्दनः।
समस्तन्तद्धनं प्रातः
र्ददौ दीनेभ्य एव सः॥ ५०॥

इतना देखकर धर्म्मात्मा कर्ण परम संतुष्ट मन मे वह सब धन लेके कर प्रातः काल को दीन दरिद्रों को दान करते थे॥ ५०॥

इति श्रीराजकुमार तर्करत्न विरचितं मुक्तोपाख्यानं समाप्तं।

मतिहारी आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा।

३ तिसरे साल के उत्सव का कार्य्य विवरण।

प्रथम सर्व सामर्थ्यवान परमात्मा को प्रणाम करते हैं, जो निर्गुण निराकार रुप से आकाश के समान सर्वव्यापी रहने पर भी इन्द्रियगोचर में नहीं आते वरन मन बुद्धि से परे रहते हैं और रस के तुल्य प्रेमियों के भाव अनुसार निज सगुण स्वरुप का अनेक रंग रुप गुण देखा कर सबों को प्राप्ति अपनेहो में देखलाते हैं। "सौराः शैवाश्च गाणेशाः वैष्णवाः शक्ति पूजकाः। मामेव प्राप्नुवन्तिह वर्षाम्भः सागरं यथा॥

१म दिन। ११ बजे दिन से संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थियों को परीक्षा आरम्भ हो कर लग भग ६ बजे संध्या समय तक हुई, विद्यार्थी व्याकरण के १२ वो ज्योतिष के ५ पारतोषिक पाने के योग्य हुये।

२य दिन। सभा मे श्रीमन्नारायणजी वो भगवती की पूजा हुई। १ बजे से ३ बजे तक शहर भर के ब्राह्मण संतों को भोजन कराया दक्षिना दे कंगालों को अन्न दान दिया गया। ५ बजे से ७ बजे रात तक सब आर्य्य-सन्तान बंग देसी वो बिहारी परस्पर मिल के नगर संकीर्तन बड़े उत्साह से करते हुए फिर सभा मंदिर में उपस्थित हुये। देवी की आरती हुई। नैवेद भोग लगा। उपरान्त इस के सभा पंडित महाशय ने देवी को ध्यान पाठ करे। उपरान्त जीवों के भौतिक दुःख बिचार जगत

সগুণ স্বরূপে জীবকে অভয় প্রদান করেন, ইহাই বিস্তার পূর্ব্বক ব্যাখ্যান করিয়া ভক্ত গণের চিত্ত ভক্তিরসে আর্দ্র করিয়া দিলেন।

অনন্তর সভার সম্পাদক শ্রীবাবু রঘুনন্দন লাল সভার ধনাগম ও ব্যয় এবং কার্য্য বিবরণ সাধারণ সমক্ষে পাঠ করিলেন। তৎপরে শ্রীবাবু দরবারি লাল সভা স্থাপনের আবশ্যকতা ও ধর্ম্ম প্রচারের উন্নতি কল্পে বিস্তার পূর্ব্বক একটী বাচনিক বক্তৃতা করিলেন। অতঃপর শ্রীরঘু নন্দন লাল আনন্দ পূর্ব্বক দুইটী ব্যাকরণে পরীক্ষোত্তীর্ণ প্রধান বালককে বার্ষিক ৬৲ টাকা করিয়া বৃত্তি দিবেন স্বীকার করিলেন। পরিশেষে পণ্ডিত গণের মর্য্যাদা রক্ষা করিয়া প্রসাদ বণ্টন পূর্ব্বক সভার উৎসব সমাপ্ত হইল।

তিন বৎসর পূর্ব্বে এই মতিহারীতে কোন ভদ্র লোকের কোন ব্রত পূজাদির আবশ্যক হইলে এমনকি দূর দেশযাত্রার শুভ দিন জানিতে হইলে একটী যোগ্য পণ্ডিত পাওয়া যাইত না। লোকে কোন প্রকারে কার্য্য সমাধা করিত। এখানকার অনেক ব্রাহ্মণে সন্ধ্যা গায়ত্রী পর্য্যন্তও জানিত না। তর্পণাদির কেবল নাম মাত্র জানিত। কিন্তু এই ধর্ম্ম সভার সংস্থাপনের পর মতিহারীর মলিন মুখের পরিবর্ত্তন হইয়াছে ও ক্রিয়া কর্ম্ম অনুষ্ঠানের সুবিধা হইয়াছে।

মতিহারী। শ্রীরঘুনন্দন লাল।

বিজ্ঞাপন
সুনীতি।

আগামী ১লা কার্ত্তিক হইতে "সুনীতি" নাম্নী (রায়েল আট পেজা এক ফর্ম্মার আকারে) একখানি পাক্ষিক পত্রিকা প্রকাশিত হইবে। বালক ও যুবক বৃন্দের হৃদয়ে আর্য্যরীতি নীতির প্রবর্ত্তন ও আর্য্য ভাবের উদ্দীপনা করাই ইহার মুখ্য উদ্দেশ্য। ইহার অগ্রিম বার্ষিক মূল্য ডাকব্যয় সহিত ১৸০; কিন্তু দুর্গা পূজার পূর্ব্বে মূল্য প্রেরণ পূর্ব্বক গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইলে ১৲ মাত্র লাগিবে। টাকা না পাইলে কাহাকেও গ্রাহক মধ্যে গণ্য করা হইবেনা। আর্য্য সন্তান গণ! আর্য্য ভাবে উদ্দীপিত ও উৎসাহিত হইয়া শীঘ্র ২ "সুনীতির" গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হউন—ভারতের মলিন মুখ পুনরুজ্জ্বল করুন।

ধর্ম্মামৃত যন্ত্রালয়। মিসির পোখরা, বারাণসী। বশম্বদ শ্রীভূধর চট্টোপাধ্যায়

को अभय देनेवाले हैं इस भाव को विस्तार से व्याख्या करके सभासदों को प्रेम रस से भिंगाया।

इस के बाद श्रीरघुनन्दन लाल संपादक सभा के साल भर का जमा खर्च वो कार्य्य विवरण और कार्य्यों के परिक्षा फल को पढ़ सुनाया।

तदन्तर श्री दरबारी लाल ने खड़ा हो सभा के न रहने से जो हानि है वा इस के होने से जो लाभ है और धर्म्म का प्रचार वो उन्नति किस भांति से होती है इस को विस्तार से कहा उनकी वक्तृता होजाने पर श्री रघुनन्दन लाल ने बड़ी प्रसन्नता से दो विद्यार्थियों से जिन्हों ने अति उत्तम परीक्षा व्याकरण में दी थी, एक विद्यार्थी को छः रुपया सालाना देने का अंगीकार किया इसके बाद पंडितों का सतकार किया गया, और प्रसाद बंटने पर हरिध्वनि करके सभा का उत्सव समाप्त हुआ।

यही मोतिहारी है जहां तीन बरस पहिले यदि किसी सभ्य को कोई पूजा करने की आवश्यकता या यात्रा पूछना होती थी तो विद्वान ब्राह्मण न रहने के कारण निराश हो किसी न किसी तरह चला लेते थे। यहां के ब्राह्मणों में प्राय: संध्या गायत्री तर्पणादि क्रिया को तो नाम मात्रही जानते थे. अब वही मोतिहारी है कि जहां घर घर विद्यार्थी अपने क्रियाकर्म्म में तत्पर होते हुये हैं। यह केवल सभा का फल है।

विज्ञापन।
सुनीति।

(रयेल ८ पेजी एक फर्म्मा की पाक्षिक पत्रिका)

आगामी कार्त्तिक मास से नियम पूर्ब्बक (बंग भाषा में) प्रकाशित होगी। बालक वो युवकों के हृदय में आर्य्य रीति नीति की प्रवर्त्तना वो आर्य्य भाव की उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मोल १॥); किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज के ग्राहक बनने से १) एक रुपया मात्र लगेगा। बिना रुपया पाये किसही को ग्राहकों के मध्य में नहीं गिना जायगा। आर्य्य सन्तानगण! आर्य्य भाव से उद्दीपित वो उत्साहित होकर शीघ्र शीघ्र "सुनीति" के ग्राहक बनीये। भारत के मलिन मुख पुनरुज्ज्वल कीजिये।

धर्म्मामृत यंत्रालय। मिसिर पोखरा, बारानसी। वशंवद। श्रीभूधर चट्टोपाध्याय।

বিদেশীয় এজেণ্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু	কেদার নাথ গঙ্গোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,,	যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	মতিহারী
,,	জগদ্বন্ধু সেন	লাহোর
,,	পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	রামপুরহাট
,,	বিহারীলাল রায়	জামালপুর
,,	রমেশ চন্দ্র সেন	ঐ
,,	হেমচন্দ্র দাস	ঐ
,,	মতিলাল সেন	মুরশিদাবাদ
,,	রাজ কৃষ্ণ দাস	বহরমপুর
,,	ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী	গয়া
,,	অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায়	

৬৬ নং কালেজ ষ্ট্রীট, কলিকাতা

এজেণ্ট মহোদয় গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্ম প্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহ-সহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করা হইবে।

২। ধর্ম্ম প্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডরে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্ম প্রচারকের ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার।

উত্তম কাগজে মুদ্রিত		বার্ষিক	৩।৵০	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম	ঐ	ঐ	,,	২।৵০	,,	।০
সাধারণ	ঐ	ঐ	,,	১।৵০	,,	৵০

ধর্ম্ম প্রচারক কার্য্যালয়। মিসির পোখরা। বারাণসী

শ্রীপূর্ণানন্দ সেন
কার্য্যাধ্যক্ষ।

☞ এই পত্রিকা প্রতি পূর্ণিমাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम।

श्रीयुक्त बाबू	केदारनाथ गंगापाध्याय	भागलपुर।
,,	यादवचन्द्र बन्द्यापाध्याय,	मतिहारी।
,,	जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,,	पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,,	बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,,	रमेशचन्द्र सेन,	,,
,,	हेमचन्द्रदास	,,
,,	मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद।
,,	राजकृष्ण दास	बहरमपुर।
,,	अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय, ६६ नं०, कलेज ष्ट्रीट कलकत्ता।	

एजेण्ट महोदयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द और उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्र का मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना होगा। पत्र बैरिं होता नहीं लिया जायगा।

३। मोल्य सम्भवतः प्रोष्टाल मनि अर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार का है।

उत्तम कागज पर छपा हुआ	वार्षिक	३।৵	प्रतिसंख्या।
मध्यम	,,	२।৵	।०৵
साधारण	,,	१।৵	৵

धर्म्म प्रचारक कार्य्यालय। मिसिरपोखरा, बाराणसी।

श्रीपूर्णानन्द सेन
कार्य्याध्यक्ष।

☞ यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है।

Printed at the Dharmamrita Press. Missir Pokhra, Benares.

" একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৬ ষ্ঠ ভাগ। | শকাব্দা ১৮০৫।
৪র্থ সংখ্যা। | শ্রাবন— পূর্ণিমা

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातिय: ।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

६ष्ट भाग। | शकाव्दा १८०५।
४र्थ संख्या | श्रावण--- पुर्णिमा।

আচার্য্যের উপদেশ।

"বেদ মনূচ্য আচার্য্যোঽন্তেবাসিন মনুশাস্তি সত্যংবদ ধর্ম্মং চর স্বাধ্যায়ান্মা প্রমদঃ আচার্য্যায় প্রিয়ং ধনমাহৃত্য প্রজাতন্তুং মা ব্যবচ্ছেৎসীঃ সত্যান্ন প্রমাদিতব্যম্ ধর্ম্মান্ন প্রমদিতব্যম্ কুশলান্ন প্রমদিতব্যম্ ভূত্যৈন প্রমাদিতব্যম্ দেব পিতৃ কার্য্যাভ্যাং ন প্রমদিতব্যম্ মাতৃদেবো ভব পিতৃদেবো ভব আচার্য্য দেবো ভব অতিথি দেবো ভব যানি অনবদ্যানি কর্ম্মাণি তানি সেবিতব্যানি নো ইতরাণি যান্যস্মাকং সুচরিতানি তানিত্বয়োপাস্যানি নোইতরানিএকে চাস্মৎ শ্রেয়াংসো ব্রাহ্মণাঃতেষাং ত্বয়া আসনেন প্রশ্বসিতব্যম্ শ্রদ্ধয়া দেয়ম্ অশ্রদ্ধয়া অদেয়ম্ শ্রিয়া দেয়ম্ হ্রিয়া দেয়ম্ ভিয়া দেয়ম্ সংবিদা দেয়ম্ অথ যদি তে কর্ম্ম বিচিকিৎসা বা বৃত্ত বিচিকিৎসা বাস্যাৎ যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সম্মর্শিনঃ যুক্তা অযুক্তাঃ অলূক্ষা ধর্ম্ম কামাঃ স্যুঃ যথা তে তত্র বর্ত্তেরন্ তথা তত্র বর্ত্তেথাঃ অথাভ্যাখ্যা-

आचार्य्य का उपदेश।

वेद मनूच्य आचार्य्योऽन्तेवासिन मनुशास्ति—सत्यंवद धर्म्मं चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः आचार्य्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः सत्यान्न प्रमदितव्यम् धर्म्मान्न प्रमदितव्यम् कुशलान्न प्रमदितव्यं भूत्यै न प्रमदितव्यम् मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य्य देवोभव अतिथिदेवोभवयानि अनवद्यानि कर्म्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि एके चास्मत् श्रेयांसो व्राह्मणा: तेषां त्वया आसनेन प्रश्वसितव्यम्-श्रद्धया देयम् अश्रद्धया अदेयम् श्रिया देयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म्म विचिकित्सा वा वृत्तिविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्रव्राह्मणा: सम्मर्शिन: युक्ता अयुक्ता: अलूक्षा धर्म्मकामा: स्युः यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथाभ्याख्याते षु ये तत्र व्राह्मणा: सम्मर्शिन: युक्ताः अयुक्ता: अलूक्षा धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु

তেষু যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সম্মর্শিনঃ যুক্তাঃ অযুক্তাঃ অলূক্ষা ধর্ম্ম কামাঃস্যু যথা তে তেষু বর্ত্তেরন্ তথা তেষু বর্ত্তেথাঃ এষ আদেশঃ এষ উপদেশঃ এষা-বেদোপনিষৎ এতদনুশাসনম্ এবমুপাসিতব্যম্ এবমুচৈচস্তদুপাস্যম্।”

“আচার্য্য শিষ্যকে বেদ শিক্ষা দিয়া এইরূপ উপদেশ দিতেছেন। সত্য কথা কহিবে। স্বীয় ধর্ম্মের অনুষ্ঠান করিবে। অধ্যয়ন করিতে আলস্য করিবেনা। আচার্য্য কে তাঁহার অভীপ্সিত ধনাহরণ করিয়া প্রদান করিবে। অনন্তর তাঁহার নিকট আদেশ গ্রহণ করিয়া দার পরিগ্রহ করিবে। দার পরিগ্রহ করিলে প্রজা বৃদ্ধি হইবে ; অতএব ইহার অন্যথা চরণ করিয়া প্রজা বৃদ্ধির বিচ্ছেদ করিবেনা। দেখ, দার পরিগ্রহ করিয়া যেন সত্য ধর্ম্ম হইতে চ্যুত হইওনা। গার্হস্থ্য ধর্ম্মানুষ্ঠানে আলস্য করিবেনা। আত্ম রক্ষা কার্য্যে আলস্য করিবেনা। শুভ কার্য্যের অনুষ্ঠানে আলস্য করিবেনা। অধ্যয়ন ও অধ্যাপন কার্য্যে আলস্য করিবেনা। দেবকৃত্য ও পিতৃকৃত্যের অনুষ্ঠানে আলস্য করিবেনা। মাতাকে দেবতা জ্ঞান করিবে। পিতাকে দেবতা জ্ঞান করিবে আচার্য্য কে দেবতা জ্ঞান করিবে অতিথিকে দেবতা জ্ঞান করিবে। ফলতঃ লোকে যে সকল কর্ম্ম অনিন্দিত সেই সকল কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিবে তদ্ভিন্ন নিন্দিত কর্ম্মের কদাচ অনুষ্ঠান করিবেনা। শেষ কথা এই আমরা অর্থাৎ তোমাদের পূর্ব্বতন অশেষ বেদবিৎ আচার্য্য মহোদয় গণ যে সকল কার্য্য করিয়া গিয়াছেন তোমরা সেই সকল কার্য্যের অনুষ্ঠানেই যত্নশীল হইবে ; আপন মনোগত যথেচ্ছ ব্যবহার করিতে প্রবৃত্ত হইবেনা। ব্রাহ্মণ উপস্থিত হইলে, পাদ্য ও আসনাদি দ্বারা তাঁহার শ্রমাপনোদন করিবে। ব্রাহ্মণ গণকে শ্রদ্ধা পূর্ব্বক দান করিবে। অশ্রদ্ধার সহিত দিবেনা। ঐশ্বর্য্যের সহিত দান করিবে। লজ্জার সহিত দান করিবে। অর্থাৎ মনের উৎসাহ বৃদ্ধির জন্য দান কার্য্যের আড়ম্বর কর ক্ষতিনাই কিন্তু মনে মনে লজ্জিত হইও অথবা তুমি যতই কেন দাওনা তথাপি উহা অল্প, এই বিবেচনা করিয়া লজ্জিত হইবে। লজ্জিত হইয়া সেই লজ্জা ঢাকিবার জন্য গুপ্ত ভাবে দান কার্য্য সমাধা করিবে। এবং ভয়ে ভয়ে দিবে। অর্থাৎ আমি যথেষ্ট

वर्त्तेथाः। एष आदेशः एष उपदेशः एषा वेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैस्तदुपास्यम्।'

वेद की शिक्षा देकर आचार्य्य ने शिष्य को इस भांति उपदेश दे रहा है। सत्य बोलना। निज धर्म्म अनुष्ठान करना। पढ़ने में आलस्य न करना। आचार्य्य के मनोभिमत द्रव्य संग्रह कर उन को दे देना। अनन्तर उन से अनुमति ले कर विवाह करना। दार परिग्रह करने पर प्रजा की संख्या बढ़ जायगी। अतएव इस को अन्यथा कर प्रजावृद्धि को न रोकना। सावधान रहना, जैसा कि विवाह करके सत्य धर्म्म से च्युत नहो। आश्रम योग्य धर्म्मानुष्ठान में आलस्य न करना निज कुशल के अर्थ आलस्य न करना। शुभ कार्य्य करने में आलस्य न करना। पढ़ने वो पढ़ाने में आलस्य न करना। देवकृत्य वो पितृ कृत्य करने में आलस्य न करना। माता को देवता जानना। पिता को देवता जानना। आचार्य्य को देवता जानना। अभ्यागत को देवता जानना। फलतः लोक में जो सब कार्य्य अनिन्दित हैं वही सब करना वो निन्दित कर्म्मों को कभी न करना अन्त को यह स्मरण रखना कि हम सब अर्थात तुम्हारे पूर्व्वतन अशेष वेदवित् आचार्य्य महोदयों ने जो २ कार्य्य कर गये, तुम्हे भी वही कर्म्म में करने में लगे रहना। स्वेच्छानुसार किसी काम में प्रवृत्त न होना। ब्राह्मण तुम्हारे स्थान पर आजाने से उन को पाद्य वो आसनादि देकर विश्राम करावना। ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्व्वक दान देना। अश्रद्धा से न देना। साथ ऐश्वर्य्य के दे देना। लज्जा मानकर दान करना। मन के उत्साहार्थ चाहे दान देने में बाहर २ बड़े आड़म्बर फैलाओ किन्तु मने मन लज्जित होना, अथवा तुम जितना ही क्यों न दो तथापि उस को अल्प समझ कर लज्जित होना। लज्जित हो कर फिर उस लज्जा को ढापने के लिये गुप चुप दान करते रहना औ भय भीत होकर दान करना। अर्थात मैं बहुत कुछ देता हुं ऐसा मानकर अभिमान न प्रगट करना। श्रुति के स्मृति के वा व्यवहार मात्र के किसी प्रबंध

দিতেছি জ্ঞান করিয়া অহংকার ভাব প্রকাশ করিবেনা। যদি তোমার শ্রৌত, স্মার্ত্ত বা আচার প্রাপ্ত কর্ম্মে সন্দেহ উপস্থিত হয় তাহা হইলে সেই প্রদেশে সেই সময়ে যে সকল ব্রাহ্মণ গণ বিচারক্ষম, অভিজ্ঞ, স্বতন্ত্র, অক্রুরমতি, ও ধর্ম্ম কামুক হইবেন তাহারা সেই শ্রৌত স্মার্ত্ত-বা আচার পরম্পরা প্রাপ্ত কর্ম্মে যেরূপ প্রবৃত্ত হইবেন তুমিও সেইরূপ প্রবৃত্ত হইবে। ইহাই আদেশ ইহাই উপদেশ। এই বাক্যই উপনিষৎদের সার। ইহাই ঈশ্বরের বাক্য। অতএব এইরূপেই উপাসনাকর্ত্তব্য। অবশ্য এই রূপেই উপাসনা কর্ত্তব্য। অবশ্য এইরূপেই উপাসনা কর্ত্তব্য "।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(জ্যোতি র্বিজ্ঞান সমালোচনা)

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

৩য় কারণ। অদৃষ্ট—ধর্ম্ম বা অধর্ম্মকে অদৃষ্টবলে। কার্য্যে পরিণত মনোবৃত্তি সকলের অতীতাবস্থা গত সংস্কার ভাব মাত্রকে, যদ্দ্বারা বারম্বার সেই প্রকার বৃত্তিরই কার্য্য হইতে থাকে, ধর্ম্মাধর্ম্ম কহে। এতদ্দ্বারা যে প্রকারে মানবের স্বভাব গঠিত হয় তাহা অতি আশ্চর্য্য ও পরমানন্দ বর্দ্ধক, কিন্তু সংক্ষেপে তাহার কিঞ্চিন্মাত্র বলিলে সবিশেষ উপকার নাই, এজন্য এখানে সর্ব্বথাই নিরস্ত থাকিলাম।

৪ র্থ কারণ।—পিতার স্বভাবিক প্রকৃতি। প্রত্যক্ষই ইহার প্রধান প্রমাণ।

৫ ম কারণ। মাতার স্বাভাবিক প্রকৃতি ইহারও প্রত্যক্ষ প্রমাণই জাজ্বল্য মান।

৬।৭ ম কারণ। প্রথম জন্ম কালীন পিতা মাতার প্রকৃতি।

৮ ম ঐ। গর্ভাবস্থায় মাতার প্রকৃতি।

১১ শ ঐ। আহার।

১২ শ ঐ। আচার।

১৩ শ ঐ। সংসর্গ।

এ সকলের প্রমাণও প্রত্যক্ষ দণ্ডায়মান রহিয়াছে।

ক্রমশঃ।

চারু চিন্তাবলী।

২৩। ঢাকের বাদ্য বহুদূর ভেদ করিয়া গমণ করে, কারণ তাহার অভ্যন্তর ভাগ অতীব দীর্ঘায়-

पर यदि तुम्हारा कुछ शंका उठे तो उस प्रदेश में उस समय जो सब ब्राह्मण को विचार पटु, अभिज्ञ, स्वतंत्र, अक्रुरमति वा धर्म्मकामी होय पडेगा. उन सब के श्रौत स्मार्त्त वो आचार अनुसार तुम्हें भी कार्य्य में प्रवृत्त रहना। यही आदेश है। यही उपदेश है। इसी वाक्य को उपनिषदों का सार जानना। इसही को ईश्वर वाणी कर मानना। अतएव इसही रीति से उपासना करना। अवश्य इसही रीति से उपासना करना।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(ज्योतिर्व्विज्ञान की समालोचना)

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

३रा कारण। अदृष्ट— धर्म्म या अधर्म्म को अदृष्ट कहा जाता है। कार्य्य में परिणत मनोवृत्तियों की अतीत अवस्था को प्राप्त हुआ संस्कार भाव मात्रही का नाम, जिस से बार बार उसी प्रकार वृत्ति ही का कार्य्य होते रहे, धर्म्मा धर्म्म है। इस से मनुष्यों की प्रकृति जिस रीति से बनती है, वह परम आश्चर्य्य और अतीव आनन्द बर्द्धक है, किन्तु उस के संक्षेप मात्र कहने से यथा योग्य उपकार नहीं होगा। इसलिये यहां उस बात को उठाने में हम सर्व्वथा निरस्त रहे।

४र्थ कारण। पिता की स्वाभाविक प्रकृति। इस का फल प्रत्यक्षही देख पड़ता है।

५म कारण। माता की स्वाभाविक प्रकृति। इस का भी प्रत्यक्ष प्रमाण तैयार है।

६।७ कारण। प्रथम जन्म के समय पिता वो माता की प्रकृति।

८ वां कारण। गर्भकाल में माता की प्रकृति।

११ हां कारण। आहार।

१२ हां कारण। आचार।

१३ हां कारण। संसर्ग।

इन सब के भी प्रत्यक्ष प्रमाण विद्यमानही है।

शेष आगे।

चारु चिन्तावली।

२३। ढाक बजने पर उस की ध्वनि बहुत दुर तक चली जाती हैं, क्योंकि उसका भीतर अत्यन्त

তন, কিন্তু উহা এত কঠোর, শ্রুতিকটু ও তীব্র যে তাহা থামিলেই কর্ণ কুহর শীতল হয়। সাধক! প্রশস্ত হৃদয়ের বাক্য দূর দেশ পর্য্যন্ত প্রতিধ্বনিত হয়, কিন্তু উহা সারবান না হইলে লোকের চিত্ত আকর্ষণ করিতে পারেনা। প্রশস্ত হৃদয়ে সার পূর্ণ কথা প্রয়োগ করিবে, নতুবা তোমার উপদেশ অনাস্থার স্রোতে ভাসিয়া যাইবে।

২৪। তুমি যদি বিশ্বাস কর যে ঈশ্বরকে পূজা করিলে তিনি তোমার প্রতি সন্তুষ্ট হইবেন। তবে তাঁহাকে কিরূপ উপচারে পূজা করিবে স্থির করিয়াছ। তাঁহার দ্রব্য লইয়া তাঁহাকে পূজা করিলে কি তিনি সুখী হইবেন? যাহার যাহার প্রচুর আছে তাহা তাহাকে দিলে সে ব্যক্তি কখনই বিশেষ আনন্দিত হয় না। যাঁহার যাহা নাই তাহাই তাঁহাকে উপহার দেও, তিনি সন্তুষ্ট হইবেন। পত্র, পল্লব, জল, বস্ত্র অলঙ্কার, ধূপ দীপ নৈবেদ্য, চন্দন, আদির তাঁহার যথেষ্ট আছে কেবল ইহাতে কি তিনি সন্তুষ্ট হইবেন? সাধক! তিনি পূর্ণ, তাঁহার কিছুরই অভাব নাই, সুতরাং তাঁহার "দীনতা" নাই। তুমি "দীনতার" ডালি উপহার দিয়া সজল নয়নে করযোড়ে তাঁহার পূজা কর, তাঁহার আশীর্ব্বাদ লাভ করিবে।

২৫। যদি তুমি মণি লাভ করিয়া ধনী হইতে চাও তবে ফণীর ভয় তুচ্ছ বোধ কর। যদি ভগবানের কৃপা লাভে সুখী হইতে ইচ্ছাকর। তবে লোক নিন্দার ভয়, মান মর্য্যাদা হানির ভয়ও নিজ বৈষয়িক গৌরব ও প্রতিষ্ঠা লোপের ভয় করিওনা।

২৬। হস্তী যখন লোকালয়ের মধ্য দিয়া চলিয়া যায় কুকুর গণ তাহার পশ্চাতে দূরে থাকিয়া চিৎকার করিতে থাকে, হস্তী তাহার দিকে দৃকপাতও করেনা। উন্নতমনা মহাত্মা গণ যখন লোক সমাজের হিতার্থে ব্রতী হইয়া কার্য্যক্ষেত্রে বিচরণ করিতে থাকেন, তখন নিন্দাবাদী ও অন্যান্য কত লোকে কত কথাই বলিতে থাকে, কিন্তু তাহাতে মহাত্মাগণের গতিরোধ হয় না, হস্তিপকের ইঙ্গিতে যেমন হস্তী চলিয়া যায় তদ্রূপ তাঁহারাও ভগবদ্দত্ত সাধু ইচ্ছার বশবর্ত্তী হইয়া অগ্রসর হইতে থাকেন। স্বয়ং ভগবান তাঁহাদের পরিচালক ও সহায়।

फैला हुआ वो बिगाल है। किन्तु वह इतना कठोर, कर्ण-कटु वो तीव्र है, जो उस के ठहर जाने ही पर कर्ण-कुहर शीतल होते हैं।

हे साधक! प्रशस्त हृदय की बातें बहुत दूर तक ध्वनित होती या फैल जाती है, किन्तु वे यदि सारवान नहीं, तो लोगों के मन को नहीं खींच सक्ती है। जब बोलना, तो प्रशस्त हृदय से सार पूर्ण कथा बोलते रहना, नहीं तो तुम्हारे उपदेश सब अनास्था की धारा में बहिजाने बहे जांगे।

२४। यदि तुम्हारा यही बिश्वास है कि भगवान को पूजने पर वे तुम पर सन्तुष्ट होंगे, तो किस रीति से उन की पूजना स्थिर किये हो? उन्ही की सामग्री से उन्हीं को पूजने पर वे क्या तुष्ट होंगे? जिस का जो द्रव्य बहुत है, उस को उस द्रव्य देने से वह कभी विशेष रूप आनन्दित नहीं होते हैं। जिन के पास जो सामग्री नहीं, उन को वही सामग्री भेट चढ़ाओ, वे हर्षित होंगे। पत्र, पल्लव, जल, बस्त्र, भूषण, धूप, दीप, नैवेद्य, चन्दन आदि उन के घर में बहुत हैं, केवल इतने ही से क्या वे तुष्ट होंगे? हे साधक! वे तो पूर्ण हैं, किसी सामग्री का अभाव उन का नहीं है, अतएव वे "दीनता" रहित हैं। तुम "दीनता" की डाली सजाकर उन को भेट चढ़ाओ वो सजल नेत्र से कर जोड़ के उन की पूजा करो, उन से आशीर्बाद मिलेगा।

२५। मणि से यदि तुम धनी बनने चाहो, तो फणी के भय को तुच्छ मानो यदि भगवत की कृपा से सुखी होने मांगो, तो लोक निन्दा का भय, मान मर्य्यादा हानि का भय, निज वैषयिक गौरव वो प्रतिष्ठा नष्ट होने का भय मत करो।

२६। हाथी जब बाजार में चला जाता है, तब कुत्ते सब दूर २ से बहुत भौंकते रहते हैं किन्तु हाथी उस पर कुछ भी ध्यान नहीं देता है! उन्नत हृदय महात्मा गण जब समाज के हितार्थ ब्रती हो कर कार्य्य क्षेत्र में विचरते रहते हैं, उस समय निन्दक गण वो अन्यान कितने लोग कितने ही कुछ कहा करते, किन्तु उसे महात्माओं की गति कभी नहीं रुकती है। हाथीवान की इसारे से जैसा हाथी चला जाता है, उस रीति उन्हों ने भी भगवत की प्रेरणा के बस होकर आगे बढ़े जाते हैं। भगवन स्वयं उन्हों के चालक वा सहायक बने रहते हैं।

আর্য্য ধর্ম্মের উন্নতি।

দেখা যাইতেছে পৃথিবীর সর্ব্বত্রেই উন্নতির চিহ্ন দিন ২ বৃদ্ধি পাইতেছে। আসিয়া, য়ুরোপ, আফ্রিকা, আমেরিকা সকলেই উন্নতির পশ্চাতে ধাবমান, এক দেশ অপর দেশের গতি অতিক্রম করিতে যত্নবান রহিয়াছে। ধর্ম্ম, কর্ম্ম, রীতি নীতি সমস্ত বিষয়েই অগ্রসর হইতে সকলের সবিশেষ চেষ্টা, আমাদিগের ভারত ভূমি যদিচ পৃথিবীর বহির্ভূত নহে, যদিচ ভারতবর্ষ আসিয়ার একটী প্রকাণ্ড খণ্ড, কিন্তু ইহার উন্নতির বেগ সকল দেশ হইতেই পশ্চাতে পড়িয়া আছে। যে দিকে দৃষ্টি পাত করুন যে বিষয় অবলোকন করুন দেখিবেন ভারতের গতি ধীর ও মন্থর শিথিল। জড়তা, আলস্য, দুর্ব্বলতা ও দিবা রাত্রি তন্দ্রা বা বিশ্রাম সুখ-সেবা ভারতকে আচ্ছন্ন করিয়া রাখিয়াছে। সমাজ নীতির প্রচুর প্রচার, ধর্ম্ম নীতির সংস্কার, সদসদ্বিচার, ব্যবসায়ের উন্নতি, সামাজিক সুখ বিধানের চেষ্টা যত কিছু কার্য্যই কেন হউক, ভারত তাহা সুখ শয্যায় শুইয়া নিদ্রিতাবস্থায় সাধন করিতে চাহে। ভারতের নিদ্রা কুম্ভকর্ণের নিদ্রাকেও পরাভব করিয়াছে। নিদ্রিতের ধন চৌরে অপহরণ করিলে সে জানিতেও পারেনা। নিদ্রিত ভারতের ধন বিদেশী গণ লইয়া গেল, ভারতের তন্দ্রা ভাঙ্গিলনা, বিদেশী গণ ভারতের ধর্ম্ম নষ্ট করিল, ভারত জাগিল না, বিদেশী গণ ভারতের বিদ্যার প্রতিভা হানি করিল, ভারত তথাচ নিদ্রিত, বিদেশী গণ ভারতের ধনে ধনী হইয়া ভারতকে তাহাদের পাদুকার ছায়ায় আশ্রয় দিল, অচেতন ভারত তাহাও আনন্দ পূর্ব্বক মানিয়া লইল, ভারতকে মূর্খ বলিল, ভারতকে বিধর্ম্মী বলিয়া তিরস্কার করিল, দুর্ব্বল বলিয়া ঘৃণা করিল, ভারত এতাবৎ অবনত মস্তকে স্বীকার করিল। যে ভারতের

आर्य्य धर्म्म की उन्नति।

आजकल पृथिवी के सब देशों में उन्नति और आगे बढ़ने की चेष्टा दिखाई देती है। एशिया, योरोप, आफ्रिका, अमेरिका सब उन्नति के पीछे पड़े हैं, सब, एक दूसरे का उन्नति की दौड़ में पीछे डालना चाहते हैं। धर्म्म, कर्म्म, रीति, नीति सब में सब की आगे बढ़ने की चेष्टा हो रही है। यद्यपि हमारा भारतवर्ष पृथिवी से बाहर नहीं है, यद्यपि भारतवर्ष एशिया का एक बड़ासा खण्ड है, परन्तु इस उन्नति की दौड़ में यह सब से पीछे है, जिस तरफ देखिये, जिस विषय में देखिये भारतवर्ष ठंढी सांसे ले रहा है। जड़ता, आलस्य, कायरपर और दिनरात सोनेकी इच्छा, हमारे भारतवासियों को घेरे हुई है। समाज नीतिका प्रचार, धर्म्मनीति का संस्कार और सद्सद्विचार, व्यवसाय की उन्नति, सामाजिक सुखविधान की चेष्टा, इत्यादि जितने काम हैं, सब को भारतवासी सोये हुए करते हैं। इनकी निद्रा कुम्भकर्ण की निद्रा से भी बड़ी है। सोये आदमी का धन चोर उठाये लिये जाता है, परन्तु उसको कुछ खबर नहीं होती, निद्रित भारत वासियों का धन विदेशी लिये जाते हैं, भारत पड़ा सोता है, विदेशियोंने भारतवासियों का धर्म्म लेलिया, भारतवासी सोये हैं, बिदेशियों ने भारत वासियों की विद्या लेली, भारतबासी सोये हैं। विदेशियों ने भारतवासियों के धनसे धनी होकर इनको अपना आश्रित बनाना चाहा, सोये भारतने खुशीसे वही मान लिया, भारत को मूर्ख कहा, भारतको बिधर्म्मी कहा, कायर कहा, सब भारतने इसको अङ्गीकार कर लिया। जिस भारत का धर्म्म पैसफिक समुद्र से भी गंभीर है, जिस भारतके धर्म्म में भक्ति, ज्ञान, योग, बैराग्य, प्रेम, ईश्वरोपासना इत्यादि किसी बिषय के उपदेश का अभाव नहीं है,

ধৰ্ম্ম প্রশান্ত মহাসাগর হইতেও সুগভীর, যে ভারতের ধর্ম্মে ভক্তি, জ্ঞান, যোগ, বৈরাগ্য, প্রেম, ঈশ্বরোপাসনা আদি কোন বিষয়েরই অভাব নাই, ভারতের নিদ্রিত সন্তানগণ বিদেশীয়ের কথানুসারে ইদৃশ সর্ব্বোত্তম নিজ ধর্ম্মকে অসার ও যুক্তি বিহীন বলিয়া নির্দ্ধারণ করিল।

একণে ভারতের এই ঘোর নিদ্রা ভঙ্গ করিবার কি কোন উপায় নাই? ভারত কি চিরকাল নিদ্রিতই থাকিবে? এতৎ প্রশ্নোত্তরে হয় তো কেহ বলিবেন, যে যখন সকলেই নিদ্রিত তবে জাগাইবে কে? তন্মধ্যে যে ২।৪ জন জাগ্রত হইল তাহারাও আবার ভ্রাতৃগণের শোচনীয় অবস্থার প্রতি ঘৃণা প্রদর্শন করিতে লাগিল। ভ্রাতৃগণের প্রতি সহানুভূতি প্রকাশ করা দূরে থাকুক তাহাদিগকে অপমান করিতে আরম্ভ করিল, আর যদিবা জাগাইতে চেষ্টা করিল তাহাও গালি দিয়া, তিরস্কার করিয়া ও পদাঘাত করিয়া। হা! এই কৌশলে কি নিদ্রিত ভারত পুনরুত্থিত হইবে? ভর্ৎসনা করিলেই কি ভারত নিজ ধর্ম্ম সমালোচনা ও তত্ত্ব বিচারার্থ প্রবৃত্ত হইবে? ভারতের ধর্ম্ম পুনরুদ্দীপিত করিবার জন্য এক্ষণে সাধু সদ্বক্তার প্রয়োজন হইয়াছে। যিনি সুললিত বক্তৃত্ব শক্তি সামর্থ্য বিশিষ্ট, নিজ ভ্রাতৃগণের অবস্থার তাবত্তত্ত্ব ও তাহাদিগকে সৎপথে আনিবার সদুপায় উত্তমরূপ বিদিত আছেন, তিনিই ঈদৃশ গুরুতর কার্য্যে সুপটু হইবেন। ধর্ম্মার্থ প্রচারের জন্য আমাদিগের আধুনিক ধর্ম্ম প্রচারকগণকে কোন নূতন নিকেতন নির্ম্মাণ করিতে হইবেনা। আমাদিগের পূর্ব্বতন আর্য্য মহাপুরুষগণের বিরচিত ধর্ম্মমন্দির সুসজ্জিত ও শোভিত করিবার জন্য য়ুরোপ হইতে ঝাড়, দেওয়ালগিরি আনাইতে হইবেনা, মন্দির আলোকিত করিবার জন্য গ্যাস বা তাড়িতালোকের প্রয়োজন হইবেনা। আর্য্য ধর্ম্ম নিকেতনে জ্ঞান সূর্য্য উদ্ভাসিত থাকিয়া এরূপ উজ্জ্বল করিয়া রাখিয়াছে যে উহার নিকট সমস্ত দীপ্তিই মলিন

उस भारत के सोये सन्तानों ने विदेशियों के कहने से अपने धर्म्म को सार हीन और युक्ति विहीन ठहराया।

अब क्या भारतवासियों को निद्रा से उठाने का कोई उपाय नहीं है? क्या चिर काल के लिये भारतवासी सोयेही रहेंगे? इस सवालके जवाब में यह कहा जासकता है कि जब सभी सोये हैं तो उनको कौन जगावेगा? तिस पर भी जो दोचार जागे, उनको अपने भाइयों की अवस्था पर घृणा आने लगी, अपने भाइयों के साथ सहानुभूति प्रकाश करने के बदले उन्होंने उनका अपमान किया, और यदि उठाने की चेष्टा भी की तो गाली देके, तिरस्कार करके, और लात मारके। क्या इसी उपाय से सोये भारतवासी उठेंगे? क्या केवल तिरस्कार से भारतवासी अपने धर्म्म की समालोचना और उसके महत्त्व विचार में प्रवृत्त होंगे? यदि विचार के देखा जावे तो भारत के धर्म्म को फिर से उज्जीवित करने के लिये ऐसे सद्वक्ता का अभाव है, जो वक्तृत्व शक्ति रखने के साथ, अपने भाइयों की अवस्था को अच्छी तरह जाने और उन को सत्पथ में लाने का यथार्थ उपाय को पहचाने। धर्म्म के विषय में हमारे आधुनिक धर्म्मप्रचारकों को कोई नई इमारत नहीं बनानी पड़ेगी। हमारे पूर्व पुरुषों के रचित धर्म्ममन्दिर को सजाने के लिये उन लोगों को योरोप से झाड़ दिवालगीर नहीं मंगानी पड़ेगी और, मन्दिर को आलोकित करने के लिये गैस वा बिजली की रोशनी की दरकार नहीं पड़ेगी। इस मन्दिर में ज्ञान का सूर्य्य ऐसा प्रकाशमान है कि उस के आगे सब नई रोशनी फीकी जंचेगी, इस के तेज, इसकी सफाई, इसकी सजावट के आगे विदेशीय सजावट निस्तेज हो जायगी।

हमलोगों ने कितने ही बरसों को अपने [illegible]

হইয়া যাইবে। ইহার তেজ, নির্ম্মলতা, ইহার শোভা দেখিলে বিদেশীয় সভ্য নিতান্ত লজ্জা পাইবে।

আমরা কত বক্তাকে নিজ শাস্ত্র ছাড়িয়া বিদেশীয় শাস্ত্র হইতে উপমা দিতে শুনিয়াছি, নিজ শ্রোতৃ বর্গের হৃদয়ঙ্গম করাইবার জন্য আমরা কত ব্যক্তিকে কঠোর শব্দ ব্যবহার করিতে শুনিয়াছি, ব্যাখ্যান দিবার সময় কত লোককে সুদীর্ঘ সমাস যুক্ত উৎকট ও কঠোর সংস্কৃত পদ প্রয়োগ করিতে শুনিয়াছি। ইহার পরিণাম ফল ইহাই দৃষ্ট হয় যে হয়, শ্রোতা উপদেষ্টার কথা গ্রহণ করার পরিবর্ত্তে তৎসহ বাগ্বিবাদে প্রবৃত্ত হয় নতুবা বিরক্ত হইয়া ধীরে ২ উঠিয়া যায়, বক্তা অবশেষে নিরুপায় হইয়া বসিয়া পড়েন এবং মরুভূমিতে বৃষ্টি পাতের ন্যায় তাঁহার সমস্ত পরিশ্রম নিরর্থক হইয়া যায়।

জ্ঞান বর্দ্ধিনী সভায় আমরা বাবু শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয়ের বক্তৃতা শুনিয়াছিলাম। তাঁহার সমস্ত মতের সহিত আমাদের সম্পূর্ণ ঐকমত্য না হউক কিন্তু তাঁহার বক্তৃতা শুনিলেই যে এক প্রকার আনন্দ অনুভূত হয়, ধর্ম্ম ভাব সকলের মনে উদ্দীপিত হয় ও আর্য্য ধর্ম্ম সংক্রান্ত শাস্ত্রাদি পাঠে রুচি পরিবর্দ্ধিত হয়, তাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। যাঁহারা তাঁহার বক্তৃতা শুনিয়াছেন ইহা তাঁহারা উত্তম রূপ বুঝিতে পারিয়াছেন। ইহাকি সামান্য আশ্চর্য্যের বিষয় যে যে মাড়োয়ারি জাতি ব্যবসা ভিন্ন অন্য কথাই শুনিতে জানেনা, যাহারা এক মাত্র গুরুর পূজাই ধর্ম্মের চরম সীমা স্থির করিয়া রাখিয়াছে, যাহারা ধর্ম্মানুষ্ঠান সময়েও ধুতি, ঘৃত, চিনির দর বিস্মৃত হয় না তাহারাও দেড় ঘণ্টা কাল স্তব্ধ হইয়া ধর্ম্মার্থ বার্ত্তা শুনিতেছিল ও ক্ষণজন্যও চঞ্চল হয় নাই। এতদ্দর্শনে আমাদের বিশেষ আশা হইতেছে যে সেন মহাশয় যদি মধ্যে ২ নিজ বক্তৃতা দ্বারা কলি-

है, कितने लोगों को अपने सुननेवालों के हृदयंगम कराने के लिये कठोर शब्द व्यवहार करते सुना है, कितने लोगों को धर्म्मविषय में व्याख्यान देने के समय बड़े लंबे २ संस्कृत के पद के पद व्यवहार करते सुना है, परन्तु इसका प्रतिफल यही होता है कि या तो सुननेवाले वक्ता के सदुपदेश को ग्रहण करने के बदले लड़ पड़ते हैं और कहीं उकता के अपनी २ राह लेते हैं, वक्ता बिचारे, शोरा गुल मचाके शान्त हो जाते हैं, और चटान पर वर्षा की तरह बिचारे का सब परिश्रम वृथा हो जाता है।

ज्ञानवर्द्धिनी सभा में हमलोगों ने बाबू श्रीकृष्णप्रसन्न सेन की वक्तृता देते सुना, और चाहे हमलोग सब विषय में उनसे एक मत न हों, परन्तु उनकी वक्तृता सुनने होसे जो एक प्रकार आनन्द अनुभव होता है धर्म्मभाव सबके चित्तमें उद्दीपित होता है और आर्य्यधर्म्मके शास्त्रों को पढ़ने की रुचि बढ़ती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगोंने, उनकी वक्तृता सुनी उनको यह अच्छीतरह अनुभव हो गया। यह क्या थोड़े आश्चर्य की बात है कि जो मारवाड़ी जाति सिवाय वाणिज्य की बात के दूसरी बात नहीं सुनना जानते, जो गुरुजी महाराज को पूजनाही धर्म्मकी चरम सीमा समझे हुए हैं जोलोग धर्म्म क्रिया के समय भी 'वाजि', 'कारे', 'घोती', 'घ', 'चीनी' के दर को नहीं भूलते, वेलोग डेढ़ घण्टे तक चुपचाप धर्म्म की बातें सुनते रहे, और जरा न उकताये। हमलोगों को यह देख कर आशा होती है कि यदि सेन महाशय कभी २ अपनी मधुर वक्तृता कलकत्ते की हिन्दुस्तानी समाज के उपकार के लिये दिया करें तो बहुत से सदनुष्ठान जिनका न होना कलकत्ते के लिये कलंक स्वरूप है, उसके होने की भी संभावना हो।

भा: मि:।

কাতা হইতে হিন্দুস্থানী সমাজের উপকারার্থ যত্ন করেন, তাহা হইলে যে ২ কার্য্যের অভাব বশতঃ কলিকাতা কলঙ্কিত আছে, তত্তাবৎ সদনুষ্ঠান অনায়াসে সংসাধিত হইতে পারে।

ভা. মি, ।

প্রাপ্ত পত্র।

সম্পাদক মহাশয় !

আর্য্য কুল গৌরব পাকুড় নিবাসী শ্রীল শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে মহোদয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার কার্য্য সৌকর্য্যার্থে একটী মুদ্রাযন্ত্র দান করিয়াছেন, আমাদের সনাতন ধর্ম্মের সত্যার্থ প্রচার জন্য শ্রীযুক্ত পণ্ডিত রাজ পৌরাণিক শাস্ত্রী চতুর্ভুজ শর্ম্মা ৺ কাশীধাম হইতে জয়পুরে গমন করিয়াছেন এবং পণ্ডিত প্রবর শ্রীযুক্ত শশধর তর্ক চূড়ামণি মহাশয় ও ভা, আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সুযোগ্য সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহোদয় জ্বলন্ত উৎসাহের সহিত আমাদের প্রিয় আর্য্য ধর্ম্মের নিগূঢ় মর্ম্ম সাধারণের সমক্ষে ব্যাখ্যা ও প্রচার করিতেছেন ইহা অপেক্ষা প্রীতিকর সমাচার আর কি হইতে পারে ? বিশেষতঃ পুণ্যধাম বারাণসীতে মুখ্য সভা উঠিয়া আসাতে আর্য্য ধর্ম্ম পুনরুদ্দীপন সম্বন্ধে সমধিক আশার সঞ্চার হইয়াছে। এই সময়ে, আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভ্য গণের সমক্ষে একটী প্রস্তাব উপস্থিত করা আবশ্যক বিবেচনা করিলাম।

অনেক দিন হইল, শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শশধর তর্ক-চূড়ামণি মহাশয় যজ্ঞোপবীত ধারণের আবশ্যকতা সম্বন্ধে একটী অত্যুত্তম বক্তৃতা প্রদান করিয়াছিলেন এবং সেই বক্তৃতাটীর সারাংশ ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশিত হইয়াছিল। ইহা দ্বারা যে হিন্দু মণ্ডলীর কত উপকার হইয়াছে তাহা লিখিয়া ব্যক্ত স্বর্য্য উদ্ভাসিত মধ্যে ২ শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ রাখিয়াছে, ...শয় জ্বলন্ত উৎসাহের সহিত হিন্দু

(प्राप्तपत्र)

सम्पादक महाशय! आर्य्य-कुल-गौरव पकौड़ के राजा श्री पुतारेश चन्द्र पांडे महोदय ने आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के कार्य्यार्थ एक मुद्रा यन्त्र दान किया, हमारे सनातन धर्म्म का सत्यार्थ प्रचार करने के लिये श्रीयुक्त पण्डित राजपौराणिक शास्त्री चतुर्भुज शर्म्माजी ने काशीजीसे जयपूर में पधारे श्री पण्डित प्रवर श्रीयुक्त शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय वो भा: आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सुयोग्य आर्य्य सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय ज्वलन्त उत्साह सहित हम सब के प्रिय आर्य्य धर्म्म के निगूढ़ मर्म्मसबके साम्हने व्याख्या वो प्रचार कर रहे हैं, इससे आनन्द की समाचार फिर क्या हो सक्ता है। विशेषत: पुण्य भूमि श्रीकाशीजी में मुख्य सभा आ जाने से आर्य्य धर्म्म की पुनरुद्दीपनार्थ अधिक आशा का सचार हुआ। इस ही अवसर में आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सभ्य सुजनों के निकट एक प्रस्ताव छेड़ना मुझे आवश्यक बूझ पड़ता है।

बहुत दिन हुए श्रीयुक्त पण्डित शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय ने द्विजों के लिये "यज्ञोपवीत धारण" इस आशय पर एक अत्युत्तम वक्तृता करीथी और उस का सारांश धर्म्म प्रचारक में प्रकाशित हुआ था, इस से जो हिन्दुओं का कितना उपकार हुआ सो हम लिख प्रगट नहीं कर सक्ते हैं। बीच २ में श्रीयुक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय ने ज्वलंत उत्साह सहित हिन्दु धर्म्म के गूढ़ अभिप्राय सब व्याख्या को करते हैं, उस से सर्व्व साधारण का बहुत उपकार होते रहता है। किन्तु खेद यह है कि वह सब वक्तृता संवाद पत्रों में प्रकाश न होने से आशानुरूप फल नहीं मिलता है। यह सब व्याख्यान प्रकाश होना अतीव आवश्यक है। "धर्म्म प्रचारक" पत्र द्वारा शास्त्र का अभिप्राय जहांतक सर्व्व साधारण के गोचर हो सके सो होय, किन्तु मेरे विचार में दुसरा औरभी कुछ उपाय

ধর্ম্মের গূঢ় মর্ম্ম সকল ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন এবং তাহা দ্বারা আপামর সাধারণের যথেষ্ঠ উপকার হইয়া থাকে। কিন্তু, দুঃখের বিষয় এই যে, সে সকল বক্তৃতা কোন পত্রিকায় প্রকাশ না হওয়াতে আশা মত ফল দর্শিতেছেনা। এই সকল ব্যাখ্যান প্রকাশ হওয়া অতীব আবশ্যক। ধর্ম্ম প্রচারকের দ্বারা শাস্ত্রের মর্ম্ম সকল যতদূর সাধারণের গোচর হইতে পারে, হউক। কিন্তু, আমার বিবেচনায়, আর একটী উপায় অবলম্বন করা আবশ্যক। তাহা এই:—শ্রাদ্ধ তর্পণের আবশ্যকতা, ব্রত নিয়মের উপকারিতা, বিগ্রহাদি উপলক্ষ করিয়া ভগবানের আরাধনার উদ্দেশ্য, পুষ্প, তুলসীপত্র প্রভৃতির দ্বারা দেবতা আরাধনার ফল, শ্রীকৃষ্ণের লীলা সমূহের তাৎপর্য্য এবম্প্রকার বিষয় সকল শাস্ত্রীয় প্রমাণ সহ বিবৃত করিয়া ক্ষুদ্র ২ পুস্তকাকারে, প্রতি মাসে কিম্বা পক্ষে, প্রকাশ করত সামান্য মূল্যে, আপামর সাধারণকে বিক্রয় করিলে ভাল হয়। বিদ্যালয়ের অল্পবয়স্ক ছাত্র গণকে বিতরণ করা সমগ্ররূপে শ্রেয়। এতদর্থে অর্থের প্রয়োজন। আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভ্য গণ অনুগ্রহ পূর্ব্বক মাসে ২ কিছু ২ করিয়া প্রদান করিলে এ প্রস্তাবটী কার্য্যে পরিণত হইতে পারে। এবং আমরা আশা করি ধার্ম্মিক সভ্য গণ এই সুমহৎ কার্য্যে কিছু ২ ব্যয় করিতে কাতর হইবেন না।

আর্য্য ভ্রাতাগণ! একবার দেখুন দেখি, ধর্ম্ম প্রচারার্থে, খৃষ্টীয়ানগণ কত মত উপায় উদ্ভাবন করিতেছে। প্রথমে, বিদ্যালয় স্থাপন করিয়া বালক গণকে শিক্ষা প্রদান করিতেছে, পরে, তাহারা জ্ঞান লাভ করিলে, তাহাদের হস্তে, দাউদের গীত, মথি লিখিত সুসমাচার প্রভৃতি অর্পণ করিয়া তাহার ধর্ম্ম হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিতেছে। আর এক দিকে, প্রচারক গণ বক্তৃতা দ্বারা খৃষ্টীয় ধর্ম্মের উৎকর্ষ সাধারণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিতেছে এবং খ্রীষ্টীয় ধর্ম্ম প্রতিপোষক কত পুস্তিকা বিতরণ করিতেছে। এই সকল পুস্তিকা কত প্রকার [illegible] প্রকাশিত হইয়াছে। এই সকল ব্যাপারে কি [illegible] অর্থ ব্যয় হইয়া থাকে? ইংরাজ গণ অ-

अवलम्बन करना आवश्यक बोध होता है । वह यह है कि श्राद्ध तर्पणादि की आवश्यकता क्या व्रत नियम संजमों से लाभ क्या, मूर्त्ति पूजन का क्या अभिप्राय है, तुलसी, फूल आदि से देवाराधन का फल क्या, श्रीकृष्ण लीलायों का क्या तात्पर्य्य है इत्यादि आर्य्यों पर व्याख्यान शास्त्रीय प्रमाण सहितलिख के छोटे२ पुस्तक छपा छपा कर प्रति मास वा प्रति पक्षान्त में प्रकाश कीजाय वा अल्प मोल में बिके, विद्यालयके छोटे२ बालकों को बिन मोल बंटना सर्व्वथा उचित है । एतदर्थ द्रव्य का विशेष प्रयोजन है । आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सभ्य गण कृपा कर प्रति मास कुछ२ दान करने पर यह प्रस्ताव कार्य्य में परिणत होसक्ता है। हम आशा करते हैं कि धर्म्मात्मा सभ्य गण इस महत कार्य्य के लिये थोड़ा बहुत व्यय करने में संकोच न मानेंगे ।

आर्य्य भ्राता गण! एक बार देखिये तो, धर्म्म प्रचारार्थ इसाई लोग कितना कुछ उपाय निकालते हैं । पहले विद्यालय स्थापन करके बालकों को शिक्षा देते हैं, फिर वे सब थोड़ा बहुत सिखने पर उन सब को दाउद के गीत, मथि का सुसमाचार आदि पढ़ने दे देते हैं । दूसरे ओर देखिये पादरी लोग वक्तृता कर करके ईसाही धर्म्म की श्रेष्ठता सब को समझाते हैं और इसाही धर्म्म की पुष्टि के लिये कितने पुस्तक बटते हैं ! फिर यह सब का भिन्न २ भाषा में उलथा भी होता जाता है । अंगरेज लोग इस व्यय को अनायास उठालिते हैं । हम सब क्या ऐसेही सारविहीन हो गये कि हमारे सनातन धर्म्म को पुनर्जीवित करने के अर्थ सामान्य अर्थ भी व्यय नहीं कर सकेंगे ? हा! सब जाति को तो निज २ धर्म्म रक्षार्थ उद्यत देखते हैं, केवल हमही सब निद्रित । हम मुसलमानों पर यवन समझ के घृणा मानते हैं किन्तु वे लोग दैनिक नेमाज भी नहीं चुकते । आफिस में काम करते

নায়াসেই এই ব্যয়-ভার বহন করিতেছেন। আমরা কি এত অসার হইয়া পড়িয়াছি যে, আমাদের সনাতন ধর্ম্মকে পুনর্জীবিত করিবার জন্য সামান্য মাত্রও ব্যয় স্বীকার করিতে অগ্রসর হইবনা? হায়! সকল জাতিকেই স্বীয় ২ ধর্ম্ম রক্ষার জন্য উদ্যম পূর্ণ দেখিতে পাই কেবল আমরাই নিদ্রিত। আমরা মুসলমান দিগকে যবন বলিয়া ঘৃণা করিয়া থাকি। কিন্তু, তাহারা তাহাদের প্রাত্যহিক নমাজ পরিত্যাগ করে না। কার্য্যালয়ে কার্য্য করিতেছে নমাজের সময় হইল, অমনি হাতের কাজ ত্যাগ করত নমাজ করিতে গমন করিল। সামান্য মজুর মজুরী করিতেছে, নমাজের সময় হইল, অমনি পথের মধ্যে নমাজ করিতে আরম্ভ করিল। ইংরাজ দিগকে আমরা ম্লেচ্ছ বলিয়া থাকি, কিন্তু দেখুন তাহারাও নিয়ম মত ঈশ্বরের আরাধনা করিয়া থাকে। অন্ততঃ প্রতিরবিবারে উপাসনালয়ে উপস্থিত হইয়া উপাসনায় যোগ দিয়া থাকে। কেবল আমাদেরই মধ্য হইতে নিয়ম সকল লুপ্ত হইতেছে। আমরাই কেবল সন্ধ্যা বন্দনা করিতে সময় পাইনা। বিদ্যালয়ে কিম্বা কার্য্যালয়ে গমন করিতে হইবে, সুতরাং সন্ধ্যা, পূজা করিবার সময় নাই। কোন উপাসনালয়ও নাই যেখানে গিয়া ধর্ম্ম ক্ষুধা শান্তি হইতে পারে। স্থানে ২ দেবালয় আছে বটে, কিন্তু, সেখানে গিয়া তৃপ্তি লাভ করিবার উপায় কোথায়? পুরোহিত সংস্কৃত ভাষায় মন্ত্র উচ্চারণ করিতেছেন, আপামর সাধারণে তাহার মর্ম্ম হৃদয়ঙ্গম করা দূরে থাক, তিনি নিজে তাহা বুঝিতে পারেন কি না সন্দেহ। আমাদের মধ্যে ধর্ম্ম ভাব শিথিল হওয়ার ইহাও একটী কারণ। আমরা অনেক মন্ত্র উচ্চারণ করি, অনেক মন্ত্র শ্রবণ করি, কিন্তু তাহার অর্থ বুঝিতে পারিনা সুতরাং তাহা পাঠ কিম্বা শ্রবণ করিয়া তৃপ্তি লাভ হয় না। যখন অনেকেই সংস্কৃত ভাষা অবগত নহেন, তখন পূজা প্রভৃতিতে যে সকল মন্ত্র উচ্চারিত হয় তাহার অর্থ সাধারণের বুঝিবার সুবিধা করা উচিত।

কোন২ স্থানে, আর্য্য ধর্ম্ম সভা সংস্থাপন হওয়াতে, ধর্ম্মতত্ত্ব লাভের কথঞ্চিত উপায় হইয়াছে, কিন্তু,

रहे किन्तु नेमाज के समय आजाने पर झट सब काम छोड़ नेमाज कर लेते हैं। मजूर लोग मजूरी करते नेमाज का समय होतेही झट सड़क के किनारेही में नेमाज पढ़ना आरम्भ कर देते हैं। अंगरेजों को हम म्लेच्छ मानते हैं किन्तु देखिये उन्होंने भी नियमानुसार भगवत की आराधना की करते हैं, कुछ भी न करें तो प्रति रविवार गिर्जों में उपस्थित हो भगवत उपासना करते हैं। केवल हमारेही बीच में से यह नियम दिनों दिन उठता जाता है। हमको सब को केवल संध्यावंदन करने का समय नहीं मिलता है। स्कूल या आफिस जाना है, सुतरां संध्या, पूजा करने का अवसर कहां? वाह! वाह! ऐसे मन्दिर भी सर्व्वत्र नहीं मिलता, जहां जाने पर धर्म्म-क्षुधा की निवृत्ति होय। मानते हैं किस्थान २ में देवालय है, किन्तु वहां जानेसे भी मन तृप्त कहां मानता? पुजारि जी संस्कृत भाषा में मंत्र उच्चारण करते हैं, साधारण लोगों को समझना तो किनारे रहो उन्ने स्वयं समझता है या नहीं उसमें भी सन्देह है। हमारेबीच धर्म्म भाव शिथिल होने का यह भी एक कारण है। हम अनेक मंत्र उच्चारण करते हैं, अनेक मंत्र श्रवण करते हैं किन्तु उनसब के अभिप्राय नहीं समझने पर उस रीति पाठ वो श्रवण से कुछ फल नहीं मिलता है। जब देख पड़ता है कि बहुतेरे लोग संस्कृत नहीं समझते हैं, तो पूजा प्रभृति में जो सब मंत्र पढ़े जाते हैं वह सब साधारण के समझने के लिये कुछ उपाय करना चाहिये।

किसी २ स्थान में आर्य्य धर्म्म सभा स्थापन होने पर धर्म्म तत्त्व सिखने का कुछ २ उपाय हुआ, किन्तु इन्हों की संख्या इतनाही अल्प है जो उससे बहुत उपकार की आशा नहीं की जा सक्ति है। ऐसी २ सभा सर्व्वत्र स्थापित होना चाहिये। हम आशा करते हैं कि सोये हुए आर्य्यसन्तान गण आल-

ইহার সংখ্যা এত অল্প যে, তাহার দ্বারা সর্ব্বাধিক উপকারের আশা করা যাইতে পারে না। এবম্প্রকার সভা প্রতি গ্রামে সংস্থাপিত হওয়া উচিত। আশা করি, আমাদের নিদ্রিত আর্য্য ভ্রাতাগণ আলস্য শয্যা হইতে উত্থান করত তৎপক্ষে মনোযোগী হয়েন। সভা সমূহের কার্য্য গুলি ভা. আ. ধ. প্র. সভার অনুমোদনানুসারে একভাবে চলিলে ভাল হয়।

বশংবদ

পুনা। ৯ই শ্রাবণ } ভারত বর্ষীয় আ. ধ. প্র. সভার
১২৯০ } জনৈক সভাসদ।

রাজা ও সাধু।

কোন সময়ে জনৈক রাজা বন মধ্যে মৃগয়া করিতে গিয়াছিলেন। তিনি একটী মৃগের পশ্চাৎ ২ ধাবমান হইয়া ক্লান্ত হইয়া পড়িলেন এবং একটী বৃক্ষের সুশীতল ছায়ায় বিশ্রাম করিতে লাগিলেন। ইতস্ততঃ দৃষ্টি করিতে ২ দেখিলেন, যে একজন তপস্বী প্রেমাশ্রু পূর্ণ লোচনে ভগবদ্‌গুণানুবাদ গান করিতেছে। রাজা তাঁহার নিকটে গিয়া প্রণাম পূর্ব্বক নিবেদন করিলেন, হে মহাত্মন্! আপনি একাকী এই বিজন বনে কিরূপে বাস করেন? তপস্বী বলিলেন, রাজন্! আমি ক্ষণ জন্যও একাকী থাকিনা, সর্ব্ব সামর্থ্যশীল পরমেশ্বর নিরন্তর আমার সঙ্গে রহিয়াছেন।

রা। সিংহ, ব্যাঘ্র, ভল্লুক, সর্পাদি সাক্ষাৎ কাল স্বরূপ ভীষণ জন্তু গণ এখানে সর্ব্বদা বিচরণ করিতেছে, ইহাদিগকে দেখিয়া কি আপনার ভয় হয়না?

ত। আমি আপনার ন্যায় ধনুর্ব্বাণ লইয়া কখনও উহাদিগকে বধ করিবার চেষ্টা করিনা, আমার মনেও কখন তাহাদের প্রতি বৈরভাব উদয় হয়না, তবে উহারা কেন আমার শত্রুতাচরণ করিবে? বরং সর্ব্বত্র আত্ম দৃষ্টি বশতঃ আমি তাহাদিগকে মিত্রভাবে প্রেম করিয়া থাকি, তাহাতে উহারা আমার রক্ষণাবেক্ষণই করিয়া থাকে।

রা। এখানে তো অন্য কোন মনুষ্য নাই, তবে

य को निद्रा बनपर से उठ कर इन सब कामों में दत्त चित हों। सभा समूह यदि भा: आ: ध: प्र: सभा के अनुमोदनानुसार प्रति कार्य्य काल में एकही तान जमा लें तो परमोत्तम हो।

पुना। } भा: आ: ध: प्र: सभा के
श्रावण- कृष्ण ५। } जनैक वशम्वद सभासद।

राजा वो साधु।

एक समय किसी राजा ने बीच बन में शीकार खेलने को गया था। एक हरिणा के पिछे दौड़ते २ श्रान्त होकर वृच्छ की शीतल छाया में विश्राम करने लगे। आस पास ताकते २ देख पड़ा कि एक तपस्वी प्रेम से आंसु गिराते हुए परमात्मा की गुणानुवाद गारहे हैं। राजा ने समीप जाके प्रणाम कर निवेदन किया, हे महात्मन्! आप इस निजन बन में अकेले कैसे विराजते हैं? तपस्वी उत्तर किये, हे राजन्! अकेला मुझे कभी नहीं रहने पड़ता, सर्व्व सामर्थ्यवान परमेश्वर सदैव संग ही संग विद्यमान हैं।

रा। यहां शेर, सिंह, भालु, सर्पआदि काल सदृश भयंकर जीव सब सदाही विचरते हैं, इन्हीं से आप का डर नहीं लगता?

त। मैं कभी आप समान शर धनुष लेके इन सब को मारने को चेष्टा नहीं करताहुं, न मैं मन से भी कभी उन्हीं से विरोध मानताहुं, तो वे सब क्यों मेरे बैर बनेंगे? बरन मैं सर्व्वत्र एक आत्मदृष्टि हेतु मित्रभाव से उन सब को प्रेम करता हुं, इस से वे सब मेरे रक्षक बने रहते हैं।

रा। यहां तो कोइ और मनुष्य नहीं है, तो आप के दिन को क्या व्यवस्था होती?

আপনার ভোজনাদির কিরূপ ব্যবস্থা হয় ?

ত। লোকালয়ে যিনি ভোজন দান করেন, তিনি এখানেও নিত্য বিরাজ মান। তাঁহার আজ্ঞানুসারে বৃক্ষ সমূহ আমার আবশ্যক মত সুরস ফল, পত্র, কন্দ আদি প্রস্তুত রাখে।

রা। আপনি একজন মহাত্মা। আপনার বিশেষ পরিচয় জানিতে ইচ্ছা করি।

ত। গুরুর নিকট দীক্ষিত হইয়া নিজ পরিচয় জানিয়া লউন, তৎপরে আমার পরিচয় জানিতে আর বিলম্ব হইবেনা।

রা। আপনিই প্রকৃত ত্যাগী পুরুষ।

ত। আমি না আপনি ? আমি নিত্য অমূল্য পরম পদার্থ লাভের জন্য, তুচ্ছ সংসার মাত্র ত্যাগ করিয়াছি, যাহা বাস্তবিক কিছুই নয় বলিলেও হয়। আর আপনি কিঞ্চিৎ স্বপ্নবৎ সুখেই তৃপ্ত হইয়া অমূল্য পদার্থের দিকে চাহিয়াও দেখেন না। আমি সর্ব্বোত্তমের জন্য বৃথা পদার্থ ত্যাগ করিয়াছি মাত্র কিন্তু আপনি তুচ্ছ সংসারের নিমিত্ত সর্ব্ব স্বরূপ পরম পদার্থকে ত্যাগ করিয়াছেন, অতএব আপনিই সর্ব্বত্যাগী ! ! !

রা। (লজ্জিত হইয়া) মহাত্মন্ ! আমি দিবাতে রাজৈশ্বর্য্য ভোগ করি, রাত্রিতে সুকোমল শয্যায় শুইয়া নিদ্রাসুখ উপভোগ করি, অতএব অধিক সুখী কে, আপনি কি আমি ?

ত। আমি। কেননা আপনি সমস্ত দিন রাজকীয় চিন্তায় ব্যাকুল, ও সদাই শত্রু ভয়ে ভীত ; আমি সমস্ত দিন পরমাত্ম-সত্ত্বায় নিমগ্ন থাকিয়া অতুল আনন্দ রস পান করি। রাত্রিতে নিদ্রিত হইলে আপনারও কোমল শয্যা স্মরণ থাকেনা, আমার বৃক্ষতল মনে পড়েনা। সুতরাং তখন উভয়ের অবস্থাই এক। বরং মধ্যে ২ স্বপ্ন জন্য আপনার সুখ নিদ্রার ব্যাঘাত হয় ; অতএব আপনার সুখ কোথায় ?

রাজা সাধু অপেক্ষা নিজ অবস্থা হীন বুঝিতে পারিয়া সাধুকে বারম্বার প্রণাম পূর্ব্বক মনে ২ তত্ত্বাবৎ বিচার করিতে ২ রাজধানীতে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন।

त। लोकालय में जो भोजन देनेवाले हैं, वे यहां भी नित्य विराजमान हैं। उन के आज्ञानुसार वृक्ष समूह मेरे प्रयोजन मत, सुरस फल, पत्र, कन्द आदि मेरे लिये तैयार रख छोड़ते हैं।

रा। आप बड़े महात्मा हैं, आप का परिचय मुझे कृपाकर दीजिये।

त। निज गुरु से आप अपना परिचय कर लीजिये, तो मेरा परिचय मिलने में विलम्ब नहीं होगा।

रा। आप बड़े त्यागी पुरुष हैं।

त। मैं या आप ? मैं तो नित्य, वो अनमोल परम पदार्थ के लिये संसार मात्र छोड़ा, जो सच मच कुछ भी नहीं। जो आपने किंचित स्वप्न तुल्य सुख के अर्थ उस नित्य अनमोल पदार्थ को किनारे कर दिया। मैं सर्व्वोत्तम के लिये वृथा पदार्थ को त्याग किया और आपने तुच्छ संसार के अर्थ सर्व्व स्वरूप परम पदार्थ को त्याग किया है, अतएव आपही सर्व्व त्यागी हैं।

रा। (लज्जित होकर) महात्मन ! मैं दिन को राज ऐश्वर्य भोग करता हूं, रात्रि को सुकोमल शय्या पर सोए हुए रहता हूं, सुखी मैं अधिक हूं या आप ?

त। मैं। आप दिन भर राज्य की चिन्ता में ग्रस्त रहते हैं, शत्रुओं से सदैव शंका युक्त बने रहते हैं। मैं भर दिन परमात्मा की सत्ता में मग्न रहकर अतुल आनन्द रस पान करता हूं। रात्रि को सोजाने पर आप को कोमल बिछावन स्मरण रहता न मेरा वृक्ष तल। उस समय दोनोंही की अवस्था समान, वरन आप भांति भांति के स्वप्न देखकर क्लेशित होते हैं। अतएव आपका सुख कहां ?

राजा इन बातों में अपने को हीन मान कर साधु को बार २ प्रणाम किये वो मनेमन बुझते बिचारते राजधानी में लौट आये।

ধন্যবাদ সহ গ্রন্থোপহার প্রাপ্তিস্বীকার।

শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভবশঙ্কর ভট্টাচার্য্য মহাশয় প্রণীত (সংস্কৃত) কুমুদিনী কুমুদ চম্পু। শ্রীমদ্বাবু ঈশান চন্দ্র বসু প্রণীত (বাঙ্গালা) নীতি কবিতাবলী ; নীতি পদ্য ; ব্রাহ্ম বিবাহ বিচার, ও নবশ্লোকী মহিম্নঃ স্তব। শ্রীযুক্ত বাবু প্যারী চাঁদ মিত্র প্রণীত (ইংরাজী) ষ্ট্রে থটস অন স্পিরিচুয়ালিজম্ ; নেচর অবদি সোল ; স্পিরিচুয়াল ষ্ট্রে লিব্‌স্ ও (বাঙ্গালা) আধ্যাত্মিকা।

ভারতেন্দু শ্রীযুক্ত বাবু হরিশ্চন্দ্র কর্ত্তৃক প্রণীত, সংগৃহীত ও প্রকাশিত (হিন্দী) অন্ধের নগরী ; নীল দেবী ; স্তোত্র পঞ্চ রত্ন ; গো মহিমা ; ভারত জননী, বুন্দীকা রাজ বংশ ; কার্ত্তিক স্নান, বিজয়িণী বিজয় বৈজয়ন্তী। শ্রীমন্মহারাজ কুমার বাবু রামদীন সিংহ কর্ত্তৃক সংগৃহীত ও প্রকাশিত বিহার দর্পণ ও ক্ষেত্রতত্ত্ব। শ্রীযুক্ত বাবু গোপাল চন্দ্র কৃত ভাষা ব্যাকরণ। শ্রীযুক্ত বাবু সাহেব প্রসাদ সিংহ কর্ত্তৃক প্রকাশিত নিযুদ্ধশিক্ষা ; গুরুগণিত শতক ও গণিত বত্তিসী।

শ্রীমন্মহারাজাধিরাজ কুমার শ্রীলাল খড়্গ বাহাদুর মল্ল কৃত পায়স প্রেম প্রবাহ ; ফাগ-অনুরাগ ; পিযূষ ধারা ও স্বপনে কী সম্পত্তি। শ্রীমদ্বাবু রাধা কৃষ্ণ দাস প্রণীত দুঃখিনী বালা। শ্রীপণ্ডিত রাধা চরণ গোস্বামী কৃত দেশোপকারী পুস্তক। জনৈক ব্রাহ্মণ প্রণীত (ইংরাজি) দি থটস্ অন ইণ্ডিয়া। শ্রীযুক্ত বাবু রামজয় বাগ্‌চী প্রণীত (বাঙ্গালা) কবিতা কুসুম।

সধন্যবাদ গ্রন্থোপহার প্রাপ্তি স্বীকার।

श्रीयुक्त पण्डित भव शंकर भट्टाचार्य्य महाशय कृत (संस्कृत) कुमुदिनी कुमुद चम्पू। श्रीमद्बाबू ईशान चन्द्र वसुजी की बनाई हुई (बंगाक्षर में) नीतिकवितावली ; नीति पद्य ; ब्राह्मविवाह विचार वो नव श्लोकी महिम्नः स्तव। श्रीयुक्तबाबू प्यारीचांद मित्र कृत (अंग्रेजी) ट्रु थटस् अन्स्पिरिच्युयालिजम ; नेचर अवर्दि सोल ; स्पिरिच्युयाल ट्रु लिवस् वो (बंगाक्षरी) आध्यात्मिका।

भारतेन्दु श्रीयुक्त बाबू हरिश्चन्द्रजी के प्रणीत, संग्रहीत वो प्रकाशित (हिन्दी) अंधेर नगरी ; नील देवी ; स्तोत्रपंचरत्न ; गोमहिमा ; कार्त्तिकस्नान ; भारतजननी ; बून्दी का राज वंश ; विजयिनी विजय वैजयन्ती। श्रीमन्महाराजकुमार बाबू रामदीनसिंहजी का संग्रह वो प्रकाश किया हुआ बिहारदर्पण वो क्षेत्रतत्व। श्रीयुक्त बाबू गोपाल चन्द्रकृत भाषा व्याकरण। श्रीयुक्तबाबू साहेब प्रसाद सिंहजी द्वारा प्रकाशित नियुद्ध शिक्षा ; गुरु गणित शतक वो गणित बत्तिसी।

श्रीमन्महाराजाधिराजकुमार श्रीलाल खड्गबहादुर मल्लकृत पायस प्रेम प्रवाह ; फाग अनुराग ; पियूषधारा वो स्वपने की सम्पति। श्रीमद्बाबू राधाकृष्ण दास प्रणीत दुःखिनीबाला। श्रीपण्डित राधाचरण गोस्वामीकृत देशोपकारी पुस्तक जनैक ब्राह्मण का बनाया हुआ (अंग्रेजी) दि थटस् अन् इण्डिया श्रीयुक्त बाबू रामजय बागची प्रणीत (बंगाक्षरी) कविता कुसुम।

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। প্রকৃত তত্ত্ব—শ্রীমদাচার্য্য আনন্দ স্বামী কর্ত্তৃক বিবৃত ও শ্রীযুক্ত বাবু দ্বিজ দাস দত্ত দ্বারা প্রকাশিত। ইহাতে ধর্ম্ম মত ও সাধন সম্বন্ধে পঞ্চপঞ্চাশৎটী বিষয় লিপিবদ্ধ আছে। বিষয় গুলি এত সংক্ষিপ্ত ভাবে বিবৃত যে তাহাতে আচার্য্যের "নিজ মত" ভিন্ন শাস্ত্র, যুক্তি বা বৈজ্ঞানিক প্রমাণাদি লিখিত হয় নাই। গ্রন্থকারের সকল মত বিশুদ্ধ বিচার বা সাধন সিদ্ধ বুদ্ধি বিজৃম্ভিত বলিয়া

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

१। प्रकृत तत्त्व। श्रीमदाचार्य्य आनन्द स्वामीजी ने विवृत किया वो श्रीबाबू द्विजदास दत्त ने छपवा कर प्रकाश किया है। इस पुस्तक में धर्म्म सम्बन्धी मत वो साधन के विषय पर ५५ प्रबन्ध लिखे गये हैं। आप्ने सब इतने संक्षेप से विवृत किये गये जो उनमें आचार्य्य का "निज मत" छोड़के शास्त्र, युक्ति या वैज्ञानिक प्रमाणादि नहीं पाये जाते हैं। ग्रन्थकार के समस्त मत, जो वि-

বোধ হয় না। তিনি নিবেদন পত্রে লিখিয়াছেন "যদি কেহ সরল বিশ্বাসের দ্বারা পরিচালিত হইয়া এতদ্বিরুদ্ধে কোন অকাট্য যুক্তি প্রদর্শন করিতে পারেন, তবে আমার নিকট স্বয়ং উপস্থিত হইয়া কিম্বা পত্র দ্বারা তদ্বিষয় জ্ঞাপন করিলে আমি তাহা খণ্ডন বিষয়ে বিশেষ চেষ্টা করিতে কৃত সংকল্প রহিলাম।" ধন্য সাহস! "অকাট্য যুক্তি" "খণ্ডন" করিতেও "বিশেষ চেষ্টা"!! মধ্যে ২ কতক গুলি উপদেশ উদার ও প্রশস্ত হৃদয়ের গ্রহণোপযোগী হইয়াছে।

২। প্রসাদ-প্রসঙ্গ—৩য় সংস্করণ। ইহার সংগ্রহ কর্ত্তা যে বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজের, চিন্তাশীল কবি সমাজের ও ভগবদনুরক্ত ভক্ত সমাজের পরম আদর ও ধন্যবাদের পাত্র তাহার আর সন্দেহ নাই। সজ্জনের উপকারার্থ তাঁহার শ্রম ও যত্ন অতীব প্রশংসনীয়। মহাত্মা রাম প্রসাদের ভক্তি রস পূর্ণ হৃদয় হইতে যখন যে অমূল্য উচ্ছ্বাস উত্থিত হইত তাহাই তিনি গান করিতেন। তাঁহার মনের বল ও অনুরাগের সৌগন্ধ প্রতি সঙ্গীতে নৃত্য ও ক্রীড়া করিতেছে। গান গুলি শুনিলে নিদ্রিত মন জাগ্রত হইয়া উঠে।

৩। সঙ্গীত সংগ্রহ। বাউলের গাঁথা—১ম খণ্ড। কলিকাতা ২১০।১১ নং কর্ণওয়ালিস্ ষ্ট্রীট্ ভিক্টোরিয়া প্রেসে শ্রীবাবু ভুবন মোহন ঘোষ কর্ত্তৃক প্রকাশিত। বঙ্গ দেশের মধ্যে বাউল সম্প্রদায়ই আত্ম তত্ত্ব সাধনের প্রকাশ্য প্রচারক, যদিও উক্ত সম্প্রদায় এক্ষণে বহুল দুষ্ট জনে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু পূর্ব্ব ২ আচার্য্য গণের গান গুলি এখনও উক্ত সম্প্রদায়কে উচ্চ শ্রেণীতে স্থান দিতেছে। সাধক ভিন্ন সাধারণ লোকে এই সঙ্গীতের সকল মর্ম্ম সুচারু রূপে বুঝিতে পারে না। এজন্য প্রকাশক যত্ন পূর্ব্বক স্থানে ২ তত্ত্বাবতের টীকা করিয়া দিয়াছেন। এক একটী গান পাঠ করিলে বোধ হয় যেন কবির হৃদয়ে প্রবল প্রেমের উত্তাল তরঙ্গ রাশি নাচিতে ২ বহিয়া যাইতেছে-তিনি যেন এ রাজ্য ছাড়িয়া আর কোন গুপ্ত রাজ্যে প্রবেশ করিতেছেন-তাঁহার পবিত্র চক্ষের বাষ্পরাশি

शुद्ध विचार या साधन सिद्ध बुद्धि से रचित हैं ऐसा अनुभव नहीं होता है। "निवेदन पत्र" में उन ने लिखा है "यदि कोई व्यक्ति सरल विश्वास से परिचालित होकर इसके विरुद्ध में कोई अकाटा युक्ति देखला सकें तो मेरे पास स्वयं उपस्थित हो या पत्र लिख कर मुझे जनावें, मैं उस का खंडन करने के लिये विशेष यत्न करूंगा। वाह! वाह! धन्य साहस! "अकाटा युक्ति" का भी "खण्डन" के लिये "विशेष चेष्टा"!! बीच २ में कोई २ उपदेश उदार वा प्रशस्त हृदयों के ग्रहणोपयोगी हुए।

२। प्रसाद-प्रसंग। ३रा संस्करण। इसके संग्रह कर्त्ता जो बंगीय साहित्य समाज के, चिन्ताशील कवि समाज के वो भगवदनुरक्त भक्त समाज के परम आदर वो धन्यवाद के पात्र हैं, इस में कुछ भी सन्देह नहीं। सज्जनों के उपकारार्थ उनने जो श्रम वो यत्न उठाया सो अतीव प्रशंसनीय है। महात्मा राम प्रसाद के हृदय से जो कि भक्ति रस से सदैव परिपूर्ण था, जब जो अनमोल तरंग उठता गया सोही वे तानमें जमाते गये। उनके मन का तेज वो अनुराग का सुगन्ध प्रति संगीत से फुट निकल आते हैं। इन भजनों का सुनने पर सोया हुआ मन भी जाग उठता है।

३। संगीत संग्रह। बाउलों के भजन संग्रह-१ला खंड। कलकत्ता २१०।११ नं, कर्णवालीस ष्ट्रीट, विक्टोरिया प्रेस से श्री बाबू भुवन मोहन घोषजीने प्रकाश किया। बंगाले में बाउल सम्प्रदायही प्रकाश्य रीति से आत्म तत्त्व साधन का प्रचार किया करते हैं। यद्दिच उक्त सम्प्रदाय आज कल बहुल दुष्टजनों से पूर्ण हुआ किन्तु पूर्व्व २ आचार्य्यों के भजन समूह से अब तक उक्त सम्प्रदाय को ऊंची श्रेणी में गिना जाता है। साधक सुजन छोड़ के इतर लोग इन सब भजनों का अभिप्राय भली भांति समझ नहीं सके हैं। इस लिये प्रकाशक ने स्थान २ में उन सब को टीका भी लिख दिया। एक २ भजन पढ़ने पर ऐसा अनुभव होता है, मानो कि कवीश्वर के हृदय में प्रबल प्रेम के उछलते हुए तरंग राशि नाचते कूदते बहजाते हैं-मानो वे इस राज्य को छोड़के और किसी गुप्त राज्य में प्रवेश करते हैं-उनके पवित्र आंखों की बाष्प राशि मानो कुहारा बन कर सारे संसार को ढांप रहे हैं-वे सब की दृष्टि के बाहर निकल गये। प्रकाशक महाशय इस पुस्तक को छपवा प्रचार

যেন কুজ্ঝটিকা হইয়া সমস্ত সংসার ঢাকিয়া ফেলিয়াছে, তাঁহাকে আর কেহ দেখিতে পাইতেছেনা। প্রকাশক এই পুস্তক প্রচার করিয়া ভাবুক সাধক সমাজের অনেক উপকার করিয়াছেন। আশা করি, দ্বিতীয় খণ্ডে এতদপেক্ষা "ভাবের গানের" সংখ্যা অধিক থাকিবে। আর আধুনিক কবিদিগের গীত ইহার সহিত একত্র করিয়া পূর্ব্বতন শ্রদ্ধেয় মহাত্মাগণের রচিত গানের অমর্য্যাদা করিবেন না।

৪। ললিতা নাটিকা। শ্রীকৃষ্ণ লীলার শৃঙ্গার ও হাস্য রসময় গীতি রূপক কাশী নিবাসী সাহিত্যাচার্য্য শ্রীমৎ পণ্ডিত অম্বিকা দত্ত ব্যাস বিরচিত। এখানি সরল ব্রজ ভাষাতে লিখিত। ব্রজ ভাষা সহজেই মধুর, তাহাতে কৃষ্ণ লীলা নানা রস পূর্ণ, সুতরাং নাটিকা যে সুজন গণ মনোহারিণী হইবে, তাহা আশ্চর্য্য নহে। রাসধারী যাত্রা ওয়ালারা যদি নাটিকা লিখিত রীতিতে ইদৃশ নাটক নাটিকার অভিনয় করে, তবে তাহাদেরও অর্থ লাভ হয় ও সমাজেরও রুচি পরিবর্ত্তন হইতে পারে।

বিজ্ঞাপন।

সুনীতি।

আগামী ১লা কার্ত্তিক হইতে "সুনীতি" নাম্নী (রয়েল আট পেজা এক ফর্ম্মার আকারে) এক খানি পাক্ষিক পত্রিকা প্রকাশিত হইবে। বালক ও যুবক বৃন্দের হৃদয়ে আর্য্যরীতি নীতির প্রবর্ত্তনা ও আর্য্য ভাবের উদ্দীপনা করাই ইহার মুখ্য উদ্দেশ্য। ইহার অগ্রিম বার্ষিক মূল্য ডাকব্যয় সহিত ১৷৵০; কিন্তু দুর্গা পূজার পূর্ব্বে মূল্য প্রেরণ পূর্ব্বক গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইলে ১৲ মাত্র লাগিবে। টাকা না পাইলে কাহাকেও গ্রাহক মধ্যে গণ্য করা হইবেনা। আর্য্য সন্তান গণ! আর্য্য ভাবে উদ্দীপিত ও উৎসাহিত হইয়া শীঘ্র ২ "সুনীতির" গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হউন—ভারতের মলিন মুখ পুনরুজ্জ্বল করুন।

ধর্ম্মামৃত যন্ত্রালয়। } বশম্বদ
মিসির পোখরা, বারাণসী। } শ্রীভূধর চট্টোপাধ্যায়।

कारक बहुत भावुक साधकों का उपकार किये हैं। आशा की जाती है, कि दूसरे खंड में गूढ़ भाव युक्त भजन और भी अधिक रहेगा और आधुनिक कवियों की बनाई हुई गीत समूह इस से मिलाकर पूर्व्वतन श्रद्धा के योग्य महात्माओं के भजनों की अमर्य्यादा न की जावेगी।

४। ललिता नाटिका। श्रीकृष्ण लीला का शृंगार वो हास्य रस युक्त गीति रूपक। काशी-वासी साहित्याचार्य्य श्रीमत् पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी ने बनाया। नाटिका सरल ब्रजभाषा में लिखी गयी है। ब्रजभाषा तो स्वतःएव सुमधुर है, कृष्णजी महाराज की लीला भी फिर नाना रस से पूर्ण है, तो नाटिका जो सज्जनों को मनलोभावनी होगी, इस में कुछ भी आश्चर्य्य नहीं। रासधारीवाले यदि नाटिका में लिखी हुई रीति के अनुसार इस भांति नाटक वो नाटिका का अभिनय करें तो उनसे उन सब का भी लाभ हो सक्ता वो समाज की भी रुचि बदल जा सक्ती है।

विज्ञापन।

सुनीति।

(रयेल ८ पेजी एक फर्म्मा की पाक्षिक पत्रिका)

आगामी कार्त्तिक मास से नियम पूर्व्वक (बंग भाषा में) प्रकाशित होगी। बालक वो युवकों के हृदय में आर्य्य रीति नीति की प्रवर्त्तना वो आर्य्य भाव की उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मोल १।) ; किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज के ग्राहक बनने से १) एक रुपया मात्र लगेगा। बिना रुपया पाये किसही को ग्राहकों के मध्य में नहीं गिना जायगा। आर्य्य सन्तानगण! आर्य्य भाव से उद्दीपित वो उत्साहित होकर शीघ्र शीघ्र "सुनीति" के ग्राहक बनीये। भारत के मलिन मुख पुनरुज्ज्वल कीजिये।

धर्म्मामृत यंत्रालय। } वशंवद।
मिसिर पोखरा, बारानसी } श्रीभूधर चट्टोपाध्याय

বিদেশীয় এজেণ্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু	কেদার নাথ গঙ্গোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,,	যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	মতিহারী
,,	জগদ্বন্ধু সেন	লাহোর
,,	পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	রামপুরহাট
,,	বিহারিলাল রায়	জামালপুর
,,	রমেশ চন্দ্র সেন	ঐ
,,	হেমচন্দ্র দাস	ঐ
,,	মতিলাল সেন	মুরশিদাবাদ
,,	পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর
,,	রাজকৃষ্ণ দাস	বহরমপুর
,,	ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী	গয়া
,,	অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায়	৬৬ নং কালেজ ষ্ট্রীট, কলিকাতা

এজেন্ট মহোদয় গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্ম প্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহ-সহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করা হইবে।

২। ধর্ম্ম প্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডরে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্ম প্রচারকের ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার।

উত্তম কাগজে মুদ্রিত	বার্ষিক	৩৷৵০	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম	ঐ	ঐ	,,	২৷৵০	,,	।০
সাধারণ	ঐ	ঐ	,,	১৷৵০	,,	৵০

ধর্ম্ম প্রচারক কার্য্যালয়। মিসির পোখরা। বারাণসী।

শ্রীপূর্ণানন্দ সেন
কার্য্যাধ্যক্ষ।

☞ এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम।

श्रीयुत बाबू	केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर।
,,	यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
,,	जगद्बन्धु सेन,	लाहोर।
,,	पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,,	बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,,	रमेशचन्द्र सेन,	,,
,,	हेमचन्द्रदास	,,
,,	मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद।
,,	पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर।
,,	राजकृष्ण दास	बहरमपुर।
,,	अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय,	६६ नं०, कलेज ष्ट्रीट कलकत्ता।

एजेण्ट महाशयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने में आनन्द और उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्र का मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना होगा। पत्र बेरिं होता नहीं लिया जायगा।

३। मोल सम्भवतः पोष्टाल मनि अर्डर करके भेजना। यदि डाक टिकट में भेजें तो आध आनिया टिकट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार का है।

उत्तम कागज पर छपाहुआ	वार्षिक	३।✓	प्रतिसंख्या	।✓
मध्यम	,,	२✓		।०
साधारण	,,	१।✓		✓

धर्म्म प्रचारक कार्य्यालय। मिसिरपोखरा, बाराणसी।

श्रीपूर्णानन्द सेन
कार्य्याध्यक्ष।

☞ यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है।

Printed at the Dharmamrita Press, Missir Pokhra, Benares.

" একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৬ ষ্ঠ ভাগ। শকাব্দা ১৮০৫।
৪র্থ সংখ্যা। শ্রাবন— পূর্ণিমা

আচার্য্যের উপদেশ।

"বেদ মনূচ্য আচার্য্যোঽন্তেবাসিন মনুশাস্তি সত্যংবদ ধর্ম্মং চর স্বাধ্যায়ান্মা প্রমদঃ আচার্য্যায় প্রিয়ং ধনমাহৃত্য প্রজাতন্তুং মা ব্যবচ্ছেৎসীঃ সত্যান্ন প্রমদিতব্যম্ ধর্ম্মান্ন প্রমদিতব্যম্ কুশলান্ন প্রমদিতব্যম্ ভূত্যৈন প্রমদিতব্যম্ দেব পিতৃ কার্য্যাভ্যাং ন প্রমদিতব্যম্ মাতৃদেবো ভব পিতৃদেবো ভব আচার্য্য দেবো ভব অতিথি দেবো ভব যানি অনবদ্যানি কর্ম্মাণি তানি সেবিতব্যানি নো ইতরাণি যান্যস্মাকং সুচরিতানি তানিত্বয়োপাস্যানি নোইতরানিএকে চাস্মৎ শ্রেয়াংসো ব্রাহ্মণাঃতেষাং ত্বয়া আসনেন প্রশ্বসিতব্যম্ শ্রদ্ধয়া দেয়ম্ অশ্রদ্ধয়া অদেয়ম্ শ্রিয়া দেয়ম্ হ্রিয়া দেয়ম্ ভিয়া দেয়ম্ সংবিদা দেয়ম্ অথ যদি তে কর্ম্ম বিচিকিৎসা বা বৃত্তি বিচিকিৎসা বাস্যাৎ যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সম্মর্শিনঃ যুক্তা অযুক্তাঃ অলূক্ষা ধর্ম্ম কামাঃ স্যুঃ যথা তে তত্র বর্ত্তেরন্ তথা তত্র বর্ত্তেথাঃ অথাভ্যাখ্যা-

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

६ष्ट भाग। शकाब्दा १८०५।
४र्थ संख्या श्रावण— पुर्णिमा।

आचार्य्य का उपदेश।

वेद मनूच्य आचार्य्योऽन्तेवासिन मनुशास्ति—सत्यं-वद धर्म्मं चर स्वाध्यायान्मा प्रमदः आचार्य्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः सत्यान्न प्रम-दितव्यम् धर्म्मान्न प्रमदितव्यम् कुशलान्न प्रमदितव्यं भूत्यै न प्रमदितव्यम् मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य्य देवोभव अतिथिदेवोभवयानि अनवद्यानि कर्म्माणि तानि सेवितव्यानि नो इतराणि यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि एके चास्मत् श्रेयांसो ब्राह्मणाः तेषां त्वया आसनेन प्रश्व-सितव्यम्-श्रद्धया देयम् अश्रद्धया अदेयम् श्रिया देयम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदा देयम् अथ यदि ते कर्म्म विचिकित्सा वा वृत्तिविचिकित्सा वा स्यात् ये तत्र ब्रा-ह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलूक्षा धर्म्मकामाः स्यु यथा ते तत्र वर्त्तेरन् तथा तत्र वर्त्तेथाः अथाभ्याख्या-तेषु ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः युक्ताः अयुक्ताः अलू-क्षा धर्म्मकामाः स्युः यथा ते तेषु वर्त्तेरन् तथा तेषु

তেষু যে তত্র ব্রাহ্মণাঃ সম্মর্শিনঃ যুক্তাঃ অযুক্তাঃ অলূক্ষা ধর্ম্ম কামাঃস্যু যথা তে তেষু বর্ত্তেরন্ তথা তেষু বর্ত্তেথাঃ এষ আদেশঃ এষ উপদেশঃ এষা-বেদোপনিষৎ এতদনুশাসনম্ এবমুপাসিতব্যম্ এবমুচৈচস্তদুপাস্যম্।”

“আচার্য্য শিষ্যকে বেদ শিক্ষা দিয়া এইরূপ উপদেশ দিতেছেন। সত্য কথা কহিবে। স্বীয় ধর্ম্মের অনুষ্ঠান করিবে। অধ্যয়ন করিতে আলস্য করিবেনা। আচার্য্য কে তাঁহার অভীপ্সিত ধনা-হরণ করিয়া প্রদান করিবে। অনন্তর তাঁহার নিকট আদেশ গ্রহণ করিয়া দার পরিগ্রহ করিবে। দার পরিগ্রহ করিলে প্রজা বৃদ্ধি হইবে ; অতএব ইহার অন্যথা চরণ করিয়া প্রজা বৃদ্ধির বিচ্ছেদ করিবেনা। দেখ, দার পরিগ্রহ করিয়া যেন সত্য ধর্ম্ম হইতে চ্যুত হইওনা। গার্হস্থ্য ধর্ম্মানুষ্ঠানে আলস্য করিবেনা। আত্ম রক্ষা কার্য্যে আলস্য করিবেনা। শুভ কার্য্যের অনুষ্ঠানে আলস্য ক-রিবেনা।অধ্যয়ন ও অধ্যাপন কার্য্যে আলস্য করি-বেনা। দেবকৃত্য ও পিতৃকৃত্যের অনুষ্ঠানে আলস্য করিবেনা : মাতাকে দেবতা জ্ঞান করিবে। পি-তাকে দেবতা জ্ঞান করিবে আচার্য্য কে দেবতা জ্ঞান করিবে অতিথিকে দেবতা জ্ঞান করিবে। ফলতঃ লোকে যে সকল কর্ম্ম অনিন্দিত সেই সকল কর্ম্মের অনুষ্ঠান করিবে তদ্ভিন্ন নিন্দিত কর্ম্মের কদাচ অনুষ্ঠান করিবেনা। শেষ কথা এই আমরা অর্থাৎ তোমাদের পূর্ব্বতন অশেষ বেদবিৎ আচার্য্য মহোদয় গণ যে সকল কার্য্য করিয়া গিয়াছেন তোমরা সেই সকল কার্য্যের অনুষ্ঠানেই যত্নশীল হইবে ; আপন মনোমত যথেচ্ছ ব্যবহার করিতে প্রবৃত্ত হইবেনা। ব্রাহ্মণ উপস্থিত হইলে, পাদ্য ও আসনাদি দ্বারা তাঁহার শ্রমাপনোদন করিবে। ব্রাহ্মণ গণকে শ্রদ্ধা পূর্ব্বক দান করিবে। অশ্রদ্ধার সহিত দিবেনা। ঐশ্বর্য্যের সহিত দান করিবে। লজ্জার সহিত দান করিবে। অর্থাৎ মনের উৎসাহ বৃদ্ধির জন্য দান কার্য্যের আড়ম্বর কর ক্ষতিনাই কিন্তু মনে মনে লজ্জিত হইও অথবা তুমি যতই কেন দাওনা তথাপি উহা অল্প, এই বিবেচনা ক-রিয়া লজ্জিত হইবে। লজ্জিত হইয়া সেই লজ্জা ঢাকিবার জন্য গুপ্ত ভাবে দান কার্য্য সমাধা করি-বে। এবং ভয়ে ভয়ে দিবে। অর্থাৎ আমি যথেষ্ট [illegible]

वर्त्तेथाः। एष आदेशः एष उपदेशः एषा वेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैस्तदुपास्यम्।’

वेद की शिक्षा देकर आचार्य्य ने शिष्य को इस भांति उपदेश दे रहा है। सत्य बोलना। निज धर्म्म अनुष्ठान करना। पढ़ने में आलस्य न करना। आचार्य्य के मनोभिमत द्रव्य संग्रह कर उन को दे देना। अनन्तर उन से अनुमति ले कर विवाह करना। दार परिग्रह करने पर प्रजा की संख्या बढ़ जायगी। अतएव इस को अन्यथा कर प्रजावृद्धि को न रोकना। सावधान रहना, जैसा कि विवाह करके सत्य धर्म्म से च्युत नहीं। आश्रम योग्य धर्म्मा-नुष्ठान में आलस्य न करना निज कुशल के अर्थ आलस्य न करना। शुभ कार्य्य करने में आलस्य न करना। पढ़ने वो पढ़ाने में आलस्य न करना। देवकृत्य वो पितृ कृत्य करने में आलस्य न करना। माता को देवता जानना। पिता को देवता जानना। आचार्य्य को देवता जानना। अभ्यागत को देवता जानना। फलत: लोक में जो सब कार्य्य अनिन्दित हैं वेही सब करना वो निन्दित कर्म्मों को कभी न करना अन्त को यह स्मरण रखना कि हम सब अ-र्थात तुम्हारे पूर्व्वतन अशेष वेदवित् आचार्य्य म-होदयों ने जो २ कार्य्य कर गये, तुम्हे भी वही कर्म्म में करने में लगे रहना। स्वेच्छानुसार किसी काम में प्रवृत्त न होना। ब्राह्मण तुम्हारे स्थान पर आजाने से उन को पाद्य वो आसनादि देकर बिश्राम करावना। ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्व्वक दान देना। अश्रद्धा से न देना। साथ ऐश्वर्य्य के दे देना। लज्जा मानकर दान करना। मन के उत्साहार्थ चाहे दान देने में बाहर २ बड़े आडम्बर फैलाओ किन्तु मने मन लज्जित होना, अथवा तुम जितना हो क्यों न दो तथापि उस को अल्प समझ कर ल-ज्जित होना। लज्जित हो कर फिर उस लज्जा को ढापने के लिये गुप चुप दान करते रहना औ भय भीत होकर दान करना। अर्थात मैं बहुत कुछ देता हुं ऐसा मानकर अभिमान न प्रगट करना। [illegible]

দিতেছি জ্ঞান করিয়া অহংকার ভাব প্রকাশ করিবেনা। যদি তোমার শ্রৌত, স্মার্ত্ত বা আচার প্রাপ্ত কর্ম্মে সন্দেহ উপস্থিত হয় তাহা হইলে সেই প্রদেশে সেই সময়ে যে সকল ব্রাহ্মণ গণ বিচারক্ষম, অভিজ্ঞ, স্বতন্ত্র, অক্রূরমতি, ও ধর্ম্ম কামুক হইবেন তাহারা সেই শ্রৌত স্মার্ত্ত-বা আচার পরম্পরা প্রাপ্ত কর্ম্মে যেরূপ প্রবৃত্ত হইবেন তুমিও সেইরূপ প্রবৃত্ত হইবে। ইহাই আদেশ ইহাই উপদেশ। এই বাক্যই উপনিষৎদের সার। ইহাই ঈশ্বরের বাক্য। অতএব এইরূপেই উপাসনা কর্ত্তব্য। অবশ্য এইরূপেই উপাসনা কর্ত্তব্য। অবশ্য এইরূপেই উপাসনা কর্ত্তব্য"।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(জ্যোতির্বিজ্ঞান সমালোচনা)

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

৩য় কারণ। অদৃষ্ট—ধর্ম্ম বা অধর্ম্মকে অদৃষ্টবলে। কার্য্যে পরিণত মনোবৃত্তি সকলের অতীতাবস্থা গত সংস্কার ভাব মাত্রকে, যদ্দ্বারা বারম্বার সেই প্রকার বৃত্তির কার্য্য হইতে থাকে, ধর্ম্মাধর্ম্ম কহে। এতদ্দ্বারা যে প্রকারে মানবের স্বভাব গঠিত হয় তাহা অতি আশ্চর্য্য ও পরমানন্দ বর্দ্ধক, কিন্তু সংক্ষেপে তাহার কিঞ্চিন্মাত্র বলিলে সবিশেষ উপকার নাই, এজন্য এখানে সর্ব্বথাই নিরস্ত থাকিলাম।

৪ র্থ কারণ।—পিতার স্বভাবিক প্রকৃতি। প্রত্যক্ষই ইহার প্রধান প্রমাণ।

৫ ম কারণ। মাতার স্বাভাবিক প্রকৃতি ইহারও প্রত্যক্ষ প্রমাণই জাজ্বল্য মান।

৬।৭ ম কারণ। প্রথম জন্ম কালীন পিতা মাতার প্রকৃতি।

৮ ম ঐ। গর্ভাবস্থায় মাতার প্রকৃতি।

১১ শ ঐ। আহার।

১২ শ ঐ। আচার।

১৩ শ ঐ। সংসর্গ।

এ সকলের প্রমাণও প্রত্যক্ষ দণ্ডায়মান রহিয়াছে।

ক্রমশঃ।

চারু চিন্তাবলী।

২৩। ঢাকের বাদ্য বহুদূর জোর করিয়া গমণ

पर यदि तुम्हारा कुछ शंका उठे तो उस प्रदेश में उस समय जो सब ब्राह्मण को विचार पटु, अभिज्ञ, स्वतंत्र, अक्रूरमति वा धर्म्मकामी देख पड़ेगा, उन सब के श्रौत स्मार्त्त वो आचार अनुसार तुम्हें भी कार्य्य में प्रवृत्त रहना। यही आदेश है। यही उपदेश है। इसी वाक्य को उपनिषदों का सार जानना। इसही को ईश्वर वाणी कर मानना। अतएव इसही रीति से उपासना करना। अवश्य इसही रीति से उपासना करना।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(ज्योतिर्विज्ञान की समालोचना)

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

३रा कारण। अदृष्ट— धर्म्म या अधर्म्म को अदृष्ट कहा जाता है। कार्य्य में परिणत मनोवृत्तियों की अतीत अवस्था को प्राप्त हुआ संस्कार भाव मात्रही का नाम, जिस से बार बार उसी प्रकार वृत्ति ही का कार्य्य होते रहे, धर्म्मा धर्म्म है। इस से मनुष्यों की प्रकृति जिस रीति से बनती है, वह परम आश्चर्य्य वो अतीव आनन्द बर्द्धक है, किन्तु उस के संक्षेप मात्र कहने से यथा योग्य उपकार नहीं होगा। इसलिये यहां उस बात को उठाने में हम सर्व्वथा निरस्त रहे।

४र्थ कारण। पिता की स्वाभाविक प्रकृति। इस का फल प्रत्यक्षही देख पड़ता है।

५म कारण। माता की स्वाभाविक प्रकृति। इस का भी प्रत्यक्ष प्रमाण तैयार है।

६।७ कारण। प्रथम जन्म के समय पिता वो माता की प्रकृति।

८ वां कारण। गर्भकाल में माता की प्रकृति।

११ वां कारण। आहार।

१२ वां कारण। आचार।

१३ वां कारण। संसर्ग।

इन सब के भी प्रत्यक्ष प्रमाण विद्यमानही है।

शेष आगे।

चारु चिन्तावली।

२१। ढाक बजने पर उस की ध्वनि बहुत दूर

তন, কিন্তু উহা এত কঠোর, শ্রুতিকটু ও তীব্র যে তাহা থামিলেই কর্ণ কুহর শীতল হয়। সাধক! প্রশস্ত হৃদয়ের বাক্য দূর দেশ পর্য্যন্ত প্রতিধ্বনিত হয়, কিন্তু উহা সারবান না হইলে লোকের চিত্ত আকর্ষণ করিতে পারেনা। প্রশস্ত হৃদয়ে সার পূর্ণ কথা প্রয়োগ করিবে, নতুবা তোমার উপদেশ অনাস্থার স্রোতে ভাসিয়া যাইবে।

২৪। তুমি যদি বিশ্বাস কর যে ঈশ্বরকে পূজা করিলে তিনি তোমার প্রতি সন্তুষ্ট হইবেন। তবে তাঁহাকে কিরূপ উপচারে পূজা করিবে স্থির করিয়াছ। তাঁহার দ্রব্য লইয়া তাঁহাকে পূজা করিলে কি তিনি সুখী হইবেন? যাহা যাহার প্রচুর আছে তাহা তাহাকে দিলে সে ব্যক্তি কখনই বিশেষ আনন্দিত হয় না। যাঁহার যাহা নাই তাহাই তাঁহাকে উপহার দেও, তিনি সন্তুষ্ট হইবেন। পত্র, পল্লব, ফল, বস্ত্র অলঙ্কার, ধুপ দীপ নৈবেদ্য, চন্দন, আদির তাঁহার যথেষ্ট আছে কেবল ইহাতে কি তিনি সন্তুষ্ট হইবেন? সাধক। তিনি পূর্ণ, তাঁহার কিছুরই অভাব নাই, সুতরাং তাঁহার "দীনতা" নাই। তুমি "দীনতার" ডালি উপহার দিয়া সজল নয়নে করযোড়ে তাঁহার পূজা কর, তাঁহার আশীর্ব্বাদ লাভ করিবে।

২৫। যদি তুমি মণি লাভ করিয়া ধনী হইতে চাও তবে ফনীর ভয় তুচ্ছ বোধ কর। যদি ভগবানের কৃপা লাভে সুখী হইতে ইচ্ছাকর। তবে লোক নিন্দার ভয়, মান মর্য্যাদা হানির ভয়ও নিজ বৈষয়িক গৌরব ও প্রতিষ্ঠা লোপের ভয় করিওনা।

২৬। হস্তী যখন লোকালয়ের মধ্য দিয়া চলিয়া যায় কুকুর গণ তাহার পশ্চাতে দূরে থাকিয়া চিৎকার করিতে থাকে, হস্তী তাহার দিকে দৃকপাতও করেনা। উন্নতমনা মহাত্মা গণ যখন লোক সমাজের হিতার্থে ব্রতী হইয়া কার্য্যক্ষেত্রে বিচরণ করিতে থাকেন, তখন নিন্দাবাদী ও অন্যান্য কত লোকে কত কথাই বলিতে থাকে, কিন্তু তাহাতে মহাত্মা গণের গতিরোধ হয় না, হস্তিপকের ইঙ্গিতে যেমন হস্তী চলিয়া যায় তদ্রূপ তাঁহারাও ভগবদ্দত্ত সাধু ইচ্ছার বশবর্ত্তী হইয়া অগ্রসর হইতে থাকেন। স্বয়ং ভগবান ইঁহাদের পরিচালক ও সহায়।

फैला हुआ वा विशाल है। किन्तु वह इतना कठोर, कर्ण-कटु वा तीव्र है, जो उस के ठहर जाने ही पर कर्ण-कुहर शीतल होते हैं।

हे साधक! प्रशस्त हृदय की बातें बहुत दूर तक ध्वनित होती या फैल जाती हैं, किन्तु वे यदि सारवान नहीं, तो लोगों के मन को नहीं खींच सकती है। अब बोलना, तो प्रशस्त हृदय से सार पूर्ण कथा बोलते रहना, नहीं तो तुम्हारे उपदेश सब अनास्था की धारा में बेठिकाने बह जांगे।

२४। यदि तुम्हारा यही विश्वास है कि भगवान को पूजने पर वे तुम पर सन्तुष्ट होंगे, तो किस रीति से उन को पूजना स्थिर किये हो? उन्ही की सामग्री से उन्हीं को पूजने पर वे क्या तुष्ट होंगे? जिस का जो द्रव्य बहुत है, उस को उस द्रव्य देने से वह कभी विशेष रूप आनन्दित नहीं होते हैं। जिन के पास जो सामग्री नहीं, उन को वही सामग्री भेट चढ़ाओ, वे हर्षित होंगे। पत्र, पल्लव, जल, वस्त्र, भूषण, धूप, दीप, नैवेद्य, चन्दन आदि उन के घर में बहुत है, केवल इतने ही से क्या वे तुष्ट होंगे? हे साधक! वे तो पूर्ण हैं, किसी सामग्री का अभाव उन का नहीं है, अतएव वे "दीनता" से निश्चित हैं। तुम "दीनता" की डाली सजाकर [illegible] को भेट चढ़ाओ वो सजल नेत्र से कर जोड़ [illegible] को पूजा करो, उन से आशीर्बाद मिलेगी।

२५। मणि से यदि तुम धनी बनने चाहो, तो फणी के भय को तुच्छ मानो यदि भगवत की कृपा से सुखी होने मांगो, तो लोक निन्दा का भय, मान मर्य्यादा हानि का भय, निज वैषयिक गौरव वो प्रतिष्ठा नष्ट होने का भय मत करो।

२६। हाथी जब बाजार में चला जाता है, तब कुत्ते सब दूर २ से बहुत भौंकते रहते हैं किन्तु हाथी उस पर कुछ भी ध्यान नहीं देता है! उन्नत हृदय महात्मा गण जब समाज के हितार्थ ब्रती हो कर कार्य्य क्षेत्र में विचरते रहते हैं, उस समय निन्दक गण वो अन्यान्य कितने लोग कितने ही कुछ कहा करते, किन्तु उन्ही महात्माओं की गति कभी नहीं रुकती है। हाथीमान की इशारे से जैसा हाथी चला जाता है, उस रीति उन्हों ने भी भगवत की प्रेरणा के बस होकर आगे बढ़े जाते हैं। भगवन स्वयं उन्हों के चालक वा सहायक बने रहते हैं।

আর্য্য ধর্ম্মের উন্নতি।

দেখা যাইতেছে পৃথিবীর সর্ব্বত্রেই উন্নতির চিহ্ন দিন ২ বৃদ্ধি পাইতেছে। আসিয়া, য়ুরোপ, আফ্রিকা, আমেরিকা সকলেই উন্নতির পশ্চাতে ধাবমান, এক দেশ অপর দেশের গতি অতিক্রম করিতে যত্নবান রহিয়াছে। ধর্ম্ম, কর্ম্ম, রীতি নীতি সমস্ত বিষয়েই অগ্রসর হইতে সকলের সবিশেষ চেষ্টা, আমাদিগের ভারত ভূমি যদিচ পৃথিবীর বহির্ভূত নহে, যদিচ ভারতবর্ষ আসিয়ার একটী প্রকাণ্ড খণ্ড, কিন্তু ইহার উন্নতির বেগ সকল দেশ হইতেই পশ্চাতে পড়িয়া আছে। যে দিকে দৃষ্টি পাত করুন যে বিষয় অবলোকন করুন দেখিবেন ভারতের গতি ধীর ও যত্ন শিথিল। জড়তা, আলস্য, দুর্ব্বলতা ও দিবা রাত্রি তন্দ্রা বা বিশ্রাম সুখ-সেবা ভারতকে আচ্ছন্ন করিয়া রাখিয়াছে। সমাজ নীতির প্রচুর প্রচার, ধর্ম্ম নীতির সংস্কার, সদসদ্বিচার, ব্যবসায়ের উন্নতি, সামাজিক সুখ বিধানের চেষ্টা যত কিছু কার্য্যই কেন হউক, ভারত তাহা সুখ শয্যায় শুইয়া নিদ্রিতাবস্থায় সাধন করিতে চাহে। ভারতের নিদ্রা কুম্ভকর্ণের নিদ্রাকেও পরাভব করিয়াছে। নিদ্রিতের ধন চৌরে অপহরণ করিলে সে জানিতেও পারেনা। নিদ্রিত ভারতের ধন বিদেশী গণ লইয়া গেল, ভারতের তন্দ্রা ভাঙ্গিলনা, বিদেশী গণ ভারতের ধর্ম্ম নষ্ট করিল, ভারত জাগিল না, বিদেশী গণ ভারতের বিদ্যার প্রতিভা হানি করিল, ভারত তথাচ নিদ্রিত, বিদেশী গণ ভারতের ধনে ধনী হইয়া ভারতকে তাহাদের পাদুকার ছায়ায় আশ্রয় দিল, অচেতন ভারত তাহাও আনন্দ পূর্ব্বক মানিয়া লইল, ভারতকে মূর্খ বলিল, ভারতকে বিধর্ম্মী বলিয়া তিরস্কার করিল, দুর্ব্বল বলিয়া ঘৃণা করিল, ভারত এতাবৎ অবনত মস্তকে স্বীকার করিল। যে ভারতের

आर्य्य धर्म्म की उन्नति।

आजकल पृथिवी के सब देशों में उन्नति और आगे वढ़ने की चेष्टा दिखाई देती है । एशिया, योरोप, आफ्रिका, अमेरिका सब उन्नति के पीछे पड़े हैं, सब, एक दूसरे को उन्नति की दौड़ में पीछे डालना चाहते हैं । धर्म्म, कर्म्म, रीति, नीति सब में सब को आगे बढ़ने को चेष्टा हो रही है । यद्यपि हमारा भारतवर्ष पृथिवी से बाहर नहीं है, यद्यपि भारतवर्ष एशिया का एक बड़ासा खण्ड है, परन्तु इस उन्नति की दौड़ में यह सब से पीछे है, जिस तरफ देखिये, जिस विषय में देखिये भारतवर्ष ठंढी सांसे ले रहा है । जड़ता, आलस्य, कायरपर और दिनरात सोनेकी इच्छा, हमारे भारतवासियों को घेरे हुई है । समाज नीतिका प्रचार, धर्म्मनीति का संस्कार और सदसद्विचार, व्यवसाय की उन्नति, सामाजिक सुखविधान की चेष्टा, इत्यादि जितने काम हैं, सब को भारतवासी सोये हुए करते हैं । इनकी निद्रा कुम्भकर्ण की निद्रा से भी बड़ी है । सोये आदमी का धन चोर उठाये लिये जाता है, परन्तु उसको कुछ खबर नहीं होती, निद्रित भारत वासियों का धन विदेशी लिये जाते हैं, भारत पड़ा सोता है, विदेशियोंने भारतवासियों का धर्म्म लेलिया, भारतवासी सोये हैं, विदेशियों ने भारत वासियों की विद्या लेली, भारतवासी सोये हैं। विदेशियों ने भारतवासियों के धनसे धनी होकर इनको अपना आश्रित बनाना चाहा, सोये भारतने खुशीसे वही मान लिया, भारत को मूर्ख कहा, भारतको विधर्म्मी कहा, कायर कहा, सब भारतने इसको अङ्गीकार कर लिया। जिस भारत का धर्म्म पैसफिक समुद्र से भी गंभीर है, जिस भारतके धर्म्म में भक्ति, ज्ञान, योग, वैराग्य, प्रेम, ईश्वरोपासना इत्यादि किसी विषय के उपदेश का अभाव नहीं है,

ধর্ম্ম প্রশান্ত মহাসাগর হইতেও সুগভীর, যে ভারতের ধর্ম্মে ভক্তি, জ্ঞান, যোগ, বৈরাগ্য, প্রেম, ঈশ্বরোপাসনা আদি কোন বিষয়েরই অভাব নাই, ভারতের নিদ্রিত সন্তান গণ বিদেশীয়ের কথানুসারে ইদৃশ সর্ব্বোত্তম নিজ ধর্ম্মকে অসার ও যুক্তি বিহীন বলিয়া নির্দ্ধারণ করিল।

একণে ভারতের এই ঘোর নিদ্রা ভঙ্গ করিবার কি কোন উপায় নাই? ভারত কি চিরকাল নিদ্রিতই থাকিবে? এতৎ প্রশ্নোত্তরে হয় তো কেহ বলিবেন, যে যখন সকলেই নিদ্রিত তবে জাগাইবে কে? তন্মধ্যে যে ২।৪ জন জাগ্রত হইল তাহারাও আবার ভ্রাতৃগণের শোচনীয় অবস্থার প্রতি ঘৃণা প্রদর্শন করিতে লাগিল। ভ্রাতৃ গণের প্রতি সহানুভূতি প্রকাশ করা দূরে থাকুক তাহাদিগকে অপমান করিতে আরম্ভ করিল, আর যদিবা জাগাইতে চেষ্টা করিল তাহাও গালি দিয়া, তিরস্কার করিয়া ও পদাঘাত করিয়া। হা! এই কৌশলে কি নিদ্রিত ভারত পুনরুত্থিত হইবে? ভৎর্সনা করিলেই কি ভারত নিজ ধর্ম্ম সমালোচনা ও তন্মহত্ত্ব বিচারার্থ প্রবৃত্ত হইবে? ভারতের ধর্ম্ম পুনরুদ্দীপিত করিবার জন্য একণে সাধু সদ্বক্তার প্রয়োজন হইয়াছে: যিনি সুললিত বক্তৃত্ব শক্তি সামর্থ্য বিশিষ্ট, নিজ ভ্রাতৃগণের অবস্থার তাবত্তত্ত্বজ্ঞ ও তাহাদিগকে সৎপথে আনিবার সদুপায় উত্তম রূপ বিদিত আছেন, তিনিই ইদৃশ গুরুতর কার্য্যে সুপটু হইবেন। ধর্ম্মার্থ প্রচারের জন্য আমাদিগের আধুনিক ধর্ম্ম প্রচারক গণকে কোন নূতন নিকেতন নির্ম্মাণ করিতে হইবেনা। আমাদিগের পূর্ব্বতন আর্য্য মহাপুরুষ গণের বিরচিত ধর্ম্ম মন্দির সুসজ্জিত ও শোভিত করিবার জন্য য়ুরোপ হইতে ঝাড়, দেওয়ালগিরি আনাইতে হইবেনা, মন্দির আলোকিত করিবার জন্য গ্যাস বা তাড়িদালোকের প্রয়োজন হইবেনা। আর্য্য ধর্ম্ম নিকেতনে জ্ঞান সূর্য্য উদ্ভাসিত থাকিয়া এরূপ উজ্জ্বল করিয়া

उस भारत के सोये सन्तानों ने विदेशियों कहने से अपने धर्म्म को सार हीन और युक्ति विहीन ठहराया।

अब क्या भारतवासियों को निद्रा से उठाने का कोई उपाय नहीं है? क्या चिर काल के लिये भारतवासी सोयेही रहेंगे? इस सवालके जवाब में यह कहा जासकता है कि जब सभी सोये हैं तो उनको कौन जगावेगा? तिस पर भी जो दोचार जागे, उनको अपने भाइयों की अवस्था पर घृणा आने लगी, अपने भाइयों के साथ सहानभूति प्रकाश करने के बदले उन्हों ने उनका अपमान किया, और यदि उठाने की चेष्टा भी की तो गाली देके, तिरस्कार करके, और लात मारके। क्या इसी उपाय से सोये भारतवासी उठेंगे? क्या केवल तिरस्कार से भारतवासी अपने धर्म्म की समालोचना और उसके महत्त्व विचार में प्रवृत्त होंगे? यदि विचार के देखा जावे तो भारत के धर्म्म को फिर से उज्जीवित करने के लिये ऐसे सद्वक्ता का अभाव है, जो वक्तृत्व शक्ति रखने के साथ, अपने भाइयों की अवस्था को अच्छी तरह जाने और उन को सत्पथ में लाने के यथार्थ उपाय को पहचाने। धर्म्म के विषय में हमारे आधुनिक धर्म्मप्रचारकों को कोई नई इमारत नहीं बनानी पड़ेगी। हमारे पूर्व पुरुषों के रचित धर्म्ममन्दिर को सजाने के लिये उन लोगों कोयोरोप से झाड़ दिवालगीर नहीं मंगानी पड़ेगी और, मन्दिर को आलोकित करने के लिये गेस वा बिजली की रोशनी की दरकार नहीं पड़ेगी। इस मन्दिर में ज्ञान का सूर्य्य ऐसा प्रकाशमान है कि उस के आगे सब नई रोशनी फीकी जंचेगी, इसके तेज, इसकी सफाई, इसकी सजावट के आगे विदेशीय सजावट निस्तेज हो जायगी।

हमलोगों ने कितने ही वक्ताओं को अपने

হইয়া যাইবে। ইহার তেজ, নির্ম্মলতা, ইহার শোভা দেখিলে বিদেশীয় সভ্য নিতান্ত লজ্জা পাইবে।

আমরা কত বক্তাকে নিজ শাস্ত্র ছাড়িয়া বিদেশীয় শাস্ত্র হইতে উপমা দিতে শুনিয়াছি, নিজ শ্রোতৃ বর্গের হৃদয়ঙ্গম করাইবার জন্য আমরা কত ব্যক্তিকে কঠোর শব্দ ব্যবহার করিতে শুনিয়াছি, ব্যাখ্যান দিবার সময় কত লোককে সুদীর্ঘ সমাস যুক্ত উৎকট ও কঠোর সংস্কৃত পদ প্রয়োগ করিতে শুনিয়াছি। ইহার পরিণাম ফল ইহাই দৃষ্ট হয় যে হয়, শ্রোতা উপদেষ্টার কথা গ্রহণ করার পরিবর্ত্তে তৎসহ বাগ্বিবাদে প্রবৃত্ত হয় নতুবা বিরক্ত হইয়া ধীরে ২ উঠিয়া যায়, বক্তা অবশেষে নিরুপায় হইয়া বসিয়া পড়েন এবং মরুভূমিতে বৃষ্টি পাতের ন্যায় তাঁহার সমস্ত পরিশ্রম নিরর্থক হইয়া যায়।

জ্ঞান বর্দ্ধিনী সভায় আমরা বাবু শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয়ের বক্তৃতা শুনিয়াছিলাম। তাঁহার সমস্ত মতের সহিত আমাদের সম্পূর্ণ ঐকমত্য না হউক কিন্তু তাঁহার বক্তৃতা শুনিলেই যে এক প্রকার আনন্দ অনুভূত হয়, ধর্ম্ম ভাব সকলের মনে উদ্দীপিত হয় ও আর্য্য ধর্ম্ম সংক্রান্ত শাস্ত্রাদি পাঠে রুচি পরিবর্দ্ধিত হয়, তাহাতে কিছু মাত্র সন্দেহ নাই। যাঁহারা তাঁহার বক্তৃতা শুনিয়াছেন ইহা তাঁহারা উত্তম রূপ বুঝিতে পারিয়াছেন। ইহা কি সামান্য আশ্চর্য্যের বিষয় যে যে মাড়োয়ারি জাতি ব্যবসা ভিন্ন অন্য কথাই শুনিতে জানেনা, যাহারা এক মাত্র গুরুর পূজাই ধর্ম্মের চরম সীমা স্থির করিয়া রাখিয়াছে, যাহারা ধর্ম্মানুষ্ঠান সময়েও ধুতি, ঘৃত, চিনির দর বিস্মৃত হয় না তাহারাও দেড় ঘণ্টা কাল স্তব্ধ হইয়া ধর্ম্মার্থ বার্ত্তা শুনিতেছিল ও ক্ষণজন্যও চঞ্চল হয় নাই। এতদ্দর্শনে আমাদের বিশেষ আশা হইতেছে যে সেন মহাশয় যদি মধ্যে ২ নিজ বক্তৃতা দ্বারা কলি-

है, कितने लोगों को अपने सुननेवालों के हृदयंगम कराने के लिये कठोर शब्द व्यवहार करते सुना है, कितने लोगों को धर्म्मविषय में व्याख्यान देने के समय बड़े लंबे २ संस्कृत के पद के पद व्यवहार करते सुना है, परन्तु इसका प्रतिफल यही होता है कि या तो सुननेवाले वक्ता के सदुपदेश को ग्रहण करने के बदले लड़ पड़ते हैं और कहीं उकताके अपनी २ राह लेते हैं, वक्ता बिचारे, हौरा गुल मचाके शान्त हो जाते हैं, और चटान पर वर्षा की तरह बिचारों का सब परिश्रम वृथा हो जाता है।

ज्ञानवर्द्धिनी सभा में हमलोगों ने बाबू श्रीकृष्णप्रसन्नसेन की वक्तृता देते सुना, और चाहे हमलोग सब विषय में उनसे एक मत न हों, परन्तु उनकी वक्तृता सुननेहीसे जो एक प्रकार आनन्द अनुभव होता है धर्म्मभाव सबके चित्तमें उद्दीपित होता है और आर्य्यधर्म्मके शास्त्रों को पढ़ने की रुचि बढ़ती है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। जिन लोगोंने, उनकी वक्तृता सुनी उनको यह अच्छीतरह अनुभव हो गया। यह क्या थोड़े आश्चर्य्य की बात है कि जो मारवाड़ी जाति सिवाय वाणिज्य की बात के दूसरी बात नहीं सुनना जानते, जो गुरुजी महाराज की पूजनाही धर्म्म की चरम सीमा समझे हुए हैं जोलोग धर्म्म क्रिया के समय भी 'बांजे', 'कारे', 'धोती', 'घी', 'चीनी' के दर को नहीं भूलते, वेलोग डेढ़ घण्टे तक चुपचाप धर्म्म की बातें सुनते रहे, और जरा न उकताये। हमलोगों को यह देखकर आशा होती है कि यदि सेन महाशय कभी २ अपनी मधुर वक्तृता कलकत्ते की हिन्दुस्थानी समाज के उपकार के लिये दिया करें तो बहुत से सदनुष्ठान जिनका न होना कलकत्ते के लिये कलंक स्वरूप है, उसके होने की भी संभावना हो।

भा: सिं:।

কাতা ও হিন্দু স্থানী সমাজের উপকারার্থ যত্ন করেন, তাহা হইলে যে ২ কার্য্যের অভাব বশতঃ কলিকাতা কলঙ্কিত আছে, তত্তাবৎ সদনুষ্ঠান অনায়াসে সংসাধিত হইতে পারে।

ভা, গি,।

প্রাপ্ত পত্র।

সম্পাদক মহাশয়!

আর্য্য কুল গৌরব পাকুড় নিবাসী শ্রীল শ্রীযুক্ত রাজা তারেশচন্দ্র পাণ্ডে মহোদয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার কার্য্য সৌকর্য্যার্থে একটী মুদ্রাযন্ত্র দান করিয়াছেন, আমাদের সনাতন ধর্ম্মের সত্যার্থ প্রচার জন্য শ্রীযুক্ত পণ্ডিত রাজ পৌরাণিক শাস্ত্রী চতুর্ভুজ শর্ম্মা ৺ কাশীধাম হইতে জয়পুরে গমন করিয়াছেন এবং পণ্ডিত প্রবর শ্রীযুক্ত শশধর তর্ক চূড়ামণি মহাশয় ও ভা, আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সুযোগ্য সম্পাদক শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহোদয় জ্বলন্ত উৎসাহের সহিত আমাদের প্রিয় আর্য্য ধর্ম্মের নিগূঢ় মর্ম্ম সাধারণের সমক্ষে ব্যাখ্যা ও প্রচার করিতেছেন ইহা অপেক্ষা প্রীতিকর সমাচার আর কি হইতে পারে? বিশেষতঃ পুণ্যধাম বারাণসীতে মুখ্য সভা উঠিয়া আসাতে আর্য্য ধর্ম্ম পুনরুদ্দীপন সম্বন্ধে সমধিক আশার সঞ্চার হইয়াছে। এই সময়ে, আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভ্য গণের সমক্ষে একটী প্রস্তাব উপস্থিত করা আবশ্যক বিবেচনা করিলাম।

অনেক দিন হইল, শ্রীযুক্ত পণ্ডিত শশধর তর্কচূড়ামণি মহাশয় যজ্ঞোপবীত ধারণের আবশ্যকতা সম্বন্ধে একটী অত্যুত্তম বক্তৃতা প্রদান করিয়াছিলেন এবং সেই বক্তৃতাটীর সারাংশ ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশিত হইয়াছিল। ইহা দ্বারা যে হিন্দু মণ্ডলীর কত উপকার হইয়াছে তাহা লিখিয়া ব্যক্ত করা যায়না। মধ্যে ২ শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয় জ্বলন্ত উৎসাহের সহিত হিন্দু

(प्राप्तपत्र)

सम्पादक महाशय! आर्य्य-कुल-गौरव पकौड़ के राजा श्री ५ तारेश चन्द्र पांडे महोदय ने आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के कार्य्यार्थ एक मुद्रा यंत्र दान किया, हमारे सनातन धर्म्म का सत्यार्थ प्रचार करने के लिये श्रीयुक्त पण्डित राज पौराणिक शास्त्री चतुर्भुज शर्म्माजी ने काशीजीसे जयपूर मे पधारे श्री पण्डित प्रवर श्रीयुक्त शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय वो भा: आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सुयोग्य कार्य्य सम्पादक श्रीमान कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय ज्वलंत उत्साह सहित हम सब के प्रिय आर्य्य धर्म्म के निगूढ़ मर्म्मसबके साम्हने व्याख्या वो प्रचार कर रहे हैं, इस से आनन्द की समाचार फिर क्या हो सक्ता है। विशेषत: पुण्य भूमि श्रीकाशीजी में मुख्य सभा आ जाने से आर्य्य धर्म्म की पुनरुद्दीपनार्थ अधिक आशा का सचार हुआ! इस ही अवसर में आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सभ्य सुजनों के निकट एक प्रस्ताव छेड़ना मुझे आवश्यक बुझ पड़ता है।

बहुत दिन हुए श्रीयुक्त पण्डित शशधर तर्क चूड़ामणि महाशय ने द्विजों के लिये "यज्ञोपवीत धारण" इस आशय पर एक अत्युत्तम वक्तृता करीथी और उस का सारांश धर्म्म प्रचारक में प्रकाशित हुआ था, इस से जो हिन्दुओं का कितना उपकार हुआ सो हम लिख प्रगट नहीं कर सक्ते हैं। बीच २ में श्रीयुक्त कुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय ने ज्वलंत उत्साह सहित हिन्दु धर्म्म के गूढ़ अभिप्राय सब व्याख्या की करते हैं, उस से सर्व्व साधारण का बहुत उपकार होते रहते हैं। किन्तु खेद यह है कि वह सब वक्तृता संवाद पत्रों में प्रकाश न होने से आशानुरूप फल नहीं मिलता है। यह सब व्याख्यान प्रकाश होना अतीव आवश्यक है। "धर्म्म प्रचारक" पत्र द्वारा शास्त्र के अभिप्राय जहांतक सर्व्व साधारण के गोचर हो सके सो होय, किन्तु मेरे विचार में दूसरा कोई कुछ उपाय

ধর্ম্মের গূঢ় মর্ম্ম সকল ব্যাখ্যা করিয়া থাকেন এবং তাহা দ্বারা আপামর সাধারণের যথেষ্ঠ উপকার হইয়া থাকে। কিন্তু, দুঃখের বিষয় এই যে, সে সকল বক্তৃতা কোন পত্রিকায় প্রকাশ না হওয়াতে আশা মত ফল দর্শিতেছেনা। এই সকল ব্যাখ্যান প্রকাশ হওয়া অতীব আবশ্যক। ধর্ম্ম প্রচারকের দ্বারা শাস্ত্রের মর্ম্ম সকল যতদূর সাধারণের গোচর হইতে পারে, হউক। কিন্তু, আমার বিবেচনায়, আর একটী উপায় অবলম্বন করা আবশ্যক। তাহা এই:—শ্রাদ্ধ তর্পণের আবশ্যকতা, ব্রত নিয়মের উপকারিতা, বিগ্রহাদি উপলক্ষ করিয়া ভগবানের আরাধনার উদ্দেশ্য, পুষ্প, তুলসীপত্র প্রভৃতির দ্বারা দেবতা আরাধনার ফল, শ্রীকৃষ্ণের লীলা সমূহের তাৎপর্য্য এবম্প্রকার বিষয় সকল শাস্ত্রীয় প্রমাণ সহ বিবৃত করিয়া ক্ষুদ্র ২ পুস্তিকাকারে, প্রতি মাসে কিম্বা পক্ষে, প্রকাশ করত সামান্য মূল্যে, আপামর সাধারণকে বিক্রয় করিলে ভাল হয়। বিদ্যালয়ের অল্পবয়স্ক ছাত্র গণকে বিতরণ করা সমগ্ররূপে শ্রেয়। এতদর্থে অর্থের প্রয়োজন। আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভ্য গণ অনুগ্রহ পূর্ব্বক মাসে ২ কিছু ২ করিয়া প্রদান করিলে এ প্রস্তাবটী কার্য্যে পরিণত হইতে পারে। এবং আমরা আশা করি ধার্ম্মিক সভ্য গণ এই সুমহৎ কার্য্যে কিছু ২ ব্যয় করিতে কাতর হইবেন না।

আর্য্য ভ্রাতাগণ! একবার দেখুন দেখি, ধর্ম্ম প্রচারার্থে, খৃষ্টীয়ানগণ কত মত উপায় উদ্ভাবন করিতেছে। প্রথমে, বিদ্যালয় স্থাপন করিয়া বালক গণকে শিক্ষা প্রদান করিতেছে, পরে, তাহারা জ্ঞান লাভ করিলে, তাহাদের হস্তে, দাউদের গীত, মথি লিখিত সুসমাচার প্রভৃতি অর্পণ করিয়া তাহার ধর্ম্ম হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিতেছে। আর এক দিকে, প্রচারক গণ বক্তৃতা দ্বারা খৃষ্টীয় ধর্ম্মের উৎকর্ষ সাধারণের হৃদয়ঙ্গম করিয়া দিতেছে এবং খ্রীষ্টীয় ধর্ম্ম প্রতিপোষক কত পুস্তিকা বিতরণ করিতেছে। এই সকল পুস্তিকা কত প্রকার ভাষায় প্রকাশিত হইয়াছে। এই সকল ব্যাপারে কি

अवलम्बन करना आवश्यक बोध होता है। यह यह है कि श्राद्ध तर्पणादि की आवश्यकता क्या व्रत नियम संजमों से लाभ क्या, मूर्त्ति पूजन का क्या अभिप्राय है, तुलसी, फूल आदि से देवाराधन का फल क्या, श्रीकृष्ण लीलायों का क्या तात्पर्य्य है इत्यादि आमयों पर व्याख्यान शास्त्रीय प्रमाण सहितलिख के छोटे२ पुस्तक छपा छपा कर प्रति मास या प्रति पक्षान्तमें प्रकाश कीजाय वो अल्प मोल में बिके, विद्यालयके छोटे२ बालकों को बिन मोल बंटना सर्व्वथा उचित है। एतदर्थ द्रव्य का विशेष प्रयोजन है। आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सभ्य गण कृपा कर प्रति मास कुछ२ दान करने पर यह प्रस्ताव कार्य्य में परिणत होसक्ता है। हम आशा करते हैं कि धर्म्मात्मा सभ्य गण इस महत कार्य्य के लिये थोड़ा बहुत व्यय करने में संकोच न मानेंगे।

आर्य्य भ्राता गण! एक बार देखिये तो, धर्म्म प्रचारार्थ इसाइ लोग कितना कुछ उपाय निकालते हैं। पहले विद्यालय स्थापन करके बालकों को शिक्षा देते हैं, फिर वे सब थोड़ा बहुत सिखने पर उन सब को दाउद के गीत, मथि का सुसमाचार आदि पढ़ने दे देते हैं। दुसरे ओर देखिये पादरी लोग वक्तृता कर करके ईसाही धर्म्म को श्रेष्ठता सब को समझाते हैं और इसाही धर्म्म की पुष्टि के लिये कितने पुस्तक बटते हैं। फिर यह सब का भिन्न २ भाषा में उल्था भी होता जाता है। अंगरेज लोग इस व्यय को अनायास उठालेते हैं। हम सब क्या ऐसेही सारविहीन हो गये कि हमारे सनातन धर्म्म को पुनर्जीवित करने के अर्थ सामान्य अर्थ भी व्यय नहीं कर सकेंगे? हा! सब जाति को तो निज २ धर्म्म रक्षार्थ उद्यत देखते हैं, केवल हमही सब निद्रित। हम मुसलमानों पर यवन समझ के घृणा मानते हैं किन्तु वे लोग दैनिक नेमाज़ भी नहीं चुकते। आफिस में काम करते

নায়াসেই এই ব্যয়-ভার বহন করিতেছেন। আমরা কি এত অসার হইয়া পড়িয়াছি যে, আমাদের সনাতন ধর্ম্মকে পুনর্জ্জীবিত করিবার জন্য সামান্য মাত্রও ব্যয় স্বীকার করিতে অগ্রসর হইবনা? হায়! সকল জাতিকেই স্বীয় ২ ধর্ম্ম রক্ষার জন্য উদ্যম পূর্ণ দেখিতে পাই কেবল আমরাই নিদ্রিত। আমরা মুসলমান দিগকে যবন বলিয়া ঘৃণা করিয়া থাকি। কিন্তু, তাহারা তাহাদের প্রাত্যহিক নমাজ পরিত্যাগ করে না। কার্য্যালয়ে কার্য্য করিতেছে নমাজের সময় হইল, অমনি হাতের কাজ ত্যাগ করত নমাজ করিতে গমন করিল। সামান্য মজুর মজুরী করিতেছে, নমাজের সময় হইল, অমনি পথের মধ্যে নমাজ করিতে আরম্ভ করিল। ইংরাজ দিগকে আমরা ম্লেচ্ছ বলিয়া থাকি, কিন্তু দেখুন তাহারাও নিয়ম মত ঈশ্বরের আরাধনা করিয়া থাকে। অন্ততঃ প্রতিরবিবারে উপাসনালয়ে উপস্থিত হইয়া উপাসনায় যোগ দিয়া থাকে। কেবল আমাদেরই মধ্য হইতে নিয়ম সকল লুপ্ত হইতেছে। আমরাই কেবল সন্ধ্যা বন্দনা করিতে সময় পাইনা। বিদ্যালয়ে কিম্বা কার্য্যালয়ে গমন করিতে হইবে, সুতরাং সন্ধ্যা, পূজা করিবার সময় নাই। কোন উপাসনালয়ও নাই যেখানে গিয়া ধর্ম্ম ক্ষুধা শান্তি হইতে পারে। স্থানে ২ দেবালয় আছে বটে, কিন্তু, সেখানে গিয়া তৃপ্তি লাভ করিবার উপায় কোথায়? পুরোহিত সংস্কৃত ভাষায় মন্ত্র উচ্চারণ করিতেছেন, আপামর সাধারণে তাহার মর্ম্ম হৃদয়ঙ্গম করা দূরে থাক, তিনি নিজে তাহা বুঝিতে পারেন কি না সন্দেহ। আমাদের মধ্যে ধর্ম্ম ভাব শিথিল হওয়ার ইহাও একটী কারণ। আমরা অনেক মন্ত্র উচ্চারণ করি, অনেক মন্ত্র শ্রবণ করি, কিন্তু তাহার অর্থ বুঝিতে পারিনা সুতরাং তাহা পাঠ কিম্বা শ্রবণ করিয়া তৃপ্তি লাভ হয় না। যখন অনেকেই সংস্কৃত ভাষা অবগত নহেন, তখন পূজা প্রভৃতিতে যে সকল মন্ত্র উচ্চারিত হয় তাহার অর্থ সাধারণের বুঝিবার সুবিধা করা উচিত।

কোন২ স্থানে, আর্য্য ধর্ম্ম সভা সংস্থাপন হওয়াতে, ধর্ম্মতত্ত্ব লাভের কথঞ্চিত উপায় হইয়াছে। কিন্তু,

रहे किन्तु नेमाज के समय आजाने पर झट सब काम छोड़ नेमाज कर लेते हैं। मजूर लोग मजूरी करते नेमाज का समय होनेही झट सड़क के किनारेही में नेमाज पढ़ना आरम्भ कर देते हैं। अंगरेजों को हम म्लेच्छ मानते हैं किन्तु देखिये उन्होंने भी नियमानुसार भगवत की आराधना की करती हैं, कुछ भी न करें तो प्रति रविवार गिर्जे में उपस्थित हो भगवत उपासना करते हैं। केवल हमारेही बीच में से यह नियम दिनों दिन उठता जाता है। हमही सब को केवल संध्यावंदन करने का समय नहीं मिलता है। स्कूल या आफिस जाना है, सुतरां संध्या, पूजा करने का अवसर कहां? वाह! वाह! ऐसे मन्दिर भी सर्व्वत्र नहीं मिलता, जहां जाने पर धर्म्म-सुधा की निवृत्ति होय। मानते हैं कि स्थान २ में देवालय हैं, किन्तु वहां जानेसे भी मन हम कहां मानता? पूजारि जी संस्कृत भाषा में मंत्र उच्चारण करते हैं, साधारण लोगों को समझना तो किनारे रहो उन्ने स्वयं समझता है या नहीं उसमें भी सन्देह है। हमारेबीच धर्म्म भाव शिथिल होने का यह भी एक कारण है। हम अनेक मंत्र उच्चारण करते हैं, अनेक मंत्र श्रवण करते हैं किन्तु उनसब के अभिप्राय नहीं समझने पर उस रीति पाठ वो श्रवण से कुछ फल नहीं मिलता है। जब देख पड़ता है कि बहुतेरे लोग संस्कृत नहीं समझते हैं, तो पूजा प्रभृति में जो सब मंत्र पढ़े जाते हैं वह सब साधारण के समझने के लिये कुछ उपाय करना चाहिये।

किसी २ स्थान में आर्य्य धर्म्म सभा स्थापन होने पर धर्म्म तत्त्व सिखने का कुछ २ उपाय हुआ, किन्तु इन्हों की संख्या इतनाही अल्प है जो उससे बहुत उपकार की आशा नहीं की जा सक्ति है। ऐसी २ सभा सर्व्वत्र स्थापित होना चाहिये। हम आशा करते हैं कि शीघ्र हम आर्य्यसमाज सब स्थान

ইহার সংখ্যা এত অল্প যে, তাহার দ্বারা সর্ব্বাধিক উপকারের আশা করা যাইতে পারে না। এবম্প্রকার সভা প্রতি গ্রামে সংস্থাপিত হওয়া উচিত। আশা করি, আমাদের নিদ্রিত আর্য্য ভ্রাতাগণ আলস্য শয্যা হইতে উত্থান করত তৎপক্ষে মনোযোগী হয়েন। সভা সমূহের কার্য্য গুলি ভা, আ, ধ, প্র, সভার অনুমোদনানুসারে একতানে চলিলে ভাল হয়।

বশম্বদ

পুনা। ৯ই শ্রাবণ) ভারত বর্ষীয় আ, ধ, প্র, সভার
১২৯০) জনৈক সভাসদ্।

রাজা ও সাধু।

কোন সময়ে জনৈক রাজা বন মধ্যে মৃগয়া করিতে গিয়াছিলেন। তিনি একটী মৃগের পশ্চাৎ ২ ধাবমান হইয়া ক্লান্ত হইয়া পড়িলেন এবং একটী বৃক্ষের সুশীতল ছায়ায় বিশ্রাম করিতে লাগিলেন। ইতস্ততঃ দৃষ্টি করিতে ২ দেখিলেন, যে একজন তপস্বী প্রেমাশ্রু পূর্ণ লোচনে ভগবদ্গুণানুবাদ গান করিতেছে। রাজা তাঁহার নিকটে গিয়া প্রণাম পূর্ব্বক নিবেদন করিলেন, হে মহাত্মন্! আপনি একাকী এই বিজন বনে কিরূপে বাস করেন? তপস্বী বলিলেন, রাজন্! আমি ক্ষণ জন্যও একাকী থাকিনা, সর্ব্ব সামর্থ্যশীল পরমেশ্বর নিরন্তর আমার সঙ্গে রহিয়াছেন।

রা। সিংহ, ব্যাঘ্র, ভল্লুক, সর্পাদি সাক্ষাৎ কাল স্বরূপ ভীষণ জন্তু গণ এখানে সর্ব্বদা বিচরণ করিতেছে, ইহাদিগকে দেখিয়া কি আপনার ভয় হয়না?

ত। আমি আপনার ন্যায় ধনুর্ব্বাণ লইয়া কখনও উহাদিগকে বধ করিবার চেষ্টা করিনা, আমার মনেও কখন তাহাদের প্রতি বৈরভাব উদয় হয়না, তবে উহারা কেন আমার শত্রুতাচরণ করিবে? বরং সর্ব্বত্র আত্ম দৃষ্টি বশতঃ আমি তাহাদিগকে মিত্রভাবে প্রেম করিয়া থাকি, তাহাতে উহারা আমার রক্ষণাবেক্ষণই করিয়া থাকে।

ष्य को बिछावन पर से उठ कर इन सब कामों मे दत्त चित हों। सभा समूह यदि भा: आ: ध: प्र: सभा के अनुमोदनानुसार प्रति कार्य्य काल में एकही तान जमा लें तो परमोत्तम हो।

पूना।) भा: आ: ध: प्र: सभा के
श्रावण-कृष्ण ५।) जनैक वशम्वद सभासद।

राजा वो साधु।

एक समय किसी राजा ने बीच बन में शीकार खेलने को गया था। एक हरिणा के पिछे दौड़ते २ श्रान्त होकर वृक्ष को शीतल छाया में विश्राम करने लगे। आस पास ताकते २ देख पड़ा कि एक तपस्वी प्रेम से आंसु गिराते हुए परमात्मा की गुणानुवाद गारहे हैं। राजा ने समीप जाके प्रणाम कर निवेदन किया, हेमहात्मन्! आप इस निजन बन में अकेले कैसे विराजते हैं? तपस्वी उत्तर किये, हे राजन्! अकेला मुझे कभी नहीं रहने पड़ता, सर्व्व सामर्थ्यवान परमेश्वर सदैव संग ही संग विद्यमान हैं।

रा। यहां शेर, सिंह, भाल, सर्पआदि काल सदृश भयंकर जीव सब सदाही विचरते हैं, इन्हीं से आप का डर नहीं लगता?

त। मैं कभी आप समान शर धनुष लेके उन सब को मारने की चेष्टा नहीं करताहु, न मैं मन से भी कभी उन्हीं से विरोध मानताहु, तो वे सब क्यों मेरे बैर बनेंगे? बरन मैं सर्व्वत्र एक आत्मदृष्टि हेतु मित्रभाव से उन सब को प्रेम करता हुं, इस से वे सब मेरे रक्षक बने रहते हैं।

रा। यहां तो कोइ और मनुष्य नहीं हैं, तो

আপনার ভোজনাদির কিরূপ ব্যবস্থা হয় ?

ত। লোকালয়ে যিনি ভোজন দান করেন, তিনি এখানেও নিত্য বিরাজ মান। তাঁহার আজ্ঞানুসারে বৃক্ষ সমূহ আমার আবশ্যক মত সুরস ফল, পত্র, কন্দ আদি প্রস্তুত রাখে।

রা। আপনি একজন মহাত্মা। আপনার বিশেষ পরিচয় জানিতে ইচ্ছা করি।

ত। গুরুর নিকট দীক্ষিত হইয়া নিজ পরিচয় জানিয়া লউন, তৎপরে আমার পরিচয় জানিতে আর বিলম্ব হইবেনা।

রা। আপনিই প্রকৃত ত্যাগী পুরুষ।

ত। আমি না আপনি ? আমি নিত্য অমূল্য পরম পদার্থ লাভের জন্য, তুচ্ছ সংসার মাত্র ত্যাগ করিয়াছি, যাহা বাস্তবিক কিছুই নয় বলিলেও হয়। আর আপনি কিঞ্চিৎ স্বপ্নবৎ সুখেই তৃপ্ত হইয়া অমূল্য পদার্থের দিকে চাহিয়াও দেখেন না। আমি সর্ব্বোত্তমের জন্য বৃথা পদার্থ ত্যাগ করিয়াছি মাত্র কিন্তু আপনি তুচ্ছ সংসারের নিমিত্ত সর্ব্ব স্বরূপ পরম পদার্থকে ত্যাগ করিয়াছেন, অতএব আপনিই সর্ব্বত্যাগী ! ! !

রা। (লজ্জিত হইয়া) মহাত্মন্ : আমি দিবাতে রাজৈশ্বর্য্য ভোগ করি, রাত্রিতে সুকোমল শয্যায় শুইয়া নিদ্রাসুখ উপভোগ করি, অতএব অধিক সুখী কে, আপনি কি আমি ?

ত। আমি। কেননা আপনি সমস্ত দিন রাজকীয় চিন্তায় ব্যাকুল, ও সদাই শত্রু ভয়ে ভীত ; আমি সমস্ত দিন পরমাত্ম-সত্ত্বায় নিমগ্ন থাকিয়া অতুল আনন্দ রস পান করি। রাত্রিতে নিদ্রিত হইলে আপনারও কোমল শয্যা স্মরণ থাকেনা, আমার বৃক্ষতল মনে পড়েনা। সুতরাং তখন উভয়ের অবস্থাই এক। বরং মধ্যে ২ স্বপ্ন জন্য আপনার সুখ নিদ্রার ব্যাঘাত হয় ; অতএব আপনার সুখ কোথায় ?

রাজা সাধু অপেক্ষা নিজ অবস্থা হীন বুঝিতে পারিয়া সাধুকে বারম্বার প্রণাম পূর্ব্বক মনে ২ তদ্ভাবৎ বিচার করিতে ২ রাজধানীতে প্রত্যাবৃত্ত হইলেন।

त। लोकालय में भी जो भोजन देनेवाले हैं, वे यहां भी नित्य विराजमान हैं। वृक्ष समूह उन की आज्ञानुसार जब २ प्रयोजन पड़ता मुझे सुरस फल, पत्र, कन्द आदि मेरे लिये तैयार रख छोड़ते हैं।

रा। आप बड़े महात्मा हैं, आप का परिचय मुझे कृपाकर दीजिये।

त। निज गुरु से आप अपना परिचय कर लीजिये, तो मेरा परिचय मिलने में विलम्ब नहीं होगा।

रा। आप बड़े त्यागी पुरुष हैं।

त। मैं या आप ? मैं तो नित्य, वो अनमोल परम पदार्थ के लिये संसार मात्र छोड़ा, जो सच मुच कुछ है हो नहीं, औ आपने किंचित स्वप्न तुल्य सुख के अर्थ उस नित्य अनमोल पदार्थ को किनारे कर दिया। मैं सर्व्वोत्तम के लिये वृथा पदार्थ को त्याग किया और आपने तुच्छ संसार के अर्थ सर्व्व स्वरूप परम पदार्थ को त्याग किया है, अतएव आपही सर्व्व त्यागी हैं।

रा। (लज्जित होकर) महात्मन! मैं दिन को राज ऐश्वर्य्य भोग करताहुं, रात्रि को सुकोमल शय्या पर सोए हुए रहता हुं, सुखो में अधिक हुं या आप ?

त। मैं। आप दिन भर राज्य की चिन्ता में ग्रस्त रहते हैं, शत्रुओं से सदैव शंका युक्त बने रहते हैं। मैं भर दिन परमात्मा की सत्वा में मग्न रहकर अतुल आनन्द रस पान करताहु। रात्रि को सोजाने पर आप को कोमल बिछावन स्मरण रहता न मेरा वृक्ष तल। उस समय दोनोंही की अवस्था समान, बरन आप भांति भांति के स्वप्न देखकर क्लेशित होते हैं। अतएव आपकासुख कहां ?

राजा इतनेही में अपने को हीन मान कर साधु को बार २ प्रणाम किये वो मनेमन बुझते बिचारते राज धानी में लौट आये।

ধন্যবাদ সহ গ্রন্থোপহার প্রাপ্তিস্বীকার।

শ্রীযুক্ত পণ্ডিত ভবশঙ্কর ভট্টাচার্য্য মহাশয় প্রণীত (সংস্কৃত) কুমুদিনী কুমুদ চম্পূ। শ্রীমদ্বাবু ঈশান চন্দ্র বসু প্রণীত (বাঙ্গালা) নীতি কবিতাবলী; নীতি পদ্য; ব্রাহ্ম বিবাহ বিচার, ও নবশ্লোকী মহিম্নঃ স্তব। শ্রীযুক্ত বাবু প্যারী চাঁদ মিত্র প্রণীত (ইংরাজী) ষ্ট্রে থট্‌স অন স্পিরিচুয়ালিজম্; নেচর অবদি সোল; স্পিরিচুয়াল ষ্ট্রে লিব্‌স্ ও (বাঙ্গালা) আধ্যাত্মিকা।

ভারতেন্দু শ্রীযুক্ত বাবু হরিশ্চন্দ্র কর্ত্তৃক প্রণীত, সংগৃহীত ও প্রকাশিত (হিন্দী) অন্ধের নগরী; নীল দেবী; স্তোত্র পঞ্চ রত্ন; গো মহিমা; ভারত জননী, বুন্দীকা রাজ বংশ; কার্ত্তিক স্নান, বিজয়িনী বিজয় বৈজয়ন্তী। শ্রীমন্মহারাজ কুমার বাবু রামদীন সিংহ কর্ত্তৃক সংগৃহীত ও প্রকাশিত বিহার দর্পণ ও ক্ষেত্রতত্ত্ব। শ্রীযুক্ত বাবু গোপাল চন্দ্র কৃত ভাষা ব্যাকরণ। শ্রীযুক্ত বাবু সাহেব প্রসাদ সিংহ কর্ত্তৃক প্রকাশিত নিযুদ্ধশিক্ষা; গুরুগণিত শতক ও গণিত বত্তিসী।

শ্রীমন্মহারাজাধিরাজ কুমার শ্রীলাল খড়্গ বাহাদুর মল্ল কৃত পায়স প্রেম প্রবাহ; ফাগ-অনুরাগ; পিযূষ ধারা ও স্বপনে কী সম্পতি। শ্রীমদ্বাবু রাধা কৃষ্ণ দাস প্রণীত দুঃখিনী বালা। শ্রীপণ্ডিত রাধা চরণ গোস্বামী কৃত দেশোপকারী পুস্তক। জনৈক ব্রাহ্মণ প্রণীত (ইংরাজি) দি থট্‌স্ অন ইণ্ডিয়া। শ্রীযুক্ত বাবু রামজয় বাগচী প্রণীত (বাঙ্গালা) কবিতা কুসুম।

প্রাপ্ত পুস্তক সমালোচনা।

১। প্রকৃত তত্ত্ব—শ্রীমদাচার্য্য আনন্দ স্বামী কর্ত্তৃক বিবৃত ও শ্রীযুক্ত বাবু দ্বিজ দাস দত্ত দ্বারা প্রকাশিত। ইহাতে ধর্ম্ম মত ও সাধন সম্বন্ধে পঞ্চ পঞ্চাশৎটী বিষয় লিপিবদ্ধ আছে। বিষয় গুলি এত সংক্ষিপ্ত ভাবে বিবৃত যে তাহাতে আচার্য্যের "নিজ মত" ভিন্ন শাস্ত্র, যুক্তি বা বৈজ্ঞানিক প্রমাণাদি লিখিত হয় নাই। গ্রন্থকারের সকল মত [illegible]

सधन्यवाद ग्रन्थोपहार प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त पण्डित भव शंकर भट्टाचार्य्य महाशय कृत (संस्कृत) कुमुदिनी कुमुद चम्पू। श्रीमद्बाबु ईशान चन्द्र बसुजी की बनाई हुई (बंगाक्षर में) नीतिकबितावली; नीति पद्य; ब्राह्मविवाह विचार वो नव श्लोकी महिम्नः स्तव। श्रीयुक्तबाबु प्यारीचांद मित्र कृत (अंग्रेजी) ष्ट्रे थट्स् अनस्पिरिच्युयालिजम्; नेचर अवदि सोल; स्पिरिच्युयाल ष्ट्रे लिवस्" वो (बंगाक्षरी) आध्यात्मिका।

भारतेन्दु श्रीयुक्त बाबु हरिश्चन्द्रजी के प्रणीत, संग्रहीत वो प्रकाशित (हिन्दी) अंधेर नगरी; नील देवी; स्तोत्रपंचरत्न; गोमहिमा; कार्त्तिकस्नान; भारतजननी; बुन्दी का राज बंश; विजयिनी विजय वैजयन्ती। श्रीमन्महाराजकुमार बाबु रामदीनसिंहजी का संग्रह वो प्रकाश किया हुआ बिहारदर्पण वो क्षेत्रतत्व। श्रीयुक्त बाबु गोपाल चन्द्रकृत भाषा व्याकरण। श्रीयुक्तबाबु साहब प्रसाद सिंहजी द्वारा प्रकाशित नियुद्ध शिक्षा; गुरु गणित शतक वो गणित बत्तिसी।

श्रीमन्महाराजाधिराजकुमार श्रीलाल खड्गबहादुर मल्लकृत पायस प्रेम प्रवाह; फाग अनुराग; पियूषधारा वो स्वपने की सम्पति। श्रीमद्बाबु राधाकृष्ण दास प्रणीत दुःखिनीबाला। श्रीपण्डित राधाचरण गोस्वामीकृत देशोपकारी पुस्तक जनैक ब्राह्मण का बनाया हुआ (अंग्रेजी) दिथट्सअन् इण्डिया श्रीयुक्त बाबु रामजय बागची प्रणीत (बंगाक्षरी) कविता कुसुम।

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

१। प्रकृत तत्त्व। श्रीमदाचार्य्य आनन्द स्वामी जीने विवृत किया थो श्रीबाबू द्विजदास दत्त ने छपवा कर प्रकाश किया है। इस पुस्तक में धर्म्म सम्बन्धी मत वो साधन के विषय पर ५५ प्रबन्ध लिखे गये हैं। आमयों सब इनने संक्षेप से विवृत किये गये जो उनमें आचार्य्य का "निज मत" छोड़के शास्त्र, युक्ति या वैज्ञानिक प्रमाणादि नहीं [illegible] ग्रन्थकार के समस्त मत को वि-

বোধ হয় না। তিনি নিবেদন পত্রে লিখিয়াছেন "যদি কেহ সরল বিশ্বাসের দ্বারা পরিচালিত হইয়া এতদ্বিরুদ্ধে কোন অকাট্য যুক্তি প্রদর্শন করিতে পারেন, তবে আমার নিকট স্বয়ং উপস্থিত হইয়া কিম্বা পত্র দ্বারা তদ্বিষয় জ্ঞাপন করিলে আমি তাহা খণ্ডন বিষয়ে বিশেষ চেষ্টা করিতে কৃত সংকল্প রহিলাম।" ধন্য সাহস! "অকাট্য যুক্তি" "খণ্ডন" করিতেও "বিশেষ চেষ্টা"!! মধ্যে ২ কতক গুলি উপদেশ উদার ও প্রশস্ত হৃদয়ের গ্রহণোপযোগী হইয়াছে।

২। প্রসাদ-প্রসঙ্গ—৩য় সংস্করণ। ইহার সংগ্রহ কর্ত্তা যে বঙ্গীয় সাহিত্য সমাজের, চিন্তাশীল কবি সমাজের ও ভগবদনুরক্ত ভক্ত সমাজের পরম আদর ও ধন্যবাদের পাত্র তাহার আর সন্দেহ নাই। সজ্জনের উপকারার্থ তাঁহার শ্রম ও যত্ন অতীব প্রশংসনীয়। মহাত্মা রাম প্রসাদের ভক্তি রস পূর্ণ হৃদয় হইতে যখন যে অমূল্য উচ্ছাস উত্থিত হইত তাহাই তিনি গান করিতেন। তাঁহার মনের বল ও অনুরাগের সৌগন্ধ প্রতি সঙ্গীতে নৃত্য ও ক্রীড়া করিতেছে। গান গুলি শুনিলে নিদ্রিত মন জাগ্রত হইয়া উঠে।

৩। সঙ্গীত সংগ্রহ। বাউলের গাঁথা—১ম খণ্ড। কলিকাতা ২১০।১১ নং কর্ণওয়ালিস্ ষ্ট্রীট্ ভিক্টোরিয়া প্রেসে শ্রীবাবু ভুবন মোহন ঘোষ কর্ত্তৃক প্রকাশিত। বঙ্গ দেশের মধ্যে বাউল সম্প্রদায়ই আত্ম তত্ত্ব সাধনের প্রকাশ্য প্রচারক, যদিও উক্ত সম্প্রদায় এক্ষণে বহুল দুষ্ট জনে পরিপূর্ণ হইয়া উঠিয়াছে, কিন্তু পূর্ব্ব ২ আচার্য্য গণের গান গুলি এখনও উক্ত সম্প্রদায়কে উচ্চ শ্রেণীতে স্থান দিতেছে। সাধক ভিন্ন সাধারণ লোকে এই সঙ্গীতের সকল মর্ম্ম সুচারু রূপে বুঝিতে পারে না। এজন্য প্রকাশক যত্ন পূর্ব্বক স্থানে ২ তত্ত্বাবতের টীকা করিয়া দিয়াছেন। এক একটী গান পাঠ করিলে বোধ হয় যেন কবির হৃদয়ে প্রবল প্রেমের উত্তাল তরঙ্গ রাশি নাচিতে ২ বহিয়া যাইতেছে- তিনি যেন এ রাজ্য ছাড়িয়া আর কোন গুপ্ত রাজ্যে

शुद्ध विचार या साधन सिद्ध बुद्धि से रचित हैं ऐसा अनुभव नहीं होता है । "निवेदन पत्र" में उन ने लिखा है "यदि कोई व्यक्ति सरल विश्वास से परिचालित होकर इसके विरुद्ध में कोई अकाट्य युक्ति देखला सकें तो मेरे पास स्वयं उपस्थित हो या पत्र लिख कर मुझे जनावें, मैं उस का खंडन करने के लिये विशेष यत्न करूंगा । वाह ! वाह ! धन्य साहस ! "अकाट्य युक्ति" का भी "खण्डन" के लिये "विशेष चेष्टा" !! बीच २ में कोई २ उपदेश उदार वो प्रशस्त हृदयों के ग्रहणोपयोगी हुए ।

२ । प्रसाद-प्रसंग । ३रा संस्करण । इसके संग्रह कर्त्ता जो बंगीय साहित्य समाज के, चिन्ताशील कवि समाज के वो भगवदनुरक्त भक्त समाज के परम आदर वो धन्यवाद के पात्र हैं, इस में कुछ भी सन्देह नहीं । सज्जनों के उपकारार्थ उनने जो श्रम वो यत्न उठाया सो अतीव प्रशंसनीय है । महात्मा राम प्रसाद के हृदय से जो कि भक्ति रस से सदैव परिपूर्ण था, जब जो अनमोल तरंग उठता गया सोही वे तानसे जमाते गये । उनके मन का तेज वो अनुराग की सुगन्ध प्रति संगीत से फूट निकल आते हैं । इन भजनों को सुनने पर सोया हुआ मन भी जाग उठता है ।

३ । संगीत संग्रह । वाउलों के भजन संग्रह-१ला खंड । कलकत्ता २१०।११ नं, कर्णवालीस ष्ट्रीट, विक्टोरिया प्रेस से श्री बाबू भुवन मोहन घोष जीने प्रकाश किया । बंगाले में वाउल सम्प्रदाय ही प्रकाश्य रीति से आत्म तत्त्व साधन का प्रचार किया करते हैं । यदिच उक्त सम्प्रदाय आज कल बहुल दुष्टजनों से पूर्ण हुआ किन्तु पूर्व्व २ आचार्य्यों के भजन समूह से अब तक उक्त सम्प्रदाय को ऊंची श्रेणी में गिना जाता है । साधक सुजन छोड़ के इतर लोग इन सब भजनों का अभिप्राय भली भांति समझ नहीं सक्ते हैं । इस लिये प्रकाशक ने स्थान २ में उन सब की टीका भी लिख दिया । एक २ भजन पढ़ने पर ऐसा अनुभव होता है, मानो कि कवीश्वर के हृदय में प्रवल प्रेम के उछलते हुए तरंग राशि नाचते कूदते बहजाते हैं- मानो वे इस राज्य को छोड़के और किसी गुप्त राज्य में प्रवेश करते हैं- उनके पवित्र आंखे की वाष्प राशि मानो कुहारा बन कर सारे संसार को ढांप रहे हैं- वे सब की दृष्टि के बाहर निकल

যেন কুজ্ঝটিকা হইয়া সমস্ত সংসার ঢাকিয়া ফেলিতেছে, তাঁহাকে আর কেহ দেখিতে পাইতেছেনা। প্রকাশক এই পুস্তক প্রচার করিয়া ভাবুক সাধক সমাজের অনেক উপকার করিয়াছেন। আশা করি, দ্বিতীয় খণ্ডে এতদপেক্ষা "ভাবের গানের" সংখ্যা অধিক থাকিবে। আর আধুনিক কবিদিগের গীত ইহার সহিত একত্র করিয়া পূর্ব্বতন শ্রদ্ধেয় মহাত্মাগণের রচিত গানের অমর্য্যাদা করিবেন না।

৪। ললিতা নাটিকা। শ্রীকৃষ্ণ লীলার শৃঙ্গার ও হাস্য রসময় গীতি রূপক কাশী নিবাসী সাহিত্যাচার্য্য শ্রীমৎ পণ্ডিত অম্বিকা দত্ত ব্যাস বিরচিত। এখানি সরল ব্রজ ভাষাতে লিখিত। ব্রজ ভাষা সহজেই মধুর, তাহাতে কৃষ্ণ লীলা নানা রস পূর্ণ, সুতরাং নাটিকা যে সুজন গণ মনোহারিণী হইবে, তাহা আশ্চর্য্য নহে। রামধারী যাত্রা ওয়ালারা যদি নাটিকা লিখিত রীতিতে ইদৃশ নাটক নাটিকার অভিনয় করে, তবে তাহাদেরও অর্থ লাভ হয় ও সমাজেরও রুচি পরিবর্ত্তন হইতে পারে।

কর্কে বহুত ভাবুক সাধকোঁ কা উপকার কিয়ে হৈঁ। আশা কী জাতী হৈ, কি দুসরে খণ্ড মেঁ গূঢ় ভাব যুক্ত ভজন ঔর ভী অধিক রহেগা ঔর আধুনিক কবিয়োঁ কী বনাঈ হুই গীত সমূহ ইস মেঁ মিলাকর পূর্ব্বতন শ্রদ্ধা কে যোগ্য মহাত্মাওঁ কে ভজনোঁ কী অমর্য্যাদা ন কী জাবেগী।

४। ललिता नाटिका। श्रीकृष्ण लीला का शृंगार वो हास्य रस युक्त गीति रूपक। काशी-वासी साहित्याचार्य्य श्रीमत् पण्डित अम्बिकादत्त व्यास जी ने बनाया। नाटिका सरल व्रजभाषा में लिखी गयी है। व्रजभाषा तो स्वतःएव सुमधुर हैं, कृष्णजी महाराज की लीला भी फिर नाना रस से पूर्ण है, तो नाटिका जो सज्जनों को मनलोभावनी होगी, इस में कुछ भी आश्चर्य्य नहीं। रामधारी यात्रावाले यदि नाटिका में लिखी हुई रीति के अनुसार इस भांति नाटक वो नाटिका का अभिनय करें तो उनसे धन मन का भी लाभ हो सक्ता वो समाज को भी रुचि बदल जा सक्ती है।

বিজ্ঞাপন।

সুনীতি।

আগামী ১লা কার্ত্তিক হইতে "সুনীতি" নাম্নী (রয়েল আট পেজা এক ফর্ম্মার আকারে) এক খানি পাক্ষিক পত্রিকা প্রকাশিত হইবে। বালক ও যুবক বৃন্দের হৃদয়ে আর্য্যরীতি নীতির প্রবর্ত্তনা ও আর্য্য ভাবের উদ্দীপনা করাই ইহার মুখ্য উদ্দেশ্য। ইহার অগ্রিম বার্ষিক মূল্য ডাকব্যয় সহিত ১৷৹; কিন্তু দুর্গা পূজার পূর্ব্বে মূল্য প্রেরণ পূর্ব্বক গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হইলে ১৲ মাত্র লাগিবে। টাকা না পাইলে কাহাকেও গ্রাহক মধ্যে গণ্য করা হইবেনা। আর্য্য সন্তান গণ! আর্য্য ভাবে উদ্দীপিত ও উৎসাহিত হইয়া শীঘ্র২ "সুনীতির" গ্রাহক শ্রেণীভুক্ত হউন—ভারতের মলিন মুখ পুনরুজ্জ্বল করুন।

ধর্ম্মামৃত যন্ত্রালয়। } বশম্বদ
[illegible] } [illegible]

विज्ञापन।

सुनीति।

(रयेल ८ पेजी एक फर्म्मा की पाक्षिक पत्रिका)

आगामी कार्त्तिक मास से नियम पूर्व्वक (व्रज भाषा में) प्रकाशित होगी। बालक वो युवकों के हृदय में आर्य्य रीति नीति की प्रवर्त्तना वो आर्य्य भाव की उद्दीपना करना इसका मुख्य उद्देश्य है। डाक व्यय सहित इस का अग्रिमवार्षिक मोल १।); किन्तु दुर्गापूजा के पहले रुपये भेज के ग्राहक बनने से १) एक रुपया मात्र लगेगा। बिना रुपया पाये किसही को ग्राहकों के मध्य में नहीं गिना जायगा। आर्य्य सन्तानगण! आर्य्य भाव से उद्दीपित वो उत्साहित होकर शीघ्र शीघ्र "सुनीति" के ग्राहक बनीये। भारत के मलिन मुख पुनरुज्ज्वल कीजिये।

धर्म्मामृत यंत्रालय। } वशंवद।
[illegible] } श्रीभूधर चट्टोपाध्याय।

বিদেশীয় এজেণ্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু	কেদার নাথ গঙ্গোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,,	যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	মতিহারী
,,	জগদ্বন্ধু সেন	লাহোর
,,	পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	রামপুরহাট
,,	বিহারিলাল রায়	জামালপুর
,,	রমেশ চন্দ্র সেন	ঐ
,,	হেমচন্দ্র দাস	ঐ
,,	মতিলাল সেন	মুরশিদাবাদ
,,	পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর
,,	রাজ কৃষ্ণ দাস	বহরমপুর
,,	ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী	গয়া
,,	অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায়	

৬৬ নং কালেজ ষ্ট্রীট, কলিকাতা

এজেণ্ট মহোদয় গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্ম প্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহ-সহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করা হইবে।

২। ধর্ম্ম প্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিঅর্ডরে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্ম প্রচারকের ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার।

উত্তম কাগজে মুদ্রিত বার্ষিক	৩।৶০	প্রতিখণ্ড	।৶০
মধ্যম ঐ ঐ	,, ২।৶০	,,	।০
সাধারণ ঐ ঐ	,, ১।৶০	,,	৶০

ধর্ম্ম প্রচারক কার্য্যালয়। } শ্রীপূর্ণানন্দ সেন
মিসির পোখরা। বারাণসী। } কার্য্যাধ্যক্ষ।

☞ এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विदशी एजेण्ट मह्वाशयों के नाम।

श्रीयुत बाबू	केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर।
,,	यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
,,	जगद्बन्धु सेन,	लाहौर।
,,	पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
,,	बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
,,	रमेशचन्द्र सेन,	,,
,,	हेमचन्द्रदास	,,
,,	मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद।
,,	पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर।
,,	राजकृष्ण दास	बहरमपुर।
,,	अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय,	६६ नं०,

कलिज ष्ट्रीट कलकत्ता।

एजेण्ट महोदयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्र का मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना होगा। पत्र वैरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मोल सम्भवतः पोष्टाल मनि अर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आनिया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार का है।

उत्तम कागज पर छपा हुआ वार्षिक	३।৶	प्रतिसंख्या	।৶
मध्यम	,, २৶		।०
साधारण	,, १।৶		৶

धर्म्म प्रचारक कार्य्यालय। } श्रीपूर्णानन्द सेन
मिसिरपोखरा, वाराणसी। } कार्य्याध्यक्ष।

☞ यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है।

Printed at the Dharmamrita Press, Misir-Pokhra, Benares.

"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৬ ষ্ঠ ভাগ। ৫ম সংখ্যা। শকাব্দা ১৮০৫। ভাদ্র—পূর্ণিমা।

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातियः ।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

६ष्ठ भाग । ५म संख्या । शकाब्दा १८०५ । भाद्र पूर्णिमा ।

মার্কণ্ডেয় পুরাণ। ২য় অধ্যায়।

ত্বগস্থি মাংস সংঘাতে পূয শোণিত পূরিতে।
কর্ত্তব্যা ন রতির্যত্র তত্রাস্মকমিয়ং রতিঃ ॥
শ্রূয়তাঞ্চ মহাভাগ যথা লোকো বিমুহ্যতি।
কাম ক্রোধাদিভির্দোষৈরবশঃ প্রবলারিভঃ ॥

ত্বক, অস্থি, মাংস দ্বারা গঠিত, রুধির ও পূয পূর্ণ অসার শরীরে আসক্তি থাকা (অর্থাৎ আত্মাকে বিস্মৃত হইয়া "দেহই আমি" এতদ্বুদ্ধিতে শরীরকে যত্ন করা) নিতান্ত অবৈধ, কিন্তু আমরা তাহাতে পূর্ণাসক্ত রহিয়াছি। হে মহাভাগ! কাম ক্রোধাদি প্রবল রিপু তাড়নায় জীব অবসন্ন প্রায় হইয়া যেরূপে বিমোহিত হয় তাহা শ্রবণ করুন।

প্রজ্ঞা প্রাকার সংযুক্ত মস্থি স্থূণং পুরং মহৎ।
চর্ম্ম ভিত্তি মহারোধং মাংস শোণিত লেপনম্ ॥

মানব দেহ একটী মহানগর স্বরূপ। জ্ঞানময় সুদৃঢ় প্রাচীরে এই নগর পরিরক্ষিত। অস্থি মালা

मार्कण्डेय पुराण । २रा अध्याय ।

त्वगस्ति मांस संघाते पूय शोणित पूरिते ।
कर्त्तव्या न रति र्यत्र तत्रास्माकमियंरतिः ॥
श्रूयताञ्च महाभाग यथा लोकोविमुह्यति ।
काम क्रोधादिभिर्दोषैरवशः प्रवलारिभिः ।

त्वचा, हड्डी, मांस से बना हुआ शोणित वो पूय से परिपूर्ण असार शरीर में स्नेह रखना (अर्थात आत्मा को भूलकर यह " देहही मैं हूं " इस बुद्धि से शरीर को यत्न करना) नितान्त निषिद्ध है, किन्तु हम सब उसी पर सम्पूर्ण स्नेह रखते हैं । हे महाभाग ! काम क्रोध आदि प्रवल शत्रुओं के तड़पन से जीव अवश होकर कैसे विमोहित हो जाता है, सो श्रवण कीजिये ।

प्रज्ञा प्राकार संयुक्तमास्थिस्थूणं पुरं महत् ।
चर्म्मभित्ति महारोधं मांस शोणित लेपनम् ॥

मनुष्य शरीर मानो एक महानगर है । ज्ञानमय दृढ़ दिवाल से यह नगर परिरक्षित है । हड्डी

ইহার স্তম্ভ, চর্ম্ম ইহার ভিত্তি, এবং মাংস ও শোণিত ইহার অনুলেপন।

নব দ্বারং মহায়াসং সর্ব্বতঃ স্নায়ু বেষ্টিতম্।
নৃপশ্চ পুরুষস্তত্র চেতনাবানবস্থিতঃ॥

এই নগরের নয়টী দ্বার আছে, সহজে তাহাতে প্রবেশ করা যায়না; স্নায়ু সমূহ এই নগরকে পরিবেষ্টন করিয়া রাখিয়াছে। দেহ মধ্য নিবাসী চৈতন্য বান আত্মা এই নগরের অধিপতি।

মন্ত্রিণৌ তস্য বুদ্ধিশ্চ মনশ্চৈব বিরোধিনৌ।
যতেতে বৈরনাশায় তাবুভাবিতরেতরম্॥

তাঁহার দুই মন্ত্রী—বুদ্ধি ও মন; ইহারা পরস্পর বিরোধী—এক অপরের বিনাশার্থ সর্ব্বদা যত্নশীল।

নৃপস্য তস্য চত্বারো নাশ মিচ্ছন্তি বিদ্বিষঃ।
কামঃ ক্রোধস্তথা লোভো মোহশ্চান্যস্তথা রিপুঃ॥

কাম, ক্রোধ, লোভ ও মোহ এই প্রবল শত্রু চতুষ্টয় রাজার বিনাশেচ্ছু।

যদাতু স নৃপস্তানি দ্বারাণ্যাবৃত্য তিষ্ঠতি।
তদা সুস্থবলশ্চৈব নিরাতঙ্কশ্চ জায়তে॥
জাতানুরাগো ভবতি শত্রুর্ভিনাভিভূয়তে॥

রাজা যখন সমস্ত দ্বার রুদ্ধ করিয়া (সমাহিতাবস্থায়) অবস্থিতি করেন তখন তিনি সুস্থবল, ভয় বিহীন ও প্রকৃতি পুঞ্জের অনুরাগ ভাজন থাকেন। শত্রু গণ তখন তাঁহাকে অভিভূত করিতে পারে না।

যদাতু সর্ব্ব দ্বারাণি বিবৃতানি স মুঞ্চতি।
রাগো নাম তদা শত্রুর্নেত্রাদি দ্বারমৃচ্ছতি॥
সর্ব্বব্যাপী মহাযামঃ পঞ্চ দ্বার প্রবেশনঃ।
তস্যানুমার্গং বিশতি তদ্বৈ ঘোরং রিপুত্রয়ং॥

কিন্তু যখন অনবধানতা বশতঃ দ্বার গুলি উন্মুক্ত করিয়া রাখেন, তখন কাম (বিষয়ানুরাগ) নামক শত্রু নেত্রাদি দ্বারে উপস্থিত হয়। এই রিপু সর্ব্বব্যাপী ও মহাকায়, পঞ্চ দ্বার পথ দিয়া এই শত্রু দেহ পুরে প্রবিষ্ট হইয়া থাকে তৎপরে অপর শত্রু ত্রয়ও তাহার অনুগমন করে।

প্রবিশ্যাথ সবৈ তত্র দ্বারৈরিন্দ্রিয় সংজ্ঞকৈঃ।
রাগঃ সংশ্লেষমায়াতি মনসা চ সহেতরৈঃ॥
ইন্দ্রিয়াণি মনশ্চৈব বশে কৃত্বা দুরাসদঃ।
দ্বারাণিচ বশে কৃত্বা প্রাকারং নাশয়ত্যথ॥

समूह इस के खम्भे हैं, चर्म्म इस की भित्ति और मांस वो शोणित इसका लिप है।

नव द्वारं महायासं सर्व्वतः स्नायुवेष्टितम्।
नृपश्च पुरुषस्तत्र चेतनावानवस्थितः॥

इस नगर की नौ दरवाजें हैं, आनायास उस में कोइ पैठ नहीं सक्ता है; स्नायु समूहों इस नगर को घेरे रख लिये हैं चैतन्यवान आत्मा जो कि इस देह में विराजते हैं, इस नगर के राजा हैं।

मन्त्रिणौ तस्यबुद्धिश्च मनश्चैव विरोधिनौ।
यतेते वैर नाशाय तावुभावितरेतरम्॥

बुद्धि वो मन, ये दो उनके मंत्री हैं; इन दोनों में बड़ी विवाद बनी रहती है एक दूसरे को मारने के लिये सदैव यत्न करता हैं।

नृपस्य तस्य चत्वारो नाशमिच्छन्ति विद्विषः।
काम क्रोधस्तथा लोभो मोहश्चान्य तथारिपुः॥

काम, क्रोध, लोभ वो मोह ये चारो प्रबल शत्रु राजा की हत्या करने चाहते हैं।

यदातु स नृपस्तानि द्वाराण्यावृत्य तिष्ठति।
तदासुस्थ बलश्चैव निरातंकश्चजायते॥
जातानुरागो भवति शत्रुभिर्नाभिभूयते॥

राजा जब सब दरवाजें बंध करके (समाधि काल में) स्थिति करते हैं, उन दिनों में वे बलवान निर्भय वो सबजनों के प्यारे बने रहते हैं। शत्रुगण उन दिनों में उन को अभिभूत कर नहीं सक्ते हैं।

यदातु सर्व्व द्वाराणि विवृतानि स मुंचति।
रागो नाम तदा शत्रुर्नेत्रादि द्वार मृच्छति॥
सर्व्वव्यापी महायामः पंचद्वार प्रवेशनः।
तस्यानुमार्गं विशति तद्वै घोरं रिपुत्रयं॥

किन्तु जब असावधनता से दरवाजे खुली रख छोड़ देते हैं, उस समय काम (विषयानुराग) नाम परम शत्रु नेत्रादि द्वार में उपस्थित होता है। यह रिपु सर्व्वव्यापी वो महाकाय है। पांचो दरवाजे की राह से यह शत्रु देहरुपी पुर में प्रवेश करता है, तदनन्तर अन्यान्यतीनों शत्रु भी उसके पीछे २ जाते हैं।

प्रविश्याथ सवै तत्र द्वारैरिन्द्रिय संज्ञकैः।
रागः संश्लेषमायाति मनसा च सहेतरैः॥
इन्द्रियाणि मनश्चैव वशे कृत्वा दुरासदः।
द्वाराणि च वशे कृत्वा प्राकारं नाशयत्यथ॥

প্রবিষ্ট হইয়া মন ও অন্যান্যরিপু বর্গের সহিত সম্মিলিত হয়। সেই প্রবল রিপু মন ও ইন্দ্রিয় দ্বার সমূহকে আয়ত্তাধীন করিয়া জ্ঞান ময় প্রাচীর ভাঙ্গিতে আরম্ভ করে।

মনস্তস্যাশ্রিতং দৃষ্টা বুদ্ধির্নশ্যতি তৎক্ষণাৎ।
অমাত্য রহিতস্তত্র পৌরবর্গোজ্ঝিতস্তথা ॥
রিপুভির্লব্ধ বিবরঃ স নৃপো নাশমৃচ্ছতি।
এবং রাগস্তথা মোহো লোভঃ ক্রোধস্তথৈবচ।
প্রবর্ত্তন্তে দুরাত্মান মনুষ্যস্মৃতি নাশকাঃ।
রাগাৎ ক্রোধঃ প্রভবতি ক্রোধাল্লোভোঽভিজায়তে।
লোভাদ্ভবতি সম্মোহঃ সম্মোহাৎ স্মৃতি বিভ্রমঃ।
স্মৃতিভ্রংশাদ্বুদ্ধি নাশো বুদ্ধি নাশাৎ প্রণশ্যতি ॥

বুদ্ধি মনকে শত্রুর আশ্রিত দেখিয়া তৎক্ষণাৎ পলায়ন করে; রাজা একেবারে অমাত্য শূন্য হইয়া পড়েন। পৌর বর্গ ভয়ে তাঁহাকে পরিত্যাগ পূর্ব্বক পলায়ন করে এই অবসরে শত্রুগণও নগরাধিকার করিয়া লয়। রাজা একেবারে বিনষ্ট হন। এই রূপে মনুষ্যের স্মৃতি শক্তি বিনাশী দুরাত্মা কাম, মোহ, লোভও ক্রোধ দেহপুরেপ্রবেশ করে। কাম হইতে ক্রোধ, ক্রোধ হইতে লোভ ও লোভ হইতে মোহের উৎপত্তি এবং মোহ প্রভাবে মনুষ্যের স্মৃতি বিভ্রম উপস্থিত হয়। স্মৃতি ভ্রংশ হইলে বুদ্ধিনাশ ও বুদ্ধিনাশে লোক সমূলে বিনষ্ট হইয়া থাকে।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

৯।১০ ম কারণ।—গ্রাহিক ও নাক্ষত্রিক ক্রিয়া।

এ স্থলে গ্রহাদির স্বরূপ নির্ণয় করা আবশ্যক হইতেছে। নতুবা আমাদের শরীর ও মনের উপর গ্রহাদির কার্য্য প্রণালী প্রদর্শন করা সুকঠিন। অতএব এস্থলে এ প্রবন্ধের উপযোগী অংশ মাত্র অবতারণা করিলাম।

সূর্য্য অত্যন্ত উত্তপ্ত তরল ধাতব পদার্থ সমূহের সমষ্টি স্বরূপ একটি অতীব প্রকাণ্ড ভুবন। তন্মধ্যে তাম্র আর স্বর্ণই তাহাতে অধিক। পরন্তু ইহার চতুর্দ্দিকে যে আবার একটি পরিবেশ আছে (মণ্ডলাকার বেষ্টন) তাহা পার্থিব উপধাতু প্রভৃতি দ্বারা রচিত। এ বিষয়ে শ্রুতি।—" হিরন্ময়েন

कर मन वो अन्यान्य रिपुओं के साथ मिल जाता है। वह प्रबल शत्रु, मन वो इन्द्रियों को निज अधीन कर ज्ञानमय दिवार को तोड़ने लगता है।

मनस्तस्याश्रितं दृष्ट्वा बुद्धिर्नश्यति तत्क्षणात्।
अमात्य रहितस्तत्र पौर वर्गोज्झितस्तथा।
रिपु भिर्लब्ध विवरः सनृपो नाश मृच्छति।
एवं रागस्तथा मोहो लोभः क्रोध स्तथैवच ॥
प्रवर्त्तन्ते दुरात्मानो मनुष्यस्मृति नाशकाः।
रागात् क्रोधः प्रभवति क्रोधाल्लोभोऽभिजायते
लोभाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद्बुद्धि नाशो बुद्धि नाशात् प्रणश्यति ॥

मन को शत्रु के आश्रय लेते हुए देख कर बुद्धि उसही क्षण में झट भाग जाती है। राजा एकबारगी अमात्य रहित होजाते हैं। पौर जन सब डर के मारे उनको छोड़कर भाग जाते हैं। इस अवसर में शत्रु गण भी नगर को अधिकार कर लेते हैं राजा एक दम नष्ट होजाते हैं। इसी प्रकार से मनुष्य की स्मृति शक्ति नाश करनेवाले दुरात्मा काम, मोह, लोभ वो क्रोध देह पुर में पैठ जाते हैं। काम से क्रोध, क्रोध से लोभ वो लोभ से मोह की उत्पत्ति होती है वो मोह के प्रभाव से मनुष्य का स्मृति भ्रम होता है। स्मृति का भ्रम होने से बुद्धि का नाश वो बुद्धि का नाश होने पर मनुष्य समूल विनष्ट होजाता है।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

९। १० मा कारण—ग्रह वो नक्षत्रों की क्रियायें।

यहां ग्रह आदि के स्वरूप निरूपण करना चाहिये। अन्यथा हमारे शरीर वो मन पर ग्रह आदि किस रीति असर करते हैं देखलाना कठिन होगा। अतएव इस स्थान में इस प्रबंध के उपयोगी जो कुछ आवश्यक है, उतनेही लिखे जायेंगे।

सूर्य्य एक अत्यन्त उष्ण तरल धातु मय पदार्थ समूह का समष्टी रूप अतीव बृहत भुवन है। उस में ताम्र वो स्वर्ण अधिक है। परन्तु इसके चारो ओर जो एक परिवेश या मण्डल है वह पार्थिव उपधातुओं से रचित है। इस पर श्रुति का प्रमाण है—" हिरण्मयेन सविता रथेनादेवो याति इत्यादि

সূর্য্য স্বর্ণময় নিজ মণ্ডল রূপ রথে আসিতেছেন। "হিরন্ময় বপুঃ" সূর্য্যের শরীর স্বর্ণাদিময়। "বিশ্বরূপং হরিণং জাত বেদসং পরায়ণং জ্যোতিরেকং তপন্তম্" ইত্যাদি। সূর্য্য একটি ভুবনাকার, ইহাস্বর্ণাদি ধাতু হইতে জাত এবং অতীব জ্যোতি ও তাপযুক্ত পদার্থ।

"হংসঃ শুচিষ দ্বসুরন্তরিক্ষসদ্ধোতা বেদিষ দতিথি দুর্রোণসৎ। নৃষদ্বরস দ্ব্যোমস দব্জা গোজা ঋতজা অদ্রিজা ঋতম্বৃহৎ।" সূর্য্য তেজোযুক্ত একটি ভুবন—ইহা শূন্যে অবস্থিত রহিয়াছে। ইহা যজ্ঞ স্থলে আসীন বহ্নি যেরূপ ঘৃতাদি সংসক্ত হইয়া আমাদিগের শরীরের বিষাক্ত পদার্থ সকল অপনীত করত অমৃত বিশেষ বিতরণ করেন তদ্রূপ, অন্তরীক্ষ-বেদিতে সমাসীন থাকিয়া আমাদিগের শারীরিক কুপদার্থ পুঞ্জ অপনয়ন পূর্ব্বক উৎকৃষ্টতেজো বিশেষ বিতরণ করিতেছে। ইহা সর্ব্বদা দৃশ্যতঃ গতিশীল, অথচ কলস স্থিত জলের মত স্থির, এবং নিজের রশ্মি বিস্তার দ্বারা সর্ব্বত্র বিদ্যমান। ইহা স্বীয় রশ্মি সম্বন্ধ দ্বারা মনুষ্যাদি জঙ্গম প্রাণীর শরীরে, স্থাবর শরীরে ও আকাশস্থিত মেঘাদিতে আছে। কিন্তু ইহা স্তরে স্তরে লক্ষিত হয়। ইহাতে প্রথম জলীয় পদার্থ (জলজনক) ও পার্থিব (সোডিয়ম) প্রভৃতি নানা প্রকার পদার্থ, তৎপর অন্যান্য সত্যপ্রমাণীকৃত পদার্থ তৎপর ধাতব পদার্থ লক্ষিত হয় অর্থাৎ প্রথম পরিধি (মণ্ডলকার পরিবেশ) জল জনকাদি দ্বারা বিরচিত এবং তন্মধ্যবর্ত্তি মণ্ডলটি ধাতব পদার্থ দ্বারা নির্ম্মিত। ইহা অতীব বৃহৎ॥

সূর্য্যের এবম্বিধ প্রকৃতি, এইক্ষণ গ্রহণাদি সময় বিশেষে দূরবীক্ষণ দ্বারা, অথবা আলোক বিশ্লেষক যন্ত্রদ্বারা, ইহার আলোকের বিভিন্নজাতীয়ত নিরূপণ করিয়া সর্ব্বদাই প্রমাণ স্বরূপে পরিজ্ঞাত হওয়া যাইতে পারে। এই প্রকার, সমস্ত প্রচলিত গ্রহ, উপগ্রহও নক্ষত্র সকলের প্রকৃতি ও জানিবার সম্ভব আছে। এ প্রসঙ্গে ইহার প্রক্রিয়া প্রতিপাদনের অনাবশ্যকতা নিবন্ধন তদ্বিষয়ে নিরস্ত থাকিলাম।

आकर हो आते हैं। "हिरण्मय वपुः" सूर्य्य का शरीर स्वर्णमय है। "विश्वरूपं हरिणं जातवेदसं परायणं ज्योतिरेकं तपन्तम्" सूर्य्य एक भुवन मण्डल है यह स्वर्ण आदि धातु से बना हुआ, वो परमतेज वो उष्णता युक्त है।

"हंसः शुचिष द्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथि दुरोण सत्। नृषद्वरसद्दोमस दब्जा गोजा, ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।" सूर्य्य एक तेजमय भुवन है, आकाश पर इस की स्थिति है। यज्ञ भूमि के अग्नि जैसा घृतादिसे संसिक्त हो हम सब के शारीरिक विषाक्त पदार्थों को विनष्ट कर एक प्रकार के अमृत दान करते हैं, उस भांति आकाश रूप वेदी पर बिराजकर सूर्य्य ने भी हमारे शारीरिक कुपदार्थसमूह को विनष्ट करके एक उत्तम तेज विशेष दानकिया करता है। देखने में इसकी गति विशिष्ट बूझ पड़ता है, किन्तु गागरी के भीतर के जल के नाईं यह स्थिर वो निज किरणों से सर्व्वत्र विद्यमान है। निज किरणों के प्रभाव से मनुष्य आदि जंगम प्राणियों का शरीर में स्थावर शरीर में औ आकाश के मेघादि में यह बिराजमान है। किन्तु इसको एक स्तर के उपर दुसरा, दुसरे पर तीसरा, ऐसाही देख पड़ता है इसमें प्रथम जलीय पदार्थ वो पार्थिव (सोडियम) आदि नाना प्रकार के पदार्थ, तदनन्तर अन्यान्य पदार्थ जो परीक्षा से सिद्ध, किये हुए हैं उस के ऊपर धातुमय पदार्थ देख पड़ता है अर्थात प्रथम परिधि (मण्डलाकार परिवेष्टन) जलीय पदार्थ से बना हुआहै, औ उसके मध्य का मण्डल धातुमय पदार्थों से निर्म्मित है। यह अत्यन्त बृहत है।

सूर्य्य की इस भांति प्रकृति आज काल्ह किसी २ ग्रहणादि के समय दूरबीन से अथवा प्रकाश-विश्लेषक यंत्र करके इसमें जो भिन्न २ जातीय तेज है, सो स्थिर करके सदैव प्रमाणीभूत हो सक्ता है। इस रीति से समस्त ग्रह, उपग्रह वो नक्षत्रों की प्रकृति भी जानलेने का उपाय है। इस प्रसंग में इसकी प्रक्रिया का प्रतिपादन जो कि अब अनावश्यक समझ पड़ता है नहीं किया गया।

সূর্য্যের এইরূপ প্রকৃতির নির্ণায়ক বহু সংখ্যক শ্রুতি আছে। *

* পুরাণাদিতে যে সূর্য্যকে পদ্মাসীন চতুর্ভুজ ত্রিনেত্রাদি রূপে (রক্তাম্বুজাসীন ইত্যাদি) বর্ণনা করিয়াছেন, তাহার তাৎপর্য্য অন্যপ্রকার। উহা সূর্য্য মণ্ডলে বর্ত্তমান ঈশ্বর শক্তিকে লক্ষ্য করিয়া বলা হইয়াছে। এবিষয় পুরাণ মীমাংসার অবকাশে বিস্তারিত করিবার ইচ্ছা থাকিল। এক্ষণে কেবল একটি মাত্র দৃষ্টান্তের দ্বারা প্রতিপাদন করা যাইতেছে। প্রায় সকলেই, পুরাণাদিতে সূর্য্যের ন্যায় পৃথিবী ও গঙ্গাদিরও দ্বিভুজ চতুর্ভুজ স্বর্ণ বর্ণাদিরূপ বর্ণিত আছে ইহা জ্ঞাত আছেন। কিন্তু পৃথিবী গঙ্গাদির দৃশ্যত কোন্ আকৃতি লক্ষিত হয়?—(ভৌতিক আকৃতি)। সুতরাং ইহার অন্য বিধ যেআকৃতি বর্ণিত আছে, তাহা পৃথিব্যাদিস্থ ঐশিক শক্তির আকৃতি, ইহাতে সন্দেহ নাই। সূর্য্য সম্বন্ধেও ঐরূপ বুঝিতে হইবে। সূর্য্যের অশ্বরথাদি বর্ণনা রূপক উক্তি ভিন্ন আর কিছুই নহে। সূর্য্যের যে সপ্ত অশ্ব বর্ণনা আছে ("শুচিঃ সপ্তাশ্ব বাহনঃ" ইত্যাদি পুরাণ, "অযুক্ত সপ্ত শুন্ধ্যবঃ সূরোরথস্য নপ্তঃ" ইত্যাদি শ্রুতিঃ।) ইহারা সাতটি নক্ষত্র রাশি মাত্র। আমরা দিনমান মধ্যে সূর্য্যকে দৃষ্ট হইয়া নক্ষত্ররাশি দ্বারা বিসর্পিত হইতে দেখিতে পাই। আবার আর সাতটি নক্ষত্র রাশি দ্বারা রাত্রিতে গমন করিতে দেখি। অর্থাৎ সূর্য্য যদি মেষ রাশির এক পল গতেও উদিত হয়, তবে তুলারাশির এক পল অতীত হইলে অস্তমিত হইবে। এইরূপ বৃষরাশিতে উদিত হইলে বৃশ্চিক রাশিতে অস্ত যাইবে। এই নিয়মে সকল উদয় রাশির সপ্তম রাশিতে সূর্য্য অস্ত পায়। সুতরাং দিবাতে সাতরাশি দ্বারাসূর্য্যের গমন হইল। রাত্রিতেও উক্ত নিয়মে অস্তরাশির সপ্তম রাশিতে পুনরুদিত হয়। অতএব যাহারা পৃথিবীর পৃষ্ঠান্তর বাসী, আমাদিগের রাত্রিকালে যাহাদিগের দিবা হয়, তাহাদিগের দিবাতেও সূর্য্য সপ্তরাশিদ্বারা গমন করে। এই রূপ যে কোনস্থানেই হউক, যতক্ষণ সূর্য্যকে দেখিতে পাওয়া যায় ততক্ষণ সূর্য্য সাত-

सूर्य्य की प्रकृति जो ऐसीही है उसके बहुत प्रमाण श्रुति में है *।

* पुराणादि में जो सूर्य्य को पद्मासीन चतुर्भुज त्रिनेत्र आदि रूप (रक्ताम्बुजासीन इत्यादि) में बखान किया गया, उस का तात्पर्य्य कुछ और है। सूर्य्य मण्डल में विराजती हुई भगवत् शक्ति को लक्ष्य करके उन सब का वर्णन है। यह सब बातें पुराण की मीमांसा के समय विस्तार की जायगी। अब केवल एकही दृष्टान्त से प्रमाण किया जाता है। प्रगट है, कि सूर्य्य के नाईं पुराण में पृथ्वी वो गंगाजी आदि के द्विभुज, चतुर्भुज स्वर्ण वर्ण आदि रूप वर्णित हैं किन्तु देखने में पृथ्वी, गंगा आदि का कौन रूप (भौतिक) मिलता है? अतएव इस का दूसरा जो कुछ रूप वर्णित है, सो पृथ्वि आदि में विराजती हुई ऐशी शक्ति का रूप है, इस में कुछ भी सन्देह नहीं। सूर्य्य का भी वैसेही समझना चाहिये। सूर्य्य के अश्व रथादि की वर्णन केवल रूपक है। सूर्य्य का जो सात अश्व की वर्णन है ("शुचिः सप्ताश्व वाहनः" इत्यादि पुराण, "अयुक्त सप्त शुन्ध्यवः सूरोरथस्य नप्त्रयः इत्यादि श्रुतिः") ये सात नक्षत्र राशि हैं। हम दिन भर में वस्तुतस्तु सूर्य्य को सात नक्षत्र राशि से मिलनेको देखते हैं, फिर सातही नक्षत्र राशिसे रात को सूर्य्य का जाना है। अर्थात् सूर्य्य यदि मेष राशि का एक पल बीतने पर उदय हो तो तुला राशि का एक पल बीतने पर अस्तमित होंगे। इस रीति वृष राशि में उदय होने पर वृश्चिक राशि में अस्तमित होंगे। अतएव सूर्य्य की गति दिन को सात राशि करके है। रात को भी उक्त नियमानुसार अस्त राशि के हिसाब से सप्तम राशिमें पुनरुदित होंगे। अतएव जो पृथ्वि के दूसरे खंड में (आमेरिका आदि) बसते हैं, हमारे रात्रि के समय जिनका दिन होता है, उन्हीं के हिसाब से भी सूर्य्य की गति सप्त राशि करके होता है। इस रीति से जिधर कहीं नहीं जब तक सूर्य्य देख पड़ेगा, तबही तक सूर्य्य को सात राशि पर विचरता हुआ देख पड़ेगा। इस

এ স্থলেআর একটি কথাও বুঝা আবশ্যক। সূর্য্য যখন উত্তপ্ত তরলপদার্থ, তখন সর্ব্বদাই উহাতে একটি সঙ্কোচক্রিয়া হইতেছে অর্থাৎ সূর্য্য সর্ব্বদাই নিজের তাপকে বিকীর্ণ করতঃ ক্রমশঃদৃঢ়াঙ্গ হওয়ার চেষ্টায় স্বীয় উপাদান অবয়ব সকলকে পরিপাচন স্বরূপ রূপান্তর করিতেছে। এতদ্দ্বারা তদীয় অবয়ব সকলের মধ্যে পরস্পর স্বজাতীয়ের প্রতি একটি রাসায়নিক আকর্ষণ ভাবও উৎপন্ন হইতেছে। অর্থাৎ সূর্য্যোপাদানে যে তাম্র ও স্বর্ণ প্রভৃতি ধাতবাদি পদার্থ আছে, তাহারা স্বীয় স্বীয় দৃঢ়তা সম্পাদনের চেষ্টা করিতেছে। এই ক্রিয়া সর্ব্বদা প্রত্যেক গ্রহ উপগ্রহ ও নক্ষত্রে প্রবর্ত্তমান থাকিয়া তাহাদিগের স্ব স্ব অবয়বের মধ্যে পরস্পর স্বজাতীয় আকর্ষণের দ্বারা পরিবর্ত্তিত ও দৃঢ়তা সম্পন্ন হইবার চেষ্টা জন্মাইতেছে। যেরূপ এই পৃথিবী সর্ব্বদা তাপের বিমোক্ষণ করতঃ স্বীয় ধাতু ও উপধাতু রূপ অবয়ব সকলকে নানাবিধ রাসায়নিক সংযোগবিয়োগ দ্বারা নানা প্রকারে পরিবর্ত্তিত ও স্বীয় কোন কোন অবয়বের সাজাত্য সম্বন্ধ দৃঢ়তর করিয়া তাহাদিগকে স্বর্ণ রজত প্রস্তরাদি পিণ্ডাকার করিতেছে, কিম্বা স্বর্ণ রজতাদি পদার্থ নিচয় নৈমিত্তিক তাপে উত্তপ্ত হইলে, সেই তাপ পরিমোচন করতঃ নিজের স্বাভাবিক দৃঢ়তা সম্পন্ন হইয়া থাকে। এইরূপ সমস্ত গ্রহাদিতেই উক্ত ক্রিয়া হইতেছে।

রাশিদ্বারাই গমন করিবে তাহাতে সন্দেহ নাই। এই সপ্তরাশি সূর্য্যের অশ্ব। পৃথিবীর বার্ষিক গতি দ্বারা যে দৃশ্যত সূর্য্যের একটি অয়ন মণ্ডল কল্পিত হয়, তাহাই সূর্য্যের এক রথচক্র ("এক চক্র রথো যস্য" ইত্যাদি দ্বারা সূর্য্যরথকে এক চক্র বলা হইয়াছে)। এবং স্বীয় মণ্ডলই সূর্য্যের রথ। কোন স্থানে উক্ত প্রকার সপ্তরাশিকে সূর্য্য রথের চক্র এবং ছয়ঋতুকে চক্রের অর বলা হইয়াছে (সপ্তচক্রে ষড়রে আহুরর্পিতমিতি) ইত্যাদি বিবিধ প্রকার বর্ণনা থাকাও রূপকত্বের একটি প্রমাণ। সত্যভাবে ব্যাখ্যা করিলে নানা প্রকার হইতে পারেনা। রূপক বর্ণনার কারণাদি পুরাণ সমালোচনায় উপস্থাপিত হইবে।

अब यह स्थिर हुआ कि सूर्य्य उष्ण तरल पदार्थ है तो यहां यह भी समझ लेना कि सूर्य्य में सदैव एक संकोचन-क्रिया हो रही है अर्थात् सूर्य्य सदाही निज उत्ताप को विस्तार करके धीरे २ दृढ़ काय होनेके लिये निज उपादानों को परिपाक या रूपान्तर करदेता है। इससे सूर्य्य के अवयवों के निज २ श्रेणी के मध्य में एक रासायनिक आकर्षण शक्ति भी उपजती है। अर्थात् सूर्य्य के उपादान जो ताम्र वो स्वर्ण आदि धातुमय पदार्थ हैं, वे सब अपने २ को पुष्ट करने की चेष्टा करते हैं। यही क्रिया सर्व्वदा प्रत्येक ग्रह उपग्रह वो नक्षत्र में विद्यमान रहकर उनसब के निज २ अवयवों के मध्य में परस्पर स्वजातीय आकर्षण के द्वारा बदलने वो दृढ़ बनने की चेष्टा बढ़ाती है। जिस रीति से यह पृथ्वी सर्व्वदा ताप को निकास के निज धातु वो उपधातु रूप अवयवों को भांति भांति के रासायनिक संयोग वियोग करके नाना प्रकार से परिवर्त्तित करती वो निज किसी २ अवयव का साजात्य सम्बन्ध दृढ़ करके उन सब को सुवर्ण रजत प्रस्तरादि पिंडाकार बना डालती है। अथवा सुवर्ण रजत आदि पदार्थ पुंज नैमित्तिक ताप से गरम होनेपर उस ताप [illegible] त्याग के स्वाभाविक दृढ़ता बनालेते हैं। [illegible]ीय पदार्थ वो [illegible]या समस्त ग्रह आदि में हो रही है।

में कुछ भी सन्देह नहीं। यह सप्तराशि ही सूर्य्य के सात अश्व हैं। पृथ्वी की वार्षिक गति से जो सूर्य्य का एक अयन मंडल कल्पना की जाती है, सोही सूर्य्य का एक रथ चक्र है ("एक चक्र रथो यस्य" इत्यादि से सूर्य्य के रथ का वर्णन एक चक्र है। औ सूर्य्य का निज मण्डलही सूर्य्य का रथ है। कहीं उन सप्तराशि को सूर्य्य के रथ चक्र वो छौ ऋतु को चक्र के अर करके बखान किये गये हैं ("सप्त चक्र षड्रे आहुरर्पितमिति") इत्यादि भांति २ के बखान रहने से रूपक अधिक झलकता है। यदि सत्य भाव से वर्णन किये जाते तो भांति भांति का बखान कभी नहीं होते। रूपक वर्णन का कारण पुराण समालोचना के समय स्थिर किया

কিন্তু আশ্চর্য্যের বিষয় এইযে চিরদিন পর্য্যন্ত ২৪ ঘণ্টা কাল নিয়ত এই সূর্য্য তাপ পরিমোচন করাতেও তাপের হ্রাসের দৃঢ়তর প্রমাণ লক্ষিত হয় না। ফলতঃ এতদ্বারা ইহা স্বতই বোধ হইতেছে যে পৃথিবীর উষ্ণ প্রস্রবণ আদির ন্যায় সূর্য্যের তাপ যে রূপ সর্ব্বদা পরিমুক্ত হইতেছে, তদ্রূপ কোন কারণে উহা পুনরুৎপন্ন হইতেছে। নানাবিধ বিভিন্নধর্ম্মী সূর্য্যোপাদান ধাতবাদি পদার্থের রাসায়নিক সংযোগ বিয়োগের দ্বারায় অতিমাত্র পরিমাণে সর্ব্বদা তড়িৎ উৎপন্ন হইতেছে। সেই তড়িৎ প্রচার প্রক্রিয়াই তাপোৎপত্তির প্রধান কারণ বোধ হয়। এই প্রবন্ধে সূর্য্য বিষয় এই পর্য্যন্তই বর্ণিত হইল। ক্রমসঃ

নীতি শিক্ষা।

বর্ত্তমান ভারতবর্ষ চক্ষু থাকিতে অন্ধ, কর্ণ থাকিতে বধির, হস্ত পদ থাকিতে পঙ্গু ও জীবন থাকিতে মৃত। ভারত দেখিয়াও দেখিবেনা, শুনিয়াও শুনিবেনা, কার্য্য করিতে পারিলেও করিবেনা, বুঝিয়াও বুঝিবেনা, জাগিয়াও উঠিবেনা। ভারতের বর্ত্তমান অবস্থা পর্য্যালোচনা পূর্ব্বক ভবিষ্যদ্ভারতের চিন্তা করিলে চিন্তাশীল মহাত্মা মাত্রেরই চিত্ত চকিত হইয়া উঠে। বিশ্ব বিদ্যালয়ের দুই চারিটী উপাধি, কিছু ঐশ্বর্য্য ও রাজকীয় সম্মান সূচক দুই একটী পদবী লব্ধ হইলে বর্ত্তমান ভারত নিজ জন্ম সার্থক ও জীবন সফল মনে করেন। এ গুলি ভিন্ন জীবনের অন্য কিছু বিশেষ কর্ত্তব্য আছে কি না তাহা চিন্তা করিবার অবকাশ নাই। ভারত বাল্য কালে জীবিতাশা পর্য্যন্ত পরিত্যাগ করিয়া বিশ্ব বিদ্যালয়ের নিয়মিত সংকীর্ণ শিক্ষা সোপানে আরোহণার্থ কঠোর পরিশ্রম সহ দিবানিশি যত্নবান, পরীক্ষার ক্রমাগত কঠোর শ্রমে ক্লান্ত হইয়া ভারত যৌবনাবস্থায় প্রবেশ করিয়াই শিক্ষার অপেক্ষাকৃত উন্নত সোপানে অধিরোহণ করিতে নিতান্ত অসমর্থ হইয়া পড়েন, আরও অগ্রসর হইলে শিক্ষার যে দিব্য মনোহর মূর্ত্তি দৃষ্ট হইয়া থাকে তাহা প্রায় অনেকের ভাগ্যেই ঘটিয়া উঠেনা। শীতার্ত্ত ইন্ধন আহরণ করিতে [illegible]

किन्तु आश्चर्य्य यह है कि चिर दिन से सूर्य्य का ताप अविश्राम क्षय होने पर भी ताप घटने का प्रमाण कुछ भी देख नहीं पड़ता है। फलतः इससे स्वतः एव यही बोध होता है जो सूर्य्य का ताप जैसा सर्व्वदा क्षय हो जाता है वैसाही दुसरे किसी कारण से फिर उत्पन्न होता है, जैसा कि पृथ्वी के उष्ण झरने की रीति है। सूर्य्य के विविध उपादान रूप धातु पदार्थों के, जो कि भिन्न २ धर्म्म युक्त हैं, रासायनिक संयोग वियोग के द्वारा सर्व्वदा अत्यन्त तड़ित् उपजती है। तड़ित् प्रचार की उस प्रक्रियाही को तापोत्पत्तिका मुख्य कारण बोध होता है। इस प्रबंध में सूर्य्य का वर्णन यहां ही तक रहा।

शेष आगे।

नीति शिक्षा।

वर्त्तमान भारतवर्ष चक्षु रहे भी अन्धे, कर्ण रहे पर भी बधिर, हात पैर रहे पर भी नूलेह वो जीवन रहे पर भी मृत है। भारत देखे भी नहीं देखता, सुने भी नहीं सुनता, समर्थ हुए भी कार्य्य नहीं करता, समझे भी नहीं समझता, वो जागे पर भी नहीं उठता है। भारत की वर्त्तमान दशा पर्य्यालोचना करके भविष्यद् भारत की अवस्था चिन्ता करने पर प्रत्येक चिन्ता शील महात्मा का चित्त चौंक उठता है। वर्त्तमान भारत विश्व-विद्यालय (युनिवर्सिटी) की दो चार उपाधि, थोड़ा बहुत धन, औ गवर्णमेण्ट से दो एक खेताब मिलने से निज जन्म को सार्थक वो जीवन को सफल मानते हैं। इतना छोड़के जीवन का और कुछ विशेष कार्य्य है या नहीं सो कौन विचारे? बाल्य काल में जीने की आशा तक छोड़कर विश्वविद्यालय के नियमानुसार शिक्षा की सिढ़ी पर जो कि अत्यन्त संकीर्ण है, चढ़ने के लिये भारत अत्यन्त परिश्रम के साथ दिन रात यत्न किया करते हैं, लगातर परीक्षा देते हुए भारत यौवन दशा को प्राप्त होते हैं किन्तु परिश्रम के मारे थक कर शिक्षा की और जो बहुत उंची सिढ़ीयां हैं, उन पर चढ़ने को निपट असमर्थ हो जाते हैं। और भी आगे बढ़ने पर शिक्षा की जो दिव्य मनोहर रूप झलकते सो प्राय बहुतेरे के

অগ্নিতাপ সেবন করিতে পাইল না। জীবনের গূঢ় কর্ত্তব্য বিস্মৃত হইয়া কিরূপে কিছু ঐশ্বর্য্য লাভ হয়, কি উপায়ে মান সম্ভ্রম বৃদ্ধি হয় নব্য ভারত তজ্জন্য ক্ষিপ্ত প্রায়, বৃদ্ধগণ গতজীবনের সংস্কারের বশীভূত, অগত্যা তাঁহারাও শিক্ষার পরম 'সুখা-স্বাদে বঞ্চিত। বিনা চিকিৎসায় ও অসাবধানতায় ভারতের বিষম ব্যাধি বাড়িতে লাগিল-পরমায়ু সত্ত্বে বুঝি ভারতের আসন্ন কাল উপস্থিত।

ভারত নিবাসিগণ পুরাকালে ব্রহ্মচর্য্যের পরম সমাদর করিতেন। ব্রহ্মচর্য্য অভ্যাস নাকরিয়া তাঁহারা গার্হস্থ্য আশ্রমে প্রবেশ করিতেন না। ব্রহ্মচর্য্য কালে তাঁহারা বিদ্যা, নীতি, ধর্ম্ম প্রভৃতি জীবনের অবশ্য কর্ত্তব্য গুলি বিশেষ রূপে শিক্ষা করিয়া গুরু গৃহ হইতে লোক সমাজে প্রবিষ্ট হইতেন। এই ব্রহ্মচর্য্যের প্রথা যেদিন হইতে পুণ্য ভূমি ভারতবর্ষকে পরিত্যাগ করিয়াছে সেই দিন হইতেই ইহা দুর্ব্বলতা, দুরাগ্রহ, দুর্ব্যবহার, ভ্রষ্টাচার, ভীরুতা, চপলতা, অব্যবস্থচিত্ততা আদি ক্ষীণতা ও মানসিক মলিনতার প্রধান নিকেতন হইয়া পড়িয়াছে। প্রাতঃস্মরণীয় আর্য্য গণের প্রভুত্ব ও প্রতিপত্তি কালে বর্ণানুসারে ধর্ম্ম নীতি, রাজনীতি, সমাজনীতিও বিবিধ সাধারণ নীতি শিক্ষা পাইয়া ভারত বাসি গণ তপোবল, ধর্ম্মবল, বিদ্যা-বল, বাহুবল, বিত্তবল আদির গুণে জাতীয় প্রকৃতি লাভ করিয়া এতৎ পবিত্র ভূমিকে সভ্যসমাজের শিরোভূষণ করিয়াছিলেন। এক্ষণে বিদ্যালয়ের শিক্ষা প্রণালীর দোষে ও পিতা মাতা আদি গুরু গণের তত্ত্বাবধান ও যত্নের অভাবে সুকুমার মতি বালক বর্গ স্বেচ্ছাচার ও যথেচ্ছাচারের বশবর্ত্তী হইয়া সমাজকে কলঙ্কিত ও বিষম উপদ্রব গ্রস্ত করিয়া তুলিতেছে। পিতা মাতা সন্তানের শৈশব হইতেই যদি নীতি শিক্ষার দিকে মনোযোগী হয়েন, তবে তাঁহারা ও সন্তান গণ চিরসুখী হইতে পারেন ও সমাজও নিরুপদ্রব থাকে। প্রথম হইতেই বালকের হৃদয় যে উপাদানে গঠিত হইয়া যায় "বয়োপ্রাপ্ত হইলে, তাহা আপনা আপনিই সংশোধিত হইয়া যাইবে" পিতা মাতার এই বিষম ভ্রম দূর না হইলে, ভারতের কল্যাণ নাই। পিতা মাতার ঔদাস্য ও উপেক্ষা বালক বর্গের অত্যন্ত অনিষ্ট সাধন করিতেছে। / পিতৃ মাতৃ গণ যদি

भाग्य में नहीं मिलता है। शीतार्त्त व्यक्ति लक-ड़ीयां जुटा पुठा के लाया, पर भाग्य बशात् अयत्न वो अनवधान से आग तापने का न मिला। नव्य भारत जीवन का गूढ़ कर्त्तव्य कार्य्य भूलकर कैसे कुछ ऐश्वर्य मिले, कैसे सम्मान वो पद वृद्धि हो इसही में बावड़ाये हैं। लड़कापन वो जवानी के संस्कार बस हो कर वृद्धगण भी शिक्षा के परम सुख भोगने में बंचित होते हैं। चिकित्सा वो यत्न बिना भारत की कठिन पीड़ा बढ़ती जाती है-परमायु रहे पर भी बोध होता है भारत का अन्त काल समीपागत है।

भारत निवासी गण प्राचीन काल में ब्रह्मचर्य्य को अत्यन्त आदर करते। ब्रह्मचर्य्य अभ्यास किये बिना वे कभी गार्हस्थ्य आश्रम में प्रवेश नहीं कर-ते। ब्रह्मचर्य्य काल मे उन्हों ने विद्या नीति, धर्म्म आदि मनुष्य जीवन के अवश्य करने के योग्य कार्य्य सब विशेष विधि से सिख कर गुरु गृह से लोक समाज में लौट आते। इस ब्रह्मचर्य्य की रीति जब से पुण्य भूमि भारतवर्ष से छुट गयी तबही से यह स्थान दुर्व्वलता, दुराग्रह, दुर्व्यवहार, भ्रष्टा-चार, भीरुता, चपलता अव्यवस्थचित्तता आदि क्षीणता वो मानसिक मलिनता की प्रधान क्षेत्र हो चुकी है। प्रात: स्मरणीय आर्य्य महात्माओं की प्रभुता वो प्रतिपत्ति काल में वर्णाश्रम अनुसार भारत निवासिगण धर्म्मनीति, राजनीति, समाज-नीति वो भांति २ की साधारणनीति की शिक्षा पाकर तपोबल, धर्म्मबल, विद्याबल, बाहुबल, वित्त-बल आदि के गुण से जातीय प्रकृति लाभ करके इस पवित्र भूमि को सभ्य समाज के शिरोभूषण बना डालेथे। आज कल विद्यालय की शिक्षा प्रणाली के दोष से वो पिता माता आदि गुरुगण के असावधानता वो अयत्न से सुकुमारमति बा-लक वर्ग स्वेच्छाचारी वो यथेच्छाचारी बनकर समाज को कलंकित वो अत्यन्त उपद्रव ग्रस्त कर रहे हैं। पिता माता यदि लड़कापनही से सन्ता-नों को नीति शिक्षा देने में दत्तचित्त हों तो वे वो सन्तानगण चिरसुखी हो सकें वो समाज भी निरुपद्रव रहे। पिता माता का यह विषमभ्रम,

সন্তান হইতে সুখী হইতেও সন্তানকে সুখী করিতে চাহেন, তবে আর ক্ষণমাত্রও বিলম্ব না করিয়া বালক গণের সুনীতি শিক্ষার উপায় বিধান করুন। নীতি শিক্ষা প্রচুর পরিমাণে সাধারণ সমাজে প্রচলিত হইলে বৃথা কলহ, বিবাদ, বিসম্বাদ, অসভ্যতা, মূর্খতা, ধৃষ্টতা, ধূর্ত্ততা, কপটতা প্রবঞ্চনাদি সমাজ হইতে বিলুপ্ত হইয়া যায়, বিচারালয়ে এত মিথ্যা অভিযোগ ও তজ্জন্য অযথা অর্থব্যয়ও হয়না, দুর্ব্বলের প্রতি অত্যাচার, বেশ্যালয় গমন মদ্যাদি সেবন জন্য মহাপাপ ও সমাজে দারিদ্র্য দুঃখ বৃদ্ধি হয়না, সামান্য প্রভুত্ব লাভের জন্য নর শোণিতে রণস্থল প্লাবিতও হয়না, অধিক কি সমাজ নিতান্ত নিরুপদ্রব হইয়া উঠে। নীতি শিক্ষা দ্বারা শারীরিক, মানসিক ও আধ্যাত্মিক উন্নতি লাভ করিতে পারা যায়। পারিবারিক, সামাজিক, ইহলৌকিক ও পারলৌকিক সমস্ত সুখ স্বচ্ছন্দতাই সুনীতি শিক্ষার উপর নির্ভর করিতেছে।/

নীতি শিক্ষার অভাব যে বর্ত্তমান ভারতকে অত্যন্ত ক্ষতিগ্রস্ত করিতেছে, তাহা অবশ্যম্ভাবী সত্য। রাজকীয় শিক্ষা ভবনে ও অনুশাসন মন্দিরে ইহার কোন বিধান হইলনা দেখিয়া ভারতবর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভা ভবিষ্যৎ ভারতের ভূষণ স্বরূপ স্নেহ ভাজন কোমল হৃদয় তরলমতি বালক বর্গকে কল্যাণ কল্পতরুর শীতল ছায়ায় সুখী করিবার নিমিত্ত "সুনীতি সঞ্চারিণী সভা" স্থাপনের প্রথা প্রবর্ত্তিত করিতেছেন। অতি স্বল্প দিনের মধ্যেই অনেক স্থানে উক্ত সভা স্থাপিত হইয়াছে। এতৎ সভা সমূহের শিক্ষা ও উপদেশ গুণে বালক বর্গের প্রকৃতি ও চরিত্র অনেক পরিমাণে সংশোধিত হইয়াছেও হইতেছে। যে সকল বালক ও যুবা সন্ধ্যা ও গায়ত্রী পর্য্যন্ত আবৃত্তি করিতেন না, এই সভাসমূহের উত্তেজনায় তাঁহাদের প্রকৃতি আজ কাল আর্য্য ভাবাপন্ন হইয়াছে। সকলে শুনিয়া অবশ্যই সুখী হইবেন যে এই সভাসমূহের উৎসাহ ও উদ্যোগেই "সুনীতি" নাম্নী পাক্ষিক পত্রিকা আগামী কার্ত্তিক মাস হইতে প্রকাশিত হইবে। ভগবান এই সভার সংখ্যা ও মঙ্গল বৃদ্ধি করুন। স্বর্গ নিবাসী আর্য্য

अर्थात् प्रथमही से बालकों के हृदय जिसर उपादान से गठित होते हैं, अवस्था अधिक होनेपर आपही आप सुधर जांगे," जबतक नहीं छुटेगा, तबतक भारत का कल्याण कहां? पिता माता की उदासीनता वो उपेक्षा से बालकों का अत्यन्त अनिष्ट होता है। पिता माता यदि सन्तानों से सुखी होने वोसन्तानों को सुखी करने चाहें तो क्षणमपि विलम्ब किये बिना बालकों को नीति शिक्षा का उपाय वो व्यवस्था करें।

नीतिशिक्षा अधिक परिमाण साधारण समाज में प्रचलित होने पर निरर्थक बिगाड़, झगड़ा, झमेला, असभ्यता, मूर्खता, धृष्टता, धूर्त्तता, कपटता, प्रवंचना आदि समाज से दूर होजाते हैं, राजद्वार में इतना मिथ्या अभियोग, वो तदर्थ अयथा अर्थ व्यय भी नहीं होते, दुर्बलों पर अत्याचार वेश्या गमन वो मद्यादि सेवनजनित महापाप, वो समाज का दारिद्र्य दुःख नहीं बढ़ते, सामान्य प्रभुता के निमित्त रण भूमि भी नर शोणित से नहीं बहजाती, अधिक क्या समाज नितान्त निरुपद्रव हो उठती है। नीति शिक्षा से शारीरिक मानसिक वो आध्यात्मिक उन्नति होती है। पारिवारिक, सामाजिक, इहलौकिक वो पारलौकिक समस्त सुख स्वच्छन्दताही सुनीति शिक्षा से मिलती है।

नीति शिक्षा बिना जो वर्त्तमान भारत को अत्यन्त हानि पहुंचती है, इस में कुछ भी सन्देह नहीं। सरकारी स्कूल वो कारागार आदि में इस की कुछ सुव्यवस्था न हुई देख के भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा ने स्नेहभाजन कोमल हृदय तरलमति बालक वर्ग को, जो कि भविष्यत् भारत के भूषण रूप हैं कल्याण कल्पतरु की शीतल छाया में सुखी करने के निमित्त "सुनीति संचारिणी सभा" स्थापन की रीति चलाई। थोड़ही दिन व्यतीत होते न होते अनेक स्थान में उक्त सभा बन गयी हैं। इन सभा समूह की शिक्षा वो उपदेश करके बालकों की प्रकृति वो चरित्र पूर्व्व से अनेक परिमाण सुधर गये वो जा रहे हैं। जितने बालक संध्या वो गायत्री तक की भी खबर न लेते, इन सभा समूह की उत्तेजना से उन्हीं की भी प्रकृति आज कल आर्य्य भाव को प्राप्त हो गयी। सब

মহাত্মা গণ নিজ ২ তৈজস শক্তি সহযোগে ভারতের হৃদয় তন্ত্রী আকর্ষণ করুন। আর্য্যরীতি নীতি ভারতে পুনঃ প্রচারিত হইলে ভারতের মলিন মুখ নবশ্রী ধারণ করিবে।মনের বল, হৃদয়ের উত্তেজনা, ও ভাবের পবিত্রতা ভারতে পুনরাগত হইয়া এই মলিন ভূমিকে পুনঃপুণ্য ভূমি করিয়া তুলিবে। আবার আমরা আর্য্য দিগের জাতীয় গৌরব পুনরধিকারে সমর্থ হইব। স্বয়ং ভগবান পবিত্র হৃদয়ের পরম সখা আমাদের নেতা হইয়া পরম ধামে লইয়া যাইবেন।

নিম্ন লিখিত স্থান সমূহে "সুনীতি সঞ্চারিণী সভা" প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে।

	স্থানের নাম।	জেলা।
১।	বারাণসী।	বারাণসী।
২।	ডুমরাঁও।	আরা।
৩।	গয়া।	গয়া।
৪।	মুঙ্গের।	মুঙ্গের।
৫।	বেগুসরাই।	ঐ
৬।	ভাগলপুর।	ভাগলপুর।
৭।	বাঁকীপুর।	পাটনা।
৮।	বহরম্পুর।	মুরশিদবোদ।
৯।	মুরশিদাবাদ।	ঐ
১০।	রঘুনাথ গঞ্জ।	ঐ
১১।	দাঁই হাট।	বর্দ্ধমান।
১২।	রামপুরহাট।	বীরভূম।
১৩।	গোবর ডাঙ্গা।	২৪ পরগণা।
১৪।		গয়া।
১৫।	বোয়ালিয়া।	রাজসাহী।

সভার উৎসব সমাচার।

মুরশিদাবাদ।

---

২৬ শ্রাবণ হইতে ২৮এ পর্য্যন্ত তিন দিন অতি সমারোহে ও আনন্দের সহিত মুরশিদাবাদ, আঃ ধঃ পুঃ সভার ১ম বার্ষিকোৎসব সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

১ম দিন। পূর্ব্বাহ্ণে শ্রীমন্নারায়ণ দেবের পূজা ও সংকীর্ত্তন। মধ্যাহ্নে ব্রাহ্মণ ভোজন। অপরাহ্ণে

जन सुन के अवश्य ही सुखी होंगे, कि इन सभा समूहों के उत्साह वो उद्योग करके "सुनीति" नाम पाक्षिक पत्रिका आगामी कार्त्तिक मास से प्रकाश होनेवाली है। भगवान इन सभाओं की संख्या वो मंगल बढावें। स्वर्गस्थ आर्य्य महात्मागण निज २ तैजस शक्ति से भारत के हृदय तंत्री को आकर्षण करें। आर्य्य रीति नीति भारत में फिर प्रचारित होने से, भारत की मुख श्री, जो कि आज कल मलिन है, नवीन होगी। मन का बल, हृदय की उत्तेजना वो भाव की पवित्रता, भारत में पुनरागत होकर इस मलिन भूमि को फिर पुण्यभूमि बनावेगी। फिर हम आर्य्य महात्माओं के जातीय गौरव पुनरधिकार करने में समर्थ होंगे। स्वयं भगवान पवित्र हृदय के परम सखा—हमारे नेता हो परम धाम में ले जांगे।

निम्न लिखित स्थानों में "सुनीति संचारिणी सभा बनचुकी हैं।

	स्थानों के नाम।	जिले।
१।	बाराणसी।	बाराणसी।
२।	डुमरांव।	आरे।
३।	गया।	गया।
४।	मुंगेर।	मुंगेर।
५।	बेगुसराइ।	मुंगेर।
६।	भागलपुर।	भागलपुर।
७।	बांकीपुर।	पटना।
८।	बहरमपुर।	मुरशिदाबाद
९।	मुरशिदाबाद	...
१०।	रघुनाथगंज।	...
११।	दांइहाट।	बर्द्धमान।
१२।	रामपुरहाट।	बीरभूम।
१३।	गोबरडांगा।	२४ परगणा
१४।		गया।
१५।	बोयालिया।	राजशाही।

सभा के उत्सव का समाचार।

मुरशिदाबाद।

श्रावण शुक्ल सप्तमी शुक्रवार से लेकर नवमी तक तीन दिन लगातार मुरशिदाबाद आ० ध० प्र० सभा का प्रथम वार्षिक उत्सव बड़ी धुमधाम वो आनन्द से सम्पन्न हो गया।

१ला दिन। प्रातःकाल को श्रीमन्नारायण देव की पूजा वो संकीर्त्तन हुआ। [illegible]

সম্পাদক কর্ত্তৃক কার্য্য বিবরণ পাঠ; তৎপরে ভারত বর্ষীয় আঃ দঃ প্রঃ সভার আচার্য্য শ্রদ্ধাস্পদ পণ্ডিত বর শ্রীযুক্ত শশধর তর্কচূড়ামণি মহাশয়, "ধর্ম্ম কি" এই বিষয়ে একটী বক্তৃতা করেন। সায়াহ্নে, নারায়ণ দেবের আরতি ও সংকীর্ত্তন হইয়াছিল।

২য় দিন। সুনীতি সঞ্চারিণী সভার অধিবেশন হইয়াছিল। পূর্ব্বাহ্নে শ্রদ্ধেয় পণ্ডিতবর শ্রীযুক্ত কৃষ্ণচন্দ্র গোস্বামী মহোদয় কর্ত্তৃক শ্রীমদ্ভাগবত পাঠ; তৎপরে ধর্ম্ম সংগীত হইল। অপরাহ্নে, বালকগণ কর্ত্তৃক সমস্বরে স্তোত্র পাঠ; তৎপরে সম্পাদক শ্রীমান্ দীন নাথ বিশ্বাস কর্ত্তৃক সভার কার্য্য বিবরণ ও শ্রীমান্ শ্রীপতি বন্দ্যোপাধ্যায় ও শ্রীমান্ ভূপেশচন্দ্র ঘোষ কর্ত্তৃক ক্রমান্বয়ে "সুনীতি" এবং "বালক দিগের কর্ত্তব্য" বিষয়ক স্ব ২ রচিত প্রবন্ধ পঠিত হইল। বালক বর্গের রচনা ও কার্য্য কলাপ যেরূপ ভাবে লিখিত ও সুসম্পন্ন হইয়াছে, তাহা সমালোচনা করিলে স্পষ্টাভিধানে বলা যাইতে পারে যে, যে অভিপ্রায়ে সভা স্থাপিত হইয়াছে তৎ সিদ্ধির আশার সঞ্চার হইয়াছে, এবং তজ্জন্য তাহারা ভূয়সী প্রশংসার যোগ্য সন্দেহ নাই। প্রবন্ধ পঠিত হইলে পর বাগ্মীবর শ্রীযুক্ত কুমার শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহোদয় সুনীতি বিষয়িণী একটী দীর্ঘ বক্তৃতা করেন। সন্ধ্যার সময় নারায়ণ দেবের আরতি হয়।

৩য় দিন। পূর্ব্বাহ্নে শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত গোস্বামী মহাশয় শ্রীমদ্ ভাগবত পাঠ; তৎপরে ভক্তি ভাজন চূড়ামণিমহাশয় "ঈশ্বরোপসনা" বিষয়িণী একটী সুদীর্ঘ বক্তৃতা করেন। তিনি বৈজ্ঞানিক প্রমাণ দ্বারা বুঝাইয়া দিলেন যে, যিনি যে ভাবে উপাসনা করুন না কেন সকলেই সাকারের উপাসনা করিয়া থাকেন। ঈশ্বরের সর্ব্ব দর্শিত্ব, সর্ব্ব কর্ত্তৃত্ব; সর্ব্বপালয়িতৃত্ব, সর্ব্বনিয়ন্তৃত্ব প্রভৃতি যে সকল গুণ দ্বারা তাঁহাকে লক্ষ্য করিয়া সুনিপুণ ভাবে চিন্তা করা যায়, তাহাতে চিন্তকের অন্তঃকরণে গুণ সমূহের স্থূল স্ফুর্ত্তি হস্তপদ বিশিষ্ট আকৃতি (শিব বিষ্ণু, প্রভৃতি) গঠিত না হইয়া কদাচ থাকিতে পারেনা। বক্তৃতাটী অতি হৃদয় [illegible]

भोजन हुआ। अपराह्न को सम्पादकजीने सभा का कार्य्य विवरण पढ़ सुनाया, तदनन्तर श्रद्धास्पद पण्डितवर श्रीयुक्त शशधर तर्कचूड़ामणि, भारतवर्षीय आर्य्य ध० प्र० सभा के धर्म्माचार्य्य महाशय ने "धर्म्म क्या है" इस आशय पर एक वक्तृता करी। सन्ध्या के समय नारायण देव की आरती वो संकीर्त्तन हुए।

२ रा दिन। सुनीति संचारिणी सभा का अधिवेशन हुआ प्रातःकाल को श्रद्धेय पण्डितवर श्रीयुक्त कृष्णचन्द्र गोस्वामीजी ने श्रीमद्भागवत पाठ किया, तदनन्तर धर्म्म संगीत हुआ। दोपहर के उपरान्त सभा का फिर अधिवेशन होने पर बालकगण एकतान से भगवत की स्तुति पाठ किये, अनन्तर दीननाथ विश्वास सभा के सम्पादकजीने सभा की कृति, श्रीमान श्रीपति बन्द्योपाध्याय वो भूपेशचन्द्र घोष ने "सुनीति" वो "बालकों का क्या करना चाहिये" इन आशयों पर निज २ रचित प्रबन्ध पढ़ सुनाये। बालकों की रचना वो कार्य्य कलाप जिस रीति से लिखी गयी वो निर्व्वाह हुए, उस पर समालोचना करने से स्पष्ट प्रतीति होती है, कि जिस अभिप्राय से सभा स्थापित हुई है, वह सिद्ध होने की आशा अब सफल होनेवाली है। इसलिये लड़कों की बहुत प्रशंसा करनी चाहिये। प्रबंध पढ़े जाने पर वाग्मीवर श्रीमानकुमार श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महोदय ने एक लम्बी वक्तृता नीति के विषय में करी। संध्या को नारायण देव की आरती हुई।

३ रा दिन। प्रातःकाल को पहले श्रद्धास्पद श्रीयुक्त गोस्वामी जी ने श्रीमद्भागवत की व्याख्या करी, तत्पश्चात् भक्ति भाजन चूड़ामणि महाशय ने "ईश्वरोपासना" इस आशय पर एक सुदीर्घ वक्तृता करी। उन्हों ने वैज्ञानिक प्रमाणों से यह भली भांति समझा दिया कि जो जिस भाव से क्यों न ईश्वर की उपासना करें, साकार उपासना बिना उन से दुसरी कुछ बनती ही नहीं। भगवान के सर्व्वदर्शित्व, सर्व्व कर्त्तृत्व, सर्व्वपालयितृत्व, सर्व्वनियन्तृत्व आदि जितने गुणों से उन को उद्देश्य करके सुनिपुण भाव से चिन्ता की जायगा, उस से चिन्तक के हृदय में हस्तपदविशिष्ट आकृति (शिव, विष्णु आदि) अर्थात् गुण समूह का स्थूल परिणाम [illegible]

হইয়াছিল। অপরাহ্ণে ২ টা হইতে ৪ টা পর্য্যন্ত হরিনাম সংকীর্ত্তন ও তদনন্তর শাস্ত্রালাপ হইলে শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীযুক্ত কুমার মহোদয় অতি বাগ্মীতার সহিত "আর্য্য ধর্ম্মের শ্রেষ্ঠতা" প্রতিপাদন করেন। বক্তৃতা শ্রবণে প্রায় সমস্ত লোক মুগ্ধ হইয়াছিল। এ বেলা অনুমান ৬।৭ শত লোকের সভায় সমাগম হয়। সায়াহ্ণে নারায়ণ দেবের আরতি, ও তাহার পর নগর সংকীর্ত্তন হইয়া সভা ভঙ্গ হয় ইতি।

জনৈক সভ্য।

ওঁ নমো ভগবতে বাসুদেবায়।

বাঁকিপুর।

বিগত ৯ই ভাদ্র হইতে ১১ই ভাদ্র পর্য্যন্ত বাঁকিপুর আর্য্য ধর্ম্ম সভার প্রথম বার্ষিকোৎসব নিম্ন লিখিত নিয়মানুসারে অতি ধুমধামের সহিত সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে।

১ম দিন পূর্ব্বাহ্ণে শ্রীশ্রীশ্রীমন্নারায়ণের ষোড়শোপচারে পূজা, ভারত বর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার ধর্ম্মাচার্য্য শ্রদ্ধেয় শ্রীপণ্ডিতবর শশধর তর্কচূড়ামণি মহাশয় কর্ত্তৃক "ধর্ম্মের আবশ্যকতা" বিষয়িণী বক্তৃতা ও তৎপরে কয়েকটী ধর্ম্ম সঙ্গীত হইয়াছিল। অপরাহ্ণ বেলা ৩।০ ঘটিকার সময় বাগ্মীবর শ্রীলশ্রীযুক্ত বাবু শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয় কর্ত্তৃক বঙ্গভাষায় "আমাদের উৎসব" বিষয়িণী উৎসাহ সূচক একটী বক্তৃতা ও তৎপরে নগর সংকীর্ত্তন হয়।

৩য় দিন। প্রত্যুষে নগর সঙ্কীর্ত্তন হয়। দুই দিনই সংকীর্ত্তন কালে এখানকার রাজপথ গুলি একটী অপূর্ব্ব শ্রীধারণ করিয়াছিল। বাস্তবিক ইতি পূর্ব্বে আর কেহ কখন এখানকার জনগণকে এরূপ আনন্দ সহকারে হরিনামে উন্মত্ত হইতে দেখেন নাই। রাজ পথ গুলি লোকে লোকাকীর্ণ এবং অপরের কথা কি বলিব বিশ্ববিদ্যালয়ের উপাধিধারী অনেক গুলি কৃতবিদ্য যুবককে যোগদান করিতে দেখিয়া আমাদের আহ্লাদের পরিসীমা ছিলনা। অপরাহ্ণ বেলা ৩টার সময়

मनहरनी हुइथी। अधिक क्या श्रोताओं के आंखों में से आंसु की धारा बह गयी थी। दोपहर के उपरांत दो बजे से चार बजे तक हरिनाम संकीर्त्तन वो तदनन्तर शास्त्रार्थ होनेपर श्रद्धास्पद श्रीमान कुमार महाशय ने बड़ी वाग्मीता के साथ आर्य्य धर्म्म की श्रेष्ठता" प्रतिपादन किया। व्याख्यान सुनके सबकोइ मोहितहो गयेथे। इस समय कम से कम छः सात सौ पुरुष सभा में विद्यमान थे संध्या को नारायण की आरति वो तत्पश्चात् नगर संकीर्त्तन हो सभाविसर्जन हुई।

जनैक सभ्य

वांकीपुर।

भाद्र कृष्ण अष्टमी से लेकर दशमी तक यहां की आर्य्य धर्म्म सभा का प्रथम वार्षिक उत्सव नीचे लिखी हुइ रीति से अत्यन्त धुम धाम सहित सम्पन्न हो गया।

१म दिन, प्रातः काल। श्रीश्रीश्री मन्नारायण जी की पूजा षोड़श उपचार सहित हुइ श्रद्धा के योग्य श्रीपंडित शशधरतर्क चूड़ामणि, भारत वर्षीय आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के धर्म्माचार्य्य महाशय ने "धर्म्म की आवश्यकता" इसआशय पर एक वक्तृता करी। तदनन्तर धर्म्म संगीत हुआ। दोपहर के उपरान्त साढ़े तीन बजे से वाग्मीवर श्रीलश्रीयुक्त श्रीकृष्णप्रसन्न सेन जी ने बंग भाषा में "हमारा उत्सव" इस विषय पर एक उत्साह पूर्ण वक्तृता की, तत् पश्चात नगर संकीर्त्तन हुआ।

दुसरा दिन। प्रातःकालको फिर नगर संकीर्त्तन हुआ दोनों दिन नगर संकीर्त्तन के समय यहां की राज मार्ग सब एक अपूर्ब्ब श्री धारण करी थीं। वस्तु तस्तु इसके पहले इतने भद्र जनों को एकट्ठे हरिनाम करते हुए कभी कोइ यहां देखा नहीं। राज मार्ग में बड़ी भीड़ हुइथी अधिक क्या बखान करें विश्वविद्यालय से उपाधी पाये हुए अनेक कृत विद्य युवा को इसमें मिलते देखकर हमारा अपरिसीम आनन्द उपजा। दोपहर के उपरान्त तीन बजे हरि-हरी को अनुपादि किये जाने पर सभा का फिर

সভাধিবেশন হয়। পরে সভার সম্পাদক শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায় মহাশয় কর্তৃক সভার কার্য্য বিবরণ পাঠ হইলে পর ভাগলপুরের ছটপটী তলাও নামক স্থানের আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার সভাপতি শ্রদ্ধাস্পদ পণ্ডিত নিত্যানন্দ মিশ্র মহাশয় হিন্দী ভাষায় ও মান্যবর শ্রীযুক্ত শ্রীকৃষ্ণ প্রসন্ন সেন মহাশয় "আমাদের পৈতৃক সম্পত্তি" বিষয়িণী বঙ্গ ভাষায় একটী উদ্দীপনা পূর্ণ বক্তৃতা করেন। বক্তৃদ্বয়ের উৎসাহ পূর্ণ আর্য্যতেজ সম্ভূত জ্বলন্ত বক্তৃতা শ্রবণ করিয়া সভাস্থ ব্যক্তি মাত্রেরই হৃদয় আর্য্যভাবে উত্তেজিত হইয়া ছিল। ৩য় দিন পূর্ব্বাহ্ন। পণ্ডিতাগ্রগণ্য শ্রীশশধর তর্কচূড়ামণি মহাশয় কর্তৃক "সন্ধ্যা ও পূজা" বিষয়িণী বক্তৃতা হইবার কথা ছিল কিন্তু শনিবার "ধর্ম্মের আবশ্যকতা" বিষয়িণী বক্তৃতাটী শেষ না হওয়ায় তাহার অবশিষ্টাংশ ও কেবল পূজা সম্বন্ধে একটী বক্তৃতা হয়। অপরাহ্ন বেলা ৬ টার সময় এই সভান্তর্গত সুনীতি সঞ্চারিণী সভার অধিবেশন হয়। সভার সম্পাদক শ্রীমান বলরাম গুপ্ত শারীরিক অসুস্থতা বশতঃ অনুপস্থিত থাকায় এই সভার জনৈক সভ্য শ্রীমান পাঁচকড়ী বন্দ্যোপাধ্যায় সভার কার্য্য বিবরণ বিবৃত করিয়া সুযোগ্য সম্পাদকের লিখিত একটী পদ্য পাঠ করেন। পরে এই সভার অন্যতর সভ্য শ্রীমান পূর্ণচন্দ্র সিংহ "সুখ" বিষয়িণী একটী রচনা পাঠ করিলে পর শ্রীমান হৃদয় নাথ ঘোষাল স্বীয় রচিত একটী পদ্য পাঠ করেন। সুকুমার মতি বালকগণের সুললিত রচনা গুলি দেখিয়া আমরা পরিতোষ লাভ করিয়াছি। অতঃপর শ্রীকৃষ্ণ বাবু "সুনীতি" সম্বন্ধে একটী সুদীর্ঘ বক্তৃতা করিলে পর উক্ত সভার উপদেষ্টা শ্রীযুক্ত বাবু বানীনাথ বন্দ্যোপাধ্যায় বি, এ, মহাশয় শ্রীকৃষ্ণ বাবুকে ধন্যবাদ প্রদান করিলেন। অদ্য উৎসবের শেষ দিন তাহাতেই আর্য্য ধর্ম্ম সভার সম্পাদক শ্রীযুক্ত বাবু পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায় মহাশয় সভার পক্ষ হইতে বক্তৃগণকে ধন্যবাদ প্রদান করিলেন। তদুত্তরে

कार्य्य सम्पादक महाशय ने सभा का कार्य्यविवरण पाठ किया। तदनन्तर भागलपुर छटपटी तलाव आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा के सभापति श्रद्धास्पद पण्डित नित्यानन्द मिश्र जीने हिन्दी भाषा में और मान्यवर श्रीयुत श्रीकृष्ण प्रसन्न सेन महाशय ने "हम लोगों की पैतृक सम्पत्ति" इस आशय पर बंग भाषा में एक उद्दीपना पूर्ण वक्तृता की। वक्ता महोदयों की उत्साह पूर्ण आर्य्य तेज सम्भूत ज्वलन्त वक्तृता श्रवण कर सभास्थ श्रोता मात्र का हृदय आर्य्य भाव से उत्तेजित हुआ।

३य दिन, पूर्व्वाह्न। पण्डिताग्रगण्य श्रीशशधर तर्कचूड़ामणि महाशय जीने "सन्ध्या वो पूजा" इस विषय पर वक्तृता देनेवाले थे। परन्तु शनिवार को 'धर्म्म की आवश्यकता' विषय शेष न होने के कारण उसका शेषांश और पूजा सम्बन्धी एक वक्तृता हुई। अपराह्न ६ बजे इस सभा के अन्तर्गत सुनीति संचारिणी सभा का अधिवेशन हुआ। सभा के सम्पादक श्रीमान बलराम गुप्त के पीड़ित रहने के कारण सभा का जनैक सभ्य श्रीमान पांचकड़ि बन्द्योपाध्याय सभा का कार्य्य विवरण पाठ करके सुयोग्य सम्पादक का लिखा हुआ एक पद्य पाठ किया। तदनन्तर सभा के अन्यतर सभ्य श्रीमान पूर्णचन्द्र सिंह 'सुख' विषयिणी एक रचना पाठ करने पर श्रीमान हृदयनाथ घोषाल स्वरचित एक पद्य पाठ किया। सुकुमार मति बालक गण की सुललित रचना देख कर हम लोगों को असीम आनन्द प्राप्त हुआ। अतःपर श्रीकृष्ण बाबू ने 'सुनीति' सम्बन्धी एक सुदीर्घ वक्तृता की तत्पश्चात् उक्त सभा का उपदेष्टा श्रीयुत बानीनाथ बन्द्योपाध्याय बि, ए महोदय श्रीकृष्ण बाबू को धन्यवाद प्रदान किये। आज उत्सव का शेष दिन है इसलिये आर्य्य धर्म्म सभा के सम्पादक श्रीयुत बाबू पूर्णचन्द्र मुखोपाध्याय महाशय सभा की ओर से वक्तागण को

শ্রীকৃষ্ণ বাবু সভার ধন্যবাদ আর্য্য ঋষি গণকে উৎসর্গ করণানন্তর সনাতন আর্য্য ধর্ম্ম অনুশীলন করিবার জন্য সভাস্থ সকলকে অনুরোধ করিলেন। পরে পরস্পরে ভ্রাতৃভাবে আলিঙ্গন করিলে পর সভা ভঙ্গ হইল।

ভাগলপুর, জামালপুর, মজফরপুর আদি বিদেশীয় সভার কতকগুলি সভ্য আগমন করিয়া আমাদের উৎসবে সম্মিলিত হইয়াছিলেন।

উপসংহার কালে ইহা বক্তব্য যে উৎসবের অনুষ্ঠানে ও সুযোগ্য বক্তাগণের সারগর্ভ বক্তৃতাতে অধিকাংশ আর্য্য সন্তানের হৃদয় আর্য্যভাবে আপ্লুত হইয়াছে সন্দেহ নাই। চূড়ামণি মহাশয়ের সারবান বিজ্ঞান পূর্ণ আর্য্য শাস্ত্র ব্যাখ্যান শ্রবণ করিয়া এখানকার যুবক বৃন্দের অন্তরে একটী নবীন ভাবের উদয় হইয়াছে। আর্য্য ঋষি গণের গুণ গরিমা শ্রবণ, আর্য্য শাস্ত্র পাঠ, আর্য্য গণ আচরিত কার্য্য কলাপ অবগত হইবার জন্য অনেকেই ব্যস্ত। বলিতে কি এই নবভাব পরবশ হইয়াই তাঁহারা চূড়ামণি মহাশয়কে কিয়দ্দিবস এখানে রাখিতে বাধ্য হইয়াছিলেন। চূড়ামণি মহাশয় প্রত্যহ সন্ধ্যার পর বাচনিক বক্তৃতা দ্বারা তাঁহাদের সন্দেহ রাশি অনেক পরিমাণে বিদূরিত করিয়া দিয়া গিয়াছেন। ইহা সামান্য আনন্দের বিষয় নহে। উপর্য্যুপরি সাত আট দিন বক্তৃতা হইয়াছিল। যে মহাত্মার যত্নে চূড়ামণি মহাশয় ভারত বর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম সভার ধর্ম্মাচার্য্যের পদে নিযুক্ত হইয়াছেন পরম মঙ্গলময় বিধাতা তাঁহার মঙ্গল বিধান করুন।

আমরা আশা করি যে ধর্ম্ম সভার সভ্য গণ নবানুরাগের সহিত সম্মিলিত হইয়া সভার শ্রীবৃদ্ধি সাধনে সর্ব্বদা সচেষ্ট থাকিবেন।

জনৈক সভাসদ্।

ভারতবর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার কার্য্যার্থ নিম্ন লিখিত মহাত্মা গণ এককালীন দান করিয়াছেন।

धन्यवाद दिये। इस के अनन्तर श्रीकृष्ण बाबु सभा का धन्यवाद आर्य्य ऋषि गण पर उत्सर्ग करके सनातन आर्य्य धर्म्म अनुशीलन के लिये सभास्थ सब को अनुरोध किया। तत् पश्चात् परस्पर भ्रातृ भाव से मिलने के बाद सभा विसर्ज्जन हुई।

भागलपुर, जामालपुर, मुजफरपुर आदि विदेशीय सभाओं के सभ्यगण हम लोगों के उत्सव में आ मिले थे।

अन्त में यह कहना है कि उत्सव के अनुष्ठान औ सुयोग्य वक्तागण की सार गर्भ वक्तृता से अधिकांश आर्य्य सन्तानों के हृदय आर्य्य भाव से परिपूर्ण हुये इस में कुछ भी सन्देह नहीं। चूड़ामणि महाशय का सारवान विज्ञान पूर्ण आर्य्य शास्त्र का व्याख्यान सुन कर यहां के युवकगण के हृदय में एक नवीन भाव उदय हुआ है। आर्य्य ऋषि गण की गुण गरिमा, आर्य्य शास्त्र, आर्य्य गण आचरित कार्य्य कलाप जानने के लिये बहुतेरे पुरुष व्याकुल हुये हैं। अधिक क्या इस नवीन भाव से उत्तेजित होकर वे लोग चूड़ामणि महाशय को कुछ दिन तक रहने के लिये स्वीकार कराये। बड़े आनन्द का विषय है कि प्रतिदिन संध्या के उपरान्त चूड़ामणि महाशय ने वाचनिक वक्तृता द्वारा उन लोगों का अनेक सन्देह निवारण किये। लगातार सात आठ दिन वक्तृता हुई। जिन महात्मा के यत्न से चूड़ामणि महाशय भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्म सभा के धर्म्माचार्य्य नियुक्त हुये हैं, परम मंगलमय परमेश्वर उनका मंगल करे।

हम लोग आशा करते हैं कि धर्म्म सभा के सभ्यगण नवीन अनुराग के सहित मिलकर सभा की उन्नति साधन के लिये सर्व्वदा सचेष्ट रहेंगे।

जनैक सभासद्।

निम्न लिखित महात्मा गण भारतवर्षीय आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा का कार्य्यार्थ एक कालीन दान किये हैं।

শ্রীযুক্ত রায় শ্বেতাভ চাঁদ নাহার বাহাদুর
আজিম গঞ্জ ৩৫৲
শ্রীযুক্ত বাবু বংশীধর রায় মুরশিবাদ ২০৲
বিবিধ ... ... কান্দী ৫৲

পুস্তক প্রাপ্তি স্বীকার।

শ্রীযুক্ত বাবু শ্বেতাভ চন্দ্র নাহার মহাশয় কর্ত্তৃক প্রকাশিত "নৃসিংহ চম্পু কাব্যম্," "আত্মানুশাসন" ও "প্রশ্নোত্তর মালা"।

সমালোচনা।

১। শঙ্করাচার্য্য। শ্রীযুক্ত বাবু দ্বিজ দাস দত্ত এম্ এ কর্ত্তৃক ইংরাজিতে ব্যাখ্যাত। নং ১৪ কলেজ স্কোয়ার কলিকাতায় প্রাপ্য। মুল্য ৵০ মাত্র। ইহাতে শ্রীমৎ শঙ্করাচার্য্যের মত, বিশ্বাস ও জীবনী সংক্ষিপ্ত ভাবে লিখিত হইয়াছে। ভারতবর্ষে বৌদ্ধ গণ কর্ত্তৃক ভয়ানক ধর্ম্ম বিপ্লব কালে যিনি অবতীর্ণ না হইলে হয় তো আর্য্য দিগের পরম বৈদিক ধর্ম্ম এতদিন লুপ্ত হইয়া যাইত, সেই মহাপুরুষকে অবলম্বন করিয়া পুস্তিকা খানি লিখিত হইয়াছে দেখিয়া আমরা সুখী হইলাম। লেখক স্থানে ২ আচার্য্যকে মুর্ত্তি পূজার বিরোধী মনে করিয়াছেন কিন্তু বস্তুতঃ তাহা নহে, তিনি বৌদ্ধ গণেরই বিরোধী ছিলেন, ব্রাহ্মণ্য ধর্ম্মের কোন সম্প্রদায়েরই বিরোধী ছিলেন না। তিনি আত্ম জ্ঞান সম্বন্ধে অধিক উপদেশ দিতে গিয়া কর্ম্ম ও উপাসনার প্রতি সময়ে ২ উপেক্ষা করিয়াছেন কিন্তু তাহা উচ্চাধিকারী দিগের জন্য। তিনি যে উপাসনা ও কর্ম্মের প্রতি আস্থা প্রকাশ করিতেন তাহা তাঁহারই অনেক গ্রন্থে প্রমাণ পাওয়া যায়। যাহা হউক লেখক আচার্য্যের গুণ গৌরব ঘোষণায় প্রবৃত্ত হওয়ায় আমাদের ধন্যবাদার্হ হইয়াছেন।

২। সারি মালা। ইহাতে নৌ সঞ্চালনে গায়নোপযোগী কতিপয় গীত লিপিবদ্ধ হইয়াছে। ইহার শেষ সংগীতটী সুললিত ও মধুর হইয়াছে

श्रीयुक्त राय श्वेताभ चांद नाहार बाहादुर
आजिमगंज ३५)
श्रीयुक्त बाबू बंशीधर राय मुरशिदाबाद २०)
विविध ... ... कान्दी ५)

पुस्तक प्राप्ति स्वीकार।

श्रीयुक्त बाबू श्वेताभ चन्द्र नाहार महाशय के छपवाये हुए "नृसिंहचम्पूकाव्यम्", "आत्मानुशासन, वो "प्रश्नोत्तर माला"।

समालोचना।

१। शंकराचार्य्य। श्रीयुक्त बाबू द्विजदासदत्त एम, ए महाशय ने अंगरेजी में व्याख्यान किया। नं १४, कालेज स्क्वोयार, कलकत्ते में मिलता है। मोल ॥ मात्र। इस में संक्षेप करके श्रीमत शंकराचार्य्य के मत, विश्वास वो जीवन चरित लिखे गये हैं। भारतवर्ष में बौद्ध लोग जब भयंकर धर्म्म विप्लव मचाये थे, उस समय जिन के अवतार हुए बिना आज आर्य्य जाति के परम वैदिक धर्म्म का पत्ता तक नहीं मिलता, उस महापुरुष को आश्रय कर यह पुस्तिका लिखी गयी, इस से हम बड़े प्रसन्न हुए। लेखक ने स्थान २ में आचार्य्य को मूर्त्ति पूजा का विरोधी ठहराया, किन्तु वस्तुत वह भ्रम है। वे बौद्धगणहो के विरोधी थे। ब्राह्मण धर्म्म के किसी सम्प्रदाय के विरोध करना उनका अभिप्राय न था। आत्म ज्ञान सम्बन्धी उपदेश देने में उनको समयसमय कर्म्म वो उपासना केओर उपेक्षा करने पड़ी किन्तु वह उत्कृष्ट अधिकारियों के लिये। वे जो उपासना वो कर्म्मपर आस्था रखते उनके निजरचित बहुत ग्रंथ उसका प्रमाण है। जो हो आचार्य्य के गुण गौरव घोषणार्थ लेखक ने जो प्रवृत्त हुए, तदर्थ हम धन्यवाद देते हैं।

२। सारि माला। नाव पर जाते २ गावने योग्य थोड़ोसो गीत इसमें हैं। इसका शेष भजन ललित वो मधुर है।

বিদেশীয় এজেন্টগণের নাম।

শ্রীযুক্ত বাবু কেদার নাথ গঙ্গোপাধ্যায়	ভাগলপুর
,, যাদবচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	মতিহারী
,, জগদ্বন্ধু সেন	লাহোর
,, পূর্ণচন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	রামপুরহাট
,, বিহারিলাল রায়	জামালপুর
,, রমেশ চন্দ্র সেন	ঐ
,, হেমচন্দ্র দাস	ঐ
,, মতিলাল সেন	মুরশিদাবাদ
,, পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর
,, রাজ কৃষ্ণ দাস	বহরমপুর
,, ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী	গয়া
,, অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায়	

৬৬ নং কালেজ ষ্ট্রীট, কলিকাতা

এজেন্ট মহোদয় গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

ধর্ম্ম প্রচারকসংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্যধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী-ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচনা হইলে, আনন্দ ও উৎসাহ-সহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করা হইবে।

২। ধর্ম্ম প্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মণিআর্ডরে, পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্ম প্রচারকের ডাকমাশুল সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার।

উত্তম কাগজে মুদ্রিত			বার্ষিক	৩।৵০	প্রতিখণ্ড	।৵০
মধ্যম	ঐ	ঐ	,,	২।৵০	,,	।০
সাধারণ	ঐ	ঐ	,,	১।৵০	,,	৵০

ধর্ম্ম প্রচারক কার্য্যালয়। }
মিসির পোখরা। বারাণসী }
শ্রীপূর্ণানন্দ সেন
কার্য্যাধ্যক্ষ।

☞ এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্যধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

विदेशी एजेण्ट महाशयों के नाम।

श्रीयुत बाबू केदारनाथ गंगोपाध्याय	भागलपुर।
" यादवचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	मतिहारी।
" जगद्बन्धु सेन,	लाहौर।
" पूर्णचन्द्र बन्द्योपाध्याय,	रामपुरहाट।
" बिहारीलाल राय,	जामालपुर।
" रमेशचन्द्र सेन,	"
" हेमचन्द्रदास	"
" मतिलाल सेन	मुरशिदाबाद।
" पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बांकीपुर।
" राजकृष्ण दास	बहरमपुर।
" अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय,	६६ नं०,

कालेज ष्ट्रीट कलकत्ता।

एजेण्ट महोदयों के पास तत्तत् स्थान के ग्राहक महाशयगण मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

धर्म्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा रक्षा और प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी में वा इन दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखित विषय सारवान ज्ञात होने से आनन्द औ उत्साह सहित धर्म्मप्रचारक में प्रकाश किया जायगा।

२। धर्म्मप्रचारक पत्र का मोल और इस पत्रसम्बन्धी पत्रादि मेरे पास भेजना होगा। पत्र बेरिं होतो नहीं लिया जायगा।

३। मोल सम्भवतः पोष्टाल मनि अर्डार करके भेजना। यदि डाक टिकिट में भेजें तो आध आ-निया टिकिट करके भेज देवें।

४। धर्म्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रिम वार्षिक मोल तीन प्रकार का है।

उत्तम कागज पर छपाहुआ वार्षिक	३।/	प्रतिसंख्या	।/
मध्यम "	२।/		।०
साधारण "	१।/		/

धर्म्म प्रचारक कार्य्यालय। }
मिसिरपोखरा, बाराणसी। }
श्रीपूर्णानन्द सेन
कार्य्याध्यक्ष।

☞ यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आर्य्यधर्म्म प्रचारिणी सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है।

Printed at the Dharmamrita Press, Missir Pokhra, Benares.

"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः ।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

৬ ষ্ঠ ভাগ। | শকাব্দা ১৮০৫।
৬ষ্ঠ সংখ্যা | আশ্বিন—পূর্ণিমা।

६ष्ट भाग। | शकाब्दा १८०५।
६ष्ठ संख्या | आश्विन पूर्णिमा।

সদ্‌গুরু কৃপায় আত্ম জ্ঞান লব্ধশিষ্যের উক্তি।

"জগত্তং কেন বানীতং কুত্রলীন মিদং জগৎ।
অধুনেষ ময়া দৃষ্টং নাস্তি কিং মহদদ্ভুতং ॥"

হে গুরো! এই মাত্র যে জগৎ প্রত্যক্ষ প্রতীত হইতেছিল, তাহা কোথায় গেল! কে তাহাকে হরণ করিল! কোথায় বা তাহা বিলীন হইল! এই যাহা দেখিতেছিলাম, আর তাহা দেখিতে পাইনা, কি আশ্চর্য্য! দেখিতে ২ সমস্ত কোথায় লুকাইল!!

"কিং হেয়ং কিমুপাদেয়ং কিমন্যং কিং বিলক্ষণং।
অখণ্ডানন্দ পীযূষ পূর্ণে ব্রহ্ম মহার্ণবে ॥
ন কিঞ্চিদত্র পশ্যামি নশৃণোমি ন বেদ্ম্যহং।
স্বাত্মনৈব সদানন্দ রূপেণাস্মি বিলক্ষণঃ ॥"

অখণ্ডানন্দ পীযূষ পূর্ণ ব্রহ্ম স্বরূপার্ণবে কোন্ পদার্থ হেয় কি বা উপাদেয়, কি গ্রাহ্য কিই বা পরিহার্য্য তাহা আমি কিছুই বুঝিতে পারিতে-

सद्गुरु की कृपा से ब्रह्मात्म बुद्धि लाभ किये हुए शिष्य की उक्ति।

"जगत् केनवानीतं कुत्र लीनमिदं जगत् ।
अधुनैव मया दृष्टं नास्तिकिं महदद्भुतं" ।

हे गुरो! अभी जिस जगत को मैं प्रत्यक्ष कर रहा था, वह कहां गया! किसने उसको हर लिया! कहां जा वह लीन हो गया! अभी जो देख पड़ता था, वह फिर नहीं मिलता! आश्चर्य्य है! क्षण भर में ये सब कहां लुक गये!!

"किंहेयं किमुपादेयं किमन्यं किं विलक्षणं ।
अखण्डानन्दे पीयूष पूर्णे ब्रह्म महार्णवे ॥
नकिञ्चिदत्र पश्यामि न शृणोमि न वेद्म्यहं
स्वात्मनैव सदानन्द रूपेणास्मि विलक्षणः ॥

अखण्ड आनन्द रूप अमृत से पूर्ण ब्रह्म स्वरूप महा समुद्र में कौन पदार्थ हेय वा क्या उपादेय, क्या ग्राह्य वा क्या त्याज्य है सो मैं कुछ भी समझ

ছিনা : এখানে আমি কিছুই দেখিতেছিনা, স্বয়ং আনন্দ স্বরূপ বিরাজমানআছি, ইহাই অনুভব করিতেছি মাত্র।

"ধন্যোঽহং কৃতকৃত্যোঽহং বিমুক্তোঽহং ভবগ্রহাৎ
নিত্যানন্দ স্বরূপোঽহং পূর্ণোঽহং তদনুগ্রহাৎ॥"

হে গুরো। আমি তোমারই অনুগ্রহে সংসার গ্রহ হইতে মুক্ত হইলাম, ধন্য হইলাম, কৃত কৃত্য হইলাম ও আনন্দ স্বরূপ পরব্রহ্মৈকরূপতা লাভ করিলাম।

"অকর্ত্তাহমভোক্তাহমবিকারোঽহমক্রিয়ঃ॥"
শুদ্ধবোধ স্বরূপোঽহং কেবলোঽহং সদাশিবঃ॥"

হে গুরো আজ আমি অকর্ত্তা, অভোক্তা, নির্ব্বিকার ও নিষ্ক্রিয় হইলাম এবং বিশুদ্ধ বোধ স্বরূপ একরস বিদ্যমান সাক্ষাৎ সদানন্দ শিব স্বরূপ হইলাম।

"নাহমিদং নাহমদোঽপ্যুভয়োরবভাসকং পরং শুদ্ধং।
বাহ্যাভ্যন্তর শূন্যং পূর্ণং ব্রহ্মাদ্বিতীয়মেবাহং॥"

আমি ইহা নহি, আমি উহাও নহি অথচ আমি ভিন্ন উভয়ের বিদ্যমানতা নাই। পরিপূর্ণ অদ্বিতীয় ব্রহ্ম স্বরূপ আমি।

"নারায়ণোঽহং নরকান্তকোঽহং
পুরান্তকোঽহং পুরুষোহমীশঃ।
অখণ্ড বোধোঽহমশেষ সাক্ষী
নিরীশ্বরোঽহং নিরহঞ্চ নির্ম্মমঃ॥"

সমস্ত জীবের আশ্রয় স্বরূপ আমিই নারায়ণ, আমিই নরকান্তক, আমিই ত্রিপুরান্তক (পুর শব্দের অর্থ শরীর। স্থূল, সূক্ষ্ম ও কারণ এই তিন প্রকার শরীর "ত্রিপুর" পদের বাচ্য। আত্ম জ্ঞান উদয় হইলেই এতত্ত্রিবিধ শরীরের পুনরুৎপত্তি হয় না, এই জন্য জ্ঞান স্বরূপ সদাশিবের নাম ত্রিপুরান্তক) আমিই ঈশ্বর, আমি অখণ্ড জ্ঞান স্বরূপ, সকল কার্য্যের সাক্ষী। আমার কেহ ঈশ্বর নাই, আমার স্বামিত্বও নাই আমার মমত্বও নাই।

"কর্ত্তাপি বা কারয়িতাপি নাহং
ভোক্তাপি বা ভোজয়িতাপি নাহং।
দ্রষ্টাপি বা দর্শয়িতাপি নাহং
সোঽহং স্বয়ং জ্যোতিরনীদৃগাত্মা॥"

আমি কর্ত্তা নহি, আমি কারয়িতা নহি, আমি ভোক্তা [illegible]

नहीं सक्ता हूं। यहां मैं न कुछ देख सक्ता हूं, या कुछ सुन सक्ता हूं अथवा कुछ जान सक्ता हूं। स्वयं आनन्द स्वरूप मैं विराजमान हूं, इतना मात्र मुझे अनुभव होता है।

"धन्योऽहंकृतकृत्योऽहं विमुक्तोऽहं भव ग्रहात्।
नित्यानन्द स्वरूपोऽहं पूर्णोऽहं तदनुग्रहात्॥"

हे गुरो! आप की कृपा से हम संसार रूप ग्रह से मुक्त हुए, हम धन्य हुए, हम कृतकृत्य हुए और आनन्द स्वरूप परब्रह्म में अभिन्न बन गये।

"अकर्ताहमभोक्ताहमविकारोऽहमक्रियः।
शुद्धबोध स्वरूपोऽहं केवलोऽहं सदाशिवः॥"

हे गुरो! आज मैंने अकर्ता, अभोक्ता, निर्व्विकार और क्रिया रहित हुआ और विशुद्ध बोध स्वरूप एकरस विद्यमान साक्षात् सदानन्द शिव रूप बन गया।

"नाहमिदं नाहमदोऽप्युभयो रवभासकं परं शुद्ध।
बाह्याभ्यन्तर शून्यं पूर्णं ब्रह्माद्वितीयमेवाहं॥"

मैं यह नहीं हूं, मैं वह नहीं हूं, किन्तु मुझे बिना इन दोनों ही की विद्यमानता नहीं हूं, मैं परम शुद्ध स्वरूप हूं। मेरा भीतर और बाहर नहीं, परिपूर्ण अद्वितीय ब्रह्म रूप मैं हूं।

"नारायणोऽहं नरकान्तकोऽहं
पुरान्तकोऽहं पुरुषोऽहमीशः।
अखण्डबोधोऽहमशेष साक्षी।
निरीश्वरोऽहं निरहंच निर्म्मम:॥"

समस्त जीवों के आश्रय रूप मैं ही नारायण हूं, मैं ही नरकान्तक हूं, मैं ही त्रिपुरान्तक हूं, (पुर शब्द का अर्थ शरीर। स्थूल, सूक्ष्म और कारण ये तीन प्रकार के शरीर त्रिपुर कहाता है। आत्म ज्ञान होने से इन तीनों शरीर की उत्पत्ति मिट जाती है, इस लिये ज्ञान स्वरूप सदाशिव का नाम त्रिपुरान्तक है) मैं ही ईश्वर हूं, मैं अखण्ड ज्ञान स्वरूप हूं, समस्त कार्य्य का मैं साक्षीरूप हूं। मेरा कोई ईश्वर नहीं, मेरे अहं और मम भी नहीं है।

"कर्त्तापि वा कारयितापि नाहं
भोक्तापि वा भोजयितापि नाहं।
द्रष्टापि वा दर्शयितापि नाहं
सोऽहं स्वयंज्योतिरनीदृगात्मा॥"

मैं कर्त्ता नहीं हूं, मैं [illegible]

াহি আমি ভোগ্য নহি, আমি দ্রষ্টা নহি, আমি দৃশ্য নহি, আমি স্বয়ং জাগ্রত জ্যোতিঃ স্বরূপ বিরাজ করিতেছি।

"নমস্তস্মৈ সদেকস্মৈ কস্মৈ চিন্মহসে নমঃ।
যদেতদ্বিশ্বরূপেণ রাজতে গুরু রাজতে॥"

তোমার দ্বারাই এই অপূর্ব্ব জ্ঞানোদয় হইল, হে গুরো! তোমাকে নমস্কার করি, তুমি সৎ ও এক স্বরূপ হইয়াও বিচিত্র জগৎরূপে প্রকাশিত হইয়াছ, তোমাকে নমস্কার করি, তুমি সকলের অন্তর্যামী হইয়া বিরাজ করিতেছ, হে গুরো তোমাকে বার ২ নমস্কার করি।

শুভমস্তু। ✓

ভারতের একটী প্রধান পর্ব্বাহ চলিয়া গেল। শরৎ সমাগমে ভারত যেন কি মোহন মন্ত্রে মাতিয়া উঠিয়াছিল। বঙ্গ বিভাগ দুর্গোৎসবে ও অন্যান্য বিভাগ রামলীলার রমণীয়তায় শোক সন্তাপাদি সমস্তই ভুলিয়াছিল। চারিদিকের কার্য্যালয় বন্ধ। প্রবাসী গৃহাগত, পিতা মাতা ভাই, ভগ্নি স্ত্রী পুত্রাদি সহ সমুচিত সম্ভাষণে মনে ২ কতই আহ্লাদ। পূজা, পাঠ, গীত, বাদ্য, নৃত্য, উদ্যম, উৎসাহ, আনন্দের উচ্ছ্বাসে ভারত কয়েক দিন ভাসিল, আবার যে ভারত সেই ভারত হইল। যেন ভারতে "সুখ স্বপ্নের একটী অভিনয় হইয়া গেল। বিজয়া দশমীতে দুর্দ্ধর্ষ দশানন বিনষ্ট হইল, সংসারে সুখ ও শান্তির স্রোত বহিল। জীবের হৃদয়ে প্রেমের প্রবাহ বহিতে লাগিল; শিষ্য গুরুর চরণে, পুত্র কন্যা পিতৃ মাতৃ চরণে, অভিবাদন করিল, মিত্র মিত্রকে প্রেমালিঙ্গন করিল; যাহাদের সম্বৎসর বৈর ভাব ছিল, তাহারাও সে ভাববর্জ্জন পূর্ব্বক দশমীতে প্রেম সম্ভাষণ করিল,! হা! কি সুখের দিন চলিয়া গেল! বিজয়ে! তুমি ভারতে যে জীবনী শক্তির সঞ্চার করিয়া গিয়াছ, তাহা যেন আমরা চিরদিন উপভোগ করিতে পারি। আজ আমাদের অনুগ্রাহক গ্রাহক, পাঠক, সহানুভাবক, মিত্র মাত্রকেই উদ্দেশে যথা যথোচিত অভিবাদন ও প্রিয় সম্ভাষণ করিলাম। ভগবৎ

नहीं हूं मैं भोग्य नहीं हूं, मैं द्रष्टा नहीं हूं, मैं दृश्य नहीं हूं, मैं स्वयं जाग्रत ज्योतिःरूप बन बिराज कर रहा हूं।

"नमस्तस्मै सदेकस्मै कस्मै चिन्महसेनमः।
यदेतद्विश्वरूपेण राजते गुरु राजते॥"

आपही की कृपा से यह अपूर्व्व ज्ञान का उदय हुआ, हे गुरो आप को नमस्कार, आप सत् वो एक स्वरूप हुए भी विचित्र जगत के रूप से प्रकाशित हो, आप को नमस्कार, आप सब के अन्तर्य्यामी बन बिराज करते हो, हे गुरो आप को बारम्बार नमस्कार करता हूं।

शुभमस्तु।

भरत खंड का एक प्रधान पर्व्व दिन व्यतीत हो गया। शरत काल आजाने पर भारतवर्ष मानो कि किसी मोहन मन्त्र करके मत्त हो उठा था। बंग बिभाग दुर्गा पूजा के धुमधाम से वो अन्यान्य बिभाग राम लीला की रमणीयता से शोक सन्ताप सबही कुछ भूल गये थे। सर्व्वत्र कचहरी, कार्य्यालय सब बंध रहे। प्रबासी अपने घर को आया, पिता माता भाइ भग्नि स्त्री पुत्रादि से यथा योग्य सम्भाषण कर कितने आनन्द भोग किया। पूजा, पाट, गीत, बाद्य नृत्य, उद्यम, उत्साह, आनन्द के उच्छ्वास से भारतवर्ष कैक दिन परम प्रफुल्ल रहा, अब फिर भारत की दुर्द्दशा जैसी की तैसी आगयी। मनो भारत में एक सुख स्वप्न का अभिनय होगया। दशमी के दिन दुर्ज्जय रावण बिनष्ट हुआ। संसारमें सुख वो शान्ति का प्रवाह बह चला। जीवों के हृदय में प्रेम के प्रवाह भी बहने लगा। शिष्य गुरु के चरण में, पुत्र कन्या पिता माता के चरण में, छोटे भाइ बड़े भाइ के चरण में प्रणाम किये। मित्र गण परस्पर बाहु मीलाये। जिन्हों में वर्ष भर बैर भाव था वे भी कुटिलता को छोड़कर दशमी के दिन प्रेम सम्भाषण किये! हा! क्या आनन्द दिन व्यतीत हो गया। दशमी के दिन भारत में जिस जीवनी शक्ति का संचार हुआ, हम सब उसको चिर दिन उपभोग कर सकें यही ईश्वर से प्रार्थना है। आज हमारे कृपालु ग्राहक पाठक, सहानुभावक, मित्र मात्रहो के उद्देश्य करके हम यथा योग्य अभिवादन वो प्रिय सम्भाषण करते हैं। भगवत

পদারবিন্দে বারম্বার নমস্কারকরিলাম। ভগবান সকলকে কুশলে রক্ষা করুন। শুভমস্তু।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

চন্দ্রের প্রকৃতি সূর্য্য হইতে অনেকাংশে বিভিন্ন। ইহা জ্যোতিঃ হীন জল মৃত্তিকাদি রচিত ভুবন বিশেষ। পরন্তু ইহা এ স্থলে বলা কর্ত্তব্য যে চন্দ্র তাপ বিহীন বলিয়াই যে তাহাতে আদৌ তাপ নাই এরূপ নহে। উহাতেও এই পৃথিবীর ন্যায় তাপের সত্ত্বা আছে। সুতরাং উক্ত সংকোচাদি প্রক্রিয় চন্দ্রেও অজস্র হইতেছে।

চন্দ্রে জলাংশ নিতান্ত অধিক, পার্থিবাংশ অপেক্ষাকৃত অনেক অল্প। উহার যে অংশ আমাদিগের দৃষ্টিতে শুভ্র ও চাকচিক্য যুক্ত বোধ হয় উহা সূর্য্যকিরণ সংযুক্ত জলরাশি মাত্র। আর যে অংশ কৃষ্ণবর্ণ বোধ হয় তাহা স্থল ভাগ। এই চন্দ্রের উপাদান আরও একটি পদার্থে আছে তাহার নাম "সোম"। সোম পদার্থ আজকাল সাধারণতঃ পরিচিত নাই। ইহা জলজনক ও স্নেহাদি পদার্থ ঘটিত এক প্রকার তরলাকার মিশ্র পদার্থ। প্রাণী দিগের শরীর অবস্থিতির একটি প্রধান কারণ সোমরস। প্রত্যেক শরীরে সোমরস আছে বলিয়া অঙ্গ প্রত্যঙ্গ সকল একতাপন্ন হইয়া থাকে, পরস্পর বিশ্লিষ্ট হয় না। সোমরস একতাসম্পাদনবলের আধিক্য জন্মায়। ইহা পার্থিব অনেক বস্তুর সহিত মিশ্রিত থাকে। চন্দ্রে সোমরস প্রচুর পরিমাণে আছে বলিয়া চন্দ্রের নামান্তর 'সোম'।

উক্ত বিষয়ে শ্রুতি ও সংহিতাদি। যথা :—

"সলিলময়ে শশিনি রবেঃ কিরণানি নিপতন্তি। প্রতিবিম্বন্তি পুনস্তানি পৃথিব্যামিত্যাদি" (বরাহ সংহিতা) সলিলময় চন্দ্রে সূর্য্যের কিরণ নিপতিত হইয়া আমাদিগের পৃথিবীতে প্রতিবিম্বিত হয় ইত্যাদি। "আপ্যায়স্ব সমেতুতে বিশ্বতঃ সোমবিষ্টম্। ভবাবা যস্য সঙ্গথে" (বেদঃ)। হে চন্দ্র তোমার যে সোমরস পৃথিবীর প্রত্যেক প্রাণী শরীরে অবিষ্ট হইয়া উৎপত্তিক্রিয়ার সাহায্য

पदारविन्द में बारम्बार नमस्कार करते हैं। भगवान सबको आनन्दित रखें। शुभमस्तु।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

चन्द्र की प्रकृति सूर्य्य की प्रकृति से बहुतही भिन्न है। चन्द्र ज्योति से रहित जल मट्टी आदि से बना हुआ एक भुवन है। परन्तु यह भी यहां प्रगट रहना चाहिये कि चन्द्रमा एकबारगी ताप रहित नहीं है। उसमें भी पृथ्वी के समान ताप की विद्यमानता है अतएव कथित रूप संकोच आदि क्रिया चन्द्र में भी सर्व्वदा होती है।

चन्द्र में जल का अंश अत्यन्त अधिक है, पार्थिव अंश उस से बहुत अल्प। जो अंश उसका हमारी दृष्टि में बड़े श्वेत वो चमकदार बोध होता है वह सूर्य्य के किरणों से चमकाते हुए जल राशि मात्र है। औ जो अंश श्याम वर्ण देख पड़ता है वह उसका स्थल खंड है। चन्द्र में सोम नामक और भी एक पदार्थ रहता है। सोम का पहचान आज कल कोई नहीं जानता है। सोम जल जनक वो चिकना आदि पदार्थों से बना हुआ एक तरह का तरलाकार मिश्र पदार्थ है। सोम रस प्राणीयों के जीने का एक प्रधान कारण है। प्रति शरीर में सोम रस के रहने पर अंग प्रत्यंग समस्त एकतापन्न हुए रहते हैं, परस्पर अलग नहीं होते हैं। एकता बढ़ाने में सोमरस परम समर्थ है। पार्थिव बहुतेरे पदार्थों में इसकी विद्यमानता देख पड़ती है। चन्द्र में सोमरस बहुत है इस लिये चन्द्र का एक नाम भी है "सोम"।

उल्लिखित विषयों पर श्रुति वो स्मृति के प्रमाण।

"सलिलमये शशिनि रवेः किरणानि निपतन्ति, प्रतिबिम्बन्ति पुनस्तानि पृथिव्यामित्यादि" (बराह संहिता)। अर्थात् जलमय चन्द्रमा में सूर्य्य की किरण गिरकर इस पृथ्वीतल में प्रतिबिम्बित होते हैं, इत्यादि। "आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमविष्टम्। भवावा यस्य संग थे" (वेद)। हे चन्द्र तुम्हारे जो सोमरस पृथ्वी के हरेक प्राणी के शरीर में [illegible]

করুক ইত্যাদি। "বেত্থ যথাসৌ লোকো ন পূর্য্যতে ? ইত্যাদি" (শ্রুতিঃ)। তুমি কি তাহা জান, যে কারণে ঐ চন্দ্র ভুবনটি প্রাণীগণের দ্বারা সর্বথা পূর্ণ হইতেছে না ? ইত্যাদি।

সূর্য্য এবং পৃথিব্যাদির ন্যায় চন্দ্রের ও সর্ব্বদা অবস্থার পরিবর্ত্তন হইয়াথাকে। এই ভুমণ্ডলে যেরূপ সর্ব্বদা দেখিতে পাওয়া যায় যে যে স্থানে নদ নদী ও বালুকা পূর্ণ ছিল, তাহাই কালক্রমে পরিবর্ত্তিত ও শুষ্ক স্থল হইয়া উর্ব্বরা ভূমি হইতেছে, কোথাও বা বিপরীত দৃষ্ট হইতেছে ; কোথাও উৎকৃষ্ট মৃত্তিকা রাশি প্রস্তরাদিতে পরিণত হইতেছে, কোথাও বা পাষাণ মৃদ্বৎ হইতেছে, কোন স্থান বা অত্যন্ত তাপ বিমুক্ত হইয়া অতিশয় সুদৃঢ় হইতেছে, কোন স্থান বা তদ্বিপরীত দশা লাভ করিতেছে। এই প্রকার চন্দ্রে ও অন্যান্য উপ গ্রহ গ্রহাদিতেও সর্ব্বথা পরিবর্ত্তন ও পরিপাক ক্রিয়া হইতেছে।

ক্রমশঃ

দুর্ল্লভ কি।

যাহা অনায়াসে লাভ করা যায়না, তাহাই পাইবার জন্য লোকের অত্যন্ত আগ্রহ ও চেষ্টা দেখিতে পাওয়া যায়। লোকে যাহা পায় না, তাহাই পাইতে চায়, যাহা দেখে নাই তাহাই দেখিবার জন্য ব্যস্ত, যাহা কখনও শ্রবণ করেনাই, তাহাই শুনিতে একান্ত অভিলাষী। মন যাহা পাইয়াছে তাহাতে পরিতৃপ্ত নহে, মনের গতি অব্যাহত। মন তৃষ্ণায় অধীর হইয়া কখন পাতাল পুরে প্রবেশ পূর্ব্বক তথাকার রত্ন মালা সংগ্রহ করিতে চায়, কখন নীল নভোমার্গে উড্ডান হইয়া নক্ষত্রে ২ ভ্রমণ করিতে চায়, কখন বা চুমুক দিয়া চন্দ্রের সুধা রাশি, পান করিতে চায়, কখন সূর্য্য মণ্ডলকে দীপ করিয়া অলক্ষিত জগতের তত্ত্ব নিরীক্ষণ করিতে যায়, কখন ধূমকেতু ধরিয়া পৃথিবী পরি মার্জ্জিত করিতে চায়, কখন বা রাহুকেই গ্রাস করিয়া চন্দ্র, সূর্য্যকে নিরুপদ্রব করিতে যায়, কখনও বা সূর্য্যকে কিরীটে বসাইয়া, চন্দ্রের তিলক করিয়া ও নক্ষত্রের মালা গলায় পরিয়া,

इत्यादि। "वेत्थ यथासौ लोको न पूर्य्यते ?" इत्यादि। (श्रुतिः) तुम क्या जानते हो क्यों इस चन्द्र भूवन प्राणीयों से सर्व्वथा पूर्ण नहीं होता है ? इत्यादि।

सूर्य्य वो पृथ्वी के न्याई चन्द्र की अवस्था भी सर्व्वदा बदल जाती है। जैसा इस भूमण्डल में सर्व्वदा देख पड़ता है कि जहां किसी समय में नदी बह रही थी या बालू से पूर्ण था, काल पा कर वही स्थान सूक कर अतीव रमणीय उर्व्वरा भूमि बन गयी। कहीं उसका विपरीत भी देख पड़ता है। कहीं तो सरस मट्टी पत्थर बन जाता कहीं पत्थर भी मट्ठी होजाता, कोई स्थान तो अत्यन्त ताप मुक्त होकर अतिशय दृढ़ बनता, कोइ स्थान उसकी उलटी दशा को प्राप्त होता इत्यादि। इस भांति चन्द्र वो अन्यान्य ग्रह उपग्रह आदि में भी परिवर्त्तन वो परिणाम होता है।

शेष आगे।

दुर्ल्लभ पदार्थ क्या है।

जो पदार्थ अनायास नहीं मिलता, तदर्थ मनुष्य के आग्रह वो चेष्टा अधिक देख पड़ते हैं। जो पदार्थ मिलने योग्य नहीं मनुष्य की चाह उसी पर है, जो कुछ कभी दृष्टि में न आया सोही देखने को मनुष्य व्याकुल हैं, जो बात कभी सुना नहीं सोही बात सूनने के अर्थ इच्छा बड़ी तेज है। मन को जो कुछ मिला उसे वह तृप्त नहीं, मन की गति अव्याहत है। तृष्णा से अधीर हो कर मन कभी पाताल पुर में पैठ के वहां के रत्न राजि संग्रह करने चाहता है, कभी नील नभो मार्ग पर चढ़ कर नक्षत्र नक्षत्र में फिरने को चाहता है, कभी चन्द्रमा की सुधा राशि पीने में तत्पर होता है, कभी सूर्य्यमण्डल को दीपक बना कर दृष्टि के बाहर बिराजता हुआ जगत् के तत्त्व ईक्षण करने जाता है, कभी पुच्छल तारा को पकड़ कर पृथ्वीको झाड़ने चाहता है, कभी राहु को ग्रास करके चन्द्र सूर्य्य को निरूपद्रव करने चाहता है, कभी सूर्य्य को किरीट पर रख

পৃথিবীতে আসিতে চায়, কখন বা বনে কখন বা পর্ব্বতে কখন নদী তটে, এই রূপ নানা দিগ্‌দিগন্তে ধাবিত হইয়া কোথায় কি দুর্ল্লভ আছে, তাহাই লাভ করিতে চায়। যাহা দুর্ল্লভ তাহা পাইলে জীবের আনন্দের সীমা থাকেনা। দুর্ল্লভ হইলেই যে দ্রব্যের অধিক মর্য্যাদা হইবে, তাহা নহে, অনাবশ্যক পদার্থ অলভ্য হইলেও তাহার মূল্য নাই। অবস্থা বিশেষে, সময় বিশেষে, স্থান বিশেষে অনেক দ্রব্যই দুর্ল্লভ হয়, কিন্তু সর্ব্বথা দুর্ল্লভ কি আজ তাহাই বিচার্য্য। মহাত্মা শঙ্করাচার্য্য বলিয়াছেন।

"জন্তূনাং নরজন্ম দুর্ল্লভমতঃ পুং স্ত্বং ততো বিপ্রতা।
তস্মাদ্বৈদিক ধর্ম্ম মার্গপরতা বিদ্বত্ত্বমস্মাৎ পরং।
আত্মানাত্ম বিবেচনং স্বনুভবো ব্রহ্মাত্মনা সংস্থিতি
মুক্তির্নোশত জন্ম কোটি সুকৃতৈঃ পুণ্যৈর্ব্বিনা লভ্যতে॥"

জীব গণ বহু চেষ্টা, যত্ন ও ক্লেশ করিয়া যতই দুঃসাধ্য কার্য্য সম্পাদন করুক না, মনুষ্য জন্ম লাভ করিতে হইলে তৎ সর্ব্বাপেক্ষা অধিক তর প্রযত্ন করিতে হয়। সংসারের অনেক কার্য্য সাধন করিবার সময় কেবল কায়িক পরিশ্রম, মানসিক আগ্রহ ও আবশ্যকমত উপায় সকল অবলম্বন করিতে হয় মাত্র, কিন্তু মনুষ্য দেহ লাভ করা অতিশয় যত্ন, প্রগাঢ় অধ্যবসায় ও অটল সংকল্প সাপেক্ষ। একটী দৈহিক প্রকৃতি পরিত্যাগ করা ও তৎপরে প্রকৃতির মনুষ্যোচিত বৃত্তির দিকে একান্ত আগ্রহ পূর্ব্বক প্রধাবিত হওয়া স্বল্পায়াস সাধ্য নহে। মৃত্যুকাল পর্য্যন্ত মনের ঐকান্তিকী ইচ্ছা যাদৃশ বিষয় ও ব্যাপার আশ্রয় করিয়া থাকে, মরণান্তে জীব তাদৃশ প্রকৃতিতে উপগত হয়। কীট, পতঙ্গ, পক্ষী, পশ্বাদি দেহ হইতে প্রকৃতি স্ফুরণ পূর্ব্বক নরাকৃতি লাভ অত্যন্ত দুর্ল্লভ ও সুকঠিন।

নৃশরীর ধারী জীবগণ ক্লীব, স্ত্রী ও পুরুষ এই তিন ভাগে বিভক্ত। নরাকার লাভ পূর্ব্বক পুরুষ দেহ ধারণ করা কঠোর ব্রত সংযম তপস্যাদির ফল। যাঁহারা স্ত্রী পুরুষ এতদুভয় জাতিকে স্বাভাবিক সকল বিষয়ে সমান অধিকারী মনে

की चञ्चला निसर्ग मन। की वो नक्षत्रमाला की गली मैं पहेर के पृथ्वी पर आने चाहता है, कभी वन मैं, कभी पर्व्वत पर, कभी नदी किनारे, इस रीति नाना ओर दौड़ फिर कर जहां जो कुछ दुर्ल्लभ है सोई लेने को चाहता है। दुर्ल्लभ पदार्थ हात लगने पर जीव असीम आनन्द को प्राप्त होता है। दुर्ल्लभ होनेही से जो मर्य्यादा द्रव्य की अधिक बढ़ जाती सो नहीं, क्योंकि अनावश्यक पदार्थ अलभ्य होने पर भी उस का मोल नहीं होता है। अवस्था, समय वो स्थान विचार के किसी २ पदार्थ की दुर्ल्लभ बुझ पड़ता है। किन्तु सर्व्वथा दुर्ल्लभ पदार्थ क्या है आज सोही विचारनीय है।

महात्माश्रीशंकराचार्य्यजीने बोला—

"जन्तूनांनरजन्मदुर्ल्लभमतःपुंस्त्वंततोविप्रता।
तस्माद्वैदिक धर्म्ममार्गपरता विद्वत्त्वमस्मात् परं।
आत्मानात्मविवेचनं स्वनुभवो ब्रह्मात्मना संस्थिति
मुक्तिर्नोशतजन्मकोटीसुकृतैःपुण्यैर्व्विना लभ्यते॥"

जीव गण कहुत चेष्टा, यत्न वो क्लेश उठा कर जितनेही दुःसाध्य कार्य्य क्यों न सम्पादन करें मनुष्य जन्म लाभ करना समस्त कार्य्य से अधिक प्रयत्न साध्य है। बहुतेरे कार्य्य संसार मैं ऐसे हैं कि जिन्हों के साधन काल मैं केवल मात्र कायिक परिश्रम, मानसिक आग्रह वो आवश्यक अनुसार उपायों का अवलम्बन करना पड़ता ; किन्तु मनुष्य देह लाभ करने मैं अत्यन्त यत्न, प्रगाढ़ अध्यवसाय वो निश्चल संकल्प चाहिये। किसी एक दैहिक प्रकृति को परित्याग करना वो अनन्तर मनुष्योचित वृत्तियों के ओर एकान्त आग्रह पूर्व्वक प्रकृति का प्रधावित होना क्या स्वल्प परिश्रम का विषय है ? मरण काल पर्य्यन्त मन की ऐकान्तिकी इच्छा जिस २ विषय वो व्यापार से फंसी रहती है, मरणान्त मैं उन्हीं सबकी प्रकृति आत्मा मैं आ मिलती है। कीट, पतङ्ग, पक्षी, पशु आदि के देह मैं निवास कर प्रकृति को स्फुरित करके नर का आकार बनना अत्यन्त दुर्ल्लभ वो सुकठिन है।

नृदेह धारी जीव गण तीन श्रेणी मैं विभक्त हैं, जैसा कि क्लीव, स्त्री वो पुरुष। नर के आकार पाकर पुरुषदेह धारण करना बिन कठोर व्रत, संयम, तपस्यादिक नहीं हो सक्ता है। जो लोग यह मानते हैं कि स्त्री वो पुरुष इन दोनों

করেন, তাঁহাদের সিদ্ধান্ত বিশুদ্ধ বুদ্ধি বিজৃম্ভিত নহে। স্ত্রী জাতি স্বাভাবিক বৃত্তি ভেদে পুরুষ অপেক্ষা অনেক নীচ। নারীর কোমল প্রকৃতি জগতের কল্যাণ সাধন করিতে ২ পুরুষ প্রকৃতির দিকে ধাবিত হয় এবং ধীরে ২ পূর্ব্ব প্রকৃতি জনিত স্ত্রী দেহ বিনষ্ট হইয়া পুরুষ ভাবের আবির্ভাব ও পুং দেহের সঞ্চার হইতে থাকে। ক্লীবজাতি মানবীয় বৃত্তি নিচয়ের অস্ফুটাবস্থায় জীব। তৎ প্রকৃতি উন্নতাকারে পরিণত হইলে স্ত্রীত্ব ও স্ত্রীত্বের চরমোন্নতি হইলে পুরুষত্ব লাভ হইয়া থাকে; সুতরাং প্রকৃত পুরুষ-প্রকৃতি লাভ নিতান্তই দুর্ল্লভ বলিতে হইবে।

পুরুষ মাত্রেই সফল জন্মা মনুষ্য তাহা বলা যায়না, কেন না তন্মধ্যে অনেক পুরুষ পূর্ব্ব সংস্কার জনিত বৃথা কার্য্য কলাপে লিপ্ত হইয়া পুরুষোচিত কার্য্যে পরাঙ্মুখ থাকেন, এবং সামান্য নীচ কুলে জন্ম গ্রহণ পূর্ব্বক আহার নিদ্রা ও বিবিধ বাসনাসক্ত হইয়া মানবসমাজকে কলঙ্কিত করেন। মনুষ্য দেহ ধারী দিগের মধ্যে বেদাধ্যায়ী ব্রাহ্মণ হওয়া আরও সুকঠিন। অর্থোপার্জ্জনের জন্য শিল্প চাতুর্য্যাদি শিক্ষা ও সভাবিজয়ী হইয়া মর্য্যাদা পাইবার আশয়ে শাস্ত্রাদি অভ্যাস করিতে প্রায়ই লোকের আগ্রহ দেখিতে পাওয়া যায়, কিন্তু আত্ম শুদ্ধির জন্য পরমার্থ বিদ্যাভ্যাসে কয় জন মনুষ্যের প্রবৃত্তি হইয়া থাকে? হইলেও অনেকে বেদ শাস্ত্র কণ্ঠস্থ করিয়া থাকেন বটে কিন্তু আচার্য্যের নিকট হইতে তাহার অর্থোপলব্ধি করিয়া লয়েন না, সাধারণ ভাবে ভাষাগত অর্থ বুঝিলেও তাহার গম্ভীর তাৎপর্য্য বুঝিতে সকলে সমর্থ হয়েন না। বেদ বাক্য উচ্চারণ মাত্রেই শরীর মন আত্মা পবিত্র হইয়া থাকে, এই দৃঢ় বিশ্বাসের বশবর্ত্তী হইয়া অনেকে বেদের অর্থ বোধের আবশ্যকতাও অনুভব করেন না। বেদের প্রকৃত অর্থ বোধ আজ কাল দুর্ল্লভ হইয়া উঠিয়াছে, কেন না, বর্ত্তমান সময়ে অনেকে বেদার্থ জানিবার জন্য প্রণত শীরে পাশ্চাত্য পণ্ডিত গণের শরণাগত হইতেছেন। তাঁহারা ব্যাকরণ ও শব্দ শাস্ত্রের সাহায্য মাত্র লইয়া বেদের এক এক প্রকার স্বকপোল কল্পিত বিচিত্র ব্যাখ্যা করিয়া

जातीही का अधिकार समस्त विषयों में स्वाभाविक रीति से समान है, उन्हीं का सिद्धान्त विशुद्ध बुद्धि का उपजात नहीं है। स्त्री जाति स्वाभाविक वृत्ति भेद करके पुरुष से अत्यन्त निम्न श्रेणी की है। नारी की कोमल प्रकृति जगत का कल्याण साधन करती हुई पुं प्रकृति की ओर आगे बढ़ जाती है, और धीरे २ पूर्व्व प्रकृति से बना हुआ स्त्री शरीर विनष्ट हो जाता है वो पुरुष भाव का आविर्भाव होने पर पुं देहका संचार हुआ करता है। क्लीव जाति मानवीय वृत्ति समूह की अंकुरित अवस्था का जीव है। वह प्रकृत्ति उन्नत भाव धारण करने पर स्त्रीत्व वो स्त्रीत्व की चरम उन्नति होने पर पुरुषत्व मिलता है; अतएव प्रकृतरूप पुरुष-प्रकृति लाभ करना मानो निपट दुर्ल्लभ है।

जिस भांति के मनुष्य बनने पर जन्म सफल होता है, पुंदेह धारी मात्रही वैसा नहीं है, क्योंकि अनेक पुरुष पूर्व्व संस्कारों के बस हो कर बहुतेरे वृथा कार्य्य कलाप में फंस कर पुरुष के योग्य कामों से दूर रहते हैं औ सामान्य नीच कुल में जन्म लेकर आहार, निद्रा वो भांति २ के व्यसन में आसक्त रहकर मनुष्य समाज कलंकित करते हैं। मनुष्य देह धारियों में फिर वेदाध्यायी ब्राह्मण बनना और भी कठिन है। अर्थोपार्ज्जन के अर्थ शिल्प चातुरी सिखने के लिये वो सभा विजयी हो कर मर्य्यादा लाभ के आशय से शास्त्रआदि अध्ययन करना प्रायही लोगों में देख पड़ता है, किन्तु आत्म शुद्धि के कारण परमार्थ विद्या के अभ्यास करने में कितने मनुष्य की प्रवृत्ति होती है? होने पर भी बहुतेरे जन वेद शास्त्र को कण्ठस्थ कर लेते हैं किन्तु आचार्य्य के समीप उन सब मन्त्रों के अर्थ समझ बुझ नहीं लेते हैं। यदि किसी किसी ने साधारण रीति से भाषा भी समझ लें किन्तु उन्हीं के गम्भीर तात्पर्य्य समझने की सामर्थ नहीं होती है। इसही विश्वास से कि वेद वाक्य उच्चारण करतेही शरीर, मन, आत्मा पवित्र होते हैं, वेद के अर्थ ज्ञात होने की कुछ आवश्यकता बहुतेरे मनुष्य का अनुभव नहीं होता है। वेद का प्रकृत अर्थ ज्ञात होना आज कल तो बड़ाही दुर्ल्लभ हुआ क्योंकि बहुतेरे मनुष्य सीर झुंका २ कर वेदार्थ ज्ञात होने के लिये यु-

বেদের প্রতি লোকের অশ্রদ্ধা উৎপাদন করিয়া দিতেছেন। বেদের ঈদৃশ কদর্য্য ব্যাখ্যা শিক্ষা না করিয়া বরং যাঁহারা বেদকে পরম পাবক বোধে তাহা আবৃত্তি মাত্র করিয়া থাকেন, তাঁহারা ধন্য তাই বলিতেছি, আজ কাল বেদার্থ প্রকৃত রূপে বোধ হওয়া নিতান্ত দুর্ল্লভ। বেদার্থ বিদিত হইলেও তদনুসারিণী কার্য্য প্রবৃত্তি আরও দুর্ল্লভ। বিকারাচ্ছন্ন চিত্ত সহজেই ধর্ম্ম কর্ম্ম করিতে চাহে না, তাহাতে আবার যে বৈদিক কার্য্য কলাপে কঠোর ব্রত নিয়ম, সংযম, আদির নিতান্ত প্রয়োজন, তাহাতে মন কোন ক্রমেই ধাবিত হইতে চাহেনা। দেশকাল পাত্রাদির অবস্থা বিচার করিলে সাধু কার্য্যে প্রবৃত্তি হওয়া নিতান্তই সুকঠিন বলিতে হইবে। যদি বা মানবীয় কর্ত্তব্য বুদ্ধির বশবর্ত্তী হইয়া কেহ২ বৈদিক ধর্ম্মাচারে প্রবর্ত্তিতও থাকেন, তজ্জনিত জ্ঞানেরউদয় হওয়া সকলের ভাগ্যে ঘটিয়া উঠেনা। কর্ম্মানুষ্ঠান কালে শাস্ত্র বিধির যদি কিছু মাত্র ব্যত্যয় হয় তবে বিশেষ প্রত্যবায় ঘটিবার সম্ভাবনা। ত্রুটি মনুষ্যের পদেপেদেই হইয়া থাকে, এজন্য কর্ম্মানুষ্ঠানের ফল লাভ বা জ্ঞানোদয় হওয়া অতীব দুর্ল্লভ। পুণ্যানুষ্ঠানের দ্বারা মন নির্ম্মল হইলেও আত্মানাত্ম বিচারণা সহজেউদয় হয় না, এই জন্য মহাত্মা গণ ইহাকে অতিশয় দুর্ল্লভ বলিয়া স্থির করিয়াছেন। যদিই বা শাস্ত্রাদি পাঠ, মহাত্মা গণের চরিত্র চিন্তন, ও সৎকার্য্য কলাপ অনুষ্ঠান করিতে ২ সময়ে ২ আত্মানাত্ম বুদ্ধির বিকাশও হয়, কিন্তু আত্মাকে অনুভব করা আরও কঠিন ও সুদুর্ল্লভ। সমস্ত বিষয় ব্যাপার হইতে চিত্ত একান্ত প্রত্যাহৃত না হইলে ও আত্ম মন্ত্রে দীক্ষিত হইয়া একাগ্রতা পূর্ব্বক সমাধি না করিলে আত্মানুভব কিছুতেই সম্ভব নহে। এইরূপে নির্ব্বিকল্প সমাধি সাধন দ্বারা চিদ্রূপ পরমাত্মাতে নিত্য সংস্থিতি রূপ পরামুক্তি লাভ সকল অপেক্ষা দুর্ল্লভ কেননা উহা শত কোটী জন্ম সদাচার সৎক্রিয়া ও তপস্যা ভিন্ন কিছুতেই লাভ হইতে পারে না।

ক্রমশঃ।

रोप के पण्डितों के शरण ले लेते हैं। व्याकरण वा शब्द शास्त्र की सहायता ले ले कर साहबों ने निज निज कल्पना अनुसार एक एक प्रकार की विचित्र व्याख्या कर वेदों पर लोगों की अश्रद्धा वा संशय डालवा देते हैं। वेदों की इस भांति कदर्थ्य व्याख्या न सिख कर जो लोग वेद को केवल परम पवित्र समझ के उस को आवृत्ति मात्र किये करते हैं वे वलक धन्य हैं। इसी लिये कहा गया कि आज कल वेदार्थ प्रकृत रूप ज्ञात होना सुदुर्ल्लभ है। वेदार्थ विदित होने पर भी तदनुसार कार्य्य में प्रवृत्ति होना और भी दुर्ल्लभ है। विकारों से भरा हुआ चित्त तो धर्म्म कर्म्म करने ही को नहीं चाहता है, तिस पर फिर जिन वेदोक्त कार्य्य समूह में कठोर व्रत, नियम, संयम आदि का नितान्त प्रयोजन है, उधर जाने की इच्छा मन की क्यों होगी। यदिच किसी २ पुरुष ने अपनी कर्त्तव्य बुद्धि के बस होकर वेदोक्त क्रिया कांड में प्रवृत्त भी रहते, परन्तु उन कर्म्मों से कुछ ज्ञान मिलना सब के भाग्य में नहीं होता है। कर्म्मानुष्ठान काल में यदि शास्त्र विधि का कुछ भी उल्टा पुल्टा हो तो उससे विशेष हानि पहुचती है त्रुटि मनुष्य की प्रतिपद क्षेप में होती है, इस लिये कर्म्मानुष्ठान का फल मिलना वो ज्ञानोदय होना अतीव दुर्लभ है। पुण्य अनुष्ठान के द्वारा मन निर्म्मल होने पर भी आत्मानात्म बिचार सहजेही उदय नहीं होता है, तन्निमित्त महात्मा गण इसको दुर्ल्लभ से दुर्ल्लभ कर मान लिये। यदिच शास्त्र आदि पठन, महात्माओं के चरित चिन्तन वो सत्कार्य्य कलाप अनुष्ठान करते२ समय२ पर आत्मानात्म बुद्धि का विकाश भी होता है किन्तु आत्मा का अनुभव कर लेना और भी कठिन वो दुर्ल्लभ है। समस्त बिषयों से चित्त को एकबारगी प्रत्याहार किये बिना वो आत्म मंत्र से दीक्षित होकर एकाग्रता पुर्व्वक समाधी किये विना आत्मानुभव को कभी सम्भावना नहीं। इस रीति निर्व्विकल्प समाधि साधन से परामुक्ति अर्थात् चिद्रूप परमात्मा में नित्य संस्थिति, होना सब से दुर्लभ है, क्योंकि शत कोटी जन्म पर्य्यन्त सदाचार, सत्क्रिया वो तपस्या किये बिना मुक्ति किसी प्रकार से मिलनेवाली नहीं।

शेष आगे।

যোগী মাণিক্য প্রভু

মহাত্মা মাণিক্য প্রভু নিয়োগী ব্রাহ্মণ কুলে জন্ম গ্রহণ করিয়াছিলেন। এরূপ প্রবাদ যে তিনি সামান্য বিদ্যাভ্যাস করিয়া জমিদারী সরকারে মুহুরীর কার্য্য করিতেন। সাধু দিগের মঠে যাতায়াত করা তাঁহার বহুদিন হইতে অভ্যাস ছিল। যে সকল পরিব্রাজক ভ্রমণ করিতে ২ ঐ মঠে সমাগত হইতেন মাণিক্য প্রভু তাঁহাদিগের যথোচিত সেবা সুশ্রুষা করিয়া আপনার জীবনকে পবিত্র বোধ করিতেন ও তাঁহাদিগের সেবার্থ গাঁজা আদি আনিয়া দিতেন। একদিন সন্ধ্যা কালে প্রবল ধারায় বৃষ্টি হইতেছে, এমন সময়ে জনৈক সন্ন্যাসী উক্ত মঠে আসিয়া উপস্থিত, তাঁহার পরিধেয় ও গাত্র বস্ত্র সমস্তই আর্দ্র, শীতে কলেবর বিকম্পিত, মাণিক্য প্রভু তাঁহার যথাযোগ্য সেবার ত্রুটী করিলেন না। আর্দ্র বসন গুলি শুকাইতে দিলেন ও ধুম পানার্থ গাঁজা আনিয়া দিলেন। এক জন অপরিচিত পুরুষকে ইদৃশ সুশ্রূষা করিতে দেখিয়া সন্ন্যাসী অতীব প্রসন্ন হইলেন এবং তাঁহাকে যোগ তন্ত্রের গুহ্য মন্ত্রে দীক্ষিত করিলেন।

মাণিক্য প্রভু এই শুভ ক্ষণে গুরু দত্তাত্রেয়ের প্রদর্শিত যোগ শিক্ষা প্রণালী অবলম্বন করিলেন। গুরু দত্তাত্রেয়ের শিক্ষা প্রণালীকেই সাধক গণ যোগতন্ত্রের সুগম ও সরল বর্ত্ম বলিয়া অবধারণ করিয়াছেন।

যে সকল যোগী নিজ ২ সাধন সিদ্ধির অলৌকিক ব্যাপার লোক সকলকে প্রদর্শন করেন, তাঁহারা সর্ব্বোচ্চ শ্রেণীর যোগী নহেন। মাণিক্য প্রভু যোগচর্য্যার বিশেষ উন্নতি লাভ করিলে তিনি হমনাবাদে সমাধি করিয়াছিলেন। তৎ পূর্ব্বে, তিনি নিজ সিদ্ধি বলে অনেক সময়ে লোক দিগকে অনেক অলৌকিক ব্যাপার দেখাইতেন। পাঠক মহাত্মা গণের বিদিতার্থ কতিপয় ব্যাপার নিম্নে প্রকটিত হইল।

মৃত সার্ সলার জঙ্গ ইহাঁকে হাইদ্রাবাদে আনিবার জন্য মধ্যে ২ শিবিকা প্রেরণ করিতেন। মাণিক্য প্রভু সকলের সমক্ষেই তথায় যাইবার

योगी माणिक्य प्रभु ।

महात्मा श्रीमानिक्य प्रभुजी ने एक नियोगी ब्राह्मण के घर जन्म लिया था। परम्परागत यह बार्त्ता सुनी जाती है कि प्रथम अवस्था में सामान्य विद्याभ्यास करके उनने किसी जमींदारके कचहरी में मोहरेर का काम करता था। साधुओं के मठ में जाना आना उनका बहुत दिनों से अभ्यास था। जितने साधुजन रमते हुए मठ में आजाते, मानिक्य प्रभुजी ने उन सब को यथा योग्य सेवा में तत्पर रहते वो उस से अपने जीवन को पवित्र कर मानते थो उन्हीं के अर्थ गंजा आदि भी मंगा दिया करते थे। एक दिन सन्ध्या के समय प्रबल धारा से जल वर्षने लगा, इस अवसर में एक सन्यासी उस मठ में आ पहुचे, । उन के पहरने का वो ओढ़ने का कपड़े सब भींग गये, ठंड से कलेवर विकम्पित रहा मानिक्य प्रभु ने उन को यथा योग्य सेवा में त्रुटी न करी। भींगे कपड़े को सुकने के लिये टांग दिये औ गंजा भी कुछ सेवार्थ पहुंचाय दिये। एक अनजाने मनुष्य को इस भांति सेवा करते हुए देख कर सन्यासी अतीव प्रसन्न हुए औ उन को योग विद्या के गुप्त मन्त्र से दीक्षित किये मानिक्यप्रभु इस शुभ अवसर में गुरु दत्तात्रेयजी की योग शिक्षा पद्धति को अवलम्बन किये। साधक गण गुरु दत्तात्रेयजी की शिक्षा प्रणालीही को योग तत्त्व को सुगम वो सरल पथ मानते हैं।

जो योगी लोग निज २ साधन सिद्धि के अद्भुत व्यापारों लोगों को देखलाये फिरते हैं, वह सब योगी सर्व्वोत्तमश्रेणी के नहीं हैं। मानिक्य प्रभु योगानुष्ठान को विशेष रूप उन्नति लाभ करने पर हुमनाबाद में समाधि लगाये। तत्पूर्व्व में वे निज सिद्धि के बल से अनेक समय लोगों को अनेक अलौकिक व्यापार देखला करते थे। पाठक महोदयों के विदितार्थ थोड़ीसी बातें नीचे प्रगट की जाती है।

निजाम के मृत मंत्री सर सलार जंग ने इनको हैदराबाद में लाने के लिये बीच २ में पालकी भेज दिये करते थे। मानिक्य प्रभु सब जनों के

জন্য শিবিকার আরোহণ করিতেন, কিন্তু বাহক গণ যখন শিবিকা সার্ সলার জঙ্গের গৃহ দ্বারে আনিয়া উপস্থিত করিত, তখন যোগীবরকে কেহই দেখিতে পাইতনা, এমন কি তিনি কখন শিবিকা ত্যাগ পূর্ব্বক গমন করিয়াছেন, তাহা বাহক গণও বলিতে পারিত না। মধ্যে২ তিনি শিবিকায় স্থির ভাবে বসিয়া ক্রমশঃ এত গুরুভার হইতেন যে বাহক সংখ্যা বৃদ্ধি না হইলে আর তাঁহাকে পূর্ব্ব বাহক গণ লইয়া যাইতে সমর্থ হইত না। কখন ২ তিনি ভয়ানক কাল ভুজঙ্গ মূর্ত্তি ধারণ করিতেন, তদ্দর্শনে বাহক গণ ভয়ে শিবিকা ফেলিয়া পলায়ন করিত। তিনি পুনঃ পূর্ব্ব দেহ ধারণ করিলে তাহারা প্রত্যাবৃত্ত হইত। মাণিক্য প্রভুর সঙ্গে প্রায় সর্ব্বদাই কতিপয় গায়ক থাকিত। প্রতি গীতের শেষে "মাণিক্য প্রভু মমত ধারক" এইরূপ ভনিতা থাকিত। "মমত ধারক" শ্রীশঙ্করাচারী ও তাঁহার অনুবর্ত্তী গণের উপাধি। তৎকালে শ্রীশঙ্করাচার্য্যের পাঠে যিনি মহান্ত ছিলেন, তিনি মাণিক্য প্রভুর এতদুপাধি ধারণে আপত্তি উত্থাপন করেন, তাহাতে মাণিক্য প্রভু বলেন যে আমিই শ্রীশঙ্করাচারী, মাণিক্য প্রভু রূপে অবতীর্ণ হইয়াছি, যদি প্রমাণ দেখিতে চাও, তাহাও দেখাইতে প্রস্তুত আছি। মহান্ত নিদর্শন দেখিতে চাহিলে তিনি মহান্তকে নগরের প্রান্ত ভাগে একটী পর্ব্বত কন্দরে লইয়া গেলেন এবং তথায় তাঁহাকে এতাদৃশ নিদর্শন দেখাইয়া দিলেন যে সেই অবধি মহান্ত উক্ত উপাধি ধারণ জন্য মাণিক্য প্রভুকে আর কিছুই বলিতেননা। তিনি আচার্য্য শ্রীরামানুজ স্বামীর কোন উপাধি ধারণ করায় এই রূপ শ্রীরঙ্গ নিবাসি জনৈক বৈষ্ণবও তাঁহার প্রতি আপত্তিবাদ করিয়াছিলেন। প্রভু তাহাকেও উক্ত গিরি কন্দরে লইয়া গিয়া বৈষ্ণব সম্প্রদায়ের গ্রন্থোক্ত অঙ্গে দ্বাদশ বৈষ্ণব চিহ্ন দেখাইলেন ও তিনিই যে রামানুজ স্বামীর প্রতিরূপ তাহা বুঝাইয়া দিলেন। ইহাও এখানে বলা আবশ্যক যে যখনই কোন আশ্চর্য্য অলৌকিক কার্য্য দেখাইতে হইত তখনই তিনি উক্ত গিরি গুহায় গমন করিতেন।

सामहने ही वहां आने के लिये उस पर चढ़ते किन्तु जब कहार लोग सर सलारजंग के दरवाजे पर पाल्की उतारते सब योगीराज को कोई नहीं देखने पाता, वे किस समय पाल्की से उतर गये सो कहारों भी नहीं बता सक्ते। कभी२ वे पाल्की पर स्तम्भित ही बैठकर निज शरीर का भार इतना बढ़ाते कि कहारों की संख्या बिन बढ़ाये वे लोग पाल्की लेही नहीं जा सक्ते थे। कभी २ वे भयङ्कर काल भुजंग मूर्त्ति बनजाते, उसे कहार लोग डर से पाल्की फेंक भाग जाते थे, पुनः पूर्व्व शरीर धारण करने पर वे सब लौट आते। मानिक्य प्रभु के संग प्राय सदाइ कैक जन गाने-वाले रहते थे। प्रति गान के अन्त में "मानिक्य प्रभु, समत धारक" ऐसा उपनाम दिया रहता। "समत धारक" यह उपनाम श्रीशंकराचारी वो उस सम्प्रदायियों का है। तत्काल श्री-शंकराचारी की गद्दी पर जो महान्त थे, उन्होंने मानिक्य प्रभु को इस उपनाम धारण करते हुए देख कर बाधा डाला। उस पर मानिक्य प्रभु ने बोला कि "मैं ही श्रीशंकराचारी हूं, मानिक्य प्रभु बन अवतीर्ण हुआ, कुछ प्रमाण देखने चाहो तो देखलाने में मैं प्रस्तुत हूं। महान्त कुछ नि-दर्शन चाहने पर उनने महान्त को नगर के प्रान्त में एक पर्व्वत के कंदर में ले गया औ ऐसा कुछ देखलाया मानो उसी दिन से उस उपनाम धारण के कारण महान्त ने मानिक्य प्रभु को कुछ भी नहीं बोला। आचार्य्य श्रीरामानुज स्वामीजी के कोइ उपनाम धारण करने के हेतु से श्रीरंगवासी एक वैष्णव ने उनका प्रतिबंधक हुआ। प्रभुजी उन को भी उस गुफे में ले जाकर वैष्णव सम्प्रदाय के शा-स्त्रोक्त शरीर में बारह प्रकार के चिह्न देखलाये और वेही जो स्वयं रामानुज स्वामी के रूप हैं, यही समझा दिये। यहां यह भी कहना आवश्यक है कि जब जब कुछ अद्भुत देखलाना पड़ता, तबही उस गुफे में वे घुसी जाते।

অনেকে এতন্মহাত্মার নিকট ব্যাধি শান্তির জন্য ঔষধ আনিতে ও অকিঞ্চনতা ও আপৎ শান্তির জন্য উপায় জানিতে যাইত। যাহাদের পীড়া আরোগ্য হইবার সম্ভাবনা, তাহারাই তাঁহার দর্শন পাইত ও অপরাপর ব্যক্তি তাঁহার সমীপবর্ত্তী হইয়াও তাঁহাকে দেখিতে পাইতনা। তিনি বলিয়া দিতেন যে পূর্ব্বজন্মের কর্ম্মফল তোমাদের আরোগ্যের বাধা করিতেছে। ধনী গণ তাঁহাকে ধন দান করিলে, তিনি তাহা গ্রহণ করিতেন ও তত্তাবৎ দরিদ্র দিগকে বিতরণ করিতেন। সময়ে ২ অনেকে তাঁহার নিকট আরোগ্য লাভের জন্য যাইত, এবং অভীষ্ট সিদ্ধি হইয়া গেলেও কেহ ২ তাঁহার নিকট থাকিত, এজন্য তাহাদিকে তিনি বলিতেন, তোমরা বাড়ী যাও, তোমাদের পিতা মাতা পরিবারাদি অনেক দিন তোমাদিগকে না দেখিয়া অত্যন্ত কাতর আছেন। অথবা সময়ে ২ বলিতেন, তোমাদের গৃহে অমুক কার্য্য উপস্থিত, তজ্জন্য তোমাদিগের যাওয়া নিতান্ত আবশ্যক। তাহারা বাটী গিয়া দেখিত মহাত্মার ভবিষ্যদ্বাণী সমস্তই সত্য। তাহাদের গৃহে যাইবার সময় প্রসাদ স্বরূপ তাহাদিগকে ক্ষুদ্র ২ এক ২ খণ্ড বাঁশ ও এক একটী ঋতু সাময়িক ফল দান করিতেন। এতাবৎ সর্ব্বদাই তাঁহার ভাণ্ডারে থাকিত। গ্রাহক গণ এ গুলিকে তাহাদের দেবার্চ্চনা স্থানে রক্ষা করিয়া পূজা করিত। বহুদিন রক্ষা করিলেও সে গুলি পচিয়া যাইতনা।

একদিন তিনি গায়ক বৃন্দের সহিত গান গাইতেছিলেন, অকস্মাৎ স্তব্ধ হইয়া ঊর্দ্ধে হস্তোত্তলন করিলেন, দেখিয়া বোধ হইল যেন কোন দ্রব্য তুলিয়া ধরিতেছেন। সমীপস্থগণ ইহার গুহ্য কারণ কি জিজ্ঞাসা করায় তিনি বলিলেন যে একখানি দেশী বাষ্পীয় পোত প্রবল বায়ুবেগে বঙ্গোপসাগরে মগ্নপ্রায় হইয়াছিল, তাহার কর্ণধার এই বলিয়া আমার শরণ লইল, যে যদি এই দুর্যোগ হইতে পোত খানি মাণিক্য প্রভু রক্ষা করেন, তবে তাঁহার আশ্রমে এত টাকার পূজা দিব। কোন্ দিবসে ও কত টাকা দিবে, তাহা তখনই লিখিত হইল। নিরূপিত দিবসে যখন কর্ণধার আসিল তখন মহাত্মার সমস্ত কথাই পরিপূর্ণ ও প্রমাণীকৃত হইল। যোগীবর সেই সময়ে হস্ত

बहुतेरे लोग पीड़ा आरोग्य के अर्थ इस महात्मा के निकट औषध लाने को औ दारिद्र्य दुःख वो आपत् शान्ति की विधि जानने के लिये जाया करते थे। जिन्हों की बिमारी छूटनेवाली होती, उन्हों सब को वे दर्शन देते औ अन्यान्य मनुष्य उन के समीप आए भी उनका दर्शन नहीं पाते। वे इसभा कहते कि तुम्हारे पूर्व्व जन्म का कर्म्म आरोग्य में बाधा डालता है। धनाढ्य लोग उनको धन देने पर वे ले लेते वो दरिद्रों को बांट देते थे। समय २ में बहुत मनुष्य आरोग्य के अर्थ उनके समीप जाते वो अभीष्ट सिद्ध होजान पर भी सत्संग के लिये कुछ दिन फिर ठहरते। तन्निमित्त वे कह देते कि तुम सब घर चले जाओ क्योंकि तुम को बहुत दिन देखे बिना तुम्हारे पिता माता, परिवारादि अत्यन्त खेद युक्त हैं अथवा कभी २ यह भी कह देते कि तुम्हारे घर में फलाना काम है, तुम को इस समय जाना अत्यावश्यक है। वे सब घर जाकर देखते कि साधु की बताई हुई समाचार समस्तही सत्य हैं। घर जाने के समय सब को प्रसादी की रीति से एक २ टुकरा बांस वो एक एकठी फल देते। यह सब सर्व्वदा उनके भंडार में मवजुद रहते थे। ग्राहक गण इन सब को पूजा के स्थान पर रखते व नित्य पूजन करते। बहुत दिन रहने से भी वह सब नहीं सड़ जाते।

एक दिन वे गानेवालों के साथ भजन गा रहे थे, अकस्मात् चुप हो कर अपना हात उठाये, मानो जैसा कि किसी द्रव्य को खींच उठाने लगे। समीपवाले सब पूछे कि यह आप क्या कर रहे हैं? प्रभुजीने बोला कि प्रचंड वायु के मारे एक देशी जहाज बंग सागर में डुब रही थी, उसके नाविक मेरे शरण आकर अंगीकार किया कि यदि मानिक्य प्रभु इस दुर्दिन में जहाज को बंचावें तो उनके आश्रम में इतना रुपये की पुजा में पहुंचा दुंगा। किस दिन को वो कितने रुपये देंगे व भी उसी समय लिख लिया गया। फिर निरूपित दिन में जब नाविक आश्रम में आ पहुंचा तब महात्मा की समस्त बातें पूर्ण हो गयी वो प्रम

নিষ্পেষণ পূর্ব্বক কিয়ৎ পরিমাণে জল বাহির করিলেন, আস্বাদে বোধ হইল তাহা সমুদ্র বারি।

এক সময়ে একটী বিধবা বণিক বধু প্রচার করিল, যে মাণিক্য প্রভুর সহিত তাহার বিবাহ হইবে, বিধবার যাহা কিছু ধন ছিল, সে সমস্তই প্রভুর আশ্রমে পাঠাইয়া দিল অতঃপর বিধবা আসিয়া উপস্থিত হইল। সে আসিবা মাত্র প্রভু তাহাকে লইয়া কুটীরে প্রবেশ করিলেন ও উভয়েই ক্ষণ বিলম্বে বিবাহ পরিচ্ছদ পরিয়া বাহির হইলেন। সেই দিন হইতে বিধবা পৃথক স্থানে থাকিত ও তথায় যোগাভ্যাস করিত।

একটী স্ত্রীলোক একদিন আসিয়া তাঁহার নিকট সন্তানের বর চাহিল। তিনি জিজ্ঞসা করিলেন, তোমার কত গুলি সন্তান আবশ্যক তাহাতে সে বলিল, যে যতদিন বাঁচিব যেন বর্ষে ২ একটী ২ পুত্র হয়। তিনি তথাস্তু বলিয়া তাহাকে বিদায় করিয়া দিলেন। কতক গুলি সন্তান হইলে সে একদিন আসিয়া বলিল, প্রভো! যত প্রাচীন হইতেছি, ততই প্রসব করিতে বড় কষ্ট বোধ হইতেছে অতএব আর সন্তান নাহয় এরূপ বর দান কর। তিনি এবর লইতে তাহাকে বার ২ নিবারণ করিলেন, কিন্তু তাহা সে শুনিল না, অবশেষে অনিচ্ছা "পূর্ব্বক অভীষ্ট সিদ্ধিরস্তু" বলিয়া বিদায় করিলেন। কিন্তু হা! স্ত্রী লোকটী গ্রামে প্রবেশ করিতে না করিতে সংবাদ পাইল যে তাহার পতির মৃত্যু হইয়াছে।

মাণিক্য প্রভু ১০।১৫ বৎসর হইল সংসার হইতে অবসর গ্রহণ করিয়াছেন। ভূনিম্নে একটী মন্দির নির্ম্মাণ করাইয়া তন্মধ্যে সমাধি করিলেন। বলিয়া গেলেন যেন মন্দির দ্বার এইক্ষণেই অবরুদ্ধ হয়। এইরূপ সমাধি মন্দির তাঁহার দুই তিন স্থানে নির্ম্মিত আছে। লোকে এখনও তথায় পূজা ও স্তুতি গান করিয়া থাকে। প্রবাদ এই রূপ যে এখনও সেখানে প্রণব শব্দ শুনিতে পাওয়া যায়। এবং শিষ্য গণ এখনও তাহার নিকট হইতে আদেশ লাভ করিয়া থাকেন।

এই মহাত্মর নিকটে কৃষ্ণা বিভাগের ও নিজাম রাজ্যের অনেক লোক অগণ্য উপকার লাভ করিয়াছে। সাধো! তোমার জন্ম ও জীবন ধন্য!!।

मूत हुए। योगी राज ने उसी समय हाथ दबाकर थोड़ा सा जल निकालवाइर किया, स्वाद लेने पर अनुभव हुआ कि वह जल समुद्र का है।

एक समय एक विधवा बनीयाइन ने शोर मचायी कि मानिक्य प्रभु से उसका बिवाह होगा। विधवा का जितना वित्तविभव था समस्त प्रभु के आश्रम में भेजा गया, अनन्तर विधवा स्वयं आ पहुंची। वह आतेही प्रभुजी उस को संग ले आश्रम के भीतर पैठें वो क्षण विलम्ब में विवाह का कपड़े पहरे हुए दोनोंही बाहर निकल आये। उसी दिन से विधवा किसी भिन्न स्थान में रहने वो योगाभ्यास करने लगी।

एक स्त्री एक दिन आकर उन से पुत्र होने का वर मांगी। प्रभु जी ने पुछा तु कितने लड़के मांगती है? उसने बोला कि जब तक मैं जीउंगी तब तक प्रति वर्ष एक २ पुत्र हो। महात्मा तथास्तु कह कर उस को विदाय किये। कितने से पुत्र होने के अनन्तर वह एक दिन आकर बोली कि हे प्रभो! अब अवस्था मेरी वृद्ध होती जाती है, प्रसव करने का क्लेश फिर मुझ से सहा नहीं जाता है। अब ऐसा कुछ वर दीजिये कि लड़का होना बंध हो जाय। इस पर साधुजी बेर २ माना किये किन्तु वह न मानी, अन्त में 'अभीष्ट सिद्धिरस्तु' इतना कहकर महात्मा ने उसको विदाय किया किन्तु हा! स्त्री गांव के भीतर पैठने के पहलेही समाचार पाइ कि पति उस का परलोक को सिधारा।

१० । १५ वर्ष गत हुआ कि मानिक्य प्रभुजीने संसार से अवसर लिया, भूमि के नीचे एक मंदिर बनवाकर उस के भीतर समाधि किया वो शीघ्रही द्वार बंध करने की आज्ञा दी। इस भांति समाधि मंदिर उन के और भी दो तीन स्थान में हैं। लोग सब अब तक वहां पूजा चढ़ाते हैं वो स्तुति पढ़ते हैं। ऐसी संवाद है कि अबली वहां प्रणव शब्द सुनी जाती है औ शिष्य गण को अब तक आदेश वाणी मिलती है।

कृष्णा विभागके वो निजाम राज्य के बहुतेरे लोग इन महात्मा से अगण्य उपकार पाये। साधुजी! अहो! धन्य तेरा जन्म वो धन्य तेरा शरीर धारण!!

প্রাপ্ত।

(নাস্তিক ভ্রান্তি নিবারিণী, বৈদিক সদ্ধর্ম্ম সভা)।

বেদই সমগ্র ধর্ম্ম শাস্ত্রের মূল ও প্রধান। ইহা অনাদি ও সনাতন। বেদ মন্ত্র ও ব্রাহ্মণ এই দুই ভাগে বিভক্ত। সর্ব্বভূতে বিদ্যমান পরব্রহ্মের অপার মহিমা মন্ত্র ভাগে পরিকীর্ত্তিত ও কর্ম্ম, উপাসনা ও জ্ঞান এই তিন কাণ্ড ব্যাখ্যাত হইয়াছে। ভগবদ্বাক্য যথা।

"ব্রহ্মার্পণং ব্রহ্ম হবি ব্রহ্মাগ্নৌ ব্রহ্মণাহুতং"
ব্রহ্মৈব তেন গন্তব্যং ব্রহ্ম কর্ম্ম সমাধিনা॥

ব্রাহ্মণ ভাগে মন্ত্র সমূহের বিধি ও শব্দের উৎপত্তি লিখিত হইয়াছে। এই ব্রাহ্মণ ভাগও অনাদি ও অপৌরুষেয়। প্রতি মন্বন্তরে ইহাও গুরু শিষ্য পরম্পরায় লব্ধ হয় এজন্য এতাবৎ সমস্তই শ্রুতি। রাবণ, উবট, মহীধর ও সায়ন আদি আচার্য্য গণ ইহার উত্তম ব্যাখ্যা করিয়াছেন। কিন্তু শত পথ ব্রাহ্মণ ও মহীধর ভাষ্য দেখিলে বোধ হয় যেন ২৩শ অধ্যায়ের ১৮ শ মন্ত্র হইতে ৩১ শ মন্ত্র পর্য্যন্ত ব্রাহ্মণের বিপরীতার্থ লিখিত আছে। অনুমান হয় মহীধর ভাষ্য পরিবর্ত্তন করিয়া অন্য কেহ ইহাতে অযথা অর্থ প্রবেশ করাইয়া দিয়াছে। এই সুযোগে অনেকে ভাষ্যকার দিগকে নিন্দা করিতে আরম্ভ করিয়াছেন এবং ব্রাহ্মণ ভাগে গুরু শিষ্য সংবাদ জন্য ঋষি দিগের নাম থাকায় উহা আধুনিক বলিয়া প্রতিপন্ন করিতে চাহিতেছেন। মানব সুলভ সামান্য বুদ্ধি দ্বারা ঐশী বাণীকে তাচ্ছিল্য করতঃ বিপরীত অর্থ করিতে প্রতিষ্ঠা মনে করিতেছেন। এই শ্রুতি বিরুদ্ধ অসত্যার্থ পাঠে কত লোক তীর্থ স্নান, অবতার বাদ, দেবার্চ্চনা, স্বর্গ নরক, শ্রাদ্ধ, তর্পণাদির বিধি ও বিশ্বাস পরিত্যাগ করিতেছে, শূদ্রগণ বেদীতে উপবিষ্ট হইয়া এই অসত্যার্থ প্রকাশ পূর্ব্বক ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্য নামক দ্বিজ বর্গকে উপদেশ দান করিতেছে, অনার্য্যাচারী গণ আর্য্যত্বাভিমানী হইতেছে। এই রূপে ধর্ম্ম ভানুকে অধর্ম্ম রাহু গ্রস্ত দেখিয়া এই সভা প্রতিষ্ঠিত হইয়াছে। এই সভা হইতে বৈদিক ভাষ্য প্রকাশিত হইবে। ইহাতে ব্রাহ্মণ বিরুদ্ধ কথা ও কোন

प्रसिद्ध पत्र।

(नास्तिक भ्रान्ति निवारिणी, वैदिक सद्धर्म्म सभा)

प्रगट हो कि सब शास्त्रों में मुख्य वेद है जो कि अनादि ईश्वर का वाक्य होने से अनादि और सनातन है। उसके दो भाग हैं, पहिला मंत्र, दूसरा ब्राह्मण। मंत्रभाग में सबपदार्थों के मध्य उस सर्व्व व्यापी ब्रह्म की महिमा का वर्णन किया है इस मंत्रभाग में कर्म्म, उपासना, ज्ञान नाम त्रिकांड को दरसाया है जिस का सार अग्रोक्त भगवद्वाक्य है, ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतं ब्रह्मैवतेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म्म समाधिना॥१॥ दूसरे ब्राह्मण भाग में उन मंत्रों की विधि और शब्दों की उत्पत्ति लिखी है, यह ब्राह्मण भाग भी अनादि और सनातन है। प्रत्येक मन्वन्तर में गुरु शिष्य द्वारा लब्ध होता है, इसी कारण उसको श्रुति कहते हैं, रावण, उवट, महीधर और सायन आदि आचार्यों ने उनकी बहुत अच्छी व्याख्या की है परन्तु शत पथ ब्राह्मण और महीधर भाष्य के देखने से विदित हुआ कि अध्याय २३ में १८ वें मंत्र से लेकर ३१ वें मंत्र तक ब्राह्मण के विपरीत अर्थ लिखा है बुद्धि विचार से निश्चय हुआ कि यह अर्थ महीधरजी का नहीं है, किसी ने बदल दिया है, प्राकृत पुरुषों ने अवसर पाकर पूर्व भाष्यों को निन्दा करना आरम्भ किया किन्तु गुरु शिष्य संवाद के कारण ब्राह्मण में जो ऋषियों के नाम युक्त हो गये हैं उनको आधुनिक ठहराया और मानुष्य बुद्धि से दैव अर्थ का तिरस्कार कर विपरीत अर्थ का लिखना अपनी प्रतिष्ठा का कारण समझा। उस श्रुतिसे विरुद्ध मिथ्या अर्थ को देख कर बहुतों मनुष्यों ने तीर्थ स्नान, राम कृष्णादि अवतारों में ईश्वर भावना, देवता स्वर्ग नरक का मानना और तर्पण श्राद्ध आदि को छोड़ दिया और असंस्कारी शूद्र जन चौकियों पर बैठ कर वही मिथ्या अर्थ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य नाम द्विजों को उपदेश करने लगे और अनार्य्य होकर अपने को आर्य्य मानने लगे जब धर्म्म रूप सूर्य्य को अधर्म्म रूप राहु से ग्रसित देखा तब यह (नास्तिक भ्रान्ति निवारिणी वैदिक सद्धर्म्म सभा) नियत की, यह भाष्य ब्राह्मण से विरुद्ध नहीं है और इसमे किसी प्रकार की शंका का सम्भव नहीं है, वेद का नाम ब्रह्म है क्योंकि वेद में केवल ईश्वर का ही निरूपण है परन्तु प्राकृत पुरुषों ने मंत्रों के मध्य

প্রকার আশঙ্কার সম্ভাবনা থাকিবে না, বেদের একটী নামান্তর ব্রহ্ম, কেনন ইহাতে ব্রহ্ম তত্ত্ব ভিন্ন অন্য কিছুই নাই কিন্তু মন্ত্র মধ্যে যেখানে ২ বায়ু, অগ্নি আদি সম্বোধন বাক্য আছে সেই ২ স্থলে কেহ ২ সেনাপতি, সভাপতি, মহারাজ আদি অর্থ করিয়া দেবগণকে মনুষ্য মূর্ত্তি গঠন করিয়াছে। যদি ইদৃশ অর্থই প্রসিদ্ধ হইত, তাহা হইলে বেদের নাম ব্রহ্ম হইত না। আমাদের এই ভাষ্যে বিনিয়োগ, কাত্যায়ন সূত্রভাষ্য ও অন্বয় থাকিবে, অন্বয়ের প্রথমে সম্বোধন, পরিশেষে ক্রিয়া ও মধ্য স্থলে কারক লিখিত হইবে। প্রত্যেক শব্দের সঙ্গে ২ ব্রাহ্মণ, ভগবদ্গীতা ও ব্যাকরণাদি প্রমাণানুমোদিত তাহার অর্থ সন্নিবেশিত থাকিবে। একদা মাত্র পাঠে সমস্ত সংশয়ের নিরাকরণ ও জ্ঞানের পরিবর্দ্ধন হইবে। এক্ষণে আর্য্য সজ্জন সমূহের প্রতি নিবেদন এই যে যাঁহারা এতৎ সভার সভ্য হইতে চাহেন, তাঁহারা সম্পাদককে নিজ ২ নাম ধামাদি সহ পত্র লিখিবেন। মাসিক পত্র গ্রহণ, তাহার বার্ষিক মূল্য প্রেরণ ও গ্রাহক সংখ্যা বৃদ্ধি করণ ভিন্ন তাঁহাকে অন্য কোন ব্যয় ভারাদি বহন করিতে হইবেনা। এতদ্বিষয় সম্বন্ধে সভ্য গণ যে অভিপ্রায় প্রকাশ করিবেন ও মূল্যাদি পাঠাইবেন, ও সভ্যশ্রেণী ভুক্ত মহাত্মা গণের নাম পত্রে প্রকাশিত হইবে। গ্রাহক সংখ্যা ২০০ হইলেই পত্র প্রকাশারম্ভ হইবে। আশা করি সজ্জন মাত্রেই এই অনুষ্ঠান পাঠ করিবেন, পড়িয়া অন্যকে শুনাইবেন ও যাহাতে সভ্য সংখ্যার বৃদ্ধি তাহার যত্ন করিবেন। ডাককর সহ এতৎ পত্রের বার্ষিক অগ্রিম মূল্য ৬।৵০ মাত্র। আট পেজী ৮০ পৃষ্ঠা ইহার মাসিক কলেবর হইবে। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয় ও বৈশ্য দ্বিজাতি গণ পাঠার্থ এই ভাষ্য ক্রয় করিবেন এবং শূদ্র গণ স্ব ২ গুরু পুরোহিতাদির জন্য লইতে পারেন।

সত্য প্রকাশ যন্ত্রালয়। শ্রীজ্বালা প্রসাদ ভার্গব শর্ম্মা॥
কাছারী ঘাট, আগরা। কার্য্য সম্পাদক।

শুভ সমাচার।

জেলা ফরিদ পুরের অন্তর্গত ভাঙ্গাতে একটী "সনাতন ধর্ম্ম রক্ষিণী সভা" সংস্থাপিত হইয়াছে।

जहां वायु अग्नि आदि का संबोधन आया है वहां उन संबोधन शब्दों का अर्थ सेनापति, सभापति, महाराज आदि करके उस देव अर्थ को मानुषी कर दिया है, यदि उस अर्थ को सत्य मानें तो वेद का नाम ब्रह्म नहीं हो सक्ता। इस सद्भाष्य में विनियोग, कात्यायन सूत्र भाष्य सहित, और फिरि अन्वय है। अन्वय में प्रथम संबोधन अंत में क्रिया और मध्य में शेष कारक हैं। प्रत्येक शब्द के आगे उसका अर्थ ब्राह्मण भगवद्गीता और व्याकरण के प्रमाण सहित लिखा है। इस प्रकार मंत्र का संस्कृत भाष्य पूरा होने पर भाषा अर्थ भी लिख दिया है। इस भाष्य के देखने से सद् ज्ञान की प्राप्ति और सब संशयों की निवृत्ति होगी, इस लिये आर्य्य जनों को सूचना के अर्थ यह प्रसिद्ध पत्र भेजा जाता है जिन महाशयों को इस वैदिक सद्धर्म सभा का मेम्बर होना अभीष्ट होवे वे अपना पत्र सक्रेटरी सभा के नाम भेजें कि उनका नाम फहरिस्त में लिखा जावे। मेम्बर को मासिक पत्र का लेना और वार्षिक मौल्य भेजना और अन्य ग्राहकों का उद्यत करना अवश्य कर्त्तव्य होगा इसके सिवाय कुछ देना नहीं पड़ेगा और वे महाशय इस विषय में जो अपनी सम्मति देंगे वह मासिक पत्र के टैटिल पर छपा करेंगी और मेम्बरों के नाम भी तीसरे महीने प्रसिद्ध हुआ करैंगे। जब दो सौ दरखास्त आजावैंगी तब इसका छपना आरंभ होगा। सज्जन पुरुषों से आशा है कि वे इस प्रसिद्ध पत्र को पढैं और मित्र वर्गों को सुनावैं और यथा संभव विशेष दरखास्त भिजावें। जो महाशय ग्राहकों के उद्यत करने में श्रम करैंगे वह उनकी उन्नति का कारण होगा- इस मासिक पत्र की न्यौछावर वार्षिक महसूल सहित ६।৵/ होगी और यह मासिक ८० पृष्ठ वाला विलायती कागज़ पर छपैगा. जो यज्ञोपवीत धारी द्विज अर्थात ब्राह्मण क्षत्री और वैश्य हैं वे इस भाष्य के लेने में अधिकारी हैं, जिन के पास यज्ञोपवीत नहीं वे अपने गुरु वा पुरोहित के लिये ले सक्ते हैं।

ज्वाला प्रसाद भार्गव शर्म्मा। कार्य्य संपादक।
सत्य प्रकाश यंत्रालय, आगरा कचहरी घाट।

शुभ समाचार

फरीद पूर जिले के अन्तर्गत भाङ्गा में एक हिन्दू धर्म्म रक्षिणी सभा स्थापित किई गई है। तत्रस्थ

তথাকার মান্যবর মুন্সেফ দ্বয়, উকিল ও অন্যান্য কৃতবিদ্য মহাত্মা গণের ইহাতে বিশেষ যত্ন ও উৎসাহ আছে। সভার প্রতি মাসিক অধিবেশনে অনেক গুলি পণ্ডিত ও সুশিক্ষিত পুরুষ সভায় আর্য্য শাস্ত্রীয় উপদেশ দান ও বক্তৃতাদি করিয়া থাকেন। ভগবৎ কৃপায় এতৎ সভা দীর্ঘজীবন লাভ করিয়া জন সমাজের মলিন প্রকৃতির সংশোধন ও স্বধর্ম্মের বিমল প্রতিভা বিস্তার করিতে থাকুন ইহাই আমাদের প্রার্থনীয়।

২ রা ও ৩রা ভাদ্র, বহরম্পুর সুনীতি সঞ্চারিণী সভার দ্বিতীয় বার্ষিক উৎসব সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। উৎসব কালে পণ্ডিত দিগের বিদায়, পণ্ডিত গণ কর্ত্তৃক বক্তৃতা ও সভ্যগণ কর্ত্তৃক সুললিত রচনাদি পঠিত হইয়াছিল। এতদুপলক্ষে ভা, আ, ধ, প্র, সভার সুযোগ্য ধর্ম্মাচার্য্য ও কার্য্য সম্পাদক মহাশয়ও উপস্থিত ছিলেন। তাঁহাদের উত্তেজনা ও বিজ্ঞানপূর্ণ সারগর্ভ বক্তৃতা সমূহ সভাস্থ শত ২ শ্রোতাকে বিশেষ উপকৃত ও আনন্দিত করিয়াছিল। সুনীতি সঞ্চারিণী সভা সমূহ সজ্জন গণের সহানুভূতি লাভ করিয়া উন্নতি মার্গে অগ্রসর হইতেছে দেখিয়া আমরা পরম সুখী আছি।

ভা, আ, ধ, প্র, সভার সম্পাদক মহাশয়, গত মাসের ধর্ম্ম প্রচারার্থে পর্য্যটন কালে মুরশিদাবাদ, বহরম্পুর আজিম গঞ্জ, বাঁকীপুর আদির কার্য্য সমাপন পূর্ব্বক গুপ্তিপাড়ায় গমন করিয়াছিলেন। তথাকার ধর্ম্ম সভায় তৎ কর্ত্তৃক কয়েক দিন বক্তৃতা ও শ্রীপণ্ডিত অম্বিকা চরণ বিদ্যারত্ন মহাশয় কর্ত্তৃক শ্রীমদ্ভাগবৎ ব্যাখ্যাত হইয়াছিল।

গোবরডাঙ্গা সু, সং সভা কর্ত্তৃক আহূত হইয়া উক্ত সম্পাদক মহাশয় গুপ্তিপাড়া হইতে তথায় গমন করেন। তত্রস্থ সভার সুযোগ্য সম্পাদক ও সভ্যগণ এতন্মহোদয়কে নানা মঙ্গলাচরণ সহ সম্বর্দ্ধনা পূর্ব্বক গ্রহণ করিয়াছিলেন। তিনি গোবর ডাঙ্গা, ইছাপুর, গৈপুর, খাঁটুরা আদি স্থান সমূহে ক্রমান্বয়ে ছয়টী ভাব ও উদ্দীপনা পূর্ণ সনাতন ধর্ম্ম সম্বন্ধী বক্তৃতা করিয়া তথাকার সর্ব্ব সাধারণ

माननीय दो मुनसिफ, वकील और कई एक विद्वान महात्मा लोगों का इस विषय में अधिक यत्न औ उत्साह है। सभा के प्रति मासिक अधिवेशन में बहुत से पण्डित और सुशिक्षित पुरुष सभा में आर्य्य शास्त्रीय उपदेश और वक्तृतादि करते हैं। भगवत् कृपा से यह सभा चिरस्थायि होकर समस्त जनों की मलिन प्रकृति को निर्म्मल और स्वधर्म्म की विमल प्रतिमा का विस्तार करती रहे यह हमलोगोंकी प्रार्थना है।

बहरम्पूर सुनीति सञ्चारिणी सभा का द्वितीय वार्षिक उत्सव उत्तम रीति से सम्पन्न हुआ है। उत्सव के समय में सत्कार पूर्ब्बक पण्डित लोगों को बिदा किया। पण्डित लोगों ने वक्तृतादिई और सभासदों ने सुललित रचना आदि को पढ़ा। इस उत्सव के समय भा: आ: ध: प्र: सभा के अति योग्य धर्म्माचार्य्य और कार्य्य सम्पादक महाशय भी उपस्थित थे। इन लोगों का उत्साह से और विज्ञान से पूर्ण वक्तृता समूहने, जो कि परम सार गर्भित था, सभास्थित समस्त श्रोता जनों को विशेष उपकृत वो आनन्दित किया। सुनीति सञ्चारिणी सभा समूह सज्जन लोगों की सहानुभूति को पाकर उन्नति मार्गमें अग्रसर होती यह देखकर हम लोग परम सुखी हो रहे हैं।

भा: आ: ध: प्र: सभा के सम्पादक महाशय धर्म्म प्रचार के निमित्त गत दो मास में पर्य्यटन के समय मुर्शिदाबाद, बहरमपूर, आजिमगंज, बांकीपूर आदि स्थानों में कार्य्य को समाप्त करते हुए गुप्तिपाड़ा में गये। वहां की धर्म्म सभा में उनका कई एक वक्तृता हुई थी और श्री पण्डित अम्बिका चरण विद्यारत्न महाशय ने श्रीमद्भागवत व्याख्यान किया था।

गोबरडांगा सु: सं: सभा से बुलाये हुए उक्त सम्पादक महाशय गुप्तिपाडा से वहां सिधारे। तत्रस्थ सभा के सुयोग्य सम्पादक और सभासद लोगों ने इन महोदय को नाना मङ्गलाचरण के सहित सम्माननापूर्व्वक स्वीकार किया। उन्होंने गोबरडांगा, इच्छापूर, गईपूर, खांटुरा आदि स्थानों में क्रम से भाव और उद्दीपना से पूर्ण सनातन

লোককে অত্যন্ত উৎসাহিত করিয়াছিলেন এবং তথায় পুনর্গমনের জন্য তদ্দেশ বাসী বর্গ কর্ত্তৃক নিতান্ত অনুরুদ্ধ হইয়াছেন।

গোবরডাঙ্গা হইতে তিনি ৺গয়াধামে আগমন করেন, তথায়ও ক্রমান্বয়ে হিন্দী ভাষায় ৫।৬ টী বক্তৃতা হইয়াছিল। বক্তৃতাদি শ্রবণে হিন্দু শ্রোতা গণ বিশেষ রূপ উপকৃত হইয়াছেন। শুনিলাম ব্রাহ্মগণ কিছু হৃদয়ে ব্যথা পাইয়াছেন। নিরপেক্ষ ভাবে শ্রবণ করিলে বোধ হয় ব্রাহ্ম গণও হিন্দু দিগের ন্যায় অথবা অপেক্ষাকৃত অধিক উপকৃত হইতেন।

বালুচরের ধর্ম্মাত্মা শ্রীবাবু থান সিংহ বয়েদ মহাশয় ভা, আ, ধ, প্র, সভার কার্য্যার্থ এককালীন ২০৲ টাকা দান করিয়াছেন। ধন্য

স্থানে ২ যে সনাতন ধর্ম্ম সভা সকল স্থাপিত হইতেছে, উপযুক্ত আচার্য্যের অভাবে অনেক সভার উন্নতি হইতেছেনা। এই জন্য কতক গুলি মেধাবী ও সাধু প্রকৃতির লোক ৺কাশীধামে থাকিয়া আচার্য্যোচিত আর্য্য শাস্ত্র শিক্ষা লাভ করেন, ইহা ভা, আ, ধ, প্র, সভার অভিপ্রায়। এই অভিপ্রায় সাধনার্থ অর্থাৎ যাঁহারা শিক্ষা করিবেন, তাঁহাদের ভরণ পোষণার্থ অর্থের আবশ্যক। সভা সমূহ ও ধর্ম্মাত্মা গণ এ বিষয়ে প্রণিধান করেন, ইহাই প্রার্থনীয়।

আমরা কৃতজ্ঞতা সহ প্রকাশ করিতেছি যে গয়ার ডেঃ মাজিষ্ট্রেট ও কলেকটর ধর্ম্মাত্মা শ্রীমান্ বাবু রাজ কিশোর নারায়ণ মহোদয় এতৎ কার্য্যার্থ মাসিক ১০৲ দশ টাকা দান স্বীকার করিয়াছেন।

আমরা আহ্লাদের সহিত প্রকাশ করিতেছি যে গতবারে সুনীতি সঞ্চারিণী সভার যে সংখ্যা প্রদর্শিত হইয়াছিল তৎপরে ইছাপুর, মাধুবাণী ও টাকী সৈয়দপুর, এই তিনটী স্থানে আর তিনটী সভা সংস্থাপিত হইয়াছে। সু. সং, সভা গুলির সমবেত যত্নে "সুনীতি" নাম্নী একখানি পাক্ষিক পত্রিকা বারাণসী ধর্ম্মামৃত যন্ত্রালয়ে মুদ্রিত হইয়া প্রকাশিত হইতে আরম্ভ হইয়াছে। সভা ও পত্রিকার উন্নতি ভগবৎ সমীপে প্রার্থনীয়।

धर्म्म को कः बक्तृता द्वारा वहां के सकल साधारण लोगों को अत्यन्त उत्साहित किया। और वहां फिर जाने के निमित्त उस देश वासी वर्ग ने अत्यन्त अनुरुद्ध हुए।

गोवरडांगा से उन्हों ने प्रस्थान कर श्रीगयाधाम में आये वो वहां भी क्रम से ५।६ बक्तृता दी। बक्तृता आदि के श्रवण से हिन्दु श्रोता जनों ने परम उपकृत हुए। सुना जाता है कि केवल ब्राह्म समाजी लोग हृदय में कुछ क्लेश अनुभव किये। यदि ब्राह्म गण उदार चित्तता से श्रवण करते तो वे हिन्दुओं के समान अथवा उन्हों से भी अधिक उपकार पाते।

बालुचर के धर्म्मात्मा श्रीबाबू थानसिंह बैयेद महाशय ने भा: आ: ध: प्र: सभा के कार्य्यार्थ एकवारगी २०) रुपैये दान किया। धन्य हैं!

स्थान२ में जो सनातन धर्म्म सभा सब स्थापित होती जाती है, योग्य आचार्य्य के न रहने से अनेक सभा उन्नति नहीं होती है, इस से भा: आ: ध: प्र: सभा का अभिप्राय यह है कि कोएक बुद्धिमान वो साधु अन्त:करण के ब्राह्मण श्री काशी जी में रहकर आचार्य्य के योग्य आर्य्य शास्त्रादि में शिक्षा लाभ करें। इस अभिप्राय साधन के अर्थ अर्थात शिक्षार्थियों के भरण पोषणार्थ द्रव्य को विशेष आवश्यकता है। सभा समूह वो धर्म्मात्मा गण इस विषय पर दत्त चित्त हों यही प्रार्थना है।

हम कृतज्ञता के सहित यह प्रगट करते हैं कि गयाजी के डिपुटी मजिष्ट्रेट वो कलेक्टर धर्म्मात्मा श्रीमान बाबू राजकिशोर नारायण महाशय ने इस कार्य्य की सहायता के लिये मासिक १० दश रुपैये देना स्वीकार किया।

हम बड़े आनन्द से प्रगट करते हैं कि गत मास के पत्र में जो सुनीति सञ्चारिणी सभा की संख्या दी गयी थी, इसके अनन्तर इच्छापूर, माधुबणी, टाकी-सैदपूर, इन तीनों स्थान में तीन सभा स्थापित हुइ हैं। सु: सं: सभा समूह के प्रयत्न से "सुनीति" नाम एक पाक्षिक पत्रिका, बाराणसी धर्म्मामृत यंत्रालय में छपी हुइ प्रकाश होने लगी। भगवत के निकट सभा वो पत्रिका की उन्नति प्रार्थनीय है।
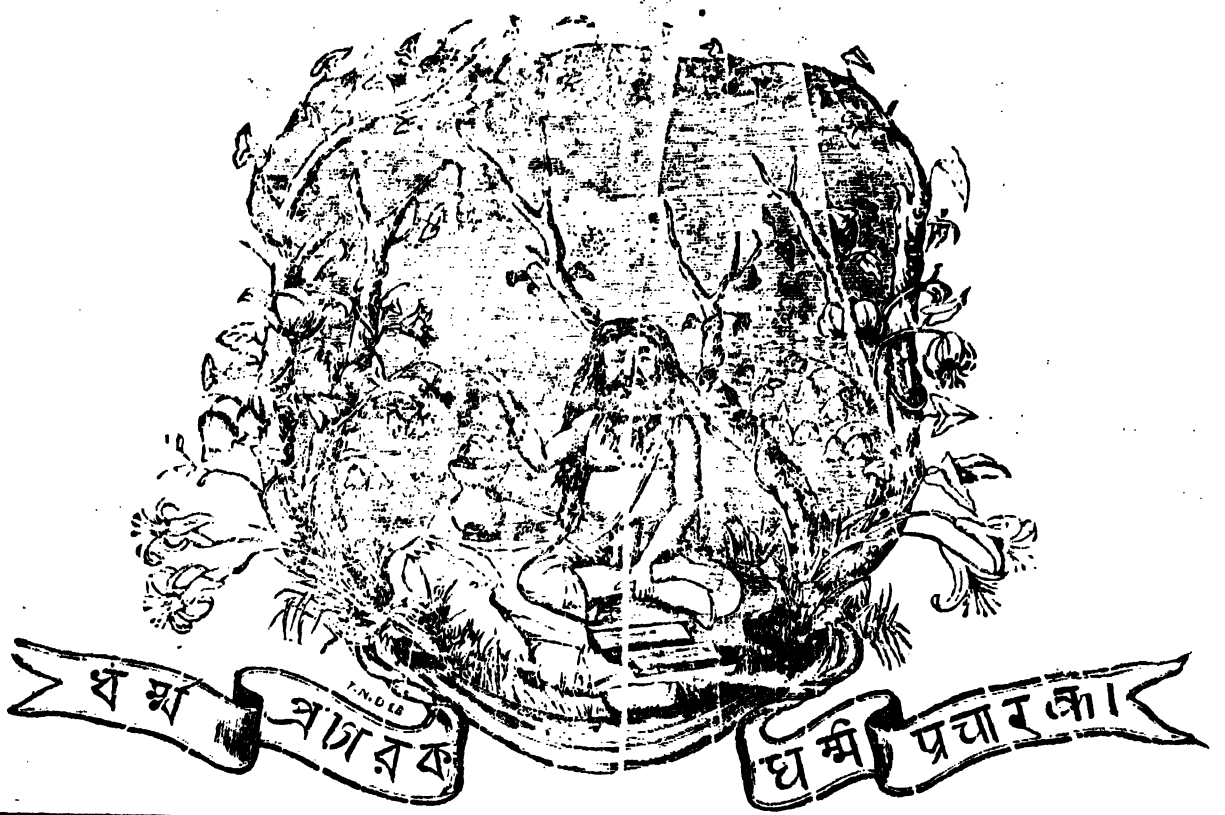
Printed at the Dharmamrita Press. Missir Pokhra, Benares.

" একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৬ষ্ঠ ভাগ। { শকাব্দা ১৮০৫।
৭ম সংখ্যা। { কার্ত্তিক—পূর্ণিমা।

সংসার।

বীজং সংসৃতি ভূমিজস্য তু তমো
দেহাত্মধীরঙ্কুরো
রাগঃপল্লবমস্তু কর্ম্মতু বপুঃ
স্কন্ধোঽসবঃশাখিকাঃ।
অগ্রানীন্দ্রিয় সংহতিশ্চ বিষয়াঃ
পুষ্পাণি দুঃখংফলং।
নানা কর্ম্ম সমুদ্ভবং বহুবিধং
ভোক্তাত্র জীবঃখগঃ ॥

" অহং, মম " ইত্যাকার অভিমানই সংসার রূপ মহা পাদপের বীজ স্বরূপ। এই বীজ হইতে পাঞ্চ ভৌতিক ক্ষণ বিধ্বংসী শরীরে আত্ম বুদ্ধি রূপ অঙ্কুরের উৎপত্তি হয়, তৎপরে রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ শব্দ এতৎ পঞ্চ প্রপঞ্চ বিষয়ে অনুরাগ রূপ পল্লবের স্বরূপ হইয়া থাকে। পূর্ব্ব জন্ম কৃত

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

६ष्ट भाग। { शकाब्दा १८०५।
७म संख्या { कार्त्तिक पुर्णिमा।

संसार।

बीजं संसृति भुमिजस्य तु तमो
देहात्मधीरंकुरो
रागः पल्लवमस्तु कर्म्म तु वपुः
स्कन्धोऽसवः शाखिकाः।
अग्रानीन्द्रिय संहतिश्च विषयाः
पुष्पाणि दुःखं फलं।
नाना कर्म्म समुद्भवं बहु विधं
भोक्तात्र जीवः खगः ॥

"मैं औ मेरा" इस भांति अभिमानही संसार रूप महा पादप का बीज है। इस बीज के क्षण भर में नाश होनेवाले पंच भूतमय शरीर में आत्म बुद्धि रूप अंकुर की उत्पत्ति होती है। इसके अनन्तर रूप, रस, गन्ध, स्पर्श औ शब्द इन पांचो झूठे विषय पर अनुराग रूप पल्लव निकल आता है।

হয়। দেহ ধারণ এই বিশাল বৃক্ষের স্কন্ধ ও প্রাণ, অপান, ব্যান, সমান, উদান বায়ুর সঞ্চারই ইহার শাখা বিস্তৃতি, চক্ষু, কর্ণ, নাসা, জিহ্বা ও ত্বক এতদ্বৃক্ষের পল্লবাগ্রভাগ, অসদ্বস্তুতে আসক্তি সমূহই ইহার কুসুম কদম্ব এবং শোক, রোগ, তাপ জন্ম মরণ আদি দুঃখই ইহার ফল। এই ফলের রসাস্বাদে লোলুপ হইয়া জীব রূপ পক্ষী এই পাদপকে আশ্রয় করিয়া রহিয়াছে।

নাস্ত্রৈর্ন শস্ত্রৈরনিলেন বহ্নিনা
ছেত্তুং ন শক্যো ন চ কোটি কর্ম্মভিঃ।
বিবেক বিজ্ঞানমহাসিনা বিনা
ধাতুঃ প্রসাদেন শীতেন মঞ্জুনা॥

এই সুশোভিত সংসার রূপ বিশাল বৃক্ষকে ছেদন করা অতীব কঠিন। ইহা অস্ত্র শস্ত্র দ্বারা ছিন্ন হয় না, বায়ুর প্রবল তাড়নায় ইহা উৎপাটিত হয় না, অগ্নি সংযোগে ইহা ভস্মীভূত হয় না, বাহুবীর্য্য বিক্রম ইহাকে নিপাতিত করিতে পারেনা, অথবা সহস্র ২ উপায় অবলম্বন করিলেও ইহার ক্ষয় করিতে পারা যায় না। বিধাতার প্রসাদ লব্ধ সুশাণিত বিবেক বিজ্ঞান রূপ প্রচণ্ড খড়্গেই কেবল ইহা ছিন্ন হইয়া থাকে।

শ্রুতি প্রমাণৈকমতে স্ব ধর্ম্ম
নিষ্ঠা তয়ৈবাত্ম বিশুদ্ধিরস্য।
বিশুদ্ধ বুদ্ধেঃ পরমাত্ম বেদনং
তেনৈব সংসার সমূল নাশঃ॥

শ্রুতি প্রমাণানুসারে নিজ বর্ণাশ্রমোচিত ধর্মে নিতান্ত নিষ্ঠাযুক্ত হইতে হয়, তাহাতে আত্মশুদ্ধি হইয়া থাকে। এই রূপ বিশুদ্ধ বুদ্ধি পুরুষের আত্ম জ্ঞানের উপলব্ধি হয়। আত্ম জ্ঞানোদয় মাত্রেই সংসার সমূলে বিনষ্ট হইয়া যায়।

মরণ।

সাধু গণ সর্ব্বদা মৃত্যুকে স্মরণ রাখিবার জন্য ভূয়ো ভূয়ঃ উপদেশ দিয়াছেন। মৃত্যুকে নিকটবর্ত্তী মনে হইলে পাপে মতি হয় না ও ভগবচ্চরণে ভক্তি ও রতি বৃদ্ধি হয়। কোন মহাত্মা বলিয়াছেন জীব জাগ্রত হও, শমন তোমার শিহরে বসিয়া রহিয়াছে। কেহবা বলিলেন, মৃত্যু তোমার কেশা-

को पुष्ट वा हृष्टि होती है। देह धारण करना इस विशाल वृक्ष का स्कन्ध है और प्राण, अपान, व्यान, समान वा उदान वायु को फैलनाही इस वृक्ष की शाखा विस्तार है। चक्षु, कर्ण नासिका, जिह्वा, त्वच् इसकी फुनगियां हैं, मिथ्या वस्तुओं में आसक्ति समूह ही इस वृक्ष के फूल हैं और शोक, रोग, ताप, जनम, मरण आदि दुःख इसके फल हैं। इन सब फलों के रसास्वाद के अभिलाष में जीव रूप पक्षी इस पादप को आश्रय कर रहे हैं।

नास्त्रै र्न शस्त्रै रनिलेन बह्निना
छेत्तुं न शक्यो नच कोटि कर्म्मभिः।
विवेक विज्ञान महासिना बिना
धातुः प्रसादेन शीतेन मञ्जुना॥

इस शोभायमान संसार रूपी विशाल वृक्ष को छेदन करना अत्यन्त कठिन है। यह अस्त्र वा शस्त्र से नहीं काटा जाता, प्रबल वायु के धक्के से नहीं उखड़ गिर पड़ता, अग्नि से भस्मीभूत नहीं होता, बाहु के बल वो विक्रम से यह नहीं गिराया जा सक्ता है अथवा सहस्र सहस्र उपाय करने पर भी इस को नष्ट नहीं किया जा सक्ता है। यह केवल विवेक विज्ञान रूपी प्रचण्ड चोखे खड्ग ही से, जो कि विधाता की कृपा से मिलनेवाला है, काटा जाता है।

श्रुति प्रमाणैकमते स्वधर्म्म-
निष्ठा तयैवात्म विशुद्धिरस्य।
विशुद्ध बुद्धेः परमात्म वेदनं
तेनैव संसार समूल नाशः॥

श्रुतियों के प्रमाण अनुसार निज वर्णाश्रम के योग्य धर्म्म में निपट निष्ठा युक्त होना चाहिये उस से आत्म शुद्धि होती है। इसी रीति विशुद्ध बुद्धि पुरुष को आत्म ज्ञान उपजता है। आत्म ज्ञान उपजतेही वे संसार मूल सहित विनष्ट हो जाता है।

मरण।

सर्व्वदा मृत्यु को स्मरण रखने के लिये साधु जन बारम्बार उपदेश कर चुके। मृत्यु को समीप आया हुआ समझने पर पाप की इच्छा घट जाती वो भगवत् के चरण में भक्ति वो रति बढ़ती है। किसी महात्मा ने कहा कि जीव सदैव जागृत रहो, काल तेरे शीरहान पर बैठा हुआ है। किसी ने कहा कि मृत्यु तेरे केश पकड़ कर खींच रहा है,

গমন করিতেছে, শীঘ্র তোমার সাধু অভীষ্ট সকল সাধন করিয়া লও। কোন মহাত্মা উচ্চৈঃস্বরে ডাকিয়া বলিলেন, জাগ সাবধান! তোমার পশ্চাতে ২ কাল গমন করিতেছে। কোন সাধক বলিলেন, তুমি মৃত্যু মুখে পতিত হইবার পূর্ব্বে বারম্বার জনন মরণ নিবারণের সদ্ব্যবস্থা কর। কোন সাধু এরূপও বলিয়াছেন ভুজঙ্গ যেমন ভেককে ভোজন করে মৃত্যু তোমাকে সেই রূপ গ্রাস করিতেছে, বৃথা বিষয়ের অভিমান করিওনা। কেহ বলেন, মৃত্যু তোমার সহজ, যেদিন তুমি জন্ম গ্রহণ করিয়াছ, মৃত্যু সেই দিন হইতেই তোমার সঙ্গে ২ ফিরিতেছে ও ক্রমশঃ তোমাকে গ্রাস করিতেছে, তুমি পরকালে সুখী হইবার উপাদান সংগ্রহ কর।

মহাত্মা গণের সার গর্ভ কথা গুলি বিশেষ প্রণিধান করিয়া দেখিলাম, যে মরণ আমার সম্মুখে ক্রীড়া করিতেছে, মরণ আমার মস্তকের উপরে বিরাজ করিতেছে, মরণ আমার পদের দিকেও দাঁড়াইয়া আছে, মরণ নিদ্রিতাবস্থায় আমার নিকট উপস্থিত রহিয়াছে, মরণ আমি জাগ্রত হইলেও আমার সঙ্গে ২ ফিরিতেছে। আমি তাকাইয়া দেখিলাম মরণ আমাকে চারিদিকে ঘেরিয়া ফেলিয়াছে। যে দিকে দেখি সেই দিকেই মরণ। আমি মরণের মধ্যে জীবিত রহিয়াছি! আমি মরণের সঙ্গেই সদা ক্রীড়া করিতেছি। মরণ আমার সহচর, মরণ আমাকে ক্ষণ জন্যও পরিত্যাগ করেনা।

একি! জগতে যে আর কিছুই দেখিতে পাইনা! যাহা দেখি তাহাই মরণ। আকাশে রাশি ২ মরণের তারা উঠিতেছে ও মিটিতেছে, মরণের সৌগন্ধ লইয়া ফুল গুলি একটী ২ করিয়া ফুটিতেছে, মরণের মরুত কাহাকেও কিছু না বলিয়া ঊর্দ্ধশ্বাসে ছুটিতেছে, মরণের ধ্বনি জগৎ জুড়িয়া গগণ ভেদ করিয়া ঊর্দ্ধে উঠিতেছে। জগৎ মরণের রাজ্য। ইহা মরণময়। মরণের পথ ভিন্ন অন্য কিছুই দেখিতে পাই না। আমি মরণ মালা গলায় পরিয়া মরণের তালে ২ মরণ নাচ নাচিতেছি। প্রতি তালে আমি নূতন ২ মরণ ভোগ করিতেছি। আমার জীবন মরণে পরিপূর্ণ। মরণ রাশির সমষ্টি লইয়াই আমার দীর্ঘ জীবন।

शीघ्र तेरी साधु कामना आदि को पूरी करली। किसी महात्मा ने ऊंचा स्वर से पुकार कर बोला, जाग सावधान रहा, तेरे पाछे२ काल जा रहा है। किसी साधक ने बोला कि मृत्यु के मुंह में गिरने के पहलेही ऐसी सद्व्यवस्था करलो जिसे कि जनन मरण से छुट्टी मिले। किसी साधु ने ऐसा भी कहा कि सर्प जैसा मेंडक को भोजन करता है, मृत्यु भी तुझे वैसेही ग्रास कर रहा है, विषय का वृथा अभिमान छोड़ देना। किसी किसी ने कहता है, कि मृत्यु तेरा सहजात है, जब तुने जन्म लिया, मृत्यु उसही दिन से तेरे संगही संग फिरता है वो क्रमे क्रम तुझे ग्रास कर रहा है, तु परलोक के सुख के अर्थ यथायोग्य द्रव्य संग्रह कर ले।

महात्मा जनों को सार गर्भित कथनों पर ध्यान देने से यह देख पड़ता है, जो मरण मेरे सम्मुख में क्रीड़ा कर रहा है, मरण मेरे पीछे भी विद्यमान है, मरण मेरे सिर पर विराज कर रहा है, मरण मेरे पैर के ओर भी खड़ा है, मेरी निद्रितावस्था में भी मेरे समीप उपस्थित है, मैं जाग्रत होने पर भी मरण मेरे संग संग फिरता है। मैं ने ताक कर देखा कि मरण मुझे घेर लिया है। जिधर देखूं उसी ओर मरण विराजमान है। मैं मरण के मध्य में जीवित रहा हूं! मैं ने मरणही के संग सदा क्रीड़ा की करती हूं। मरण मेरा सहचर है, मरण मुझको क्षन भर के लिये भी नहीं छोड़ता है।

अहा यह क्या है! जगत में और कुछही देख नही पड़ता है! जो कुछ देख पड़ता वह मरण छोड़ के और कुछ नही। आकाश मार्ग पर मरण के कितने राशि राशि नक्षत्र उठते हैं फिर मिट जाते हैं, मरण के सुगन्ध लेकर फूलों की गुच्छा एक एक करके फुल रही है, मरण का मरुत किसी को कुछ कहे बिना बड़े वेग से दौड़ रहा है, मरण की ध्वनि भर संसार में फैल कर गगण भेद करके ऊंची ओर बढ़ जाती है। जगत मरण का राज्य है। संसार मरण मय है। मरण के मार्ग बिना यहां और कुछ नहीं देख पड़ता है। मैं मरण के हार गले में पहन कर मरण के तान से मरण-नाच नाच रहा हूं। प्रति तान में मैं नवीन२ मरण भोग करता हूं। मेरा जीवित काल मरणों से परिपूर्ण है। मरण राशि को जोड़ कर मेरे दीर्घ जीवन की कल्पना है।

জীবন কি? প্রাণ কি? যতটুকু বর্ত্তমান তাহাই কি জীবন? তবে জীবন পলক মাত্র। যাহা অতীত, তাহাই মৃত। আমার শৈশব মরণ সাগরে ডুবিয়া গিয়াছে, আমার বাল্য কালের হাস্য, ক্রীড়া কৌতুক, সমস্তই মরণ রাশিতে মিশাইয়া গিয়াছে। আমার জন্মদিন হইতে এই পর্য্যন্ত সমস্ত বৎসর গুলি এমন কি এক একটী দিন, পল, মুহূর্ত্ত গুলি মরণ ময় হইয়া আমার জীবনের পৃষ্ঠভার হইয়াছে। আমার কত ভালবাসা, কত সুখ, কত স্নেহ, কত আশা, কত চিন্তা, কত হাসি, কত রোদন, কত কার্য্য, কত কথা হইয়াছিল, হা! সকলেরই মরণ হইয়াছে। মরণ ভিন্ন আমাতে আর কিছুই নাই আমি একটী জীবন্ত মরণ. একটী ২ করিয়া আমার কত গুলি দিন যে মরিয়া গেল, তাহা বলা যায় না। জীবনের মরণ আছে কিন্তু মরণ গুলির মরণ নাই। মরণ স্তূপের উপর নিত্য ২ কত মরণ সঞ্চিত হইতেছে তাহা বলা যায় না। এক নিমেষে যত মরণ হয়, সমস্ত একত্র করিলে রাখিবার স্থান পাওয়া যায় না। মরণের কলেবর ক্রমেই স্থূল হইতেছে; মরণকে আবার মরণ রাশি আলিঙ্গন করিতেছে। মরণের ঘাটে অবতরণ কর, অবগাহন কর, মরণের গভীর জলে ডুবিয়া যাও, দেখিতে পাইবে মরণের মধ্যে সমস্ত জীবিত রহিয়াছে। মরণেরমধ্যে যুগ যুগান্তরের শয্যা বিস্তৃত রহিয়াছে মরণের ভিতর যোগাসনে বসিয়া কপিল, কণাদ, কশ্যপ, কেন, গর্গ, গৌতম, চ্যবন, জাবালী, ব্যাস, বাল্মীকি, বশিষ্ট, ভৃগু, ভরদ্বাজ, মাণ্ডব্য, মণ্ডুক শমীক, শুকাদি তপস্যা করিতেছেন, মরণের মধ্যে শত ২ শব্দে তাঁহা দিগের বিশাল বিজয় পতাকা উড়িতেছে, মরণের মধ্যে বেদের প্রকৃতার্থ বাদ জ্বলন্ত অক্ষরে লিখিত রহিয়াছে।

মরণের মধ্যে ধর্ম্মাত্মা গণের আনন্দ স্রোত, ও ভক্ত বৃন্দের অশ্রুধারা বহিয়া যাইতেছে। মরণের মধ্যে রাম রাবণের যুদ্ধ, ভীষ্মার্জ্জুনের লোমহর্ষণ সংগ্রাম, ও কত যাগ যজ্ঞ হইতেছে। মরণের মধ্যে সীতা, সাবিত্রী, দময়ন্তীর বিলাপ ধ্বনি শুনিতে পাওয়া যাইতেছে। জীব! তুমি রোদন করিতেছ কেন? তোমার যাহা হারাইয়াছে, সমস্তই মরণের

जीवन क्या? प्राण क्या? जो टुकड़ा वर्त्तमान है वही क्या जीवन है? तब तो जीवन पलक भर है। जो कुछ गत हुआ वह मृत है। मेरा बालकपन मरण समुद्र में डूब गया, मेरी उस समय की हंसी, खेल, कौतुक आदि सब कुछ मरणों की ढेरी में मिल गये। मेरे जन्म दिन से लेकर आज तक के वर्ष समूह, वर्ष क्यों, एक एक दिन, पल, मुहूर्त सबही मरण मय हो कर मेरे जीवन के पीठ का बोझ बन गये हैं। मेरे कितने प्रेम, कितने सुख, कितनी स्नेह, कितनी आशा, कितनी चिन्ता, कितनी हंसी, कितनी रोदन, कितने कार्य्य, कितनी कथन की उत्पत्ति हुई थी, किन्तु हा! सब किसी का मरण हुआ। मरण बिना मेरा कुछही नहीं है। मैं एक जीता हुआ मरण हूं। एक २ करके गोनती में जो मेरे कितने दिन मर गये सो वर्णन के बाहर है। जीवन का मरण है परन्तु मरणों का मरण नहीं। मरणों की ढेरी पर दिनोंदिन कितने मरण आ जमते हैं, सो अकथनीय है। निमिष मात्र में जितने मरण होते हैं, समस्त एकट्ठे करने पर रखने का स्थान नहीं मिलता है। मरण का शरीर क्रमे क्रम स्थूल होता जाता है। मरण को फिर मरण समूह जा कर आलिंगन करते हैं। मरण के घाट पर उतरो, वहां स्नान करो, मरण के गंभीर जल में मग्न हो जाओ, देख लो वहां मरण के मध्य में समस्तही जीते विद्यमान है। मरण के मध्य में युग युगांतर की बिछावन पसारी हुई है। मरण के भीतर योगासन पर बैठके कपिल, कणाद, कश्यप, केन, कठ, गर्ग, गौतम, च्यवन, जाबाली, व्यास, बाल्मीकि, वशिष्ठ, भृगु, भरद्वाज, माण्डव्य, मंडुक, शमीक, शुक आदि तपस्या कर रहे हैं, मरण के मध्य में शत शत शब्द से आर्य्य महात्माओं की विशाल विजयपताका उड़ रही है, मरण के मध्य में वेदों की प्रकृत रूप अर्थ वाद उज्ज्वल अक्षरों से लिखी हुई है।

मरण के मध्य में धर्म्मात्माओं के आनन्द प्रवाह वो भक्त जनों की आंसुओं की धारा बही जाती है, मरण के मध्य में रावण से श्रीराम चन्द्रजी का युद्ध, भीष्मार्ज्जुन का लोम हर्षण संग्राम वो कितने याग यज्ञ हो रहे हैं, मरण के मध्य में सीता, सावित्री वो दमयन्ती की विलाप ध्वनि सुनने में आती है। जीव! तुम रोते हो क्यों? जो कुछ

যে আমাদের পরম সখা। মরণ মধ্যে বাস করিয়া মরণে ভয় কেন? মরণের হাত ধরিয়া ধীরে ২ মরণের সঙ্গে ২ মরণে মগ্ন হইয়া যাও, অতীত সমস্ত তোমার প্রত্যক্ষ হইবে, বর্ত্তমান ও ভবিষ্যৎও ক্রমে মরণের গর্ভে প্রবেশ করিবে। মরণই নিত্য, মরণই সত্য, মরণই সমস্ত। জীব! মরণকে ভালবাস, মরণকে আলিঙ্গন কর। জীবিত থাকিতে ইচ্ছা করিওনা, কেননা থাকিতে পারিবেনা! জীবিত থাকিতে চাহিলেই মরিয়া যাইবে। মরিয়া যাও, আর মরিবে না।

দুর্ল্লভ কি।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের শেষ।)

"দুর্ল্লভং ত্রয়মেবৈতদ্দেবানুগ্রহহেতুকং
মনুষ্যত্বং মুমুক্ষুত্বং মহাপুরুষ সংশ্রয়ঃ" ॥

সুখের পরাকাষ্ঠা লাভ করিবার জন্য জীবের চিত্ত অনিবার্য্য বেগে ধাবিত। আমরা সাধারণতঃ বিষয়ের আস্বাদ করিয়া যাদৃশ সুখ অনুভব করিয়া থাকি তাহা প্রকৃত সুখ নহে। কেন না বিষয় সুখে সুখী হইয়াও আমরা দরিদ্র, পীড়িত, দণ্ডিত, বিপদ গ্রস্ত, ত্রস্ত জীবের অবস্থা দর্শনে, মনে ২ দুঃখানুভব করিয়া থাকি। দুঃখের অত্যন্তাভাবই পরম সুখ। যদি অন্যের দুঃখে দুঃখানুভব অথবা অবস্থা বৈগুণ্যে নিজেই শোক রোগ, তাপ, জরা, জন্ম মরণাদি জন্য দুঃখ ভোগ করিলাম, তবে আমার সুখ কোথায়! এই জন্য মহাত্মা গণ বৈষয়িক সুখকে সুখ বলিয়া গণনা করেন নাই। সর্ব্বথা দুঃখের অত্যন্তাভাব হইলেই পরম সুখের উদয় হইয়া থাকে। এই সুখেরই নাম শান্তি, ইহারই নাম মুক্তি। ইহাকেই জীব পরমার্থ বোধে সেবা করিয়া থাকে। এই পরমার্থ নিতান্ত প্রার্থনীয় হইলেও, প্রকৃত মনুষ্যত্ব লাভ না করিতে পারিলে তাহা সহজে কেহ প্রাপ্ত হয় না।

পূর্ব্বেই উক্ত হইয়াছে যে পশ্বাদি দেহ হইতে মনুষ্য দেহ লাভ করিতে হইলে প্রকৃতি পরিবর্ত্তন জন্য অতীব তীব্র চেষ্টা করিতে হয় কিন্তু পশু হইতে মনুষ্য হওয়া যত কঠিন, মনুষ্য হইয়া মনুষ্যত্ব [illegible] কঠিন। [illegible]

जाओ, मरण को डरो मत, मरण तो हमारे परम सखा है। मरण के मध्य में निवास करके मरण को क्यों डरते हो। मरण के हात पकड़े हुए मरण के संगे संग मरण में मग्न हो जावो। अतीत काल के समस्त ही तुम्हारे प्रत्यक्षीभूत होंगे। वर्त्तमान वो भविष्यत भी क्रमे क्रम मरण के गर्भ में प्रवेश करेंगे। मरणही नित्य है, मरणही सत्य है, जो कुछ है सो मरणही है। जीव मरण को प्रेम करो, मरण को आलिंगन करो। जीते रहने की इच्छा न करो, क्यों कि वह इच्छा सम्पूर्ण होने वाली नहीं। जीते रहने चाहो तो मर जाओगे, मर जाओ तो फिर न मरोगे।

दुर्ल्लभ पदार्थ क्या है।

(पूर्व्व का अवशेष)

"दुर्ल्लभं त्रयमेवैतद्देवानुग्रह हेतुकं।
मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महा पुरुष संश्रयः॥"

सुख की शेष सीमा तक प्राप्त होने के अर्थ मन अनिवार्य्य वेग से धावमान है। हम सब सर्व्वदा विषय रस को स्वाद ले ले कर जिस भांति सुख का अनुभव करते हैं वह प्रकृत सुख नहीं है। क्यों कि विषय सुख से सुखी बन कर भी दरिद्र, पीडित, दण्डित, विपद ग्रस्त, वो जीवों की भय प्राप्त अवस्था देख कर हम दुःखी होते हैं। दुःख का अत्यन्त अभाव होने हो से परम सुख उपजता है। यदि दुसरे के दुःख से दुःख अनुभव अथवा निज दुरवस्था आजाने पर शोक, रोग, ताप, जरा, जन्म, मरणादि वो किसी हेतु से हम दुःख भोग करना हो पड़ा तो फिर हमारा सुख कहां? इस लिये महात्मा जनोंने वैषयिक सुख को सुख करके न माना। सर्व्वथा दुःख का अत्यन्त अभाव होनेही पर परम सुख का उदय होता है। इसी सुख का नाम शान्ति, इसी का नाम मुक्ति है। परमार्थ मान कर जीवों ने इसही का सेवा की करते है। यह परमार्थ निपट प्रार्थनीय होने पर भी प्रकृत मनुष्यत्व लाभ किये बिना सहजे हो मिलनेवाली नहीं है।

पूर्व्व में कहा गया कि यदि पशु आदि देह से मनुष्य शरीर लाभ करना हो तो प्रकृति के परिवर्त्तन के निमित्त बड़ी तिव्र चेष्टा करना पड़ती है। किन्तु पशु से मनुष्य बनना याहश कठिन है, मनुष्य देह पाकर मनुष्यत्व लाभ करना [illegible] अधिक [illegible] है। [illegible]

দেবতা হওয়া যত কঠিন, মনুষ্য হইয়া মনুষ্যত্ব লাভ করা তদপেক্ষা আরও কঠিন। মনুষ্য দেহ ও তৎপ্রকৃতির একান্ত চিন্তন দ্বারা পশু প্রকৃতির পরিবর্ত্তন হইয়া মনুষ্য দেহ লাভের সম্ভাবনা আছে কিন্তু মনুষ্য হইয়া মনুষ্যের প্রকৃত প্রকৃতি লাভ করা অতীব দুঃসাধ্য। শুভ কার্য্যের অনুষ্ঠান দ্বারা মনুষ্য দেবত্ব পাইতে পারে, কিন্তু অনায়াসে প্রকৃত মনুষ্য হইতে পারে না। কেননা সমস্ত ভোগাশা বর্জ্জন করিতে না পারিলে মুক্তির দ্বার উদ্ঘাটিত হয় না। সকাম শুভকার্য্য সাধন দ্বারা মুক্তির পথ আরও দুর্গম হইয়া উঠে। দেব লোকে ঐশ্বর্য্য ভোগে মত্ত হইয়া ভোগাবসানে মর্ত্তলোকে আসিবার উপযুক্ত হইয়া পড়ে সুতরাং ধীমান পুরুষ কখনও দেবধাম কামনা করেন না। মনুষ্য দেহে প্রকৃত মনুষ্যত্ব লাভ করিতে পারিলেই জীব অনায়াসে মুক্ত পদ প্রাপ্ত হইয়া থাকে। ইন্দ্রিয় সকলের বেগ সম্বরণ, রিপু বর্গের বশীকরণ, অন্তঃকরণের বিশুদ্ধি সাধন, সর্ব্বভূতে সম দর্শন, অভিমানের পরিহারআদি মনুষ্যত্ব লাভের প্রধান উপাদান। এতাবৎ দেবানুগ্রহের অধীন অর্থাৎ (নিজ অহং বুদ্ধিযুক্ত মানবের) আয়ত্তাতীত বলিয়া নিতান্ত দুর্ল্লভ। এই মনুষ্যত্ব উপার্জ্জন কালে নানা বিঘ্ন বিড়ম্বনা আসিয়া উপস্থিত হয়, দৈবানুগ্রহ ভিন্ন তত্তাবৎ বিনষ্ট হয় না।

মনুষ্যত্ব লাভ করিলেও মুক্তির অভিলাষ সহজে অভ্যুদিত হয়না। বিষয় ভোগে ক্লেশানুভব ও বিষয়ানুরাগ নিবৃত্তিই পরম সুখের সামগ্রী ইহা যতদিন না উপলব্ধি হয়, তাবৎ জীব মহাজিতেন্দ্রিয় যোগীন্দ্র হইলেও মুক্তি লাভ করিতে পারে না। যোগে অণিমাদি অষ্ট সিদ্ধি লাভ করিয়া অহং মমেত্যাদি অভিমান বাড়িলেও বাড়িতে পারে, এজন্য অনেক যোগীও মুক্তি ভাজন হইতে পারেন না। বিষয় বিরাগ বা বাসনা ত্যাগই মুক্তির প্রধান উপায়। তিনিই মুমুক্ষু যিনি পার্থিব বাসনা একেবারে জলাঞ্জলি দিতে সমর্থ। সাধন বলে ঈশ্বরের শুভদৃষ্টিকে আকর্ষণ করিতে না পারিলে সহজে মুক্তির জন্য চিত্ত ধাবিত হয়না। মুক্তাকাঙ্ক্ষা ভগবৎ সাধনা সাপেক্ষ, এই জন্য ইহা পরম দুর্ল্লভ।

से देवता होना जैसा कठिन है, मनुष्य बन कर मनुष्यत्व लाभ करना उस बढ़ कर कठिन है। मनुष्य देह वो उसकी प्रकृति के एकान्त चिन्तन के द्वारा पशु प्रकृति के बदले मनुष्य देह मिलन की सम्भावना है, किन्तु मनुष्य होकर मनुष्य की प्रकृत प्रकृति लाभ करना अत्यन्त दुःख साध्य है। शुभ कार्य्य के अनुष्ठान के द्वारा मनुष्य को देवत्व मिल सक्ता है, किन्तु प्रकृत मनुष्य बनना अनायास नहीं है। क्योंकि समस्त भोग की आशा वर्जन किये बिना मुक्ति की दरवाजा खुली हुइ देख नहीं पड़ती है। सकाम शुभ कार्य्य साधन से मुक्ति मार्ग अधिक दुर्गम हो जाता है। देव लोक के ऐश्वर्य्य भोग से जीव प्रमत्त हो जाते वो भोग काल के अन्त ही फिर उनको मर्त्य धाम में आना पड़ता है। अतएव धीमान पुरुष देव धाम की कामना कभी नहीं करते हैं। मनुष्य शरीर में प्रकृत मनुष्य भाव प्राप्त होने हो से अनायास जीव को मुक्ति पद मिल सक्ता है। इन्द्रियों की गति को रोकना, रिपुवर्ग को वश करना, अन्तःकरण को निर्म्मलता साधन करना, सर्व्व भूत में समदर्श होना अभिमान की छोड़ना इत्यादि मनुष्यत्व प्राप्त होने के प्रधान उपादान है। देवताओं के अनुग्रह बिना ये सब नहीं मिलते हैं अर्थात निज (अहं बुद्धि युक्त मनुष्य के) सामर्थ्य के अतीत हैं, इसे नितान्त दुर्लभ है। इस मनुष्यत्व के अर्ज्जन काल में भाँति भाँति के विघ्न विड़म्बना आजाते. दैवानुग्रह बिना ये सब नहीं मिटते हैं।

मनुष्यत्व मिलने पर भी मुक्ति की कामना अनायास नहीं होती है। जब तक विषय भोग से क्लेश का अनुभव वो विषयानुराग की निवृत्ति ही परम सुख है बुझ न पड़ेगा, तावत पर्य्यन्त चाहे जीव महा जितेन्द्रिय योगीन्द्र क्यों न हो, मुक्ति नहीं पा सक्ता है। योग करके अणिमादि अष्ट सिद्धि मिलने पर अहं मम इत्यादि अभिमान चाहे बढ़ भी सक्ता है। इसे अनेक योगीयों भी मुक्ति भाजन नहीं बन सक्ते हैं। विषय विराग या वासना का त्याग ही को मुक्ति का प्रधान उपाय कर जानना। वेही मुमुक्षु हैं जोकि पार्थिव वासना को एकबारगी विसर्ज्जन कर सकें। साधना के बल से ईश्वर की शुभ दृष्टि यदि आकृष्ट नहो तो चित्त सहजे ही मुक्ति के निमित्त नहीं व्यग्र होता है। भग-

মনুষ্য মুমুক্ষু হইলেই যে মুক্তিপদ লাভ করিতে পারিবে তাহা নহে। মহাপুরুষ দিগের সহিত সদা সঙ্গ না হইলে মুক্তি পথ প্রদর্শন করিবে কে? ইহা স্বকপোল কল্পনায় লব্ধ হইতে পারে না। সৎ পুরুষ সহবাস জীবের সৌভাগ্য সাপেক্ষ। ইচ্ছা করিলেই সাধু দর্শন হয়না। সাধুগণ প্রায়ই নিভৃত স্থানে থাকেন, কখন দৃষ্টি গোচর হইলেও প্রচ্ছন্ন ভাব উদ্ভেদ করিয়া সহজে তাঁহাদিগকে চিনিয়া লওয়া যায়না। চিনিতে পারিলেও সহজে নিকটে রাখিতে চাহেন না, নিকটে বসিবার অধিকার পাইলেও তাঁহাদের নির্ম্মল হৃদয়ের নিগূঢ় তত্ত্ব আমরা উপলব্ধি করিতে পারি না।

"মহা পুরুষ সম্পর্কাৎ সংসারার্ণব লঙ্ঘনে।
যুক্তিঃ সংপ্রাপ্যতে রাম যথা নৌবির নাবিকাৎ॥"

ব্রহ্মর্ষি বশিষ্ট বলিয়াছিলেন যে হে রামচন্দ্র! যেমন নদী পারের জন্য নাবিকের নিকট নৌকা লইতে হয়, তদ্রূপ সংসারার্ণব উত্তীর্ণ হইবার জন্য মহাপুরুষ সংসর্গ করিয়া উপায় লাভ করিতে হয়। অতএব সজ্জন সঙ্গ নিতান্ত প্রয়োজনীয়, কেননা ইহাতে মুমুক্ষুর সাধু কামনা পূর্ণ হয়। সৎকার্য্যের অনুষ্ঠান করিলে যে ফলোদয় হয়, সজ্জনের সঙ্গ করিলে তদপেক্ষা অধিক ফল হইয়া থাকে। কেননা সৎ পুরুষের নিকট থাকিলে তাঁহার বিশুদ্ধ ও বলবতী প্রকৃতি স্ফুরিত হইয়া আমার মলিন ও দুর্ব্বল প্রকৃতিকে অভিভূত করে ও হৃদয়ে নিজ প্রতিকৃতি অঙ্কিত করিয়া দেয়। অতএব সাধু সঙ্গই সর্ব্বতোভাবে জীবের প্রার্থনীয়। যত কিছু দুর্লভ বলিয়া উক্ত হইয়াছে সৎসঙ্গ দ্বারা সমস্তই সুলভ হইয়া পড়ে।

চুরি করা পাপ কেন?

অন্যের দ্রব্য অপহরণ করা মহাপাপ ইহা জগতে চির বিঘোষিত। পর-পদার্থাপহারীকে জলন্ত নরকাগ্নিতে বিদগ্ধ হইতে হইবে ইহা সর্ব্ব সাধারণের চিরসংস্কার। যে অন্যের ধন তাহার অগোচরে বা বিনানুমতিতে গ্রহণ করে, যমরাজ তাহার প্রতি দয়া করেন না। চৌর্য্য বৃত্তি ভদ্র

हैं। इस लिये मुमुक्षुता परम दुर्लभ है।

मुमुक्षु होने हो से मनुष्य को मुक्ति नहीं मिलती है। सदा महापुरुषों के सत्संग बिना मुक्ति मार्ग को दिखावें कौन? निज कपोल कल्पना में यह मिलनेवाली नहीं है। सौभाग्य बिना जीवों को सत्पुरुषों का सत्संग नहीं होता है। जब चाहो तबहीं साधु का दर्शन नहीं मिलता है। साधु लोग प्रायः छिपे हुए स्थान में रहते हैं। भाग्य बस से यदि दर्शन भी मिले तो उनके अप्रगट भाव को अनायास समझ लेना अत्यन्त कठिन है। कोइ पहचाने भी तो उसको अपने समीप रहने भी नहीं देते, दें भी तो हम इतनी सामर्थ कहां जो उनके निर्म्मल हृदय का निगूढ़ तत्व को भली भांति समझ लें।

"महा पुरुष सम्पर्कात संसारार्णव लंघने।
युक्ति संप्राप्यते राम यथा नौरव नाविकात॥"

ब्रह्मर्षि वशिष्टजी ने बोला, कि हे रामचन्द्र! जैसे नदी के पार उतरने के लिये नाविक से नाव मिलती है, उसी रीत संसार रूप समुद्र उतरने के अर्थ महापुरुष के सत्संग से उत्तम प्रबन्ध होजाता है। अतएव सज्जनों से सत्संग करना अत्यन्त आवश्यकीय है, क्योंकि इस से मुक्ति चाहनेहारों की साधकामना पूर्ण हो जाती है। सतकार्य्य के अनुष्ठान करने पर जो फलोदय होता है, सज्जनों से संग करने पर उस से अधिक फल मिलता है। क्योंकि सत् पुरुषों के समीप रहने पर उन्हों की विशुद्ध वो बलवती प्रकृति ने असर करके मेरी मलिन वो दुर्ब्बल प्रकृति को अभीभूत कर डालती औ हृदय में निज स्वरूप को चित्र करदेती है। अतएव सज्जनों के सतसंग सब से परम दुर्लभ है। सतसंगही सर्ब्बथा जीवों का प्रार्थनीय है। पूर्ब्ब में जितनेही कुछ दुर्लभ कर वर्णन किये गये सत्संग के द्वारा सबही कुछ सुलभ हो जाते हैं।

चोरी करना क्यों पाप है।

संसार में चिर काल से यह प्रकाशित है कि पर द्रव्य अपहरण करना महा पाप है। पर पदार्थापहारी को प्रचण्ड नरकाग्नि में विदग्ध होना है, यह सर्ब्ब साधारण का चिर संस्कार है। जिसने दूसरे का द्रव्य स्वत्वाधिकारी के अगोचर में अथवा उन- की अनुमति बिना ग्रहण करता है यमराज उस पर

করি। সকলে মিলিয়া দল বদ্ধ হইয়া "চুরি করা পাপ" এই কথা বলিয়াছ বলিয়া চুরি করা পাপ বলিতে পারি না। পাপের বিচার ঈশ্বরের নিকট, মানবের সম্মুখে নাই। চুরি করা যদি ঈশ্বরের সম্মুখে অপরাধ বলিয়া স্থিরীকৃত হয়, তবে নিশ্চয়ই চোর নরক যাতনা ভোগ করিবে। হরি রামের একটী ঘড়ী চুরি করিয়াছিল, এখন হরি ও রাম উভয়েই পরলোক গমন করিয়াছে। মনে কর রাম ঈশ্বরের নিকট হরি তাহার ঘড়ী চুরি করিয়াছে বলিয়া অভিযোগ করিল। হরি স্বপক্ষ সমর্থনার্থ বলিল, স্বামিন্! আমি রামের ঘড়ী চুরি করি নাই। আমি জানি জগতের কোন দ্রব্য কাহারই নহে, সমস্তই তোমার, লোকে অজ্ঞানতা বশতঃ আমার ২ বলিয়া থাকে মাত্র। তোমার দ্রব্য চুরি করিব কিরূপে? তোমার দ্রব্য তোমার পৃথিবীতে রাখিয়া আসিয়াছি। রাম তোমার দ্রব্যকে তাহার নিজের বলিয়া আমার নামে অভিযোগ করিয়াছে। আমি যে ঘড়ীটী লইয়াছিলাম, তাহা তোমার, তোমার সমক্ষেই তাহা লইয়াছিলাম, লুকাইয়া লইনাই, কারণ তোমাকে লুকাইয়া লইবার উপায় নাই। অতএব আমি চোর নহি, রামই চোর, কেননা রাম তোমার দ্রব্যকে আপনার বলিয়াছে। রামই বন্ধন দশাগ্রস্ত হইল।

"কর্ত্তৃত্বাদ্যহঙ্কার সংকল্পোবন্ধঃ" ইতি শ্রুতিঃ।

"আমি এই কার্য্য করিতেছি, এই দ্রব্য আমার" ইত্যাকার অভিমানই বন্ধনের কারণ। ঈশ্বরের দ্রব্য চুরি হয় নাই সুতরাং ঈশ্বর হরিকে মুক্তি দান করিলেন। ঈশ্বরের দ্রব্য হরি আত্মসাৎ করে নাই তবে ঈশ্বরের বিচারে হরি দোষী প্রমাণীকৃত হইবে কেন? বড় বিষম সমস্যা আসিয়া পড়িল। চোর বর্গ ভাবিতেছে হয়তো তাহারা অব্যাহতি পাইল। যুক্তি বুদ্ধির অনুগত, সুতরাং বুদ্ধি পবিত্র ও নির্ম্মল না হইলে যুক্তিও সর্ব্বত্র প্রকৃত তত্ত্ব নিরূপণে সমর্থ হয় না। এই জন্য জ্ঞান ও বিজ্ঞানের শরণাগত হইয়া এক্ষণে প্রকৃত সিদ্ধান্ত স্থির করিতে প্রবৃত্ত হইব।

মনের বহু বিধ সূক্ষ্ম ২ শক্তি আছে। তন্মধ্যে সম্প্রকাশিকা, সঞ্চারিকা, সংগ্রাহিকা, ও সম্পোষিকা এই চতুর্ব্বিধ শক্তিই প্রধান। মনের যে শক্তি

कहने लगा कि चोरी करना पाप है, इसीसे चोरी को हम "पाप" नहीं कह सक्ते हैं। पाप का न्याय ईश्वर के समीप होता है, मनुष्य के सम्मुख नहीं। चोरी करना यदि ईश्वर के सम्मुख अपराध ठहरे तो चोर को अवश्यही नरक यातना भोगना होगा। हरि ने राम की एक जेब घड़ी चोरा लिया था। अब हरि वो राम दोनोंही परलोक को चले गये। मानो कि राम ईश्वर के समीप यह अभियोग किया कि हरि ने उसकी जेब घड़ी चोरा लिया। हरि ने अपने पक्ष पुष्ट रखने के लिये बोला, हे स्वामिन्! राम की घड़ी मैं ने न लिया। मैं भली भांति जानता हूं कि संसार के किसी द्रव्य का स्वामी कोइ नहीं है, जो कुछ है सो आपही का है। लोगों ने अज्ञानता से "हमारा" कहा करता है। आप के द्रव्य मैं कैसे चोराउंगा? आप के द्रव्य आपही की पृथ्वी पर रख छोड़ आया हूं। राम ने झुठे आप के द्रव्य को अपना मान मेरे नाम से अभियोग किया। मैं ने जो घड़ी ली थी, वह आप की है, आपही के साम्हने मैं ने लिया था, आप से छिपाया नहीं, क्योंकि आप से छिपावने का कोइ उपायही नहीं है। अतएव मैं चोर नहीं हूं, रामही चोर है, क्योंकि राम आप के जिस द्रव्य के स्वामी हैं, उसको अपना मान लिया। रामही ने बधन दशा को प्राप्त हुइ।

"कर्त्तृत्वाद्यहङ्कार संकल्पोबंधः" इति श्रुतिः

"मैं यह कार्य्य करता हूं, यह द्रव्य मेरा है," इस भांति अभिमान ही बंधन का कारण होता है। ईश्वर का द्रव्य खोया नहीं गया, अतएव ईश्वर ने हरि को मुक्ति दी। हरि ने ईश्वर के द्रव्य को आत्म सात् नहीं किया, ईश्वर के न्याय से हरि निरर्थक क्यों अपराधी प्रमाणीत होगा? अब बड़ी कठिन पहेली आ पड़ी। चोरों ने सोचता है कि हम तो बंच गये। युक्ति बुद्धि की अनुगामिनी है, अतएव बुद्धि यदि पवित्र वो निर्म्मल न हो तो युक्ति सर्व्वत्र प्रकृत तत्व स्थिर करने में समर्थ नहीं होती है। इसी लिये ज्ञान वो विज्ञान के शरणागत हो कर अब प्रकृत सिद्धान्त करना चाहते हैं।

मन की नाना भांति सूक्ष्म शक्ति हैं। उन्हों में सम्प्रकाशिका, सञ्चारिका, संग्राहिका वो सम्पोषिका ये चार प्रकार की शक्तियां प्रधान हैं। मन की जो

প্রবল হইলে মনের ভাব বৃত্তি স্নায়ু পথ দিয়া ইন্দ্রিয়াদির সাহায্যে বাহিরে প্রকাশিত হয়, তাহার নাম সম্প্রকাশিকা। এই সম্প্রকাশিকা শক্তির সহিত যে শক্তি মিশ্রিত থাকিলে মানবের মনের ভাব ভাষা বা অন্য কোন সঙ্কেত দ্বারা অন্য ব্যক্তির মনে ধারণা করাইয়া দিতে পারে, তাহার নাম সঞ্চারিকা। মনের যে শক্তি অন্য ব্যক্তি বা বিষয় হইতে ভাব বা গুণ কিংবা শক্তি গ্রহণ করিতে পারে, তাহার নাম সংগ্রাহিকা এবং যে শক্তি সংগৃহীত ভাব, গুণ বা শক্তিকে মনোমধ্যে রক্ষা করিতে পারে তাহাই সম্পোষিকা শক্তি। মন যখন ভগবদারাধনা, সাধু কার্য্যের অনুষ্ঠান, ইন্দ্রিয় বিকার বর্জ্জন আদি দ্বারা নির্ম্মল হয় এবং ক্রমে চিৎশক্তিতে ধ্যান নিমগ্ন হইতে থাকে তখন প্রাকৃতিকী শক্তি নিচয় ক্রমশঃ ক্রিয়া বর্জ্জিত হইয়া পড়ে। সেই সময়ে মানব প্রকৃতিতে "সংযমনী" নাম্নী এক অপূর্ব্ব শক্তির অঙ্কুর হয়। এই শক্তি পরিবর্দ্ধিত হইলে প্রাকৃতিকী শক্তি আর তাহার উপর আধিপত্য করিতে পারে না, এবং সংযমনী শক্তি ও মনোপ্রকৃতিকে বাহ্য জগতের প্রকৃতির সহিত মিশ্রিত হইতে দেয় না। এই সময়ে শীতোত্তাপ জন্য ক্লেশাদির অনুভব হয় না, সুখ দুঃখ, মান অপমান সমান হইয়া আসে, বিষ্ঠা চন্দনে অভেদ বুদ্ধির উদয় হয়, ক্ষুদ্র বৃহৎ, বিষ অমৃতাদির বৈষম্য বুদ্ধি বিনষ্ট হইয়া যায়। তখন তুমি, আমি, ইনি, তিনি, জ্ঞান থাকে না। আপনায় ও পর এভেদ জ্ঞান দূরে পলায়ন করে। মন সংযত অর্থাৎ ক্রিয়া রহিত হইলেই ভেদাভেদ তিরোহিত হয়। কেননা

"মন এব মনুষ্যাণাং ভেদাভেদস্য কারণং"

মনইমনুষ্য গণের ভেদাভেদরূপ দ্বৈতজ্ঞানের উদয় করিয়া দেয়। মন সংযত হইলেই সমস্ত জগৎ চিন্ময় বলিয়া বোধ হয়।

"সর্ব্ব ভূতে স্থিতং ব্রহ্ম ভেদাভেদৌ ন বিদ্যতে।

জীবন্মুক্তি গীতা।

সর্ব্বভূতেই এক সচ্চিদানন্দ ব্রহ্ম বিরাজিত, তাঁহার কোথাও ভেদ-ভাব নাই। যোগীন্দ্র গণ ভিন্ন এ অবস্থা অন্য কেহ লাভ করিতে পারেন না। যত দিন পর্য্যন্ত প্রবৃত্তির স্ফুরণ হয় ততদিন যে

शक्ति प्रबल होने पर मन की भाव वृत्ति स्नायु मार्ग हो कर इन्द्रियादि की सहायता से बाहर जा प्रकाशित होती है, उसका नाम सम्प्रकाशिका है। इस सम्प्रकाशिका शक्ति से जो शक्ति मिलने पर मनुष्य के अन्तःकरण का भाव भाषा या और किसी संकेत से दूसरे मनुष्य के मन में धारणा करा दे सक्ती है उसी का नाम संचारिका है। मन की जो शक्ति दूसरे किसी व्यक्ति या वस्तु से भाव या गुण वा शक्ति ग्रहण कर सक्ती है, उसी का नाम संग्राहिका। औ जो शक्ति संग्रह किये हुये भाव, गुण वा शक्ति को मन के भीतर पोषण या रक्षा कर सक्ती है, उसी को सम्पोषिका शक्ति कही जाती है। मन जब भगवत् की आराधना, साधु कार्य्य के अनुष्टान, इन्द्रिय विकारों का वर्ज्जन आदि से निर्म्मल होता है वो धीरे२ चित्-शक्ति के ध्यान में मग्न होता रहे उस समय पूर्व्वोक्त प्राकृतिकी शक्ति समूह क्रमे क्रम क्रिया रहित हो जाती है, उस समय मानव-प्रकृति में "संयमनी" नाम एक अपूर्व शक्ति का अंकुर होता है। उस शक्ति की उन्नति होने पर प्राकृतिकी शक्ति फिर उस पर प्रभुता नहीं कर सक्ती है औ संयमनी शक्ति भी मन की प्रकृति को बाह्य जगत से मिलने को नहीं देती है। इसी समय में महात्माओं को शीत, उष्णादि के लिये क्लेश अनुभव नहीं होता है. सुख दुःख, मान, अपमान सब समान बोध होता है, विष्ठा चन्दन में अभेद बुद्धि होती है, क्षुद्र, वृहत्, विष अमृत आदि की वैषम्य बुद्धि विनष्ट हो जाती है, उस समय "तुम, मैं, यह, वह आदि ज्ञान नहीं रहता है। अपना वो बेगाना यह द्वैत बुद्धि दूर भाग जाती है। मन संयत यानि क्रिया वर्ज्जित होने ही से भेदाभेद ज्ञान तिरोहित हो जाता है क्योंकि "मन एव मनुष्याणां भेदाभेदस्य कारणम्"। मन ही से मनुष्यों को भेदाभेद यह द्वैत बुद्धि उपजती है। मन संयत होने ही से समस्त जगत चिन्मय ब्रह्म पड़ता है।

"सर्व्व भूते स्थितं ब्रह्म भेदाभेदौ न विद्यते"

जीवन्मुक्ति गीता।

समस्त भूतों में एक सच्चिदानन्द ब्रह्म विराजित है, कहीं भेद भाव नहीं।

योगीश्वरों को छोड़ के और किसी को इस अवस्था की प्राप्ति नहीं होती है। जब तक संकल्प

সংযমনী শক্তির উদয় হয়না. ইহা স্বতঃ সিদ্ধ সিদ্ধান্ত। প্রবৃত্তি থাকিলেই কার্য্যের আরম্ভ ও ফল প্রাপ্ত হইলেই কার্য্যের অবসান হইয়া থাকে। সংযমনী শক্তির সঞ্চার হইলেই হৃদয়ের কার্য্যারম্ভ প্রবৃত্তি বিনষ্ট হইয়া যায়। এই সংযমনী শক্তির অভ্যুদয় হইলে সংযমনী পুরির (যমালয়) অধীশ্বর হইতে পারা যায়। অর্থাৎ সমস্ত জগতের শাসন করিবার সামর্থ্য হয়। দুষ্প্রবৃত্তি দমন করিবার অধিকার জন্মে।

যাহা হউক এক্ষণে বিচার্য্য এই যে লোকে চৌর্য্য বৃত্তিপরায়ণ হয় কেন ? দেখিতে পাওয়া যায় যে অভাব ও লোভই চৌর্য্যের প্রবর্ত্তক। আকাঙ্ক্ষা অভাবের প্রসূতি ও অভাব হইতেই লোভের উৎপত্তি মন যতই বহির্ম্মুখ হইবে, ততই তাহার প্রবৃত্তি ও দুঃখ বৃদ্ধি হইবে। অন্তর্ম্মুখ হইলেই সংযম ও সন্তোষের উদয় হইতে থাকিবে। লোভ যে পদার্থকে আকর্ষণ করে, সেই পদার্থের শক্তি সংগ্রাহিকা শক্তি সহ মনে আসিয়া উপস্থিত হয় এবং সম্পোষিক তাহাকে রক্ষা করে ইহাতে মন কলুষিত ও আত্মা বৈষয়িক ধূমে অন্ধকারাচ্ছন্ন হইয়া যায়। যে দ্রব্যে লোভবা প্রবৃত্তি হয়, মন তাহাতেই রতি করিতে থাকে সুতরাং অন্তর্ম্মুখীন হইতে চাহে না ; ইহাতে মনের সংযম হইবারও সম্ভব নাই। নিজের যাহা দ্রব্য আছে, তাহারও "বাসনা" ত্যাগ করান দূরে থাকুক আরও বিষয় বাসনার বৃদ্ধি করিয়া দেয়, তাহাতে জীব মুক্ত হইতে পারে না

"বাসনা দ্রাঢ়াতো রাম বন্ধ ইত্যভিধীয়তে"।

বশিষ্ঠ দেব বলিয়াছিলেন যে হে রাম চন্দ্র বাসনার দৃঢ়তাই বন্ধন জানিবে। সমস্ত জগতে আত্মভাব বৃদ্ধি করাই মুক্তি সাধনের উপায়, দয়ালু পুরুষ গণ এই আত্ম-ভাব জন্যই নিজ ভোগ্য পদার্থ অন্যকে ভোগার্থ দান করেন, কিন্তু চৌর্য্য বৃত্তি এই আত্ম ভাব নিতান্ত সংকুচিত করিয়া জীবকে অতীব ক্ষুদ্রাশয় করিয়া দেয়। চিত্ত চিৎ শক্তির দিকে ধাবিত হইবে ইহাই বিধাতার নির্ম্মল বিধি ; চৌর্য্য বৃত্তি তাহার বাধা উৎপাদন করিয়া চিত্তকে বাহ্য জগতে আকর্ষণ করিতেছে, চৌর্য্যেরইহা বিধাতার বিধি বিরুদ্ধ প্রথম দোষ। সম্প্রকাশিকা...

विकल्प बने रहते हैं तब तक संयमनी शक्ति का उदय नहीं होता है यह स्वयं सिद्ध सिद्धान्त है। प्रवृत्ति रहने ही से कार्य्य का प्रारम्भ वो फल प्राप्त होने ही पर कार्य्य का शेष होता है संयमनी शक्ति का संचार होने ही पर हृदय की कार्य्यारम्भ-प्रवृत्ति विनष्ट हो जाती है। इस संयमनी शक्ति का उदय होने से मनुष्य "संयमनी पुरि" (यमालय) का अधीश्वर बन सक्ता है याने समस्त संसार शासन करने का सामर्थ्य होती है वो दुष्ट प्रकृति को दमन करने का अधिकार मिलता है।

जो हो, अब विचारना यही चाहिये कि लोगों ने चौर्य्य वृत्ति को क्यों अवलम्बन करते हैं? देखा जाता है कि द्रव्य का अभाव वो लोभही चौर्य्य का प्रवर्त्तक है। आकांक्षा धनाभाव की माता है वो अभावही से लोभ की उत्पत्ति होती है। मन जितनाही बहिर्म्मुख बना रहेगा उसकी प्रवृत्ति वो दुःख भी उतने ही बढेंगे। मन अन्तर्म्मुख होनेही से संयम वो सन्तोष का उदय होता है। लोभ जिस पदार्थ को आकर्षण करता है, उस पदार्थ की शक्ति संग्राहिका शक्ति करके मन में आजाती है वा सम्पोषिका शक्ति उसको रक्षा करती है। इसे मन कलुषित वो आत्मा वैषयिक धूम के अन्धकार मे छाय जाता है। जिस द्रव्य पर लोभ वा प्रवृत्ति होती है, मन उसी मे रमा करता है, तस्मात् अन्तर्म्मुखी न होने को नहीं चाहता है, इसे मन का संयम होने का भी सम्भावना नहीं। अपना जो द्रव्य है, उसकी वासना तक भी छाड़ना चाहिये किन्तु चौर्य्य वृत्ति से वासना त्याग तो किनारे रही वरं अधिक वासना की वृद्धि कर देती, उसे जीव मुक्त नहीं हो सक्ता है।

"वासना द्राढ्यतो राम बंध इत्यभिधियते"

वशिष्ठजी ने बोला कि हे रामचन्द्र! वासना की दृढ़ताही को बंधन जानना सारे संसार मे आत्म भाव का बढ़ावना मुक्ति साधन का उपाय है। दयालु मनुष्यों ने इस आत्म भावही को बढ़ावने के अर्थ निज भोग की सामग्री दुसरे को भोगार्थ दान कर देता है। किन्तु चौर्य्य वृत्ति इस आत्म भाव को निपट संकोच कराकर जीव को अतीव क्षुद्राशय बना डालती है। चित् शक्ति के ओर चित्त को धावमान होना चाहिये, यही विधाता की निर्म्मल विधि

চারিটী প্রাকৃতিকী শক্তিকে স্তম্ভিত করিয়া সংযমনী শক্তির আবিভাব ও চিদাত্মার স্ফূর্ত্তি হইবে ইহাই বিধাতার উন্নত বিধি, চৌর্য্যবৃত্তি "বাসনার" বৃদ্ধি করিয়া জীবকে বন্ধন দশা গ্রস্ত করিতেছে চৌর্য্যের ইহা বিধাতার সুন্দর বিধির বিরুদ্ধ দ্বিতীয় দোষ। প্রকৃতি হইতে আত্মার বিমুক্ত ভাব থাকাই বিধাতার নিত্য নিয়ম, চৌর্য্য বিষয়ানুরাগ বর্দ্ধন করিয়া বিধাতার বিরুদ্ধে তৃতীয় দোষের সঞ্চার করে। আত্ম দৃষ্টিতে সর্ব্বত্র অভিন্ন বুদ্ধিতে দেখাই বিধাতার উচ্চতম বিধি কিন্তু চৌর্য্য তদ্বিরোধে ভেদ বুদ্ধির বৃদ্ধি করে, ইহা তাহার চতুর্থ দোষ।

বাসনা দ্বিবিধা প্রোক্তা শুদ্ধা চ মলিনা তথা।
মলিনা জন্মনো হেতু শুদ্ধা জন্ম বিনাশিনী॥

বাসনা দ্বিবিধ, শুদ্ধা ও মলিনা। মলিনা বাসনা জন্ম মরণের হেতু ও শুদ্ধা জন্ম মরণ হইতে মুক্ত করে। দুরাকাঙ্ক্ষা দুষ্প্রবৃত্তিই যখন জীবের জন্ম মরণাদি দুঃখ ভোগের কারণ তখন এতন্মূলক চৌর্য্য নিতান্তই বিধাতার সদ্বিধির বিরোধী অতএব চুরি করা মহাপাপ।

এস্থলে ইহাও স্মরণ রাখিতে হইবে যে যদি কোন মুক্ত (সংযমনী শক্তি বিশিষ্ট) পুরুষ অন্যের দ্রব্য গ্রহণ করেন, তাহা চুরি নহে। কারণ তিনি সমস্ত আত্মবৎ দর্শন করেন, "তোমার" "আমার" ইত্যাকার বুদ্ধি তাঁহার নাই। যত দিন "প্রবৃত্তি" থাকিবে তত দিন পরের দ্রব্য গ্রহণের নাম "চুরি" ও চুরি করায় মহাপাপ কিন্তু সম্পূর্ণ নিবৃত্তির উদয় হইলে চুরিকরায় পাপ নাই কিন্তু তখন পরদ্রব্য হরণে প্রবৃত্তি ও হয় না।

চুরি করা মহাপাপ কারণ ইহাতে প্রকৃতি কলুষিত হয়।

বিবর্ণ সূর্য্য মণ্ডল।

(প্রাপ্ত)

ত্রিবেণী জ্যোতিস্তত্ত্ব সভা হইতে জনৈক মহাত্মা নিম্ন লিখিত বিবরণটী লিখিয়াছেন।

কিয়দ্দিবস হইতে সূর্য্যের স্বাভাবিক কান্তির কিঞ্চিৎ খর্ব্বতা দৃষ্ট হইতেছে। সে দিন প্রাতঃকালে দুরবীক্ষণ যন্ত্রের সাহায্যে পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছি যে সূর্য্য মণ্ডলের দক্ষিণাধোভাগে একটী প্রকাণ্ড চিহ্ন দেখা দিয়াছে। অনাবৃত চক্ষেও এ চিহ্ন দর্শন করিয়াছি। এরূপ চিহ্ন সঞ্চারে অনেক পার্থিব দুর্ঘটনা ঘটিয়া থাকে।

বরাহ মিহির ৩য় অধ্যায়ে লিখিয়াছেন,

"তেষামুদয়েরূপাণ্যম্ভঃকলুষং রজোবৃতং ব্যোম।
নগতরু শিখর মর্দ্দী সশর্করো মারুতশ্চণ্ডঃ॥
ঋতু বিপরীতাস্তরবো [illegible]

जगत् की ओर आकर्षण कर रहा है, चोरी करने से विधाता की विधि विरुद्ध यह प्रथम दोष है। सम्प्रकाशिका आदि चारों स्वाभाविकी शक्तियों को स्तम्भित करके संयमनी शक्ति का आविर्भाव वो चिदात्मा की स्फूर्त्ति होगी यहा विधाता की उन्नत विधि है, चौर्य्य वृत्ति वासना को बढ़ा कर जीव को बन्धन दशा प्राप्त करातीहै, विधाता की सुन्दर विधि का विरुद्ध चोरी करने का यह द्वितीय दोष है। प्रकृति से आत्मा मुक्त वा अलग रहे, यही विधाता का नित्य नियम है, चौर्य्य वृत्ति से विषय का अनुराग बढ़ने पर विधाता के विरुद्ध तीसरा दोष उत्पन्न होता है। आत्म दृष्टि से सर्व्वत्र समान देखना यही विधाता की बड़ी ऊंची श्रेणी की विधि है किन्तु चौर्य्य उसके विरुद्ध भेद बुद्धि को बढ़ाती है, यह उसका चतुर्थ दोष है।

"वासना द्विविधा प्रोक्ता शुद्धा च मलिना तथा।
मलिना जन्मनोहेतु शुद्धा जन्म विनाशिनी॥"

वासना, शुद्धा वो मलिना, दो प्रकार की होती है। मलिना वासना जनन वो मरण का हेतु है वो शुद्धा जनन मरण से मुक्त कर देती है। जब देख पड़ता है कि दुराकांक्षा वो दुष्ट प्रकृतिही जीवों के जन्म मरण आदि दुःख का मूल है तो इसी से उत्पन्न होता हुआ चौर्य्य वृत्ति विधाता की सुन्दर विधि का नितान्त विरोधी है, अतएव चोरी करना महा पाप है।

यहां यह भी स्मरण रखना चाहिये कि यदि किसी मुक्त (संयमनी शक्ति से पूर्ण) पुरुष ने अन्य व्यक्ति का द्रव्य ले लें तो वह चोरी नहीं कहातीहै। क्योंकि उन्होंने सब को आत्मवत् देखता है। "तुम्हारा" या "हमारा" यह भेद बुद्धि उनको कहां? जब तक प्रवृत्ति बनी रहगी तब तक किसी के द्रव्य बिना अनुमति से लेनाही "चोरी" है। वो चोरी करने से महा पाप होता है। किन्तु सम्पूर्ण निवृत्ति आजाने पर चोरी से पाप नहीं लगता किन्तु उस समय परद्रव्य लेने में प्रवृत्ति कहां होती है?

चोरी करना महा पाप है क्योंकि इससे प्रकृति मलिन होती है।

विवर्ण सूर्य्य मण्डल।

(प्राप्त)

त्रिवेणी ज्योतिस्तत्त्व सभा से एक महात्मा ने निम्न प्रकटित विवरण लिख भेजा है:—

थोड़े दिनों से सूर्य्य की स्वाभाविक कान्ति की कुछ न्यूनता देख पड़ती है। एक दिन प्रातःकाल को मैं दूरवीक्षण यंत्र की सहायता से परीक्षा कर देखी उसे सूर्य्य मण्डल के दक्षिण अधो भाग में एक बड़ा भारी चिह्न देख पड़ा। इस भांति चिह्न का

সূর্য্য মণ্ডলে ছিদ্রচয় দৃষ্ট হইলে জল রাশিবিক্ষুব্ধ, ও আকাশ রজোরাশিতে আচ্ছন্ন হইয়া যায় এবং পর্ব্বত পাদপ শিখর বিমর্দ্দী প্রচণ্ড পবন প্রবাহে কঙ্কর ও বালুকারাশি উড়িতে থাকে। যথাসময়ে বৃক্ষগণ ফল দানে অশক্ত হয়, পক্ষী ও অন্যান্য প্রাণীগণ বিকট শব্দ করিতে থাকে, চারি দিকে অগ্নি দাহের ন্যায় বর্ণ দৃষ্ট হয়, এবং বজ্রাঘাতে ও ভূমি কম্পে মানব গণ বিত্রস্ত হইয়া উঠে।

এক্ষণে সূর্য্যের বর্ণ কোন জ্যোতির্ব্বেত্তার মতে নীল, কাহারও হরিত, কাহারও মতে তাম্রাভ, কেহ বা ময়ূর পুচ্ছের বর্ণের ন্যায়ও অনুমান করিতেছেন। সূর্য্যের প্রকৃত বর্ণ নীলাভ বলিয়া বোধ হয়। ভিন্ন ২ সময়ে সূর্য্যের পরিবর্ত্তন হওয়াও কিছু আশ্চর্য্য নহে। বরাহমিহির সূর্য্য বর্ণ ও তদনুসারে পার্থিব ঘটনার বিষয় লিখিয়াছেন যে,

"উর্দ্ধ করো দিবস করস্তাম্র সেনাপতি বিনাশয়তি।
পীতো নরেন্দ্র পুত্রং শ্বেতস্তু পুরোহিতং হন্তি॥"

সূর্য্য উর্দ্ধরশ্মি হইলে তাম্রবর্ণ দেখায়, তাহাতে সেনাপতির মৃত্যু হয়। হরিত বা পীত বর্ণ হইলে রাজপুত্রের এবং শ্বেত হইলে পুরোহিতের পরলোক লাভ হয়।

"চিত্রোথবাপি ধূম্রোরবিরশ্মি ব্যাকুলাং করোতি মহীং।
তস্কর শস্ত্র নিপাতৈর্যদি সলিলং নাশু পাতয়তি॥"

সূর্য্য যদি নানাবর্ণ বা ধূম্রবর্ণ হয়, তাহা হইলে শীঘ্র বৃষ্টি কিম্বা মনুষ্য দস্যু বা অস্ত্র শস্ত্র হইতে ভীত হইবে।

"রুক্ষশ্বেতোবিপ্রান্ রক্তাভঃ ক্ষত্রিয়ান্ বিনাশয়তি।
পীতো বৈশ্যান্ কৃষ্ণস্ততো পরান্ শুভকরঃ স্নিগ্ধঃ॥"

বর্ষাকালে সূর্য্যরশ্মি তীব্র ও শ্বেত হইলে তবে ব্রাহ্মণ গণ, রক্ত বর্ণ হইলে ক্ষত্রিয় গন, পীত বা হরিত হইলে বৈশ্যবর্গ এবং কৃষ্ণবর্ণ হইলে শূদ্র ও অন্যান্য মনুষ্য নানা ক্লেশ ভোগ করিবে।

"বর্ষাস্বসিতঃকরোত্যনাবৃষ্টিং"

বর্ষাকালে সূর্য্যের কৃষ্ণ কিরণ হইলে অনাবৃষ্টি হয়।

"প্রাবট্ কালে সদ্যঃ করোতি বিমল দ্যুতির্বৃষ্টিং"।

বর্ষাকালে সূর্য্য মণ্ডল নির্ম্মল থাকিলে সদ্য বৃষ্টি হইয়া থাকে।

বর্ষাকালে বৃষ্টিং করোতি সদ্যঃশিরিষপুষ্পাভঃ।
শিখিপত্র নিভঃসলিলং নকরোতি দ্বাদশাব্দানি॥"

বর্ষাকালে সূর্য্য মণ্ডল শিরীষপুষ্প বর্ণ হইলে সুবৃষ্টি হয়, যদি আবার সূর্য্যের অপরাংশে শিখী পুচ্ছের বর্ণদৃষ্ট হয় তবে ১২ বৎসর অনাবৃষ্টি হইবে।

"শ্যামেঽর্কে কীট ভয়ং ভস্মনির্ভেভয়মুশান্তিপরচক্রাৎ॥"

বর্ষাকালে সূর্য্য নীলবর্ণ হইলে, মনুষ্যের কীট ও

निषासुदर्यकपावप्म: कलुष रजा वृतं व्योम।
नगतरु गिरिवर मर्द्दी सशर्करो मारुतश्चण्ड:॥
ऋतुमनुपयौतालनवत्ता दौमा मृग पक्षिणो दिशां दाह:।
निर्घात मही कम्पादयो भवन्त्यत्र चोत्पाता:॥"

सूर्य्य मण्डल में छिद्र समूह दृष्ट होने पर जलराशि विलोड़ित वो आकाश मण्डल धूर में आवृत होजाता है औ पर्वत वो वृक्ष आदि को तोड़नेवाला प्रचण्ड पवन कंकर वो बालु आदि लेता हुआ बहता है। उचित समय में वृक्ष गण फल नहीं देते हैं, पक्षी औ अन्यान्य प्राणी गण विकट शब्द किये करते हैं, चारो ओर अग्नि के दाह के समान वर्ण देख पड़ता है औ बिजली वो भूकम्प से मनुष्यगण विन्नस्त होते हैं।

आज काल सूर्य्य का वर्ण किसी ज्योतिषी के मत से ताम्र वर्ण है, किसी ने अनुमान करता है जैसा कि मयूर पुच्छ के समान है। सूर्य्य का प्रकृत वर्ण स्वल्प नील वर्ण है। भिन्न २ समय में सूर्य्य का वर्ण बदल जाना भी कुछ आश्चर्य नहीं। बराहमिहिर ने सूर्य्य का वर्ण वो उसे संसार में कौन् २ आपत् आती हैं इस पर लिखा है :—

"ऊर्द्ध करो दिवसकरस्ताम्र सेनापति विनाशयति।
पीतो नरेन्द्रपुत्रं श्वेतस्तु पुरोहितं हन्ति॥"

सूर्य्य के किरण की गति ऊपर के ओर होनेपर ताम्र वर्ण बोध होता है, उसे सेनाध्यक्ष का मरण निश्चय है। हरित वा पीत वर्ण होने पर राजपुत्र का वो श्वेत होने से पुरोहित का मृत्यु जानना।

"चित्रोऽथवापि धूम्रो रविरश्मिर्व्याकुलां करोतिमही।
तस्कर शस्त्रनिपातैर्यदि सलिल नाशु पातयति॥"

सूर्य्य यदि नाना वर्ण वा धूम्रवर्ण हो तो शीघ्र वृष्टि होगी अथवा दस्यु वा अस्त्र शस्त्र से मनुष्यगण भय प्राप्त होंगे।

"रूक्षश्वेतो विप्रान् रक्ताभ: क्षत्रियान् विनाशयति।
पीतो वैश्यान् कृष्णस्ततो परान् शुभकर स्निग्ध:॥"

वर्षाकाल में सूर्य्य के किरण तीव्र वो श्वेत होने पर ब्राह्मण गण, रक्त वर्ण होने पर वैश्य गण वो कृष्ण वर्ण होने से शूद्र वो अन्यान्य मनुष्य गण नाना क्लेश भोगेंगे।

"वर्षास्वसित: करोत्यनावृष्टिं"

वर्षा काल में सूर्य्य के किरण कृष्ण वर्ण होने से अनावृष्टि होती है।

प्रावृट् काले सद्य: करोति विमलद्युति वृष्टिं॥"

वर्षा काल में सूर्य्य मण्डल निर्म्मल रहने पर शीघ्र मेघ बरसता है।

वर्षाकाले वृष्टिं करोति सद्य: शिरिषि पुष्पाभ:।
शिखिपत्र निभ: सलिलं नकरोति द्वादशाब्दानि॥"

वर्षा काल में यदि सूर्य्य शिरीष पुष्प के वर्ण हो, तो उत्तम वृष्टि होती है किन्तु यदि सूर्य्य

সিংহাসন চ্যুত হয়েন ও অন্যরাজার অধিকার হয়।
"শশ রুধির নিভে ভানৌ নভস্তলস্থে ভবতি সংগ্রামঃ
শশি সদৃশোনৃপতিবধঃ ক্ষিপ্রং চান্যো নৃপো ভবতি॥"

যদি রবি শশরুধিরবর্ণ বিশিষ্ট হয়েন তাহা হইলে ভূতলে সংগ্রাম উপস্থিত হইবে সূর্য্যকে যদি চন্দ্রের ন্যায় বোধ হয়, তবে সম্রাট নিহত হইবেন ও বিদেশীয় রাজা সিংহাসন অধিকার করিবেন।

ইহা বোধ হয় সকলেই অবগত আছেন যে সূর্য্যে চিহ্ন বিশেষ লক্ষিত হইবার পরেই ভারতবর্ষের স্থানে ২ কয়েক বার ভূমিকম্প এবং জাবাদ্বীপে আগ্নেয়গিরির বিষম উৎপাত হইয়া গিয়াছে। পাশ্চাত্য জ্যোতির্ব্বিদগণ এখনও যে সকল গূঢ়তত্ত্ব স্পর্শও করিতে পারেন নাই, আর্য্যগণ কত দিন পূর্ব্বে তাহার চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত করিয়া গিয়াছেন।

পণ্ডিত দয়ানন্দসরস্বতী ।

দয়ানন্দ ভস্মাচ্ছাদিত কলেবর সন্ন্যাসীর বেশে হিন্দু সমাজের কল্যাণ করিব বলিয়া বৈদিক বিজয় পতাকা হস্তে সমাজে প্রবেশ করিয়াছিলেন। স্থানে ২ বৈদিক বিদ্যালয় স্থাপন করিয়া আর্য্য কুলের নিষ্কলঙ্ক কীর্ত্তিস্তম্ভের পুনঃসংস্কার করিবেন, এই সুমধুর সঙ্গীতের তানে ভারতকে প্রমত্ত করিতে লাগিলেন। তীব্র তর্কশাস্ত্র তরঙ্গের রঙ্গ ভূমি বঙ্গ দেশে আসিয়া তিনি নিজ অভীষ্ট সাধনে হতাশ্বাস হইলেন এবং পঞ্জাব ও দক্ষিণ ভারতবর্ষের আশ্রয় গ্রহণ করিলেন। আর্য্য শাস্ত্র বেত্তা অধ্যাপক গণকে নীরব-নিদ্রিত দেখিয়া, ভাবিলেন এই অবকাশে আর্য্য দিগের নামে উৎসর্গ করিয়া আপনারই এক নবীন মতের প্রচার করিয়া যাই। দয়ানন্দ গৃহ ত্যাগী হইয়াছিলেন কিন্তু যদি বরাবর সাধন শীল থাকিতে পারিতেন তাহা হইলে অবিচলিত চিত্তে শাস্ত্রের যথার্থ তাৎপর্য্য বোধে সমর্থ ও লোক হিত সাধনে সিদ্ধ মনোরথ হইতেন। তিনি নিজ বিদ্যা, বুদ্ধি ও পাণ্ডিত্যাভিমানের কুজ্ঝটিকায় আপনাকে আপনি আর দেখিতে পাইতেন না। নির্ম্মল নীর বর্ষণ করিবেন বলিয়া যে নিবিড় নীরদ এই মাত্র গর্জ্জন করিতেছিল, ভারতের ভাগ্য দোষে অকস্মাৎ তাহা হইতে শিলাবৃষ্টি হইতে লাগিল! দয়ানন্দের বিনয়, শান্তভাব আদি তিরোহিত হইতে চলিল, অশ্রাব্য কটু কথা সন্ন্যাসীর মুখের সম্ভাষণ হইয়া দাঁড়াইল, ধৃষ্টতা ও ভ্রষ্টতা তাঁহার পরিচারিণী হইয়া উঠিল এবং অন্যের প্রতি অনাস্থা ও অবজ্ঞা প্রকাশই তাঁহার গৌরবের পক্ষ সমর্থন করিতে লাগিল। তিনি বলিতেন পুরাণ প্রণেতারা ধূর্ত্ত, পুরাণ বক্তারা মূর্খ, বেদের পূর্ব্বভাষ্যকার গণ নিতান্ত অনভিজ্ঞ ছিলেন। দয়ানন্দকে নিজ মুখে [illegible]

तो बारह वर्ष अनावृष्टि होगी।
"शशि सदृशे कौट भये भस्म निभे च मृगांक पर चक्रात्॥"

तथा कहते हैं सूर्य्य नील वर्ण होने पर, राजा सिंहासन से च्युत होते हैं और दूसरा राजा का अधिकार होता है।
"शशरुधिर निभे भानौ नभस्तलस्थे भवति संग्रामः
शशि सदृशा नृपतिवधः क्षिप्र धान्यो नृपो भवति॥"

यदि रवि खरहा के रक्त के समान वर्ण युक्त हो तो पृथ्वी पर संग्राम मचता है, सूर्य्य यदि चन्द्र के समान सफेद पड़े तो सम्राट मारे जाते हैं और परदेशी किसी राजा ने सिंहासन अधिकार कर लेते हैं।

बोध होता है कि सब किसी ने विदित है जो सूर्य्य मण्डल में कोई चिन्ह देख पड़ने के अनन्तर भारत वर्ष के स्थान स्थान में कै बेर भूकम्प हुआ और जावा द्वीप में ज्वाला मुखी पहाड़ का बड़ा भारी उपद्रव हुआ। युरोप के ज्योतिषी लोग अब तक जिस गूढ़ तत्व का स्पर्श भी नहीं सके, हमारे आर्य्यगण कितने ही दिन पहले इसका चरमसिद्धान्त कर गये।

पण्डित दयानन्द सरस्वती।

दयानन्द ने भस्माच्छादित कलेवर सन्यासी बन कर समझे हिन्दू समाज का शुभ करना है, ऐसे पुकारते और वैदिक विजय पताका हात में लेते हुए समाज के भीतर प्रवेश किया था। स्थान स्थान में वैदिक विद्यालय स्थापन करके आर्य्य कुल के कलंक रहित कीर्त्ति स्तम्भ पुनः संस्कार करेंगे, इस सुमधुर संगीत के तान से भारत को प्रमत्त करने लगे। तीव्र तर्क शास्त्र के तरंग की रंग भूमि बंग देश में आकर उन्हों ने निज अभीष्ट साधन में हताश हुआ और पंजाब और दक्षिण भारतवर्ष का आश्रय लिया। आर्य्य शास्त्रवेत्ता अध्यापकों को नीरव—निद्रित देख कर सोचा कि इस अवकाश में आर्य्य महात्माओं के नाम से अपने ही एक नवीन मत की प्रचार करे। दयानन्द गृहत्यागी हुए थे किन्तु यदि बराबर साधन शील बने रहते तो निश्चल चित्तता से शास्त्रों के यथा रीति अभिप्राय समझने में समर्थ और लोगों के हित साधन में सिद्धकाम होते। उन्होंने निज विद्या, बुद्धि और पाण्डित्य के अभिमानके कुहार में अपने को आपही देख नहीं सके थे। निर्म्मल नीर बरसने के लिये जो घन घोर घटा अभी गरज रहे थे, भारत के मन्द भाग्य से अकस्मात् उसी में से पत्थर बरसने लगे। दयानन्द का विनय, शान्त भाव आदि तिरोहित होने लगे, सुनने के अयोग्य बुरी भाषा सन्यासी के मुंह की सम्भाषण हुई, धृष्टता और भ्रष्टता उनकी परिचारिणी बनी, और दूसरे के ओर अनास्था और अवज्ञा प्रकाश ही उनके गौरव का पुष्टि साधक हुआ। उन्होंने पुराण

গণ ভেড়ার দল ও কেশব বাবু ও তাঁহার অনুগামী বর্গ বাতুল। রাজা রাম মোহন রায়ের সম্বন্ধে বলিতেন যে তিনি বুদ্ধিমান ছিলেন কেননা বুদ্ধি বলে খ্রীষ্টীয় স্রোতের বেগ রোধ করিয়া গিয়াছেন, কেননা, আমিতো এত দিন পরে আসলাম!

পাছে পরাভূত হইলে নিজ মর্য্যাদার ত্রুটী ও স্বমত প্রচারের ব্যাঘাত জন্মে এই জন্য সুযোগ্য পণ্ডিত দিগের সহিত সম্মুখ বিচারে সহজে অগ্রসর হইতেন না। তিনি ব্যবহারে অনেক সময়ে কপট বলিয়া পরিচয় পাওয়া গিয়াছে। ডেরা ডুনে জনৈক সর্ব্বান্ন ভোজী ব্রাহ্মের বাটীতে স্বয়ং প্রবৃত্ত হইয়া ভোজন করিয়া ছিলেন যখন দেখিলেন অনুগামীগণ বিরক্ত হইয়াছে, তখন বলিলেন ও ব্যক্তি আমাকে পরিচয় না দিয়া খাওয়াইয়া দিয়াছে, অথচ তৎ পূর্ব্বে তিনি সমস্ত পরিচয়ই বাবুটীর প্রমুখাৎ শুনিয়াছিলেন। ইনিই আবার ঋষিগণকে ধূর্ত্ত বলিতেন!! তাঁহার উৎসাহ, উদ্যম, কার্য্যতৎপরতা নিতান্ত প্রশংসনীয় অনুকরণীয় ছিল। ব্যাকরণে তাঁহার ব্যুৎপত্তি ছিল। এই ব্যাকরণের সাহায্য লইয়াই তিনি বেদের অর্থ বিপর্য্যয় করিতেন। আধ্যাত্মিক বিজ্ঞানে অপটুতা বশতঃই তাঁহাকে শব্দ শাস্ত্রের পদানত থাকিতে হইয়াছিল। যেখানেই তাঁহার নিজ মতের বিরোধ দৃষ্ট হইত, শাস্ত্রের সেই অংশটুকুই ভ্রান্ত বোধে পরিহার করিতেন। তাঁহার মতে তিনিই যাহ বুঝিতেন তাহাই অভ্রান্ত অন্যের মত প্রমাদ পূর্ণ।

তিনি সকল ধর্ম্মেরই নিন্দা পুস্তকাকারে প্রকাশ করিতেন। অনেক মতাবলম্বীরা তাঁহাকে ক্ষমা করিয়াছিল, কিন্তু জৈনগণ ক্ষমা না করিয়া রাজ দ্বারে অভিযোগ করিবার উদ্যোগী হইলে দয়ানন্দ ক্ষমা প্রার্থনা করিয়া নিজ মর্য্যাদা রক্ষা করিয়াছিলেন। দয়ানন্দ হিন্দু সমাজের বিশেষ কিছুই উপকারে সমর্থ হয়েন নাই বরং হিন্দু সমাজে কতক গুলি কদর্য্য ব্যবহারের ইঙ্গিত করিয়া গিয়াছেন।

যিনি ক্রোধ, মোহ, মদাদি রিপু বর্গকে নিজ অধীনে রাখিতে সমর্থ নহেন তিনি "স্বামী" পদ বাচ্য হইতে পারেন না, তজ্জন্য দয়ানন্দকে "স্বামী" না বলিয়া সাধারণ অর্থে "পণ্ডিত" বলিলাম।

দয়ানন্দ মৃত, তাঁহার বন্ধু বর্গ দুঃখিত এজন্য তাঁহার জীবনীর সমালোচনা এক্ষণে নিষ্প্রয়োজন। জীবনের শেষ ভাগে দয়ানন্দ রাজা দিগের দ্বারে ২ ভ্রমণ করিতে ছিলেন। অবশেষে অনেক কষ্ট পাইয়া, কুতিথিতে, কুলগ্নে দয়ানন্দ আজমীরে ভারত রঙ্গ ভূমি হইতে অবসর লইয়াছেন ভগবান্ নিজ কৃপাগুণে দয়ানন্দের পারলৌকিক কল্যাণ সাধন করুন ইহাই প্রার্থনীয়।

रखनेहारों को धूर्त्त, पुराणोंकी कथा बचनेवालों को मूर्ख और वेद के प्राचीन भाष्यकारों को निपट अनभिज्ञ कर बखान करता था। इसने दयानन्द के अपने मुँह से बखानते सुना कि साधारण ब्राह्म समाज के सभ्य लोग भेड़ों के झुंड है और केशव बाबू वो उनके अनुचर गण बावले है। राजा राममोहन राय के विषय में इतना कहते थे कि वे कुछ बुद्धिमान रहे क्योंकि उन्होंने निज बुद्धि बल से भारतवर्ष मे इसाइयों का प्रबल वेग को घटा दिया क्योंकि मैं तो इतने दिन के अनन्तर आये।

पराजय होने से निज मर्य्यादा की हानि वो निज मत प्रचार के व्याघात होने के भय से दयानन्दने किसी सुयोग्य पण्डितों से सम्मुख शास्त्रार्थ करने में आगे न बढ़े। लौकिक व्यवहार में भी अनेक समय उनकी कपटाई देख पड़ी। देरादून में सर्व्व वर्ण के अन्न भोजी किसी ब्राह्म समाजी के घर में स्वयं प्रवृत्त होकर उन्होंने भोजन किया, किन्तु इसे जब देखा संगी सब अत्यन्त असन्तुष्ट हुए तब बोला कि बाबू ने मुझे बिना परिचय दिये खिलाय दिया किन्तु उसके पहलेही स्वयं समस्त परिचय लेके खाने को सम्मति दी थी। यही फिर ऋषियों को धूर्त्त कर बखानते थे!! दयानन्द जी का उत्साह, उद्यम, कार्य्यतत्परता आदि गुण अत्यन्त प्रशंसा योग्य वो अनुकरणीय था।

व्याकरण शास्त्र में वे व्युत्पन्न थे। व्याकरणही की सहायता लेके उन्होंने वेद का विपरीत अर्थ किया करते थे। आध्यात्मिक विज्ञान में उनकी पटुता नथी, इसी हेतु से शब्द शास्त्र के पदानत रहे। जहांही निज मत का विरोध देखते, शास्त्र के उसी अंश को भ्रम मान कर त्याग कर देते थे। उनका यह मत था, कि वेही जो कुछ समझते सोही सत्य है, और सब प्रमादों से पूर्ण है।

उन्होंने सकल धर्म्महों की निन्दा पुस्तक में छपवाते थे। मतमतान्तर वाले उनको क्षमा करते गये, किन्तु जैनों ने क्षमा न करी वर कचहरी में नालिश करने को तैयार हुए, इसे दयानन्द ने क्षमा प्रार्थना कर निज मर्य्यादा को बचा ली। दयानन्द हिन्दू समाजका कुछ विशेष उपकार नहीं कर सके वरं थोड़ी बहुत बुरी रीति नीति का संकेत करगये।

जिसने क्रोध, मोह, मद आदि रिपुवर्ग को अपने वश में रखने को असमर्थ है, वह "स्वामी" इस पवित्र पद के योग्य नहीं बन सक्ते हैं तन्निमित्त दयानन्द को "स्वामी" के बदले सामान्य अर्थ से पण्डित कहा गया।

दयानन्द अब मृत है मित्र गण उनके सब दुःखी है, इस लिये उनकी जीवन वृत्त की समालोचना करना अब न चाहिये। जीवनके अन्त भाग में दयानन्द राजाओं के द्वार २ में रमते रहे अन्त को बहुत कष्ट भोग करके कुतिथि में कुलग्न में दयानन्द ने आजमीर में जीवन रंग भूमि से अवसर लिया। अब भगवान के समीप प्रार्थना यही है कि वे निज

"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৭ম ভাগ। ৮ম সংখ্যা। শকাব্দা ১৮০৫। অগ্রহায়ণ—পূর্ণিমা।

ভক্তি ভূমিকা।

গুরু পাদাশ্রয় স্তস্মাৎ কৃষ্ণ দীক্ষাদিশিক্ষণম্।
বিশ্রম্ভেন গুরোঃ সেবা সাধু বর্ত্মানুবর্ত্তনম্ ॥

প্রথমতঃ অহম্মন্যতা, অভিমানাদি পরিত্যাগ পূর্ব্বক ভগবানকে লাভ করিবার জন্য নিতান্ত বিনীত ভাবে শ্রীমদ্‌গুরু দেবকে সংসার সমুদ্রের পারকারী স্থির জানিয়া তাঁহার চরণে আশ্রয় লইতে হইবে। দ্বিতীয়তঃ শ্রীগুরু সমীপে ভগবদ্দীক্ষাদির শিক্ষা নিতান্ত আবশ্যক। তৃতীয়তঃ অনুরাগের সহিত গুরুদেবের সেবা শুশ্রূষা করিতে হয়। চতুর্থতঃ যে সকল মহাত্মা ভগবৎপদ আরাধনা করিয়া জন্ম মরণাদি সংকুল সংসার হইতে বিশ্রান্তি লাভ করিয়াছেন, তাঁহাদের প্রদর্শিত পন্থা অবলম্বন করিবে।

সদ্ধর্ম্ম পৃচ্ছা ভোগাদি ত্যাগঃ কৃষ্ণস্য হেতবে।
নিবাসো দ্বারকাদৌচ গঙ্গাদেরপি সন্নিধৌ ॥

"एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातिय:।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

७म भाग। ८म संख्या। शकाब्दा १८०५। अग्रहायण पुर्णिमा।

भक्ति भूमिका।

गुरुपादाश्रयस्तस्मात् कृष्ण दीक्षादि शिक्षणम्।
विश्रम्भेन गुरोः सेवा साधु वर्त्म नानुवर्त्तनम् ॥

प्रथम दम्भ, अभिमानादि छोड़ के भगवान को प्राप्त करने के अर्थ निपट विनीत भाव से श्री गुरुदेव को संसार समुद्र के पार उतारने वाले मान कर उनके चरण का आश्रय लेलेना चाहिये। तदनन्तर श्रीगुरुदेव के निकट भगवद्दीक्षादि की शिक्षा लेनी अत्यन्त आवश्यकीय है। तत्पश्चात् अनुराग बस होकर गुरु देव की सेवा करनी चाहिये। अनन्तर उन महात्माओं के; जिन्हों ने भगवत के चरण की आराधना करके जनन मरण आदि से व्याकुल संसार से विश्रान्ति लाभ करी है, देखाई हुई मार्ग को अवलम्बन करना उचित है।

सद्धर्म्म पृच्छा भोगादि त्यागः कृष्णस्य हेतवे।
निवासो द्वारकादौच गंगादेरपि सन्निधौ ॥

ভগবানের ভক্তি রূপ গৃহে প্রবেশার্থ এই বিংশতিটী দ্বার রূপে নিরূপিত হইল, তন্মধ্যে প্রথম তিনটী প্রধান বলিয়া সজ্জন বর্গ স্থির করিয়াছেন।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

এই প্রকার সমস্ত গ্রহ, উপগ্রহ ও নক্ষত্র গণই নানাবিধ পার্থিব-পদার্থ দ্বারা বিরচিত, এবং এই পৃথিবীর ন্যায় সর্ব্বদা পরিবর্ত্তন শীল এক একটি প্রকাণ্ড ভুবন, ইহা আর্য্য শাস্ত্রের অভিমত। তবে যে ঐ সকল গ্রহাদির হস্ত পদাদি বিশিষ্ট আকৃতি এবং অশ্বরথাদির বর্ণনা, পুরাণ শাস্ত্রে লিখিত আছে, তাহার কতক গুলি রূপক বর্ণনা, আর কতক গুলি ঐ গ্রহাদি অধিষ্ঠিত ঈশ্বরের কল্পিত বর্ণনা মাত্র। এ বিষয় সূর্য্যের স্বরূপ বর্ণনাবকাশে বিবৃত হইয়াছে।

একণে প্রকৃত প্রস্তাবের আবশ্যকানুরূপ মানব শরীরের কার্য্য প্রণালী বর্ণিত হইতেছে। ভুক্ত ও পীত বস্তু দ্বারা পুষ্টি সাধন, বাহ্যিক ও আভ্যন্তরিক বিবিধ জ্ঞানের উদয় এবং হস্তপদাদির পরিচালন এই ত্রিবিধ ক্রিয়া দ্বারা শরীরের সজীবতা জানাযায়। যে শরীরে এই ত্রিবিধ ক্রিয়ার অভাব হয় তাহাকে নির্জ্জীব বলে। মানবাদি শরীরে জীব স্থানীয় (Physiological) এবং মস্তিষ্ক সম্বন্ধীয় (Phrenological) যত প্রকার ক্রিয়া হয় তাহা সমস্তই উক্ত ত্রিবিধ ক্রিয়ার অন্তর্গত। ফুস্ ফুস্, হৃৎপিণ্ড, পাকস্থলী, যকৃৎ, ক্ষুদ্র পাকস্থলী, এবং শরীরের রক্ত বাহিনী নাড়ী সমূহের পরিচালক সমস্ত পেশীর ক্রিয়া আদি পোষণ ক্রিয়ার অন্তর্গত। চক্ষু, কর্ণাদি পঞ্চজ্ঞানেন্দ্রিয় দ্বারা যে কার্য্য নিষ্পন্ন হয় তাহা জ্ঞান ক্রিয়ান্তর্গত, হস্তাদি কর্ম্মেন্দ্রিয় দ্বারা যে সকল ব্যাপার নিষ্পন্ন হয় তাহা সঞ্চলন ক্রিয়ার অন্তর্গত। হিংসা, মাৎসর্য্য নিষ্ঠুরতা, কাম, স্নেহ, প্রেম ভক্তি, দয়া, প্রসাদ, বিচার, চিন্তা, অধ্যবসায়, কল্পনা প্রভৃতি মস্তিষ্কের ক্রিয়া সকল যথাযথ প্রণালীতে উক্ত তিন ক্রিয়ারই অন্তর্গত অর্থাৎ কতক গুলি পোষণ ক্রিয়ার, কতক গুলি সঞ্চলন ক্রিয়ার, আর কতক গুলি জ্ঞান ক্রিয়ার অনুযায়ী। তড়িৎ শক্তি যে

भगवद्भक्ति रूप गृह में प्रवेशार्थ ये बीस द्वार करके निरूपित हैं उनमें प्रथम तीन को सज्जन गण सब से प्रधान करके मान लिये हैं।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

इसी प्रकार समस्त ग्रह उपग्रह वो नक्षत्र गण नाना विध पार्थिव पदार्थों से बने हुए हैं औ वे सब पृथ्वी के न्याइ सर्व्वदा-परिवर्त्तन शील एक२ प्रकाण्ड भुवन है, यही आर्य्य शास्त्र का मत है। किन्तु वे ग्रह सब जो हस्त पदादि विशिष्ट हैं औ उन्हीं के जो सब अश्व रथादि की वर्णना पुराणों में मिलती है, थोड़ी सी उन्हों में तो रूपक वर्णन है औ कितने तो उन ग्रहों में अधिष्टित ईश्वर की कल्पित रूप का वर्णन है। सूर्य्य का रूप वर्णन के समय यह सब पाठकों को सूचित किये गये हैं।

अब प्रकृत विषय की आवश्यकता के अनुसार मनुष्य शरीर की कार्य्य प्रणाली वर्णन की जाती है। भोजन किया हुआ वा पीया हुआ वस्तु के द्वारा पुष्टि साधन, बाहर या भीतर के भांति भांति के ज्ञान का उदय वो हस्त पदादि का परिचालन ये तीन प्रकार की क्रियायें से शरीर को सजीव देख पड़ता है। जिस शरीर में ये तीन क्रिया नहीं हैं, उसको गत-जीवन जानना। मानव आदि शरीर में जीव सम्बन्धी (Physiological) वो मस्तिष्क या बुद्धि स्थान सम्बन्धी (Phrenological) जितनी क्रिया हुआ करती है, वे समस्तही उक्त त्रिविध क्रिया के अधीन हैं। फेफड़े, हृत्पिण्ड, जठर, कलेजा, छोटी पाकाशय औ शरीरके रुधिर वहा नाड़ियों को चलानेवाली समस्त मांस पेशी की क्रिया आदि पोषण क्रिया के अधीन है। चक्षु, कर्ण आदि पंच ज्ञानेन्द्रिय करके जो कार्य्य सिद्ध होते हैं वे ज्ञान क्रिया के अन्तर्गत हैं। हिंसा, मात्सर्य्य, निष्ठुरता, काम, स्नेह, प्रेम, भक्ति, दया, प्रसाद, विवेचना, विचार, चिन्ता, अध्यवसाय, कल्पना, आदि बुद्धि-स्थान की क्रिया सब यथाक्रम से उक्त तीन क्रिया के अन्तर्गत हैं अर्थात् कितने तो पोषण क्रिया के, कितने संचलन क्रिया के औ कितने तो ज्ञान क्रिया के अन्तर्गत हैं।

প্রকার নানা বিধ পদার্থ সমষ্টির মধ্যে উত্তেজিত হইয়া তার প্রভৃতি সঞ্চালক পদার্থ দ্বারা প্রবাহিত হয়, সেই রূপ উক্ত সমস্ত প্রকার ক্রিয়াই মস্তিস্কের মধ্যে উত্তেজিত হইয়া স্নায়ু দ্বারা প্রবাহিত হইয়া তৎ তৎ ক্রিয়া কারক শারীরিক যন্ত্রের পরিচালনা করে। সেই সকল ক্রিয়ার উত্তেজনা দ্বারা তাপাদি উৎপন্ন হওয়া হেতু মস্তিস্ক ও স্নায়ু মণ্ডলের ক্ষয় হয়। কিন্তু ক্ষয় হওয়াতেও জীবনী শক্তির বলবত্তা থাকা পর্য্যন্ত কোন অনিষ্ট হয় না। আমাদিগের পোষণ ক্রিয়ার প্রভাবে ভুক্ত, পীত পদার্থ দ্বারা আবার ঐ ক্ষয় প্রাপ্ত অংশের পুষ্টি হয়। কোন বস্তু শরীরের অভ্যন্তরিত হইবা মাত্রই পোষণ শক্তি তাহাকে আত্মসাৎ করার চেষ্টা করে, সেই চেষ্টা রূপ ক্রিয়া দ্বারা সঞ্চালিত হইয়া পাকস্থলী প্রভৃতি আহৃত ও পীত বস্তুর উপর চাপ দিতে থাকে, তাহাতে ঐ বস্তু সকল যকৃৎ আদি দ্বারা উৎপন্ন নানাবিধ দ্রাবকে ক্লিন্ন, বিশ্লিষ্ট ও দ্রব হইয়া প্রথম কতক অংশ এক প্রকার রসে পরিণত হয়। পরে ঐ রস নাড়ী দ্বারা প্রবাহিত হইতে ২ ফুস ফুসের কার্য্য দ্বারা রক্তাকারে পরিণত হয়। সেই রক্ত মধ্যে খাদ্য বস্তু হইতে সংগৃহীত নানা বিধ পদার্থ থাকে এবং উহা নাড়ী পথে সর্ব্বদা সমস্ত শরীরের অভ্যন্তরে পরিভ্রমণ করিতে থাকে। তখন মস্তিস্ক, স্নায়ু, অস্থি, মাংস, ধমনী, শিরা, অন্ত্র, তন্তু, চর্ম্ম প্রভৃতি শরীরাবয়ব সকল ঐ প্রবাহিত রুধির হইতে আপন ২ আবশ্যকীয় পদার্থ সকল (যদ্দ্বারা নিজ নিজ উপচয় হইতে পারে) গ্রহণ করিয়া স্বীয় ২ আকৃতির পুষ্টি বর্দ্ধন ও সংরক্ষণ করে। যে যে পদার্থ দ্বারা মস্তিস্ক সংগঠিত হয় মস্তিস্ক কেবল তত্তাবৎই সংগ্রহ করে। এইরূপ স্নায়ু স্নায়ুর উপযোগী পদার্থ, অস্থি অস্থির উপযুক্ত পদার্থ, মাংস মাংসের উপযুক্ত পদার্থ সংগ্রহ করিয়া থাকে ইত্যাদি।

ভুক্ত, পীত বস্তুর অংশ সকল শরীরের সহিত সমবেত হয়, কিন্তু তাহা সকল শরীরে এক প্রকার হয় না। ভিন্ন ২ শরীরে ভিন্ন ২ প্রকার হইয়া থাকে। যে ২ পদার্থ যে শরীরে ক্রিয়ার উপযুক্ত ও অনুকূল সেই শরীরে, ভুক্ত পীত বস্তু হইতে বিশ্লিষ্ট হইয়া সেই ২ পদার্থের সুক্ষ্মতম অংশই সমবেত

बिजली की शक्ति जैसा नाना प्रकार के पदार्थों में उत्पन्न होकर तार आदि संचालक पदार्थों से प्रवाहित होती है उसी रीति पूर्व्वोक्त समस्त क्रियायें मस्तिष्क या बुद्धि स्थान में उत्तेजित होके रगों में से प्रवाहित होकर तत्तत क्रिया कारक शारीरिक यंत्रों को चलाती हैं। इन सब क्रियाओं की उत्तेजना से तापादि उत्पन्न होने के हेतु मस्तिष्क वो रगों का क्षय होता है। किन्तु क्षय होने पर भी जीवनी शक्ति का बल जब लों रहे तब तक कुछ हानि नहीं होती है। हमारी पोषण क्रिया के प्रभाव करके खाये हुए या पीये हुए पदार्थों से फिर विनष्ट अंश की पुष्टि होती है। कोई वस्तु शरीर के भीतर पैठते ही, पोषण शक्ति ने उसको आत्म सात करने की चेष्टा करती है, वही चेष्टा रूप क्रिया करके संचालित होकर पाकाशय प्रभृति ने संग्रहीत वो पीया हुआ वस्तु को दबाने लगते हैं, उससे वे वस्तु सब कलेजा आदि से उत्पन्न हुए नाना प्रकार अम्ल द्रव्य से क्लीव, विश्लीष्ट वो द्रव होकर प्रथम थोड़े से अंश तो एक प्रकार का रस बन जाता है। फिर वही रस नाड़ी करके प्रवाहित होते २ फेफड़े की क्रिया से रुधिर बन जाता है। उस रुधिर में भोजन द्रव्य से संग्रहीत नाना विध पदार्थ रहते हैं औ वह रुधिर नाड़ी मार्ग करके सर्व्वदा समस्त शरीर के भीतर घुमता फिरता रहता है। उस समय मस्तिष्क, रग, हड्डी, मांस, नाड़ी, शिरा, अंत्र, तंतु, चर्म्म आदि शरीर के अवयव सब रुधिर से निज २ आवश्यकीय पदार्थ (जिन्हों से निज २ पुष्टि हो सके) ले ले कर निज२ स्वरूप की वृद्धि वो रक्षा करते हैं। मस्तिष्क तो वे सब पदार्थ को संग्रह करता है, कि जिन्हों से, उसका बनावट है। उसी रीति रग अपने अनुकूल पदार्थ, हड्डी हड्डी के अनुकूल पदार्थ, मानस मानसके उपयोगी पदार्थ को संग्रह किया करता है।

भोजन किया हुआ वो पीया हुआ वस्तु के अंश, जो कि शरीर से मिल जाते हैं, सब शरीर में एक रीति फल नहीं देते हैं। वे भिन्न २ शरीर में भिन्न२ प्रकार के हो जाते हैं। जो जो पदार्थ जिस शरीर के उपयोगी वो अनुकूल है, उस शरीर में, भोजन किया हुआ वो पीया हुआ वस्तु से विश्लीष्ट

হয়, আর অবশিষ্ট অংশ নিম্ন মল মূত্রাদি আকারে রেচিত হয়।

প্রত্যেক মনুষ্য শরীর তৈল, লবণ, শর্করা, আক্ষোট, প্রস্ফুরক, ক্ষার, চূর্ণ, লৌহ, সীসক, তাম্র, রজত, স্বর্ণাদি বিবিধ পদার্থ দ্বারা বিরচিত। সুতরাং শরীরের পুষ্টির নিমিত্ত নিয়মিত পরিমাণে ঐ সকল বস্তুর আবশ্যক হয়, কিন্তু সকল শরীরে ঐ সকল বস্তু সমান পরিমাণে থাকেনা। এ জন্য সকল শরীরে ঐ সকল পদার্থ সমান পরিমাণে আবশ্যক হয় না। কোন শরীরে হয়ত তৈলের আবশ্যক অধিক, কোন শরীরে লবণের আবশ্যক অধিক, কোন শরীরে বা শর্করার আবশ্যক অধিক ইত্যাদি। আবার কোন শরীরে ২ টার অধিক প্রয়োজন, কোন শরীরে বা ৪ টার অধিক প্রয়োজন ইত্যাদি। খাদ্য বস্তুর মধ্যে ঐ সকল পদার্থ বিদ্যমান আছে। প্রত্যেক শরীর তাহা হইতে আপন ২ উপযুক্ত অংশ গ্রহণ করিয়া থাকে। অতএব যে শরীরে তৈলের আবশ্যক অল্প, লবণ ও শর্করার আবশ্যক অধিক, সেই শরীরে খাদ্য বস্তু হইতে তৈল অল্প এবং লবণ শর্করা অধিক পরিমাণে গৃহীত হয় ইত্যাদি। কিন্তু যে শরীরে তৈলাদির আবশ্যক অল্প সেই শরীরে কেবল তৈলাদি বা অধিক তৈলাদি যুক্ত বস্তু খাইলে শরীর তাহা অধিক পরিমাণে গ্রহণ করিবে, তাহার বিশেষ কারণ আছে। যে বস্তুতে কোন বিশেষ পদার্থ অত্যন্ত অধিক পরিমাণে না থাকে সেই বস্তু সম্বন্ধেই উক্ত নিয়ম নিরূপিত আছে। ভিন্ন ২ শরীরে ভিন্ন ভিন্ন পদার্থের আবশ্যক হইবার কারণ এই যে পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে যে শরীরের ত্রিবিধ ক্রিয়া এক প্রকার পদার্থ হইতে নিষ্পন্ন হয় না। এক এক প্রকার পদার্থ ঘটিত মস্তিষ্কের অংশ বিশেষে বা স্নায়ুতে এক এক প্রকার ক্রিয়ার নিষ্পত্তি ও প্রবাহ হইয়া থাকে। পোষণ ক্রিয়া নির্ব্বাহ হইবার নিমিত্ত যে ভাবে সমবেত যে-যে পরিমাণ বিশিষ্ট যে ২ জাতীয় পদার্থের আবশ্যক, সঙ্কলন বা জ্ঞানক্রিয়া নির্ব্বাহের নিমিত্ত সেই ভাবে সমবেত সেই পরিমাণ বিশিষ্ট সেই ২ জাতীয় পদার্থের প্রয়োজন

मिलते हैं। बाकी अन्यान्य अंश सब मल मूत्र हो कर निकल जाते हैं।

प्रत्येक मनुष्य देह तेल, लवण, चिनी, आक्षोट, प्रस्फुरक, खारा, चूना, सीसा, तांबा, रूपा, सोना आदि भांति२ के पदार्थों से बना हुआ है। अतएव शरीर की पुष्टि के अर्थ नियमित परिमाण उन सब वस्तु की आवश्यकता है। किन्तु प्रत्येक शरीर में ये सब पदार्थ सम-परिमाण नहीं रहते हैं। इस लिये सब शरीर में सब पदार्थों का प्रयोजन समान नहीं होता है। किसी शरीर में तो तेल की आवश्यकता अधिक है, किसी शरीर में लवण की आवश्यकता अधिक, किसी शरीर में तो चिनी का प्रयोजन अधिक होता है। फिर किसी शरीर में दो वस्तु का वो किसी शरीर में चार वस्तु का भी प्रयोजन पड़ता है। भोजन सामग्री में यह सब अंश विद्यमान हैं, इसे प्रत्येक शरीर निज २ यथा योग्य अंश ग्रहण कर लेते हैं। अतएव जिस शरीर में तेल की आवश्यकता अल्प है औ लवण वो चिनी की अधिक है, उस शरीर में भोजन सामग्री से तेल का अंश अल्प वो लवण वो चिनी का अंश अधिक परिमाण लिये जाते हैं, किन्तु इस से यह प्रमाण न मानना कि जिस शरीर में तेल का अल्प आवश्यक है, शरीर में केवल तेल वा तेल संयुक्त सामग्री भोजन करने पर अल्प ही अंश लिया जायगा। इस अवस्था में अधिक परिमाण हो ले लेगा। जिस पदार्थ में कोई विशेष द्रव्य अधिक परिमाण न रहे उसी वस्तु में पूर्व्वोक्त नियम काम करता है। भिन्न २ शरीर में भिन्न२ पदार्थ का आवश्यक होने का कारण यह है, कि पहले ही विवृत हुआ जो शरीर की त्रिविध क्रिया एक रंग के पदार्थ से सम्पादित नहीं होती है। एक २ प्रकार पदार्थ से उत्पन्न हुआ मस्तिष्क के किसी विशेष अंश में, या रग में एक२ प्रकार की क्रिया वो उसका प्रवाह होता है। पोषण क्रिया के अर्थ जिस भाव से मिले हुए जिस परिमाण से जिस २ पदार्थ की आवश्यकता होती है, संकलन वो ज्ञान क्रिया के निमित्त उसी रीति से मिले हुए उस परिमाण उस उस प्रकार पदार्थों का आवश्यक नहीं होती है। इस लिये तीन प्रकार

তিন প্রকার পদার্থের সমষ্টী দ্বারা উপচিত তিন প্রকার স্নায়ু আছে। পোষণ ক্রিয়ার নির্ব্বাহক স্নায়ু, (Vital nerves) সঞ্চলন ক্রিয়ার নির্ব্বাহক স্নায়ু, (Moter nerves) জ্ঞান ক্রিয়ার নির্ব্বাহক স্নায়ু (Centre nerves) এই ত্রিবিধ স্নায়ু আছে, এবং উক্ত ত্রিবিধ স্নায়ুর মধ্যেও ধূসর, পাণ্ডুর ও শুক্ল (Grey, Red, and White matter) এই তিন প্রকার বিভাগাপন্ন পদার্থ আছে। (পূর্ব্বে উক্ত হইয়াছে যে) মস্তিষ্কের সমস্ত ক্রিয়াই উক্ত তিন জাতিয় ক্রিয়ার অন্তর্গত অতএব মস্তিষ্কের পদার্থও উক্ত তিন প্রকারেই বিভক্ত। তন্মধ্যে প্রত্যেক ক্রিয়ার পরস্পর কিছু ২ পার্থক্য থাকাতে মস্তিষ্কের ৪২ অংশের মধ্যেও পদার্থ সংগ্রহের অতি সূক্ষ্ম কিছু ২ ভেদ আছে। এ নিমিত্ত স্নায়ুর ন্যায় মস্তিষ্ক নানা প্রকার বা তিন জাতীয় পদার্থ সংগঠিত বলিয়া সুস্পষ্ট লক্ষিত হয় না। প্রত্যেক মনুষ্যের মস্তিষ্ক বা মনের ক্রিয়া এক প্রকার নহে। কাহারও পোষণ ক্রিয়া কিছু অধিক কাহারও সঞ্চলন ক্রিয়া, কাহারও বা জ্ঞান ক্রিয়া অধিক, কাহারও কাম বৃত্তি, কাহারও ক্রোধ কাহারও হিংসা, কাহারও দয়ার ভাগ অধিক ইত্যাদি কিছু না কিছু পার্থক্য আছেই আছে। অতএব ভুক্ত পীত বস্তু সংগ্রহেরও কিছু না কিছু ভেদ আছেই আছে। সুতরাং প্রত্যেক শরীরে বিভিন্ন মত পদার্থের আবশ্যক।

ক্রমশঃ

আর্য্য দিগের উপাসনা প্রণালী।

যদ্দ্বারা বিকৃতভাব গ্রস্ত আত্মা স্বকীয় প্রকৃতাবস্থা লাভ করিতে পারে তাহারই নাম ধর্ম্ম। আত্মার দশটী অবস্থা আছে। প্রথমাবস্থা অতিক্রম করিয়া গেলে অপর নয়টী অবস্থা ক্রমশঃ সূক্ষ্ম ২ অবস্থার পরিচয় দিয়া থাকে। দশমাবস্থাই আত্মার চরমোন্নতির স্থল। এই অবস্থাতেই আত্মার সহিত নির্ব্বিকার পরমাত্মার সমাগম বা যোগ হইয়া থাকে, এই অবস্থারই নামান্তর সমাধি। এই অবস্থারই পরিপাক হইলে আত্মার সহিত পরমাত্মার অভেদ

हुए तीन प्रकार स्नायु ना रग भी हैं। पोषण क्रिया निर्व्वाहक स्नायु (Vital nerves) संचलन क्रिया निर्व्वाहक स्नायु (Moter nerves) ज्ञान क्रिया के निर्व्वाहक स्नायु (Centre nerves) ये तीन प्रकार के स्नायु हैं। फिर यह तीन प्रकार स्नायु में भी धुधला, लाल वो शुक्ल ये तीन प्रकार के पदार्थ हैं। पूर्व्व में लिखा गया कि मस्तिष्क की सब ही क्रिया उन तीन जातिय क्रिया की अधीन है अतएव मस्तिष्क के पदार्थों भी उसी रीति तीन प्रकार के हैं। उनकों में प्रत्येक क्रिया को परस्पर कुछ भिन्नता है, इसी से मस्तिष्क के ४२ अंश में पदार्थ संग्रह का भी कुछ२ सूक्ष्म भेद है। इसी लिये मस्तिष्क जो स्नायु के न्याइ नाना प्रकार वा तीन प्रकार पदार्थों से निर्म्मित है, सो स्पष्ट देख नहीं पड़ता है। हर मनुष्य की मस्तिष्क या मन की क्रिया एक रंग नहीं है। किसी की तो पोषण क्रिया कुछ अधिक है, किसी की संचलन क्रिया या ज्ञान क्रिया कुछ अधिक है। किसी को काम वृति, किसी का क्रोध, किसी की हिंसा, किसी की दया का अंश अधिक है, इसी रीति कुछ न कुछ भिन्नता है ही है। अतएव भोजन किया हुआ या पीया हुआ वस्तु संग्रह में कुछ न कुछ भिन्नता रह ही जाती। तन्निमित्त प्रत्येक शरीर में विभिन्न पदार्थ की आवश्यकता है।

शेष आगे।

आर्य्य सज्जनों की उपासना प्रणाली।

जिस से विकार ग्रस्त आत्मा निज प्रकृत अवस्था को प्राप्त हो सके उसी का नाम धर्म्म है। आत्मा की अवस्था दश हैं। प्रथम अवस्था बीत जाने पर अवशिष्ट नौ अवस्थायें एक पर एक सूक्ष्म अवस्था का परिचय देती हैं। आत्मा की चरम उन्नति दशम अवस्था ही में होती है। इसी अवस्था में निर्व्विकार परमात्मा से आत्मा का समागम वा योग होता है। इसी का दुसरा नाम समाधि है। इसी अवस्था की प्राप्ति होने पर परमात्मा

ভাব হইয়া যায়। উপাসনার বেগ এই স্থানে আসিয়াই অবরুদ্ধ হয়।

আজ কাল "উপাসনা" বলিলে সাধারণতঃ লোকের যাহা উপলব্ধি হয়, তাহা প্রকৃত উপাসনাই নহে। দুই একটী গীত গাইলে বা হে ঈশ্বর তুমি আমার জন্য জল, বায়ু দিয়াছ, আমার ভোজনাদি যোগাইতেছ, আমার জন্য জাগিয়া বসিয়া আছ, অতএব তোমাকে নমস্কার করি, ইত্যাকার কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করিলেই উপাসনা হয় না। ঈশ্বরের স্বরূপ চিন্তন ও তাচ্চিন্তার পরম একাগ্র ভাবই প্রকৃত উপাসনা।

বিষয়ী ব্যক্তি বৃন্দ প্রতিদিন নিয়মিত উপাসনা কালে যে এক প্রকার আনন্দ অনুভব করিয়া থাকেন তাহা যোগ, সমাধি বা আত্মানন্দ নহে। উহা উপাসনার একটী সামান্য ছায়া মাত্র। ইদৃশী উপাসনা দ্বারা নিম্ন শ্রেণীর সাধকগণ অবশ্যই অনেক পরিমাণে কৃতার্থ হইয়া থাকেন কিন্তু প্রকৃত উপাসনা ভিন্ন পরমাত্মার উপলব্ধি বা তজ্জনিত নির্ম্মল অপরিচ্ছিন্ন পরমানন্দ প্রাপ্ত হওয়া কখনই সম্ভব নহে। জীব বিশুদ্ধাবস্থায় উপস্থিত হইলেই আত্মানন্দ অনুভব করিতে সমর্থ হয়েন। মানব উপাসনা করিতে বসিয়া ভক্তি ভাবের উদ্দীপক সংগীত, বা কৃতজ্ঞতা স্বীকার বা কোন প্রকার বেদার্থের চিন্তন অথবা কোন প্রকার রূপের ধ্যান কালে কখন ২ আত্ম বিস্মৃত, ইন্দ্রিয়াসক্তি রহিত, শরীর বা বাহ্য পদার্থে অভিমান বিবর্জ্জিত হইয়া যায়। ইহাতে আত্মার সাময়িক ক্ষণকাল স্থায়ী বিশুদ্ধাবস্থার আবির্ভাব হইতে পারে। এই জন্য তৎ কালে আত্মার ক্ষণ কাল ব্যাপী এক প্রকার অপূর্ব্ব আনন্দেরও উদ্ভব হইয়া থাকে। হা! ইন্দ্রিয়ের আসক্তি ও শরীরের প্রতি মমতার ক্ষণ জন্য অভাব হইলে যদি উক্ত অতুল আনন্দের তরঙ্গ উঠিয়া মানবকে মাতাইয়া দেয়, না জানি, যাঁহারা এককালে বিষয় বাসনা পরিহার করিয়া, মমতার দুশ্ছেদ্য পাশ ছিন্ন করিয়া, অভিমানকে ব্রহ্ম স্বরূপ সাগরে বিসর্জ্জন দিয়া সংসারের প্রতি সম্পূর্ণ উপেক্ষা করিয়া আত্মার ধ্যানে একান্ত নিবিষ্ট, তাঁহারা কি অপূর্ব্ব নিত্য নিরবচ্ছিন্ন আনন্দই ভোগ করিতেছেন।

से आत्मा का अभिन्न भाव हो जाता है। उपासना की गति यहां ही आ रुक जाती है।

आज कल "उपासना" इतनाही कहने पर, लोगों का जो कुछ सूझ पड़ता है, वह तो प्रकृत उपासनाही नहीं है। दो एक भजन गावने से अथवा 'हे ईश्वर तू ने मेरे लिये जल, वायु बनाया है, मेरे भोजनादि दे रहा है, मेरे लिये सदैव जाग्रत रहता है अतएव मैं तुझे नमस्कार करता हूं" इस भांति कृतज्ञता प्रकाश करनेही से उपासना नहीं होती है। ईश्वर के स्व-रूप का चिन्तन वो उस चिन्ता के परम एकाग्र भावही को प्रकृत उपासना कही जाती है।

विषयी लोग प्रति दिन नियमित उपासना के समय एक प्रकार का आनन्द अनुभव किये करते हैं परन्तु वह योग, समाधि वा आत्मानन्द नहीं है। उसको उपासना की एक सामान्य छाया मात्र जानना। निम्न श्रेणी के साधक गण इसी उपासना के द्वारा अवश्यही अपने अपने को अतीव कृतार्थ मानते होंगे। किन्तु परमात्मा का अनुभव अथवा उसका निर्म्मल अपरिच्छिन्न परमानन्द प्राप्त होना प्रकृत उपासना बिना कभी सम्भव नहीं। विशुद्ध अवस्था में पहुंचने ही से जीव आत्मानन्द अनुभव कर सक्ते हैं। मनुष्य ने उपासना के समय भक्ति भाव को बढ़ावने वाली संगीत या कृतज्ञता स्वीकार वा किसी प्रकार वेदार्थ का चिन्तन अथवा किसी प्रकार रूप के ध्यान काल में कभी२ अपने को भूल जाते हैं, शरीर या बाह्य वस्तु का अभिमान छोड़ देते हैं, इन्द्रियासक्ति रहित भी हो जाते हैं। इसी से थोड़ी घड़ी के लिये आत्मा की विशुद्ध अवस्था हो सक्ती है, औ इसी से उस समय क्षण भर के निमित्त कैसा तो एक अपूर्व्व आनन्द उपजता है। अहो! इन्द्रियों की आसक्ति वो शरीर की ममता क्षण भर के निमित्त छूट जाने ही से यदि पूर्व्वोक्त अतुल आनन्द का लहर उठ कर मनुष्य को उन्मत्त करे तो न जाने कौन सा अपूर्व्व वो नित्य विच्छेद रहित आनन्द वे लोग भोग करते हैं जिन्हों ने एक बारगी विषय वासना को छोड़ करके, ममता का दुश्छेद्य पाश तोड़ करके, अभिमान को ब्रह्म रूप समुद्र में विसर्ज्जन दे करके, संसार को सम्पूर्ण त्याग करके आत्मा के ध्यान में अत्यन्त मग्न

বিরলে বসিয়া বিচিত্র সুখানুভবে পাগল হইয়াই কি যোগীবর! তুমি লোক সমাজ পরিহার পূর্ব্বক গিরির গুপ্ত গুহায় নিবাস করিতেছ? সংসার তোমার জ্ঞান গম্ভীর মুখের দিকে তাকাইয়া মনে ২ কতই আশা করিতেছে, কিন্তু তুমি যে স্বকীয় সত্ত্বা কোন্ মহীয়সী অনন্ত সত্ত্বায় ডুবাইয়া রাখিয়াছ, তাহা কে জানে! তুমি আমাদের অগোচরে বসিয়া দেব, দানব, মানব সকলের অগোচর পূর্ণ স্বরূপের সঙ্গে আনন্দ ভোগ করিতেছ! বাসনা, অপবিত্রতা আদি কেহ তোমার তেজ প্রভাবে তোমার নিকট যাইতে পারে না! ভো সাধো গিরি কন্দরে কিমমৃতম্পিবসিত্ত্বমেকো॥ (হে সাধো তুমি গিরি কন্দরে বসিয়া কি অমৃত পান করিতেছ?)

আত্মার বিশুদ্ধাবস্থা লাভ করিবার জন্য সাধক গণ পূরক, কুম্ভক ও রেচকাত্মক কৃচ্ছ্র সাধ্য প্রাণায়াম ও ভক্তি পূর্ব্বক, ঈশ্বরের আরাধনা এতদ্দুয়ের অন্যতরটী অবলম্বন করিয়া থাকেন। "ঈশ্বর" অর্থে পাঠক মহোদয় গণ "ব্রহ্ম" বিবেচনা করিবেন না। আত্মার স্ফটিক স্বচ্ছ বিশুদ্ধ অবস্থায় যে ব্রহ্মের উপলব্ধি হইয়া থাকে, আত্মাকে বিশুদ্ধ করিবার সময় সেই ব্রহ্মের সত্ত্বানুভব হওয়া কখনই সম্ভব নহে। ঈশ্বর বলিলেই সগুণ ব্রহ্ম বা ব্রহ্মের মায়াবচ্ছিন্ন ভাবকে বুঝাইয়া থাকে। এই ঈশ্বরের আরাধনা করিতে ২ মনুষ্যের আত্মাতে নির্গুণ ব্রহ্মের প্রতিবিম্ব পতিত হইতে থাকে।

বর্ত্তমান আর্য্য ধর্ম্মাবলম্বী দিগকে অনেকে "পৌত্তলিক" বলিয়া নিন্দা করেন। নিন্দাকারী গণতো নিতান্তই ভ্রান্ত আবার আর্য্য ধর্ম্মী গণ ততোধিক ভ্রান্ত। কেননা নিন্দাকারী গণ না বুঝিয়া নিন্দা করেন ও শেষোক্ত গণ উক্ত তিরস্কারকে নিন্দা বলিয়া স্বীকার করেন। হায়! যে ভাবে আমাদের দেশে মূর্ত্তি পূজার প্রাদুর্ভাব হইয়াছে, সে ভাবে মূর্ত্তি পূজা করিতে পারিলে আবার নিন্দা কি! বরং উহা গৌরব বলিয়া নত মস্তকে সাধু গণ স্বীকার করিয়া থাকেন। মূঢ় গণ মূর্ত্তিতে ব্রহ্মবুদ্ধি স্থাপন করাকে দোষাবহ মনে করে, কিন্তু জড় মূর্ত্তিতে ব্রহ্মের উপলব্ধি করা যাহার তাহার

हुए हैं। विरले में बैठ कर विचित्र सुखों के अनुभव से क्या, हे योगीवर! आपने लोक समाज को त्याग करके गिरिवर के गुप्त गुहे में जा निवास करते हो? संसार ने आप के ज्ञान गम्भीर मुंह की ओर ताक के मने मन कितनी ही आशा की करती है, किन्तु आप ने निज सत्वा को किस महीयसी अनन्त सत्वा में छिपा रखे हैं, सो कौन विदित है! आप हमारे अगोचर में बैठ कर देव, दानव, मानव आदि सब के अगोचर पूर्ण स्वरूप के संग आनन्द भोग कर रहे हैं! वासना, अपवित्रता आदि कोई भी आप की तेज के समीप जा नहीं सक्ती है।

भो साधो! गिरि कन्दरे किममृतं पिबसित्वमेको?
हे साधो आप पर्व्वत के कंदरे में बैठ कर कौन सी अमृत पी रहे है?

साधक जन आत्मा की विशुद्ध अवस्था की लाभ करने के हेतु कष्ट साध्य प्राणायाम याने पूरक, कुम्भक वो रेचक अथवा भक्ति पूर्व्वक ईश्वर की आराधना करते हैं। "ईश्वर" इस शब्द का अर्थ पाठक गण न सोचें कि "ब्रह्म" है। आत्मा की स्फटिक स्वच्छ विशुद्ध अवस्था में जिन ब्रह्म की उपलब्धि होती है, आत्मा को निर्म्मल करने के समय उस ब्रह्म की सत्वा कभी अनुभव होनेवाली नहीं। ईश्वर शब्द का अर्थ सगुण ब्रह्म वा ब्रह्म का मायावच्छिन्न भाव है। इन ईश्वर की आराधना करते २ मनुष्य के आत्मा में निर्गुण परमात्मा का प्रतिबिम्ब आ गिरता रहता है।

आज काल के आर्य्य धर्म्मावलम्बियों को बहुतेरे लोग मूर्त्तिपूजक करके निन्दा करते हैं। निन्दाकारी तो निपट भ्रान्त हैं, फिर आर्य्य धर्म्मी गण भी बढ़ चढ़ के भ्रान्त हैं, क्योंकि निन्दाकारी गण बिना समझे निन्दा करते है और शेषोक्तगण उस तिरस्कार को निन्दा करके मान लेते हैं। हा! जिस भाव से हमारे देश में इस मूर्त्तिपूजा का प्रादुर्भाव हुआ है, उस भाव से यदि किसीने मूर्त्तिपूजा कर सके तो फिर निन्दा क्या, बरं साधु सज्जन गण सिर झुकाकर उस बातको अपना गौरव कर मान लेते हैं। मूर्त्ति में ब्रह्मबुद्धि स्थापन करना मूढ़ गण दोष मानते हैं, किन्तु जड़ पदार्थ में ब्रह्म भाव

হয়, তবে শুক, নারদ, ভৃগু, জনক যাজ্ঞবল্ক্য আদিই প্রকৃত পৌত্তলিক ছিলেন। হা! আমরা দুর্ভাগ্য ক্রমে মূর্ত্তিতে দারু, শিলা, মৃত্তিকাদির অনুভব করিয়া থাকি, আমরা শালগ্রাম, কৃষ্ণ, কালী আদি মূর্ত্তিকে কৈ যথার্থ ব্রহ্ম বোধে পূজা করিতে পারি! হা! তাহা হইলে কি তাঁহাদের ভিন্ন ২ বোধে প্রাণ প্রতিষ্ঠা ও বিসর্জ্জন করিতাম? তাহা হইলে কি গৃহমধ্যে দেবতাকে প্রতিষ্ঠিত জানিয়াও কুচিন্তা ও কুকার্য্যে রত হইতাম! হা সে দিন আমাদের শুভ দিন, সে দিন আমাদের সৌভাগ্যের দিন, সেই দিন আমাদের মুক্তির দ্বার উদ্‌ঘাটিত, সেই দিন ভারতে পুনর্ব্বার "একমেবাদ্বিতীয়ং" ধ্বনি এক তান স্বরে গীত হইবে. যে দিন আমরা পুত্তলিকাতে ব্রহ্মবোধ করিব, যে দিন আমরা প্রকৃত পৌত্তলিক হইতে পারিব। সেই দিন আমাদের বিষ্ঠা চন্দনে সমভাব, সেই দিন আমাদের আপন ও পরে অভেদ বুদ্ধি বিকশিত হইবে! যিনি প্রকৃত পৌত্তলিক তিনিই ধন্য!!!

ক্রমশঃ

কি ছিল কি হইল!

মাতর্ভারতভূমি!—এক সময় তোমারই জনৈক পুত্র স্বীয় অন্তরের গভীরতম স্থান হইতে চীৎকার করিয়া বলিয়াছিলেন "জননী জন্ম ভূমিশ্চ স্বর্গাদপি গরীয়সী।" বস্তুতই তাঁহারা স্বর্গকেও তোমার নিকট সামান্য জ্ঞান করিতেন কিন্তু সেই মহাত্মার বংশধর গণের মধ্যে তুমি কি আজ সে ভাব দেখিতে পাও? তোমার পুত্রগণের মধ্যে অনেকে তোমার শ্রীবৃদ্ধি সাধন জন্য সময়ে ২ বিবিধ বাগাড়ম্বর করিয়া থাকেন কিন্তু কার্য্য ক্ষেত্রে অনুসন্ধান করিলে তো আর কাহাকেও দেখিতে পাইনা। তোমার সন্তান গণ এক সময় যে সকল কার্য্য দ্বারা তোমাকে পৃথিবীর সর্ব্বোচ্চ আসনে বসাইয়া ছিলেন অধুনা কি আর তাঁহাদের সে সকল কার্য্যে যত্ন আছে? যত্ন থাকা দূরে থাকুক, আমি যতই তন্ন ২ করিয়া দেখিতে যাই বরং সে সকলে তাঁহাদের ততই উপেক্ষা দেখিতে পাই। কৈ ভারতীয় রীতি নীতিকে আর কাহারও

देव, नारद, भृगु, जनक, याज्ञवल्क्य आदिही सब यथार्थ मूर्त्ति पूजक थे। हा! दुर्भाग्य हमारा है कि हम मूर्त्ति को दारु, शिला वा मृत्तिका कर अनुभव करते हैं। हम कहां श्रीशालग्रामजी, श्रीकृष्ण, काली आदि मूर्त्ति को ब्रह्म भाव से पूजन कर सक्ते हैं? अहो! यदि ऐसाही होता तो क्या हम फिर उन सबको भिन्न २ भाव से प्राण प्रतिष्ठा वो विसर्ज्जन देते? फिर गृह के मध्य में देवता को प्रतिष्ठित जानकर भी क्या हम कुचिन्ता वो कुकार्य्यों में प्रवृत्त होते? हा! वह दिन तो हमारा शुभ दिन है, वह दिन तो हमारे सौभाग्य के दिन है, उस दिन तो हमारी मुक्ति की द्वार खुल जायगी, उसी दिन भारतवर्ष में पुनर्व्वार "एकमेवाद्वितीयं" की ध्वनि एक तान से गायी जायगी, जिस दिन हम सत्यहीमत्य मूर्त्ति पूजक बन सकेंगे। उसी दिन हमारा विष्ठा चन्दन में समान भाव होगा, उसी दिन अपना वो बेगाना यह भेद बुद्धि उड़ जायगी। वेही धन्य हैं जिन्हों ने प्रकृत मूर्त्ति पूजक बनचुके हैं।

शेष आगे।

हा! क्या था फिर क्या हुआ!

मातर्भारतभूमि! एक समय में तेरे ही किसी पुत्रने निज अन्तःकरण के गम्भीर स्थान से पुकार कर कहा था "जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"। वस्तुतः उन्हों ने तेरे सामहने स्वर्ग को भी तुच्छ मानते थे, किन्तु हा! उन महात्माओं के कुल के किसी पुरुष में वैसा भाव क्या अब तुझे देखने मिलती है? तेरे पुत्रों में बहुतेरे व्यक्ति तेरी उन्नति के निमित्त समय २ में भांति २ के वागाडम्बर मचाते रहते हैं, किन्तु कार्य्य क्षेत्र में खोजने पर किसी को पता नहीं लगती है। जिस २ दिव्य कार्य्य से तेरे पुत्र गण एक समय तुझको सबसे उंची सिंहासन पर सुशोभित कर रखे थे आज कल क्या फिर वह सब कार्य्य में किसी का यत्न देख पड़ता है? यत्न करना तो किनारे रहा, हम जितनेही भली भांति देखते हैं, उन्हीं को उपेक्षाहि अधिक तर देख पड़ती है। भारतीय रीति नीति पर किसी का आदर नहीं देखा जाता

তো আদর দেখিতে পাইনা। ভারতীয় ভাষা (সংস্কৃত) সর্ব্বোৎকৃষ্ট বলিয়া পরিগণিত হইলেও তাহার আশানুরূপ অনুশীলন দেখিতে পাই না কেন? পূর্ব্বের ন্যায় আর সে ভাষায় পুস্তকাদি রচিত হওয়া একবারে বন্ধ হইল কেন? বিদেশীয় ভাষার ন্যায় ভারতীয় ভাষা আর কেহ যত্ন সহকারে পড়িতে চায় না। হায়! এই জন্যই বোধ হয় বিদেশীয় ভাষা প্রয়োগ না করিলে বক্তব্য বিষয় শ্রোতৃ বর্গের বোধ গম্য করাইতে বক্তার আজ কাল এত কষ্ট হইয়া থাকে। সময়ের স্রোত কে নিবারণ করিবে? এক্ষণে সামান্য শিশু স্বদেশীয় ভাষা পরিত্যাগ করিয়া বিদেশীয় ভাষায় গালি বর্ষণ করিয়া থাকে। আত্মীয় স্বজনকে স্বদেশীয় ভাষায় পত্রাদি লিখিতে লোকের লজ্জা হয়। স্বদেশীয় ভাষায় কথোপকথন করিতে ২ বিদেশীয় ভাষার ২।৪ টা কথা সম্মিলন করিতে না পারিলে লোক মূর্খ বলিয়া থাকে এবং সংস্কৃত ভাষাভিজ্ঞ সুপণ্ডিত হইলেও কৃত বিদ্য বলিয়া পরিগণিত হন না। পূর্ব্বের ন্যায় ব্রাহ্মণগণ আর বেদ পাঠ করেননা, হিন্দু বলিয়া পরিচয় দিলে লোকে ঘোর কুসংস্কার বিশিষ্ট জ্ঞান করে। অপরের কথা আর কি বলিব কত ২ ব্রাহ্মণ ব্রহ্ম নিষ্ঠা পরিত্যাগ করিয়া ম্লেচ্ছ ভাব ধারণ করিয়াছেন। শাস্ত্রের অবমাননা করিয়া, অখাদ্য ভোজন করিয়া লোকে কতই স্পর্দ্ধা করিয়া থাকে। হায়! দেশ, কাল, পাত্র বিবেচনা করিয়া বিজ্ঞান ঐ সকল খাদ্য আমাদের অস্বাস্থ্যকর বলিলেও লোকে গ্রাহ্য করেনা। তোমার দুর্দ্দশা দেখিয়া তোমারই পুত্রগণ তোমাঅপেক্ষা তোমার সপত্নীর সমধিক সমাদর করিয়া থাকেন। তোমার সপত্নী তোমার পুত্রগণকে স্বীয় অধিকারে পাইয়া যে কি কুহক জালে মোহিত করে তাহা ভাবিয়া চিন্তিয়া স্থির করিতে পারিনা। হায়! যখন তাঁহারা আবার তোমার নিকট প্রত্যাগমন করেন তখন তোমাকে বিমাতা জ্ঞান করেন, তোমার হীনবল পুত্রগণকে ঘৃণা করেন, তোমার সপত্নীকে মাতা বলিয়া উল্লেখ করেন অধিক কি বলিব পীড়িত হইলে স্বাস্থ্যলাভ বাসনায় তোমার সপত্নীর নিকট

है। भारतीय भाषा (संस्कृत) चाहे सब से उत्तम क्यों न हो, इस की चर्चा यथा रीति कोई भी नहीं करता है। पूर्व्व के न्याइ उस भाषा में ग्रन्थ आदि प्रचार होना क्यों बंध हो गया? भारतीय भाषा को विदेशी भाषा के समान कोई भी आदर सहित पढ़ने नहीं चाहता है। हा! इस्मीथ व्याख्याता अब का भी इसी लिये निज वक्तव्य बिषय के तात्पर्य श्रोताओं को समझाने के अर्थ विदेशी भाषा के थोड़ी बहुत सहायता बिना अत्यन्त असुविधा होती है। काल की गति को कौन रोके? आज काल के लड़के भी निज भाषा छोड़ के विदेशी भाषा में गाली बकने लगते हैं। अपने जनों को निज भाषा में पत्र व्यवहार करने में भी लोगों को लज्जा बोध होता है। स्वदेशी भाषा में वार्त्तालाप करते २ यदि कोई दो चार शब्द विदेशी न मिलाइ तो उस को सब कोई मूर्ख मान लेते हैं। यदि संस्कृत भाषा में कोई सुपण्डित भी हो तब भी वे "कृतविद्य" जनों में नहीं गिने जाते हैं। पूर्व्व के न्याइ ब्राह्मणगण आज काल यथा रीति वेद का पठन नहीं करते हैं। "मैं हिन्दू हूं" इतना कहने पर मनुष्य कुसंस्कारी करके आख्यात होता है। दुसरे की बात छोड़ दीजिये कितने ब्राह्मणों ने ब्रह्म निष्ठा त्याग करके म्लेच्छ भाव धारण कर चुके हैं। शास्त्रों की अमर्य्यादा कर के, अखाद्य भोजन करके लोगों ने कितने ही फूले फलाये रहते हैं। देश, काल, पात्र को विचार करके विज्ञान शास्त्र उस को शरीर का हानिकारक मान निषेध करे पर भी लोगों ने कहां मानते हैं। तेरी दुर्द्दशा देख कर तेरे ही पुत्र गण तुझ से अधिक करके तेरी सपत्नी को आदर करते हैं। तेरी सपत्नी निज अधिकार में तेरे पुत्रों को पा करके कौन सी माया फैला कर मोहित करती है, यह तो मेरी बुद्धि में कुछ भी न सुझ पड़ती है। हा! वे सब फिर तेरे समीप लौटने पर तुझ को विमाता कर जान जाते हैं, तेरे यहां के दुर्ब्बल पुत्रों को घृणा करते हैं, तेरी सपत्नी को माता मान लेते हैं। अधिक क्या, रोगग्रस्त होने पर आरोग्य की वासना से तेरी सपत्नी ही के पास चले

গমন করেন। কিন্তু রহস্যের বিষয় এই যে তথাচ তোমার সপত্নী অথবা সপত্নীপুত্রেরা তাহাদিগকে ঘৃণা করিতে ত্রুটী করেনন। সুরুচী যেমন ধ্রুবকে বলিয়াছিলেন, যে রে ধ্রুব! যদি উত্তানপাদ রাজার অঙ্কে উঠিবার অভিলাষ কর, তাহা হইলে গহন বনে গমন করিয়া এই তপস্যা কর যেন মৃত্যুর পর আমার গর্ব্ভে তোমার জন্ম হয়। এই বাক্য শুনিয়া ধ্রুবের অন্তরে যে রূপ ধিক্কার হইয়াছিল তোমার সপত্নীর অনুগত পুত্রগণেরও সেইরূপ হইয়া থাকে। "আত্মবৎ সর্ব্বভূতেষু" এই সারবান পবিত্র প্রেমময় নিয়মটীর আর আদর দেখিতে পাইনা। এক্ষণে সংসার শ্লাঘাপূর্ণ। জগৎ ধ্বংশ হয় হউক তাহাতে ক্ষতি কি। আমি ও আমার পরিবার বর্গ সুখে স্বচ্ছন্দে সংসার যাত্রা নির্ব্বাহ করিতে পারিলেই হইল। তাহাই সুখের পরাকাষ্ঠা। মাত! তুমি কি ছিলে কি হইলে। চিরদিন একরূপ যায়না। "চক্রবৎ পরিবর্ত্তন্তে সুখানিচ দুঃখানিচ"।

বাল্যকালে বালকের বাক্য স্ফূর্ত্তির সঙ্গে ২ দেশীয় বর্ণ পরিচয়ের পরিবর্ত্তে তদীয় হস্তে ইংরাজি ফার্ষ্ট বুক্ অর্পিত হয়। বিদেশীয় ভাষা পাঠের সঙ্গে ২ বিদেশীয় ভাব সকল বালকের অন্তরে, বদ্ধ মূল হইয়া থাকে। পাঠ সমাপ্ত হইবার সময় বিদেশীয় প্রকৃতি দেশীয় প্রকৃতির স্থান লাভ করিয়া থাকে সুতরাং তাঁহারা যে বিদেশীয় ভাষা বা বিদেশীয় বিজ্ঞান অথবা বিদেশীয় গ্রন্থকর্ত্তাগণকে আমাদের বলিয়া উল্লেখ করিবেন তাহাতে আশ্চর্য্য কি? সদ্‌গুণ অনুকরণ করা সহজ নহে। ইংরাজকে অনুকরণ করিতে গিয়া লোকে তাহার স্বদেশ হিতৈষিতা, সাহস, একতা প্রভৃতি সাধুভাব গুলি পরিত্যাগ করিয়া তদীয় আসুরিক ভাব গুলির আশ্রয় গ্রহণ করে আর্য্য গণের রীতি নীতি মানিতে গেলে উদার শিক্ষা নীতিতে (Liberal Education) যে কলঙ্ক আরোপ করা হয় কেননা সে সমস্তই অতি প্রাচীন ও কুসংস্কার বিশিষ্ট। যখন ইংরাজকে প্রত্যহ সুরাপান করিতে দেখা যাইতেছে তখন আর্য্যগণ মদ্য পানকে মহাপাতক বলিলে কি রূপে তাহার বিশ্বাস করা যায়। আর্য্যেরা একরূপ নির্ব্বোধ যে

जाते हैं, किन्तु उस में गूढ़ रहस्य तो यह है, जो तेरे सपत्नी वो सपत्नी के पुत्रगण इन मातृहृदया-ओं को घृणा करने में त्रुटी नहीं करते हैं। सुरुची ने ध्रुव को उपदेश करी, कि रे ध्रुव! यदि उत्तानपाद राजा के अंक पर उठने का अभिलाष रहै, तो गम्भीर बन में जा कर इस संकल्प से तपस्या करना कि मृत्यु के अनन्तर मेरे ही गर्भ में तेरा जन्म हो। इतना सुन कर ध्रुव महाराज के चित्त में जैसा धिक्कार हुआ था, तेरी सपत्नी के अनुगत पुत्रों का भी ऐसाही ताप होता है। "आत्मवत् सर्व्व भूतेषु" इस सारवान पवित्र प्रेम से पूर्ण नीति का आदर और अब देख नहीं पड़ता है। आज कल संसार तो श्लाघा से पूर्ण है। संसार चाहे रहे या विनष्ट हो, कुछ भी चिन्ता नहीं। हम वो हमारे अपने जन सब का आनन्द पूर्व्वक दिन काटने ही से सम्पूर्ण सुख है। हे जननी! तेरी दशा पहले क्या थी अब यह क्या हुइ! चिर दिन समान नहीं काटते हैं। चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानिच दुःखानिच।"

लड़कपन में बालक को वाणी उच्चारण होते न होते देशी पहली पुस्तक के बदले अंगरेजी फार्ष्ट बुक पढ़ने को दी जाती है। विदेशी भाषा पढ़ते२ विदेशी भाव राशि भी बालक के चित्त में असार कर जाते हैं। पाठावस्था का शेष होते न होते उस के ढंग कुछ औरही प्रकार को हो जाता है। विदेशी प्रकृति देशी प्रकृति के स्थान अधिकार कर लेती है। अतएव उन्हों ने जो विदेशी भाषा, विदेशी विद्या अथवा विदेशी ग्रन्थकारों को अपने करके मानेंगे इस में क्या आश्चर्य्य है? दिव्य गुण की कोइ देखा देखी शीघ्र नहीं मिलता है। लोगों ने अंगरेजों का अनुकरण करते हैं सही, किन्तु उनकी देश हितैषिता, साहस, एकता आदि साधु गुण मण्डली को छोड़कर उसके आसुरिक भाव को आश्रय कर लेते हैं। आर्य्य महात्माओं रीति नीति यदि मानी जाय तो आज कल के सभ्य जनों के मतानुसार (Liberal Education) उदार शिक्षा नीति पर कलङ्क लगता है, क्योंकि वह समस्त अति प्राचीन वो कुसंस्कार से पूर्ण है। अंगरेजों को प्रति दिन तो सुरा पीने को हम देखते हैं, अतएव आर्य्य गण जो मद्यपान को महा

স্বীয় পরমারাধ্যা সহধর্ম্মিনী অপেক্ষা পিতামাতাকে পরম দেবতা জ্ঞানে পূজা করিতে উপদেশ দেন। দেশ, কাল, পাত্র বিবেচনা করিয়া সকল কার্য্য করিতে আর্য্য ঋষিগণ উপদেশ দিয়াছেন। আজ কাল যে সময় পড়িয়াছে, বিশেষতঃ আমাদের যে রূপ শক্তি ও সাহস তাহাতে আত্মরক্ষা করিতে গিয়া সময়ে সময়ে বিপন্ন হইয়া থাকি সত্য, কিন্তু যখন ইংরাজ স্ত্রী স্বাধীনতার পক্ষপাতী তখন কি অস্মদ্দেশীয় স্ত্রী লোক গণকে অন্তঃপুরে অবগুণ্ঠনাবদ্ধ করিয়া রাখা উচিত? ইংরাজ সমাজে জাতিভেদ নাই, অথবা ইহা তথায় যে আকারে বিদ্যমান আছে তাহাই আপনার সমাজে প্রচলিত করিবার জন্য সতত সচেষ্ট। সেই বিদেশীয় বুদ্ধি পরবশ হইয়াই সিদ্ধান্ত করা হইয়াছে যে কেবল জাতি ভেদই আমাদিগকে একতা সূত্রে বদ্ধ হইতে দিতেছেনা কিন্তু আক্ষেপের বিষয় এই যে এদেশে যাঁহারাই জাতি ভেদ ত্যাগ করিয়াছেন, একতা অপেক্ষাকৃত তাঁহাদেরই নিকট হইতে দূরে বাস করিতেছে। অপরের কথা দূরে থাকুক, তাঁহারা স্বীয় ২ আত্মীয় স্বজন অথবা সহোদর গণকেও সময়ে ২ সুহৃদরূপে পরিগণিত করিতে পারেন না। পাছে আলস্যের প্রশ্রয় দেওয়া হয় এইভয়ে সামর্থহীন আত্মীয় স্বজনের সাহায্য করিতে অগ্রসর হইতে কুণ্ঠিত হন। একে মিল, কমটী আদি পাঠ করিয়াছেন, তাহাতে আবার ধর্ম্মের আলোচনা করিলে পাছে কৃতবিদ্য সমাজে চিহ্নিত হইতে বিঘ্ন হয় সেই ভয়ে ধর্ম্ম বার্ত্তা শ্রবণে, ধর্ম্ম সভায় গমনে কিম্বা ধর্ম্ম বিষয়ক পুস্তকাদি পঠনে প্রবৃত্তি নাই। সৌভাগ্য ক্রমে যদি কাহারও ধর্ম্ম সাধনে মতি হয়, তিনি আর্য্য দিগের আচরিত পথ পরিত্যাগ করিয়া স্বাধীন ভাবে তাহা সম্পন্ন করিতে সচেষ্ট হন। আর্য্য ঋষি গণ ধর্ম্ম সাধন জন্য স্ত্রী, পুত্র আত্মীয়, স্বজন, ধন সম্পত্তি, বন্ধু বান্ধব এবং অধিক কি স্বীয় প্রাণ পর্য্যন্তও পরিত্যাগ করিতে কদাচ কুণ্ঠিত হন নাই কিন্তু তাঁহাদিগকে শ্রেষ্ঠ জ্ঞান করিয়া তাহাদের প্রদর্শিত পথ অবলম্বন করিলে পাছে স্বীয় বুদ্ধিমত্তার লঘুত্ব প্রমাণীকৃত হয় এই ভয়ে তাহাদের প্রচারিত

पाप कहते हैं सो हम विश्वास नहीं कर सक्ते। आर्य्य लोग तो ऐसे मूढ़ थे, कि निज परमाराध्या सहधर्म्मिनी को छोड़ कर पिता माता को परम देवता मान के पूजा करने कह गये। देश, काल पात्र विचार कर के कार्य्य करने के अर्थ आर्य्य लोगों ने उपदेश दे गये। हम मानते हैं कि आज कल जैसा समय आ पड़ा है, वो हमारो बल वो साहस ऐसे हैं कि आत्म रक्षार्थ भी असमर्थ है किन्तु अंगरेज लोग जब स्त्री स्वाधीनता का पक्ष करते है, तो हम क्या हमारी स्त्रीगण को फिर अन्दर के परदे में डाले रखेंगे? अंगरेज लोग वर्ण भेद नहीं मानते हैं अथवा जिस रीति से वे मानते है उसी रीति यहां भी चलाना चाहिये। विदेशी बुद्धि के वश होकर यह सिद्धान्त किया गया है, कि हम सब को एकता न होने का वर्ण भेद ही एक मात्र कारण है किन्तु दुःख का विषय यह है कि यहां जितने लोग वर्ण भेद को नहीं मानते हैं, एकता उन्हीं लोग से दूर भागी फिरती है। दुसरे की बात तो दूर रहो, निज २ सम्बन्धी वो भाइयों को भी सुहृदों में नहीं गिनसे सक्ते हैं। आलस्य को वृद्धि न होने पावे इसी युक्ति से सामर्थ्य विहीन अपने जनों को सहायता करने को भी आगे नहीं बढ़ते हैं। मिल, कमठी आदि पढ़ कर यदि धर्म्म चर्च्चा में ध्यान धरें तो आज कल के विद्वानों के मध्य में गिने जाना कुछ कठिन है, इसी भय से धर्म्मार्थ वार्त्ता सुनने को, धर्म्म सभा में जाने को किंवा धर्म्म संबन्धी पुस्तकें पढ़ने को प्रवृत्त नहीं होते हैं। यदि सौभाग्य करके किसी पुरुष को धर्म्म में मति हो भी तो उन्हों ने आर्य्य सज्जनों को आचरित मार्ग को छोड़ कर निज रुचि के अनुसार स्वाधीन भाव से धर्म्माचार करने लगता है। आर्य्य ऋषि गण धर्म्म के अर्थ स्त्री, पुत्र, आदि स्वगण, धन, विभव, बन्धु, बान्धव अधिक क्या निज प्राण तक भी छोड़ने में संकोच नहीं मानते थे, किन्तु उन्हीं को श्रेष्ठ मान कर उन्हीं की चलाई हुई पंथ में चलने पर अपनी बुद्धि की बड़ाई में कुछ टुटी आ सक्ती, इसी डर से उन्हीं की बनाई हुई पुस्तक पढ़ने में भी प्रवृत्त नहीं करते हैं।

পুস্তকাদি পাঠ করিতেও কেহ প্রয়াস পান না। তাহাতেই বলি, ভারত! তুমি কি ছিলে কি হইলে! এই খানে একজন মহাত্মার একটি কথা স্মরণ হইল, সেইটি উল্লেখ করিবার ইচ্ছা হইতেছে।

কলিকাতা হইতে কাশীধামে যাইতে হইলে হয় বাস্পীয় রথে না হয় নৌকারোহণে জল পথে অথবা গ্রাণ্ড ট্রঙ্ক রোড্ দিয়া পদব্রজে সচরাচর লোকে গমন করিয়া থাকেন, কেননা তাঁহাদের ইহা স্থির সিদ্ধান্ত আছে যে সেই সকল পথে কোন বিপদ নাই এবং যাত্রী গণ সেই ২ পথ অবলম্বন করিয়া নিয়মিত সময়ে গন্তব্য স্থানে উপস্থিত হইয়া থাকেন। কিন্তু যদি কোন ব্যক্তি একখানি ভারতবর্ষের মানচিত্র সম্মুখে রাখিয়া কলিকাতা হইতে কাশী পর্য্যন্ত একটী সরল রেখা টানিয়া সেই পথ অনুসরণ করে তাহা হইলে কি সেই ব্যক্তি বুদ্ধিমানের কার্য্য করিবে? কখনই নহে। তিনি সক্ষম, সাহসী ও প্রকৃত শক্তি শালী হইলে সমস্ত বাধা বিঘ্ন অতিক্রম করিয়া পৌঁছিলেও পৌঁছিতে পারেন কিন্তু ভারতে সেরূপ লোক কয়জন আছেন যে পথের নদ, নদী, পর্ব্বত অরণ্য হিংস্রজন্তু জন্যবাধা অতিক্রম করিয়া তথায় উপস্থিত হইতে পারেন। যদি তাহাও কেহ পারেন ক্ষুধার সময় খাদ্য ও তৃষ্ণার সময় জল না পাইয়া পথিমধ্যেই প্রাণ ত্যাগ করিতে হয়। সাধু তাহাতেই শিষ্যকে উপদেশ দিয়াছিলেন যে, যে পথ দিয়া রাশি ২ যাত্রী গণ গন্তব্য পথে পৌঁছিয়াছেন, সেই পথে গমন কর। সে পথে খাদ্য বা বারি অথবা অন্য কোন ভয় কিছুই নাই। অতএব সত্য সনাতন সুন্দর পথ পরিত্যাগ করিও না।

ত্রাহি মাং।

হা কি হইল! প্রাণ, মন, দেহ যে অবসন্ন হইয়া পড়িল! অনন্ত পথে অবিশ্রান্ত পর্য্যটনে নিতান্ত কাতর হইয়া পড়িয়াছি। আমি বড় বিপদ গ্রস্ত। যদি নিকটে কেহ থাক, আমাকে রক্ষা কর। আমি গতি শক্তি বিহীন। অকস্মাৎ স্বপ্নের আবেশে আমি নিজ ধাম পরিত্যাগ করিয়া কত দিন যে পথে ২ ঘুরিয়া বেড়াইতেছি, তাহা বলিতে পারিনা। কেন ভ্রমণ করিতেছি, কোন পথ দিয়া কোথায় যাইতেছি, তাহা জানি না। কোথায় আসিয়াছি, কিরূপে আসিয়াছি, কাহার সঙ্গে আসিয়াছি তাহা কিছুই বুঝিতে পারিতেছিনা। হা! আর কত পথ ভ্রমণ করিলে আমি নিজ ধামে পৌঁছিব! শূন্যময় পথে একাকী পড়িয়াছি, এপথে কিছুই নাই, চন্দ্র, সূর্য্য, তারা নাই, জল, স্থল, [illegible] নাই, অন্ধকারময় সাগরে

इसी लिये हम पूछते हैं, हे भारत भूमि! तेरी यह क्या दशा हुई है? इस अवकाश में एक महात्मा की एक कहानी स्मरण आ पड़ी। उस को यहां लिख देना आवश्यक है। कलकत्ते से यदि श्रीकाशीजी को जाना हो तो चाहे रेलगाड़ी पर, या तो गंगाजी से नाव पर अथवा ग्राण्ड ट्रंकरोड् से पाये पांव जानाही पड़ता है. क्यौं कि परीक्षा की गयी है, कि इन सब मार्गों में कोइ विशेष विपत नहीं पड़ता है। औ यात्री गण उसी पथ को अवलम्बन करके यथा समय गंतव्य स्थान को पहुंच जाते हैं। किन्तु यदि किसी ने एक भारतवर्ष की नक्शा सम्मुख रख कर कलकत्ते से लेकर श्रीकाशीजी तक एक सरल रेखा खिंचे तो उस रेखा की गति अनुसार चले तो क्या उस को बुद्धिमान कहाजाय? कभी नहीं। स्वयं वे यदि बड़े योग्य, साहसी वो प्रकृत शक्तिमन्त हो तो आश्चर्य्य नहीं कि वे सब बाधा विघ्न को मिटा कर ठिकाने पर पहुंच जांगे, किन्तु इस भरतखंड में वैसा योग्य पुरुष के जन हैं जो कि नद, नदी, पर्व्वत, बन, हिंसक जीव आदि से बच कर लक्ष्य स्थान में पहुंच सकें? यदि यह भी किसी से बने तो बन, किन्तु भूक के समय भोजन, पियास लगने पर जल न मिले तो पथही में कहीं प्राण छोड़ना पड़ता है। इसी लिये महात्मा ने शिष्य को उपदेश किया कि हे शिष्य? जिस मार्ग से चिर दिन यात्री लोग जा जा कर ठिकाने पर पहुंच गये, उसी मार्ग को अवलम्बन करो। उस पथ में भोजन या जल का भी कुछ अभाव नहीं। सत्य सनातन पथ को न छोड़ो।

त्राहि मां।

हा! क्या हुआ। मेरे प्राण, मन, देह अब अवसन्न दशा को प्राप्त हुए हैं। अनन्त मार्ग में अविश्रान्त चलने पर मैं निपट थक गया हूं। मुझ पर बड़ी आपत् आ पड़ी है, यदि कोइ निकट में रहे हो, तो मुझे रक्षा करो। मैंने गति शक्ति रहित हो चुका। अकस्मात् स्वप्न के धोंके मे पड़ कर मैं निज धाम छोड़ के कितने ही दिनों से जो रास्ते रास्ते में विचर फिरता हूं, सो वर्णन का बाहर है। मैं क्यौं भ्रमण करता हूं, किस रास्ते हो कर कहां आ पहुंचा हूं, किस प्रकार से आया हूं, किस के संग आया हूं, सो कुछ भी मुझे सुझ नहीं पड़ता है। हा! फिर कितने दुर चलने पर मुझ को निज धाम मिलेगी! शून्यमय मार्ग में मैं अकेलेही चला जाता हूं। इस मार्ग में कुछही नहीं है, चन्द्रमा, सूर्य या तारका नहीं है, जल,

অন্ধকার আকাশকে ঢাকিয়া ফেলিল। আর পা চলেনা, প্রাণ বায়ু আর দেহে থাকিতে চাহে না; উঃ! এখনও যে কত পথ চলিতে হইবে, তাহাও জানিনা, কত দূর গেলে যে বিশ্রামশালা পাইব তাহাও বুঝিতে পারিনা। আমি যখন গৃহ হইতে নির্গত হই, তখন সূর্য্যের সহস্র ২ রশ্মি মালা আমাকে পথ দেখাইয়া দিবার জন্য অগ্রে ২ধাবিত হইতেছিল, ক্রমে একটী ২ করিয়া সকল রশ্মি গুলিই নির্ব্বাপিত হইয়া গিয়াছে, কিন্তু আমার পথের আর শেষ হইতেছেনা। কত দিবা রাত্রি গত হইল, কত লোক জন্মিল, কত লোক মরিল, কত রাজ্য বিপ্লব হইল, কত দেশের কত অবস্থা ঘটিল কিন্তু আমার পথ আর ফুরাইল না। সূর্য্য গ্রহ উপগ্রহ একত্রে লইয়া গগণ মার্গে ছুটাছুটী করিয়া বেড়াইল। মণ্ডলে ২ ব্রহ্মাণ্ডে ২ কত বার সম্মিলন হইল, কিন্তু আমার সঙ্গে আমার একটী বারও দেখা হইল না। আমি উন্মনা পাগলের ন্যায়, লক্ষ্যহীন পথিকের ন্যায় কেবল ঘুরিয়া বেড়াইতেছি। কেহ যদি নিকটে থাক, তবে আমাকে রক্ষা কর। সম্মুখে বড় একখান মেঘ দেখিতেছি, উহার মধ্যে বজ্র ঐ যে বিদ্যুতের তালে ২ নাচিতে ২ আমারই দিকে দৌড়তেছে, বুঝি এই শূন্য ভূমিতে শূন্য হৃদয়ে মারা পড়িলাম। মরি, তাহাতে ক্ষতি নাই, কিন্তু এত দিন যে জন্য ভ্রমণ করিলাম, তাহা বুঝি সিদ্ধ হইল না, এই দুঃখই রহিয়া গেল। আমি আর এ ভীষণ দৃশ্য সহ্য করিতে পারিনা, নয়ন মুদ্রিত করিলাম। আমার নিকটে যদি কেহ থাক, তবে ধীরে ২ আমার হৃদয়ের কপাট খুলিয়া প্রবেশ কর, আমার হাত ধরিয়া নিজ গৃহে লইয়া যাও, আমার প্রাণের প্রদীপটী জ্বালিয়া দেও, আমি একবার পথ দেখিয়া ভ্রমণের উপসংহার করি। প্রাণ সখা! একবার সম্মুখে প্রকাশিত হও, তোমাকে দেখিলেই আমার পর্য্যটন পথ পর্য্যবসিত হইবে। তুমিই আমার শেষ আশ্রয়—শেষ সম্বল। তোমারই শরণাগত হইলাম। ত্রাহি মাং।

গো বধ।

কয়েক বৎসর হইতে মুশলমান দিগের সহিত গোবধ লইয়া হিন্দু দিগের অনেক বিবাদ বিসম্বাদ হইয়া গেল। গো বধ জন্য হিন্দু দিগের যে অত্যন্ত ক্ষতি হইয়া থাকে, তাহা চিন্তা করিয়া যাহাতে গোবধ নিবারণ হয় তজ্জন্য ভারতেন্দু সকরুণ ভাবে লিখিয়াছেন "যদিও ভারতবর্ষে গোবধ হইলে হিন্দু, মুশলমান, খ্রীষ্টান আদি সকলেই ক্ষতি গ্রস্ত হয়েন, কিন্তু তন্মধ্যে হিন্দু গণের বিশেষ অনিষ্ট হইতেছে।

शून्य के समुद्र में शून्यही की लहर खेल रही है। देखते देखते घोर अन्धकार आकाश को छाय लिया। मेरे पैर फिर नहीं चलता है, प्राण वायु निकलने वाला है; ओः! फिर भी कितना दूर चलना पड़ेगा, सो कुछ भी सचित नहीं होता है। कितने दूर जाने पर जो विश्राम गृह मिलेगी सो भी सुझ नहीं पड़ता है। मैंने जब गृह में से बाहर निकला, उस समय सूर्य्य की सहस्र २ किरणें मुझे पथ देखलाने के लिये आगे २ दौड़े थे, हा! एक २ करके अब सबही किरण बुत गये किन्तु मेरो पथ का पार नहीं लगता है। कितने दिन रात्रि गत हुए, कितने मनुष्य जन्मे वो कितने मनुष्य फिर मरे, कितना राज्य विप्लव हुआ, कितने देश की कितनी अवस्था बदली, किन्तु मेरे पथ का फिर शेष न हुआ। सूर्य्य ने ग्रह उपग्रहों को साथ ले लेकर गगण मार्ग में दौड़े फिरे, मण्डल मण्डल में, ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड में कितने बेर मिले किन्तु मुझ से मेरी अपनी साक्षातकार इस अवकाश में एक बेर भी न हुई। मैंने अस्थिर चित्त पागल के न्याई, लक्ष्य विहीन पथिक के न्याई केवल घुमा फिरता हूं। यदि कोई निकट में मेरे रहे हो, तो मुझे रक्षा करो। सामहने बड़ा भारी मेघ देख पड़ता है, उस के मध्य में बज्र बिजली के ताल में नाचता हुआ मेरेही ओर दौड़ चला आता है। बोध होता है कि इसी शून्य भूमि में शून्य हृदय हो कर मैं मारा जाऊंगा। मरे जाने पर भी कुछ हानि नहीं, किन्तु दुःख यही रह गया, कि यदर्थ इतने दिन भ्रमण किये, वह सिद्ध नहीं हुआ। मैं और इस भयकर दर्शन को सहन नहीं कर सक्ता हूं, नेत्र बंध कर लिया। मेरे निकठ यदि कोई रहे हो, तो धीरे २ मेरे हृदय को दरवाजा खुल कर पैठो, मेरा हात पकर के निज गृह में ले चलो; मेरे प्राण का दीपक बार दो, मैं एक बेर पथ देख कर भ्रमण का उपसंहार करले। हे प्राण-सखा! एक बेर तो सामहने प्रगट हो दर्शन दो, आप को देखते ही मेरी पर्य्यठन-पथ का पर्य्यवसान होगा। आपही मेरे शेष आश्रय हो -शेष अवलम्ब हो। मैं ने आपही का शरण लेलिया। त्राहि मां।

गोवध।

वर्षों से मुसलमानों के साथ गोवध के निमित्त हिन्दूओं को अनेक झगड़ा झमेला हो चुकी। गोवध से हिन्दूओं को बहुतसी हानि होती है, यह सोच विचार के हमारे सहयोगी भारतेन्दु सम्पादक महाशय ने यह सकरुण वाणी लिखी हैं—

"यद्यपि भारतवर्ष में गोवध होने से हिन्दू मुसलमान क्रिस्तान सभी की समान हानि है [illegible]

প্রথমতঃ দেখিতে পাওয়া যায় মুশলমান খ্রীষ্টান গণ মাংস, মৎস্য, তৈল, জল আদি দ্বারাও জীবিকা নির্ব্বাহ করিতে পারেন, কিন্তু দুগ্ধ, ঘৃত, দধি, তক্র আদি ভিন্ন হিন্দু দিগের দেহ ধারণ নিতান্ত সুকঠিন। দ্বিতীয়তঃ, গোবধের দৌরাত্ম্যে হল চালনার্থ বলীবর্দ্দ পাওয়া দুষ্কর সুতরাং শস্যোৎপাদনের বিশেষ রূপ ক্ষতি হইতেছে। তৃতীয়তঃ গো সংখ্যা হ্রাস জন্য ঘৃত, দুগ্ধাদি অত্যন্ত মহার্ঘ্য হইয়া উঠিয়াছে, এক্ষণে হিন্দু গণ কি খাইয়া জীবিত থাকেন? এতাবৎ হইতে বঞ্চিত হইলে হিন্দু গণ জঠরানলে দগ্ধ হইবে ও চিরদিন বিজাতীয় দিগের পাদুকাঘাত সহ্য করিবে। এতদ্ভিন্ন ধর্ম্মেরও অনেক ক্ষতি হইতেছে। যথা প্রত্যহ প্রাতঃকালে গোদর্শন, সংকার্য্য মাত্রেই গোদান, বৃষোৎসর্গ, পঞ্চামৃতে স্নান, গোবর দ্বারা গৃহ লেপন, পঞ্চগব্য দ্বারা পাতক শুদ্ধি, গোবর্দ্ধন গোপাষ্টমী আদিতে গো পূজা, আদি পুণ্য কর কার্য্য, গোসংখ্যা হ্রাসের সঙ্গে সঙ্গেই হ্রাস হইয়া আসিতেছে। অতএব হিন্দু দিগের ধর্ম্ম রক্ষাও ভার হইয়া উঠিয়াছে। লোক ব্যবহারেও বিষম কষ্ট দেখা যাইতেছে। গোশকটে যাতায়াত বা দ্রব্যাদি বহন প্রভৃতি অতি ব্যয় সাধ্য হইয়া পড়িয়াছে। ইহাতে ভিন্ন ভিন্ন সাধারণেরও হানি দেখিতে পাওয়া যায়। কোন স্থানে গোবধ সম্বন্ধীয় বিবাদ উঠিলেই, হিন্দু গণ নিরম্বু নিরাহারে রহিলেন, বাজার বন্ধ হইল সুতরাং বাণিজ্য হানি, রাজ দ্বারে অভিযোগ হইল তো অর্থের শ্রাদ্ধ হইতে লাগিল। যদি কেহ কিছু না বলে তো হিন্দুনামে কলঙ্ক রটিল, জাতীয় মর্য্যাদার দুরপনেয় মলিন চিহ্ন অঙ্কিত হইল। বলিতে কি গোবধ জন্য হিন্দু গণই বিশেষ ক্ষতি গ্রস্ত হয়েন। এক্ষণে গবর্ণমেণ্ট সমীপে প্রার্থনা এই যে গোবধ নিবারণের সদ্ব্যবস্থা করুন।”

গোবধ নিবারণ হওয়া এক প্রকার অসাধ্য কথা। কেবল মুশলমান গণ নহে ইংরাজ গণও তাহার বিশেষ পক্ষপাতী। গোবধ বন্ধ হইলে শ্বেত কলেবর বর্গের ভোজনই হইবেনা। গবর্ণমেণ্টের নিকট বারম্বার এ প্রার্থনা না করিয়া আমরা বহুদিন পূর্ব্বে “গো রক্ষা” সম্বন্ধে যে প্রস্তাব করিয়া আসিয়াছি, তাহারই দিকে যত্নবান হওয়া হিন্দু বর্গের কর্ত্তব্য নতুবা এ প্রার্থনা পূর্ণ হইবার নহে, কেননা “-রাজা খড়্গধর স্তথা”।

(ছাপরা হইতে প্রাপ্ত।)

আমাদের পরম সৌভাগ্য ক্রমে ও অত্রস্থ সদর আলা মাননীয় শ্রীযুক্ত রায় মাতাদীন বাহাদুরের যত্নে ভাঃ আঃ ধঃ প্রঃ সভার সংস্থাপয়িতা ও কার্য্য

पर हिन्दुओं का सब से अधिक हानि है। प्रथम तो मुसलमान, क्रिस्तान, अपनी जीवन यात्रा मांस, मछली तैल जल आदि से भी कर सक्ते हैं, पर हिन्दू का अन्न, घृत, दुग्ध, दधि, तक्र, आदि ही एक मात्र अवलम्ब है। गोवध से बैल दुर्लभ हुए, फिर अन्न कहां से होगा? गोवध से घृत, दुग्ध आदि तेज हुए, फिर कहिये हिन्दू क्या खायें? यदि ये तीनों चीजें छोड़ दें, तो हिन्दू भूखों मरैं, और परम दुर्बल हो कर विजातियों की जूतियां खायें? द्वितीय धर्म की हानि, नित्य प्रातः काल गौ के दर्शन, हर एक कर्म में गोदान, वृषोत्सर्ग, पञ्चामृत स्नान, गोवर से भूलेपन, पञ्चगव्य से महापातकों तक की शुद्धी, गोवर्द्धन, गोपाष्टमी आदि में गोपूजा यह सब धर्म कार्य्य गोवध होने से नष्ट प्राय होगये, और आगे होजायेंगे, फिर हिन्दू संतान की परलोक में गति कैसे हो? तृतीय व्यवहार में हानि, उपले परम दुर्मूल्य जाने आने वा माल ढोने के लिये गाड़ी बहली महा अकरी, खेत जोतने और पुर चलाने को अच्छे बैल ढूंढे नहीं मिलते, वस गोवध होने से हिन्दू व्यवहार में भी मारे पड़े। चतुर्थ सर्व साधारण हानि। किसी शहर में गौ के विषय कोई झगड़ा उठा, जब तक तय नहीं होता, हिन्दू निर्जल, निराहार, बाजार बन्द हुआ तो जीविका में हानि, मुकद्दमा छिड़ा तो रुपये का सर्व नाश कुछ न किया, तो हिन्दू इस नाम को कलंक, और देश देशांतरों तक मान में हानि निदान सब तरह से गोवध होने से हिन्दुओं को हानि ही हानि है। हम अपनी न्याय शाली गवर्नमेन्ट से प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार बने, गोवध बंध किया जाय। —

गोवध बंध होना एक प्रकार असाध्य ही है जानना। केवल मुसलमानों नहीं, बरं अंगरेज लोग इस के अधिक पक्ष करते हैं। गोवध बंध होने से श्वेत कलेवरों के भोजन की बड़ी कठिनता होगी। गवर्णमेण्ट से वारम्वार ऐसी प्रार्थना करने के बदले हम जो बहुत दिन पहले गौ रक्षा के निमित्त प्रस्ताव करते आये, उसी पर ध्यान देना हिन्दू मात्रहीं का उचित है, नहीं तो यह प्रार्थना पूरी होने वाली नहीं क्योंकि“— राजा खड्ग धरस्तथा”।

छापरा—(प्राप्त।)

हमारे परम सौभाग्य से वो यहां के सदर आला साहब माननीय श्रीमान राय मातादीन बाहादुर के यत्न से भारत भूषण श्रीमान ओझा प्रवर वेन

সম্পাদক ভারত ভূষণ শ্রীমান শ্রীকৃষ্ণপ্রসন্ন সেন মহোদয় অত্র ছাপরায় পদার্পণ করিয়াছিলেন। সভার অন্যতর ধর্ম্মাচার্য্য শ্রদ্ধাস্পদ শ্রীমৎ আত্মা হংসস্বামীও তাঁহার সঙ্গে ছিলেন। প্রথমোক্ত মহাত্মা এখানে দুইটী হিন্দী ও একটী বঙ্গ ভাষায় বক্তৃতা করিয়াছিলেন। বক্তৃতা সভায় প্রায় ৩০০০ শ্রোতা উপস্থিত ছিলেন। অশ্ব শকট হইতে উক্ত মহাত্মা দ্বয় সভাসমীপে অবতরণ করিবা মাত্র যখন বক্তৃতা শ্রবণোৎসুক সমস্ত শ্রোতা এক কালে দণ্ডায়মান হইয়া তাঁহাদের অভ্যর্থনা করিলেন তখন সভা একটী অপূর্ব্ব শ্রীধারণ করিয়াছিল। প্রধান ২ বিচার পতি, উকিল, কৃতবিদ্য জমীদার ও সাধারণ ব্যক্তি সমস্তই বক্তার উত্তেজনা, প্রেম ও সাধুভাবে পরিপূর্ণ বক্তৃতা শ্রবণ করিয়া নিতান্ত বিমোহিত হইয়াছেন। জীবের পরম কল্যাণ স্বরূপ মুক্তি লাভ করিতে হইলে আর্য্য শাস্ত্রানুসারে ধর্ম্ম সাধন যে নিতান্ত আবশ্যক ও আর্য্যধর্ম্ম যে ভারতের সর্ব্ব প্রকার উন্নতির মূল এতাবৎ কয়েক দিনের বক্তৃতায় বক্তা সুন্দর রূপ প্রতিপাদন করিয়া গিয়াছেন। এখানে এই বক্তৃতার ফল একটী আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভাও স্থাপিত হইয়াছে। এখানকার উচ্চ পদস্থ ব্যক্তি মাত্রেই ইহার সভ্য শ্রেণীভুক্ত হইয়াছেন।

অত্রস্থ জনৈক মুখ্য পণ্ডিত নিম্ন লিখিত শ্লোক দ্বারা বক্তৃ মহোদয়কে সম্মান সহ অভিনন্দন করিয়াছিলেন।

"জীবানাং ভারতেঽস্মিন্ কলিপর কলিতা-
নামহো মুক্তিরেষা
হাতা হ্যধর্ম্ম প্রচারৈঃ কলি গজ নমিতা
ধর্ম্ম নিঃশেষিতোঽভূত।
দৃষ্ট্বা দুঃখং জনানাং পরম করুণয়া
চাক্রুশোঽভূত্ সুবৈদ্যঃ
শ্রীকৃষ্ণ সেন নাম্না কলি করি মথনে
যেন ধর্ম্ম প্রচারঃ॥"

এতদ্ভারতবর্ষে অধর্ম্মের বহুল প্রচার জন্য কলুষিত চিত্ত জীব গণের মুক্তি সুদূর পরাহত ও কলিরূপ হস্তীর পদ পীড়নে ধর্ম্ম নিঃশেষিত প্রায় হইয়া উঠিয়াছে। জন গণের দুঃখ দর্শনে নিতান্ত করুণার্দ্র হৃদয় বৈদ্য বংশীয় শ্রীশ্রীকৃষ্ণ সেন মহাশয় কলি রূপ প্রমত্ত মাতঙ্গ মথনের অঙ্কুশ স্বরূপ হইয়া ধর্ম্ম প্রচার করিতেছেন।

জনৈক শ্রোতা।

সম্প্রতি টাকী—সৈদপুর ও বেগুসরাই "সুনীতি সঞ্চারিণী সভা" দ্বয়ের বার্ষিক উৎসব অতি সমারোহ পূর্ব্বক সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। উভয় স্থানেই স্থানীয় প্রধান ২ ব্যক্তি গণ সভার কার্য্য পর্য্যবেক্ষণে পরম সন্তোষ প্রকাশ করিয়াছেন।

भा० भा० ध० प्र० सभा के संस्थापक वो कार्य्य सम्पादक महाशय ने इस शहर छापरे में पधारे थे। उस सभा के एक धर्म्माचार्य्य श्रद्धा के योग्य श्रीमत् आत्मा हंस स्वामी ने भी कृपा करी थी। सम्पादक महाशय ने यहां दो वक्तृता हिन्दी भाषा में वो एक बंग भाषा में करी। वक्तृता सभा में प्रायः ३००० श्रोता सुशोभित थे। उस समय, जबकि उन महात्माद्वय सभा समीप में गाड़ी पर से उतरे वो वक्तृता श्रवणोत्सुक समाज समस्त श्रोता खड़े हो हो कर उन्हों को सम्मान किये, एक अपूर्व्व दिव्य शोभा हुइ थी। प्रधान २ न्याय कर्त्ता, वकील, विद्यावान रईस वो अन्यान्य साधारण लोग वक्ता की उत्तेजना, प्रेम वो साधुभाव से पूर्ण वक्तृता श्रवण करके नितान्त विमोहित हुए। परम कल्याण रूप मुक्ति पाइने हारों को आर्य्य धर्म्म शास्त्रों के अनुसार कार्य्य किये बिना फल नहीं मिल सक्ता है, वो आर्य्य धर्म्म जो भारतखण्ड को सर्व्व प्रकार उन्नति का मूल है, के दिवस को वक्तृता के द्वारा वक्ता महाशय ने इतना उत्तमरूप प्रति पादन करे गये। इन वक्तृताओं को उत्तेजना से यहां एक आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा भी स्थापित हो गयी है। यहां के ऊंचे २ पदवी के महात्मा मात्रही इस सभा के सभ्य बने।

यहां के एक मुख्य पण्डित ने निम्नोक्त श्लोक से वक्तामहोदय को सम्मान सहित अभिनन्दन किया था-

"जीवानां भारतेऽस्मिन् कलिपर-कलिता-
नामहो मुक्तिरेषा
हाताऽधर्म्म प्रचारैःकलि गज नमिता
धर्म्म निःशेषितोऽभूत्।
दृष्ट्वा दुःखं जनानां परम करुणया
चाक्रुशोऽभूत् सुवैद्यः
श्रीकृष्ण सेन नाम्ना कलि करि मथने
येन धर्म्म प्रचारः॥"

इस भारतखण्ड में अधर्म्म के अत्यन्त प्रचार से कलि-कलुषित-चित्त जीवों को मुक्ति मिलनी कठिन हो गया। वो कलिरूप हाथी के पदपेषण से धर्म्म का शेष होता जाता है। जीवों के दुःख देख करि नितान्त करुणारस-परवश होकर वैद्य कुल—भूषण श्रीकृष्ण सेन नामक महात्मा ने कलिरूप मत्त मातंग को मथनार्थ अंकुशरूप बन के धर्म्म प्रचार कर रहे हैं!

जनैक श्रोता।

अल्पदिन हुआ कि सैदपुर-टाकी वो बेगुसराय की सुनीति सञ्चारिणी सभा का वार्षिक उत्सव अतीव धुम धाम से सम्पन्न हो गया। दोनोंही स्थान के प्रधान महात्मागण सभा का कार्य्य देख के परम प्रसन्न हुए।
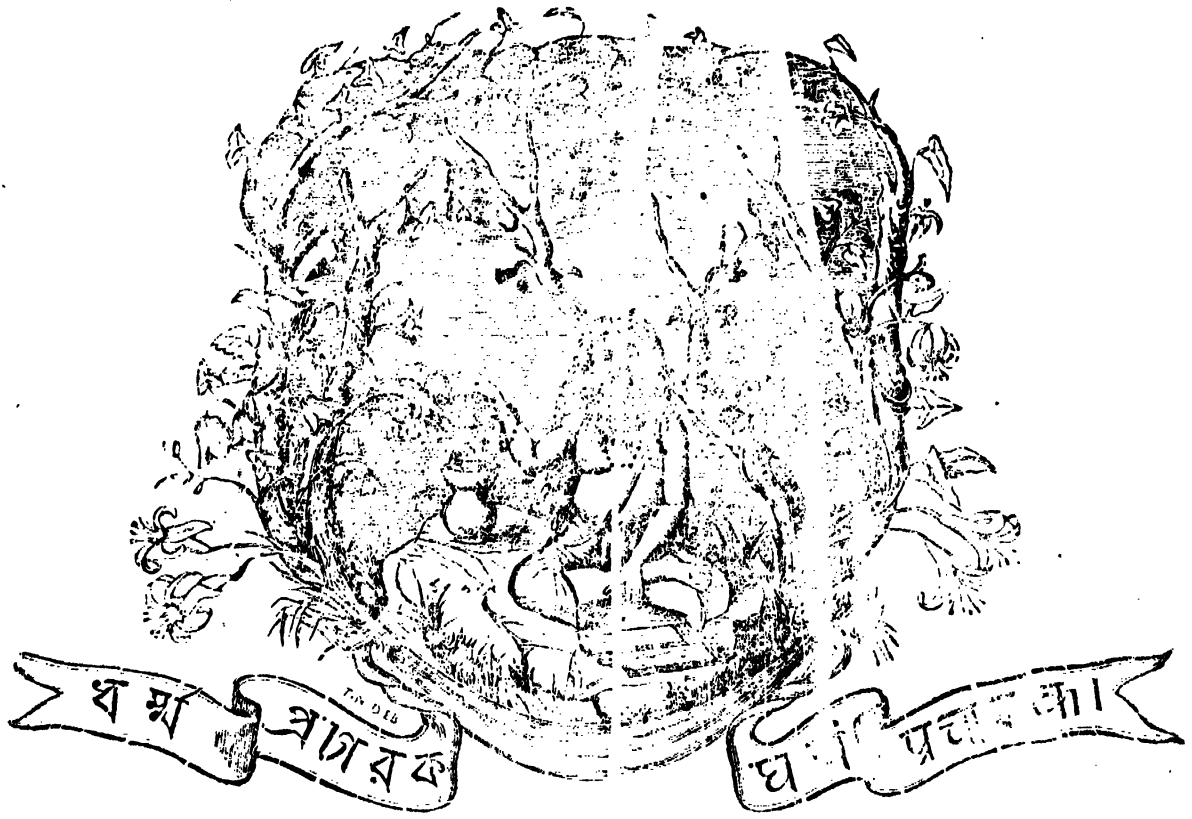
"একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি॥"

৭ম ভাগ। শকাব্দা ১৮০৫।
১০ম সংখ্যা। মাঘ—পূর্ণিমা।

কেবলোঽহং।

বিশোক আনন্দ ময়োবিপশ্চিৎ
স্বয়ং কুতশ্চিন্নবিভেতি কশ্চিৎ
নান্যোঽস্তি পন্থা ভব বন্ধ মুক্ত্যৈ
বিনা স্বতত্ত্বাবগমং মুমুক্ষুঃ॥

যিনি আত্মযোগ সাধনা করিয়াছেন, তিনিই শোক তাপ রহিত ও পরমানন্দিত এবং সর্ব্বথা জয়যুক্ত ও নির্ভীক হইয়াছেন অর্থাৎ রিপুবর্গের ভীষণ সংগ্রামে তিনি বিজয়ী বীর ও দোর্দ্দণ্ড প্রতাপশালী দণ্ডধর যমের সম্মুখেও তিনি ভয় শূন্য। আত্মোপলব্ধি ব্যতীত ভয়ঙ্কর ভব বন্ধন মোচনের আর কোন উপায়ই নাই। আত্মজ্ঞান অতীব সূক্ষ্ম প্রক্রিয়া সাধ্য ব্যাপার।

নিত্যং বিভুং সর্ব্বগতং সুসূক্ষ্ম—

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयाति यः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति॥

७म भाग। शकाब्दा १८०५।
१०म संख्या माघ—पूर्णिमा।

केवलोऽहं।

विशोक आनन्द मयो विपश्चित्
स्वयं कुतश्चिन्न बिभेति कश्चित्
नान्योऽस्ति पन्था भव बन्ध मुक्त्यै
विना स्वतत्त्वावगमं मुमुक्षुः॥

जिनने आत्म योग की साधना करी है, उन्हीं का चित्त शोक तापसे रहित औ परम आनन्दको प्राप्त हुआ औ वेही सर्व्वथा जय युक्त औ भय मुक्त हुए अर्थात् रिपुओं संग भीषण संग्राम में वेही विजयी वीर औ दोर्द्दण्ड प्रतापशाली दण्डधर यम के आगे भी वेही निर्भय हैं। बिना आत्म स्वरूप को अनुभव किये इस संसार को बंधन छूटने का कोइ भी उपाय नहीं। आत्म ज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म क्रिया यें को साधन से मिल सक्ता है।

नित्यं विभुं सर्व्वगतं सुसूक्ष्म-

মন্তর্বহিঃ শূন্য মনন্যমাত্মনঃ।
বিজ্ঞায় সম্যগ্ নিজতত্ত্বমেতৎ
পুমান্ বিপাপ্মাবিরজোবিমৃত্যুঃ॥

নিত্য বিদ্যমান সর্ব্বগত সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম, অন্তর্ব্বাহ্য আত্মার তাত্ত্বত্ত্ব বিদিত হইয়া মানব অপাপ অশোক ও অমর হইয়া থাকে।

ব্রহ্মাভিন্নত্ব বিজ্ঞানং ভবমোক্ষস্য কারণং।
যেনাদ্বিতীয়মানন্দং ব্রহ্ম সম্পদ্যতে বুধঃ॥

ব্রহ্ম ও আত্মা উভয়ে অভিন্ন বুদ্ধিই সংসার মুক্তির উপায়। এতদ্দ্বারাই অতুল আনন্দ লাভ হইয়া থকে এবং ইহার দ্বারাই জীব ব্রহ্ম স্বরূপতা প্রাপ্ত হয়।

ব্রহ্মভূতস্তু সংসৃত্যৈ বিদ্বান্নাবর্ত্ততে পুনঃ।
বিজ্ঞাতব্যমতঃ সম্যগ্ ব্রহ্মাভিন্নত্ব মাত্মনঃ॥

যে বিদ্বান্ পুরুষ ব্রহ্মস্বরূপ হইয়া পরিতৃপ্ত হইয়াছেন, তাঁহাকে আর সংসারে পুনরাবর্ত্তন করিতে হয় না। অতএব পণ্ডিত গণ সর্ব্বথা ব্রহ্মনিষ্ঠ বিবেকবুদ্ধি বিচার দ্বারা ব্রহ্মাত্ম বিজ্ঞাত হইবেন।

যদিদং সকলং বিশ্বং নানারূপং প্রতীত মজ্ঞানাৎ।
তৎসর্ব্বং ব্রহ্মৈকং প্রত্যক্ষ্যাশেষ ভাবনাদোষং॥

এই নানারূপ প্রত্যক্ষ পরিদৃশ্যমান জগৎ অজ্ঞানতা বশতঃ সত্যবৎ ভাসিত হইয়া থাকে। তৎসমস্তই একব্রহ্ম মাত্র, নানাত্ব চিন্তা করা কখনই উচিত নহে।

মৃৎকার্য্য ভূতোঽপি মৃদো ন ভিন্নঃ
কুম্ভোঽস্তি সর্ব্বত্র তু মৃৎ স্বরূপাৎ।
ন কুম্ভরূপং পৃথগস্তি কুম্ভঃ
কুতো মৃষা কল্পিত নাম মাত্রঃ॥

মৃত্তিকা হইতে যে সকল দ্রব্য গঠিত হয়, তাহা মৃত্তিকা ভিন্ন অন্য কিছুই নহে। কুম্ভ মৃত্তিকা হইতে কোন স্বতন্ত্র পদার্থ নহে, "কুম্ভ" এই নাম একটী কাল্পনিক শব্দ মাত্র।

কেনাপি মৃদ্ভিন্ন তয়া স্বরূপং
ঘটস্য সন্দর্শয়িতুং ন শক্যতে।
অতো ঘটঃ কল্পিত এব মোহা-
ন্মৃদেব সত্যং পরমার্থ ভূতং॥

मन्तर्वहिः शून्यमनन्य मात्मनः।
विज्ञाय सम्यग् निज तत्वमेतत्
पुमान् विपाप्मा विरजो विमृत्युः॥

आत्मा का जोकि नित्य विद्यमान सर्व्वगत, सूक्ष्म से अत्यन्त सूक्ष्म, भीतर बाहर से रहित है, सम्पूर्ण तत्व को विदित होकर मनुष्य ने पाप, शोक, मृत्यु आदि से रहित हो जाता है॥

ब्रह्मा भिन्नत्व विज्ञानं भव मोक्षस्य कारणं।
येनाद्वितीयमानन्दं ब्रह्म सम्पद्यते बुधः॥

ब्रह्म वो आत्मा इन दोनो मे अभिन्न बुद्धि करनाही मे संसार से मुक्त होने का उपाय है। इसी से अतुल आनन्द मिलता है औ इसही से जीव ब्रह्म स्वरूप को प्राप्त कर लेता है।

ब्रह्म भूतस्तु संसृत्यै विद्वान्ना वर्त्तते पुनः।
विज्ञातव्यमतः सम्यग् ब्रह्मा भिन्नत्वमात्मनः॥

जिस विद्वान पुरुष ने ब्रह्म स्वरूप बन कर तृप्त हो चुका, उन को देहान्त होने पर फिर लौटने नहीं पड़ता है। अतएव पण्डित गण को चाहिये कि सर्व्वथा ब्रह्मनिष्ठ विवेक बुद्धि विचार के द्वारा ब्रह्मात्म ज्ञान को प्राप्त कर लेवें।

यदिदं सकलं विश्वं नानारूपं प्रतीतमज्ञानात्।
तत्सर्व्वं ब्रह्मैकं प्रत्यस्ताशेष भावनादोषं॥

भांति भांति के रुपों से प्रत्यक्ष देख पड़ता हुआ जगत, अज्ञानता करके सत्यवत् भासित होता है। वास्तव में समस्तही एक ब्रह्म मात्र है। एक में नानात्व की चिन्ता करना कभी न चाहिये।

मृत्कार्य्य भूतोऽपि मृदोनभिन्नः
कुम्भोऽस्ति सर्व्वत्र तु मृत् स्वरूपात्।
न कुम्भ रूपं पृथगस्ति कुम्भः
कुतोमृषा कल्पित नाम मात्रः॥

मिट्टी से जो सब पदार्थ बनते हैं, वे मिट्टी छोड़ के कोइ भिन्न पदार्थ नहीं है। कुम्भ मिट्टी से कोइ स्वतन्त्र पदार्थ नहीं। "कुम्भ" यह नाम एक काल्पनिक शब्द मात्र है।

केनापि मृद्भिन्न तया स्वरूपं
घटस्य सन्दर्शयितुं न शक्यते।
अतोघटः कल्पित एव मोहा-
न्मृदेव सत्यं परमार्थभूतं॥

জগতে কোন ব্যক্তিই মৃত্তিকা হইতে ঘটের স্বতন্ত্রতা প্রদর্শন করিতে পারে না। "ঘট" ইত্যাকার নামের আরোপ মোহ বশতঃ কল্পনা ভিন্ন আর কিছুই নহে।

> সদ্ব্রহ্ম কার্য্যং সকলং সদেব
> তন্মাত্র মেতন্ন ততোন্যদস্তি।
> অস্তীতি যো বক্তি ন তস্য মোহো-
> বিনির্গতো নিদ্রিতবৎ প্রজল্পঃ॥

ব্রহ্ম সৎ, সুতরাং তাঁহা হইতে উৎপন্ন সমস্তই সৎ, কেন না ব্রহ্ম ভিন্ন অন্য পদার্থের আদৌ অস্তিত্বই নাই। ইহা যে ব্যক্তি স্বীকার না করে তাহার বুদ্ধি ভ্রম জাল জড়িত। নিদ্রিত ব্যক্তির স্বপ্নাবেশে কথোপকথনের ন্যায় তাহার কথা বৃথা জল্পনা মাত্র বলিতে হইবে।

আর্য্য দিগের উপাসনা প্রণালী।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

মনই অধিনায়ক স্বরূপ হইয়া শরীর ও শারীরিক বৃত্তি সমূহের উপর যথাবৎ আধিপত্য করিয়া থাকে। অনেকের সংস্কার যে মনের দ্বারা শরীর ও শরীরের দ্বারা মন বিচালিত হয় কিন্তু বস্তুতঃ শরীর মনের উপর আধিপত্য করিতে আদৌ সমর্থ নহে। শরীর অসুস্থ হইলে মন দুঃখিত ও মলিন হইয়া থাকে, এবং শরীর অরোগী থাকিলে মনও প্রফুল্ল থাকে, ইহা দেখিয়া শরীরকে মনের পরিচালক বলিয়া বোধ হইতে পারে কিন্তু বস্তুত শারীরিক ক্রিয়া মনকে অভিভূত বা উত্তেজিত করিতে পারেনা। শরীর রোগ গ্রস্ত হইলে মস্তিষ্ক মনের সংকল্পোপযোগিনী শক্তির উপাদান সংগ্রহে সহজেই অপটু হয় এইজন্য মনকে তখন মলিন ও অভিভূত বলিয়া বোধ হয়। শরীর সুস্থ হওয়ার সঙ্গে২ যদি মস্তিষ্ক মনোমত শক্তির উদ্দীপক উপাদান সংগ্রহে সমর্থ হয় তাহা হইলেই মন স্ফূর্ত্তি যুক্ত হইয়া থাকে। মনের সংকল্প হইলেই চক্ষু কর্ণ, হস্ত পাদাদি কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়। কিন্তু চক্ষু

मिट्टी से घट की स्वतन्त्रता दिखलाने में संसार में कोइ भी समर्थ नहीं है। "घट" यह जो नाम दिया गया यह भी मोह की कल्पना छोड़के और कुछ भी नहीं।

> सद्ब्रह्म कार्य्यं सकलं सदेव
> तन्मात्रमेतन्न ततोन्यदस्ति
> अस्तीति यो वक्ति न तस्यमोहो-
> विनिर्गत निद्रितवत् प्रजल्पः॥

ब्रह्म सत् हैं, अतएव उन से उत्पन्न हुआ समस्त ही सत् है, क्योंकि ब्रह्म छोड़ के दूसरे वस्तु की अस्तित्व ही नहीं है। इस सिद्धान्त वाक्य जो न मानें, उसकी बुद्धि भ्रम जाल में जड़ित है। सोते हुए पुरुष की स्वप्न में वार्त्तालाप के न्याइ उसकी कथा को भी व्यर्थ जल्पना मात्र जानना चाहिये।

आर्य्य सज्जनों की उपासना प्रणाली।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

मन ही नायक बन कर शरीर वो शारीरिक वृत्तियों पर यथोचित कर्त्तृत्व किया करता है। बहुतेरे का यह संस्कार बना हुआ है, कि मन करके शरीर वो शरीर करके मन चलता फिरता है, किन्तु वास्तव में मन पर शरीर कुछ भी आधिपत्य नहीं कर सका है। शरीर रोग युक्त रहने से मन भी प्रसन्न रहता है, यह देख कर शरीर को मन का चालक करके बोध हो सका है किन्तु वास्तव में शरीर की क्रिया मन को अभिभूत या उत्तेजित नहीं कर सकी है। शरीर रोगयुक्त होने से मस्तिष्क मन के संकल्प सिद्ध करने वाली शक्ति के उपादान संग्रह करने में असमर्थ हो जाता है, इस लिये उस समय मन को मलिन वो अभिभूत बोध होता है। शरीर के आरोग्य के संगहीसंग यदि मस्तिष्क मन के योग्य शक्ति के उद्दीपक उपादान संग्रह में समर्थ होय तौही मन प्रसन्न हो जाता है। मन का संकल्प होने ही से चक्षु, कर्ण, हस्त, चरण आदि कार्य्य करने में प्रवृत्त होते हैं, किन्तु चक्षु, कर्ण आदि मन को यथावश्यक चलाने में

কর্ণাদি কখনও মনকে যথাবশ্যক চালাইতে পারেনা। মন উপাদান না পাইলেই মলিন ও পাইলেই স্ফূর্ত্তিমান হয়, বস্তুতঃ শরীরের কর্ত্তৃত্ব মনের উপর আদৌ দৃষ্ট হয় না।

মনকে কেহ ২ একটী বৃত্তি বিশেষ বলিয়া স্বীকার করেন এবং বলেন যে অন্যান্য তাবদ্বৃত্তির উপর ইহার অধিনায়কত্ব আছে। কিন্তু আমরা মনকে বৃত্তি বিশেষ বা বৃত্তি পুঞ্জের নায়ক বলিতে সঙ্কুচিত হই। তাবদ্বৃত্তিরই সমষ্টী মন বলিয়া আমরা স্থির করিলাম। ইহাকে অন্তঃকরণ বলিয়াও অভিহিত করা যায়। চিন্তা একটী মনের কার্য্য মাত্র। ঈশ্বরের রূপ বা গুণ বিশেষের বা গুণ সমূহের চিন্তার নামই ঈশ্বরের আরাধনা। চিন্তা ও জ্ঞান এই দুইটী ভিন্ন জাতীয় বস্তু নহে। মনুষ্যের কোন বিষয়ে জ্ঞান হইবার সময় মনোমধ্যে যে ২ কার্য্য হয় তদ্বিষয়িণী চিন্তাকালেও মনের মধ্যে তাদৃশী ক্রিয়া হইতে থাকে। জ্ঞান মনের একটী ক্রিয়া মাত্র। যে কোন বিষয়ক জ্ঞান হউক না কেন, উহা মনের একটী ক্রিয়া ভিন্ন আর কিছুই নহে। রূপ, রস, গন্ধ, স্পর্শ, শব্দ আদি ভিন্ন ২ নামে জ্ঞান অভিহিত হইলেও সমস্তই মনের ক্রিয়া বলিয়া পরিগণিত হইবে। ক্রিয়া হইবার সময় মনোমধ্যে সম্বেগের ইতর বিশেষ হয় মাত্র। বাহ্য বস্তু, বা ব্যাপারের আবির্ভাবে অভ্র মণ্ডলে যে এক প্রকার স্বাভাবিক গতি বা সম্বেগ উপস্থিত হয়, সেই গতিই নভোমণ্ডলে রাশি ২ তরঙ্গ উত্থাপন পূর্ব্বক নৃত্য করিতে ২ মানবের ইন্দ্রিয় সংলগ্ন স্নায়ু মণ্ডল সহযোগে মস্তিষ্কে গিয়া আঘাত করিতে থাকে। সম্বেগ সংখ্যার ইতর বিশেষে কোনটী রূপের, কোনটীবা শব্দের জ্ঞান উদয় করিয়া দেয়। প্রত্যেক সম্বেগের ক্ষমতাই এক, কেবল ভিন্ন ২ সংখ্যানুসারে ভিন্ন ২ জ্ঞানের উপলব্ধি হয় মাত্র। মনে করুন দুইটী সম্বেগ দ্বারা আমাদের স্নায়বীয় ক্রিয়া শক্তি সহযোগে আমরা রূপ অনুভব করিতে পারি আবার চারিটী সম্বেগ উপস্থিত হইলে শব্দ জ্ঞানের উদয় হয়। সম্বেগ সংখ্যাসমষ্টীর তার-

कभी समर्थ नहीं बन सक्ता है। मन उपादान विना मलिन वो उपादान मिलने ही से स्फूर्त्तियुक्त होता है, वास्तव में मन पर शरीर का कर्त्तृत्व कुछ भी नहीं देख पड़ता है।

किसी किसीने मन को एक प्रकार की वृत्ति करके मानता है भी कहता है कि अन्यान्य वृत्तियां पर इस का नायकत्व है। किन्तु मन को वृत्ति वा वृत्तियों के नायक कहने में हम बड़ा संकोच मानते हैं। वृत्तियों की सम्पूर्ण समष्टी ही को हम मन मान लेते हैं। इसको अन्तःकरण भी कहा जाता है। चिन्ता मन की एक क्रिया मात्र है ईश्वर के किसी रूप या गुण अथवा गुण समूह की चिन्ता का नाम ईश्वर की आराधना है। चिन्ता या ज्ञान ये दो विभिन्न श्रेणी के पदार्थ नहीं हैं। किसी विषय का ज्ञान होने के समय मन में जो जो क्रियायें होती हैं, उस विषय की चिन्ता के समय में भी मन में वैसी ही क्रियायें हुआ करती हैं। ज्ञान को मन की एक क्रिया मात्र जानना। जिस किसी विषय का ज्ञान क्यों न हो, वह मन की कोइ क्रिया छोड़के और कुछ ही नहीं है। रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द आदि ज्ञान की भिन्न २ संज्ञा होने पर भी सब कुछ मन की क्रियायें करके गिने जायंगे। कोइ क्रिया होने के समय मन में सम्वेग का तारतम्य होता है। वाह्यवस्तु या व्यापार के आविर्भाव से आकाश मण्डल में जो एक प्रकार की स्वाभाविक गति या सम्वेग आजाती है, वही गति आकाश मार्ग में भूरि २ तरंग उठा करके नृत्य करते २ मनुष्य के इन्द्रियों से संलग्न स्नायु मण्डल के द्वारा मस्तिष्क में जा करके आघात करते हैं। उन सम्वेग की संख्यानुसार रूप शब्द आदि का ज्ञान हो जाता है। प्रत्येक सम्वेग की शक्ति या क्षमता एकही है, केवल भिन्न २ संख्या के अनुसार भिन्न ज्ञान उपजता है मात्र। मानिये जैसा कि दो सम्वेग केवल से हमारे स्नायु की क्रिया शक्ति के द्वारा हम रूप को अनुभव कर सक्ते हैं फिर चार सम्वेग पहुंच जाने से शब्द का ज्ञान उदय होता है। सम्वेग की संख्या- समष्टी की न्यूनता या आधिक्यता जैसा, रूप, शब्द आदि ग्रहण का कारण है,

ত।) যেমন রূপ, শব্দাদি গ্রহণের কারণ, ইন্দ্রিয় গণের সূক্ষ্মাসূক্ষ্মতাও তদ্রূপ উহার অন্যতর কারণ। এখানে একটী দৃষ্টান্ত প্রকটিত হইলে বোধ হয় পাঠকের বোধ সুগম হইতে পারে। দৃষ্টান্ত দিলেই দার্ষ্টান্তিকের সহিত তাহার কথঞ্চিৎ ভেদ দেখিতে পাওয়া যায়। কিন্তু দর্শনশাস্ত্রে দৃষ্টান্তদার্ষ্টান্তিকের সারূপ্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। মনে করুন আপনি এক দিন রাত্রি ৭ টার সময় দেবদত্তের রূপ দীপালোকে দর্শন করিয়াছেন। "দর্শন করিয়াছেন" ইহার বৈজ্ঞানিক অভিপ্রায় এই যে দীপালোক তাহার দেহের উপর একটী ক্রিয়া করিয়াছিল, দেহ তৎ ক্রিয়া দ্বারা অভিভুক্ত হইয়া অপর একটী ক্রিয়া করিয়াছিল এবং সেই ক্রিয়া জনিত সম্বেগ নভো মার্গের দ্বারা আপনার চক্ষে চালিত হইয়াছিল। এই শেষ ক্রিয়াটী রাশি ২ সম্বেগের সমষ্টী। এই সম্বেগ রাশি চক্ষুরিন্দ্রিয় সহযোগে মস্তিষ্কে গিয়া আঘাত করিয়াছিল। সেই দিন দুই ঘণ্টা পরে, যখন আপনি স্থানান্তরে গমন করিয়াছেন, অর্থাৎ যেখানে দেবদত্ত উপস্থিত নাই, তখন যদি উক্ত ব্যক্তিকে চিন্তা বা স্মরণকরেন, তবে কি ঐ ব্যক্তির যথাযথ রূপ অনুভব হইবেনা? তখন কি উক্ত বিধ ক্রিয়া সমূহ হইতে থাকিবে না? তখন কি উক্ত সম্বেগ রাশি আপনার মস্তিষ্কে উপস্থিত হইবে না? অবশ্যই হইবে; তাহাতে সন্দেহ নাই। প্রত্যক্ষ দর্শন কালে মনোমধ্যে যাদৃশী ক্রিয়া হইতে থাকে চিন্তা কালেও মনে তাদৃশই ক্রিয়া হয়। আমরা প্রত্যক্ষ জ্ঞান দ্বারা যে সর্ব্বদা ভীত, প্রীত ও বিরক্ত হই, তত্তাবৎ ও মনের ক্রিয়া মাত্র। ভয়ের দ্বারা আমাদের শরীর সঙ্কুচিত হয়, শোকে শরীর শীর্ণ হইয়া যায়, ও আনন্দে শরীর পুষ্টি লাভ করে। মনই আমাদের শরীরের নায়ক। সারথি যেমন রথের পরিচালক, মনও তদ্রূপ শরীরের পরিচালনা করিয়া থাকে। মন ভিন্ন শরীরের কোন রূপ ক্রিয়াই হইবার সম্ভাবনা নাই।

এক্ষণে উপাসনার প্রকৃত মর্ম্মালোচনায় অগ্রসর হইতেছি। গত সংখ্যায় কথিত হইয়াছে যে ভিন্ন ২ রূপের উপাসনা করিলে ভিন্ন ২ ফল লাভ হইয়া থাকে তদ্রূপ ভিন্ন ২ সময়ে ভিন্ন ২ রূপের আরাধনা করিলে ভিন্ন ২ ফল লাভ হয়। এই জন্য আর্য্য শাস্ত্র প্রভাতে ব্রহ্মা, মধ্যাহ্নে বিষ্ণু ও সায়াহ্নে

इन्द्रियों का सूक्ष्मता वो स्थूलता भी उस के अन्यतर हेतु है। यहां एक दृष्टान्त देने से बोध होता है कि हमारे पाठकों के समझने में कुछ सुविधा होगी। दृष्टान्त देने ही से दार्ष्टान्तिक के साथ कुछ भिन्नता देखही पडती है। किन्तु दर्शन शास्त्र में दृष्टान्त वो दार्ष्टान्तिक में एक रूपता दृष्ट होती है। मानिये कि आप ने एक दिन रात्रि ७ बजे के समय देवदत्त का स्वरूप दीपालोक में दर्शन किया। "दर्शन किया" इसका वैज्ञानिक तात्पर्य्य यहहै कि दीपालोक उसके देह पर एक प्रकार की क्रिया करी, देह भी उस क्रिया करके अभियुक्त होकर दुसरी एक क्रिया किया और उस क्रिया से उत्पन्न हुई सम्वेग नभो मार्ग करके आपके आंखमें चली गई। यही शेष क्रिया बहुतसी सम्वेगोंकी समष्टीहै। ये सम्वेग राशि फिर चक्षुरिन्द्रिय करके मस्तिष्कमें जा आघात करी। उसके दो घंटे के अनन्तर, जब आपने और किसी एक स्थान में चलागयाथा जहां देव दत्त नहीं है, वहां यदि उस व्यक्ति को चिन्ता वा स्मरण करें, तो क्या उसका रूप यथारीति आपको अनुभव न होगा? उस समय क्या उक्त बिधिसे क्रियायें नहीं होती रहेंगी? उस समय क्या उक्त सम्वेग राशि आपके मस्तिष्कमें न पहुंचेंगी? अवश्यही पहुंचेंगी। प्रत्यक्ष दर्शन के समय मनमें जैसी २ क्रिया होती है, चिन्ता करने के समय भी मनमें वैसीही क्रियायें हुआ करतीहैं। हम प्रत्यक्ष ज्ञानसे जो भीत, प्रीत वो बिरक्त होते हैं, वे सब मनकी क्रिया मात्रहै? भय करके हमारा शरीर सङ्कुचित होताहै, शोकसे शरीर शीर्ण होजाताहै वो आनन्दसे शरीरको पुष्टि होतीहै। मनही हमारे शरीर का नायकहै। सारथी जैसा रथका मनभी वैसाही शरीरका परिचालकहै। मनबिना शरीरकी कोइ क्रिया होनेकी सम्भावना नहीं है।

अब उपासना के प्रकृत मर्म्मकी आलोचना में आगया होतहैं। गत संख्या में यह कहा गयाहै, जो भिन्न २ रूपकी उपासना करने से भिन्न २ फल मिलताहै। फिर वैसाही जानना कि भिन्न २ समय पर भिन्न २ रूपकी आराधना करनेसे भिन्न २ फल मिलताहै। इस लिये प्रातःकाल ब्रह्माजीको, मध्याह्नमें विष्णु महा

মহেশের ধ্যান ক'রবার ব্যবস্থা করিয়াছেন। ব্রহ্মা রজোগুণের, বিষ্ণু সত্ত্ব গুণের ও মহেশ তমোগুণের মূর্ত্তি। রজোগুণ আকর্ষণ কারী বা সংযোজনী শক্তি বিশিষ্ট, তমো গুণ বিযোজন বা বিকর্ষণ কারী এবং সত্ত্ব এতদুভয়ের সামঞ্জস্য কারী। এক্ষণে বিজ্ঞানের সত্যময়ী সহায়তা লইয়া দেখিব, ভিন্ন ২ সময়ে ভিন্ন ২ মূর্ত্তির পরিচিন্তনে কি অপূর্ব্ব ফল লাভ হইয়া থাকে। সগুণ ব্রহ্মের (ঈশ্বরের) যখন আরাধনা করা যায় তখন আত্মা বাসনা বর্জ্জিত হইয়া পড়ে। আত্মা বাসনা শূন্য ও ভগবদ্‌ভাবে তদ্‌গত চিত্ত হইয়া ক্ষণ কালের জন্যও যে অপূর্ব্ব সুখের অনুভব করে, অথবা যে সুখ প্রাপ্তির কামনায় মানব ভগবানের উপাসনা করে, তাহা ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ এতত্ত্রিতয়ের অপূর্ব্ব বিগ্রহের উপাসনায় অনায়াসে লাভ হইয়া থাকে।

ক্রমশঃ

আমার অভিমান।

অভিমান সমস্ত দুঃখের মূল। যখনই কোন কার্য্যের জন্য আমার অভিমানের উদ্রেক হইয়াছে, আমি তাহাতেই দুঃখ পাইয়াছি, ইহা আমার জীবনের পরীক্ষিত ফল। আমাকে কেহ তিরস্কার করিলে আমার নিজ গৌরবের অভিমান আমাকে উত্তেজিত ও ক্রমে তৎসহ বিবাদে প্রবৃত্ত করে। কেহ আমার নিন্দা করিলে আমার মহত্ত্বের অভিমান আমাকে উত্তপ্ত করে ও অন্যের দোষানুসন্ধানে পরামর্শ দেয়। আমার কার্য্যের অপটুতা দেখিয়া কেহ উপহাস করিলে অভিমান আমাকে নিতান্ত নির্ব্বেদ গ্রস্ত করে ও আমার হৃদয় নীরবে রোদন করিতে থাকে। আমি বিদ্যাবান, বিনা আমন্ত্রণে আমি কোন ভদ্র সমাজে যাইব কেন, এই অভিমান আমার অনেক সময় অনেক সৎ সমাগম ও জ্ঞানোন্নতি সাধনে বিঘ্নোৎপাদন করিয়াছে। আমি ধনবান, অমুক স্থানে গেলে পাছে আমি উচ্চ আসন না পাই, এই অভিমান কত দিন

राजको वो संध्याकालमें महेश्वरको ध्यान करना. आर्य्य शास्त्रने यही व्यवस्था दी है। ब्रह्मा जीरजो गुणका, विष्णु सत्वरज सत्वगुणका वा महादेवजी तमोगुणका साक्षात मूर्त्ति है। रजो गुणमें आकर्षण वा मिलानको शक्ति है. तमो गुणमें वियोजन या अलग करनेकी शक्ति है. सत्व गुणमें इन दोनोंका सामंजस्य करनेकी शक्ति है। अब हमको विज्ञानकी सत्यमयी सहायता लेके देखना चाहिये कि भिन्न २ समय में भिन्न २ मूर्त्तिकी चिन्तामें क्या अपूर्व फल मिल सक्ता है। सगुण ब्रह्म या ईश्वरकी आराधना जब की जाती है उस काल में आत्मा बाहर विषयोंको भूल जाता है, इन्द्रिय सुख की इच्छा निरोहित होजाती है। इस समय में आत्मा वासना वर्ज्जित होजाता है। आत्मा वासना रहित वो भगवद्भाव मे तद्गत होकर क्षण भर के लिये भी जो अपूर्व्व सुख अनुभव करता रहता है अथवा जिस सुखकी कामना से जीव भगवत की उपासना करता है, ब्रह्मा, विष्णु वो महेश इन तीनोंके अपूर्व्व मुर्त्ति की उपासना से वह सुख अनायास मिल जाता है।

शेष आगे।

हमारा अभिमान।

अभिमान समस्त दुःखका मूल है। जबही किसी कार्य्यके अनुष्ठानसे हमारा अभिमान उपजा, तबही दुःख आकर मुझे प्राप्त हुआ, यह मेरे जीवनका बारम्बार परखा हुआ फल है। मुझको कोई तिरस्कार करने पर मेरे निज गौरवका अभिमान मुझे उद्दीजित वो उसके साथही साथ उससे लड़नेको प्रवृत्त कर देता है। यदि किसीने निन्दा करे तो मेरे महत्वका अभिमान मुझे उत्तप्त करता है वो दुसरेका दोष ढूढ़नेको परामर्श दिया करता है। मेरे सामर्थ्य की कमी देखके यदि कोई हंसे तो अभिमान मुझे निपट दुःखी कर देता है, वो मेरा हृदय नीरवमें रोया करता है। मैं विद्यावान् हूं, बिन बुलाये मैं क्यों किसी भद्र समाजमें जाऊंगा, यही अभिमान अनेक समय बहुतेरे सज्जन-समागम वो मेरी ज्ञानोन्नति के राह पर विघ्न डाला। मैं धनाढ्य हूं, फलाने स्थान में जानेपर यदि मुझे ऊंचो आसन न मिले, इसी संशय से अभिमान कितने दिन कितनी सहस्रों को

আমাকে কত আশ্চর্য্য প্রদর্শনীর আমোদ লাভে বঞ্চিত করিয়াছে। কত দিন আমি সরল হৃদয় কৃষকও ভৃত্যের সহিত অসঙ্কোচে হৃদয় খুলিয়া সদালাপ করিতে চেষ্টা করিয়াছি, কিন্তু প্রভুত্বের অভিমান কেশাকর্ষণ করিয়া আমাকে বারণ করিয়াছে। শুনিলাম অমুকের ভৃত্য আমার ভৃত্যকে কটূক্তি করিয়াছে, অমনি অভিমান ভৃত্যের সূত্র অবলম্বন করিয়া প্রতিবাদীর প্রভুর সহিত কলহ কোলাহলে প্রবৃত্তি দিল। অজস্র অর্থব্যয় করিয়া ক্রমে আমি নিঃস্ব হইয়া পড়িলাম। আমি দর্শন শাস্ত্রে সুনিপুণ পণ্ডিত, যখনই সভা মণ্ডপে অন্য একজন পণ্ডিতকে "ঈশ্বরোঽস্তি" ইত্যাকার প্রতিপাদন করিতে শুনিলাম, অমনি আমার অভিমান আমাকে তৎপ্রতিদ্বন্দী করিয়া "ঈশ্বরো নাস্তি" এই পাপ পূর্ণ সিদ্ধান্ত করিতে প্রবৃত্তি দিল। আমি অভিমানের দাস হইয়া কত সত্যকে অসত্য বলিয়াছি, কত সদ্ব্যবস্থাকে অব্যবস্থা করিয়া প্রমাণ করিয়াছি, কত পাপ করিয়া লোকের সমক্ষে সাধুতার পরিচয় দিয়াছি। অভিমানই আমাকে কপট করিয়াছে, অভিমানই আমাকে বিবাদী করিয়াছে, অভিমানই আমাকে ঘোর নরকের কুটীল পথ দেখাইয়া দিয়াছে। হা! অভিমানই আমার পরম শত্রু হইয়া ভক্তের—মহাত্মার চরণ চুম্বন করিতে বাধা দিয়াছে, অভিমানই আমাকে অন্যের সৎকথা শুনিতে নিবৃত্ত করিয়াছে, অধিক কি অভিমানই আমাকে সমস্ত সুখের মূল ধর্ম্ম সাধনে বার ২ বারণ করিয়াছে। হা! আজ অভিমান বশতঃই আমি ভাগবতী কথা শুনিতে ২ অশ্রুমোচনে লজ্জা বোধ করিতেছি, অভিমানই আমার সর্ব্বনাশ করিল। অভিমান! তুমি আমাকে পরিত্যাগ কর, আমার সন্তপ্ত হৃদয় সুশীতল হউক। একবার সর্ব্বত্র সম দর্শনে আমি পরমানন্দরস পান করিয়া চির দুঃখের প্রবলানল নির্ব্বাণ করি, প্রাণ পরিতৃপ্ত হউক।

শান্তিঃ শান্তিঃ শান্তিঃ।

সরস্বতী পূজা।

(পুনঃ হইতে প্রাপ্ত)

আমাদের মধ্যে দেবার্চ্চনা এবং অন্য অন্য অনুষ্ঠান আধ্যাত্মিক ভাবে অনুরঞ্জিত। কিন্তু দুঃখের বিষয় এই যে প্রায় সাধারণের চক্ষু সে সমুদায়কে আবরণ

चमत्कारी आमोदसे मुझको वंचित किया। कितने दिन मैंने सरल हृदय कृषक वा भृत्यसे संकोच छोड़के जी खोलि मनसे सदालाप करने की चेष्टा करी थी, किन्तु प्रभुत्व का अभिमान मुझ केशाकर्षण करके मना किया। जब ही सुना कि फलाने का भृत्य ने मेरे भृत्य को कुछ कटु बात बोली, झट मेरा अभिमान भृत्य रूप सूत्र का अवलम्बन करके प्रतिवादी के प्रभु के साथ मेरा कलह कोलाहल में प्रवृत्त कर दिया वो बहुत अर्थ व्यय करके मैं भी क्रमे क्रम धनहीन होता गया। मैं दर्शन शास्त्र में सुनिपुण पण्डित हूं, जब ही किसी सभा में दूसरा किसी पण्डित को "ईश्वरोऽस्ति" इतना प्रतिपादन करने को सुना, झट अभिमान मुझे उसका प्रतिद्वन्द्वी बना कर "ईश्वरो नास्ति" ऐसा पापपूर्ण सिद्धान्त करने में प्रवृत्ति दिया। मैं ने अभिमान का दास बनकर कितने सत्य को असत्य कर प्रमाण किया, कितने पापाचरण करके फिर लोगों के सामहने साधु बन बैठा। अभिमान ही मुझे कपटी बनाया, अभिमान ही मुझे विवादी बनाया, अभिमान ही घोर नरक को कुटील मार्ग मुझे देखा दिया। हा! अभिमान ही मेरा वैर बनकर भक्त—महात्मा के चरण चुमने को बाधा दिया। अभिमान ही मुझ को दूसरा किसी के सत्कथा सुन ने को निवृत्त किया, अधिक क्या, अभिमान मुझे धर्म्म साधन करने में, जो कि समस्त सुख का मूल है, बारम्बार निषेध किया। हा! आज अभिमान ही करके मैं भगवत कथा सुनते२ भरे आंखें से आंसु गिराने में लज्जा मान लिया। अभिमान ही मेरा सर्वनाश किया। अभिमान तु मुझे छोड़ दे। मेरा सन्तप्त हृदय सुशीतल हो जाय। एकबेर सर्वत्र समदृष्टि से मैं परमानन्द रस को पीकर के चिर दुःख रूप प्रबल अग्नि को निर्वाण करूं। प्राण तृप्त मान जाय!

शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

सरस्वती पूजा।

(प्राप्त)

हमारी समाज में जो देवदेवी की मूर्त्ति पूजा प्रचलित है, वे समस्त ही आध्यात्मिक भावसे रंगा हुई है" किन्तु खेद यह है, कि सर्व साधारण लोग इन आध्

পবিত্র ভাবে দেখিতে পায় না। যাহাতে জীবের জড় বুদ্ধি ও অজ্ঞানান্ধকার বিদূরিত হয়, তজ্জন্য পরমা বিদ্যার আরাধনা করা আবশ্যক। নির্ম্মল শ্বেত শতদল নিবাসিনী বেদ বিদ্যা বিধায়িনী বীণা পাণিই সেই সর্ব্বার্থ সাধিনী বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী। বিশুদ্ধ সাত্ত্বিকী বুদ্ধিতে তাঁহার পূজা করিতে হয়। কিন্তু আজ কাল আমাদের দেশে প্রকৃত সরস্বতীর-বিদ্যাধিষ্ঠাত্রী দেবতার—পূজা না হইয়া দুষ্টা-সরস্বতীর পূজা হইয়া থাকে। এই পূজার উপলক্ষে মাতৃ সমক্ষে কাহারও ২ প্রাঙ্গণে কুল কলঙ্কিনী কামিনী গণের নৃত্য গীত হইতেছে, কেহ বা বন্ধুগণ সহ সুরাপানে উন্মত্ত হইয়া আপনার জঘন্য বৃত্তির পরিচয় দিতেছে, কেহবা ধর্ম্ম-সুধাপানের পরিবর্ত্তে, চতুর্ব্বিধ পার্থিব রস আস্বাদন করিয়া আপনাকে ধন্য জ্ঞান করিতেছে। দুঃখের কথা কি কহিব, এই সারস্বতী দেবী বেশ্যা বর্গের আদরের দেবতা হইয়াছেন। কলিকাতা নগরীতে গমন করুন, দেখিবেন, গুণ পুরুষ গণ তাঁহাদের বিদ্যাধরীর মন্দিরে উপস্থিত থাকিয়া অতীব জঘন্য আমোদে লিপ্ত আছেন। হায়! মায়ের দশা শেষে কি এই হইল! তাঁহাকে এই অপবিত্র স্থানে অবস্থিতি করিতে হইল! ভারতি! কি কুলাঙ্গার সন্তান গণকেই নিজ নির্ম্মল ক্রোড়ে স্থান দিয়াছিলে! যে, তাহারা তোমার দুর্দ্দশার এক শেষ করিল।

হায়! দেশের কি দুরবস্থা! দেবার্চ্চনা জঘন্য আমোদের উপায় স্বরূপ হইল! এই জন্যইতো আমরা এত হীন হইয়াছি—এই জন্যইতো আমাদের অধঃপতন হইয়াছে। এই জন্যইতো ইউরোপের সভ্য ভ্রাতাগণ আমাদিগকে হেয় জ্ঞান করিয়া থাকেন—এই জন্যইত খৃষ্টীয় মিশনারীগণ পৌত্তলিকতার নিন্দা করিয়া থাকেন, এই জন্যইতো আমাদের কৃতবিদ্য ব্যক্তি গণ হিন্দু ধর্ম্মকে অসার বিবেচনা করিয়া থাকেন। আমাদের শাস্ত্রের প্রকৃত উদ্দেশ্য মহৎ। কিন্তু তাহা হইলে কি হইবে? আমরা তদনুসারে কার্য্য করি কৈ। আমাদের মনের জঘন্য বৃত্তি সকল চরিতার্থ করাই আমাদের নিত্য ব্রত হইয়া উঠিয়াছে। ভ্রাতৃ গণ! আর কেন! যথেষ্ট হইয়াছে। যাহাতে শাস্ত্রের অভিপ্রায় অনুসারে দেবতার পূজা করিতে পার তাহার চেষ্টা কর। প্রকৃত রূপে পৌত্তলিক হও। একবার সাধরণকে দেখাও যে যিনি প্রকৃত পৌত্তলিক, তিনিই যথার্থ ব্রহ্ম জ্ঞানী।

योंको उस पवित्र भावसे नहीं देखतेहैं। जिससे जीवोंकी जड़बुद्धि वो अज्ञान रूपि अन्धकार छुट जाय तज्जन्य परमा विद्याकी आराधना करनी चाहिये। निर्म्मल श्वेत शतदलवासिनी, वेद विद्या विधायिनी बीणा-पाणि ही उस सर्व्वार्थ साधिनी विद्याकी अधिष्ठात्री देवताहै। विशुद्ध सात्विकी बुद्धिसे उनकी पूजा करनी पड़ताहै किन्तु आज कल हमारे देशमें सरस्वती या विद्याधिष्ठात्री देवताकी पूजा तो दूर रही केवल दुष्टा सरस्वती जीकी पूजा होतीहै। इस पूजाके समय देवीके सामने किसी २ के आंगनमें कुल कलंकिनी कामिनीयोंकी नृत्य गीत होतीहै, किसी २ ने मित्रगण सहित मद्य पानसे उन्मत्त हो निज २ जघन्य वृत्तियांका पहचान देताहै, किसीने धर्म रूप सुधा पानके बदले चार प्रकार के पार्थिव रसका स्वाद लेकर अपनेको धन्य मानताहै। खेदकी बात क्या कहूं, यह सरस्वतीजी वेश्यावर्गको आदर णीय देवता बनीहैं। कलकत्तेमें जाकर देखलीजिये कि स्त्रैण सब अपनी २ विद्याधरीयांकी मन्दिर में वर्त्तमान रहकर अत्यन्त नीच आमोदमें प्रवृत्त रहेहैं। हा! अन्तमें देवी की यह क्या दशा आपड़ी हा: उनको इसी अपवित्र स्थान में रहनी पड़ी। हे भारति! कैसे कुलांगार सन्तानोंको तु निज निर्म्मल अंकमें स्थानदीहि? उन्होंने तुम्हें दुर्दशा की अन्त सीमामें पहुंचादियाहै।

अहो! भारतखण्डकी कैसी दुर्दशा बढ़गयीहै! देवता की अर्च्चना भी जघन्य आमोद के लिये होरहीहै।

इसीलिये हम ऐसी नीच अवस्थाको प्राप्तहुए—इसी लिये हमारी अधोगति हुई। इसी लियेतो युरोपके सभ्यभ्रातृगण हमसबको हेय कर मानतेहैं—इसी लियेतो ईसि धर्म प्रचारक सबहूनी मूर्त्ति पूजन की निन्दा करतेहैं—इसी लिये हमारे ज्ञान विद्य व्यक्तिगण हिन्दु धर्मको असार कर जानतेहैं। हमारे शास्त्रका प्रकृत अभिप्राय अत्यन्त महान है। किन्तु उसे फल क्या? हम तदनुसार कार्य्य कहां करते हैं? हमारे मनकी जघन्य वृत्तियां को पुष्ट करना ही तो आज कल हमारा नित्यव्रत बनगया। भाइयो अब बहुत हुआ! जिसे शास्त्रके यथार्थ अभिप्राया नुसार देवता भी की पूजा कर सको, ऐसी चेष्टा करो सत्यही सत्य मूर्त्ति पूजक बनो। एकबेर सबको यह [illegible]

এই সারস্বতী পূজা উপলক্ষে অবিদ্যার সেবা পরিহার করতঃ যাহাতে প্রকৃত বিদ্যা অর্জ্জন করিতে পার তৎপক্ষে যত্নবান হও, তজ্জন্য পরা বিদ্যার অধিষ্ঠাত্রী দেবীকে পূজা কর। এতদুপলক্ষে অধ্যাপক মণ্ডলী সহ শাস্ত্রালাপ ও ধর্ম্মালাপ কর। তাঁহাদের মর্য্যাদা রক্ষা কর—তাঁহাদের উৎসাহ বর্দ্ধন কর। সরস্বতী পূজা উপলক্ষে আমোদ প্রমোদ আবশ্যক। তাই বলিয়া কি, নটীর নৃত্য দর্শন করিবে ও তাহার মুখ নিঃসৃত অশ্লীল সংগীত শ্রবণ করিবে? ব্রহ্মাণীর প্রেমানন্দে আপনারাই নৃত্য কর, বেদ গান ও শ্রবণ করিয়া অন্তঃকরণকে উল্লাসিত কর। বেদ বিদ্যার বিকাশে ভারতের ভব-ভীতি ভার মুক্ত কর।

বীণা পুস্তক রঞ্জিতহস্তে
ভগবতি! ভারতি! দেবি! নমস্তে॥

মুঙ্গের আ, ধ, প্র, সভায় শ্রীবাবু মহেন্দ্রনাথ রায় মহাশয়ের বক্তৃতা।

ভারতবাসী গণ! আর্য্য ভ্রাতৃগণ! একবার ক্ষণ কালের জন্য একাগ্র চিত্তে নিজ ২ শোচনীয় অবস্থার প্রতি দৃষ্টিপাত কর। পবিত্র আর্য্য কুলে জন্ম গ্রহণ করিয়া আমাদের পিতৃগণ একমাত্র ধর্ম্ম বলে বলীয়ান ও তপঃ প্রভাবে ত্রিকালজ্ঞ হইয়া জীবনের গূঢ় উদ্দেশ্য সাধন করিয়া গিয়াছেন এবং অবনী মণ্ডলে এমন কীর্ত্তিস্তম্ভ স্থাপন করিয়া গিয়াছেন যে এখন ও পর্য্যন্ত আমরা তাঁহাদের নামে বিখ্যাত হইয়া রহিয়াছি। তাঁহাদের পুণ্যবলে ও তাঁহাদের প্রসাদে এখনও আমরা আর্য্য জাতি বলিয়া পরিচয় দিতে পারিতেছি। এই জগতে দুই প্রকার সন্তান দেখিতে পাওয়া যায় কোন সন্তানের দ্বারা বংশের মুখ সমুজ্জ্বল হয় ও কাহারও দ্বারা বংশের ও পুরুষানুক্রমে অধোগতি হয়। ইহা আমরা অনেক স্থলে প্রত্যক্ষ দেখিতে পাইতেছি। এক্ষণে আর্য্য বংশে আমরা কি রূপ সন্তান জন্ম গ্রহণ করিয়াছি, তাহা আমাদের নিজ ২ শরীরিক ও মানসিক অবস্থা পর্য্যালোচনা করিলেই সহজেই অনুমিত

इस सरस्वती जीकी पूजाके समय अविद्या की सेवा करना छोड़ दो। जिसे प्रकृत विद्याको अर्ज्जन कर सको, उसपर अधिक यत्नशील बनो। तज्जन्य परा विद्याकी अधिष्ठात्री देवीकी पूजा करो। इस समय पण्डितों से मिलकर शास्त्रार्थ वो धर्म्मचर्च्चा करो।। उन सबकी मर्य्यादा वो उनहों का उत्साह बढ़ाओ। सरस्वती पूजाके समय अवश्यही कुछ आमोद करनी चाहिये। तदर्थ क्या दूषित चरित्र नाचनेवाली स्त्रीयां की नृत्य देखना उचितहै? वो उन सबकी मुंहसे बुरी २ गीत सुनते रहोगे? ब्रह्माणीके प्रेमानन्द से आपही आप नृत्य करते रहो—वेद गान सुनते वो गाते जाओ। इससे अन्तःकरणको प्रफुल्लित कर लो। वेद विद्याकी बिस्तार से भारत की भव- भीति रूप भारको उतार दो।

वीणा पुस्तक रंजित हस्ते
भगवति! भारति! देवि! नमस्ते॥

मुंगेर आ० ध० प्र० सभा में श्रीबाबु महेन्द्र नाथ राय जी की वक्तृता।

हे भारत वासियों! हे आर्य्य भाइयों! एक बेर क्षण भर के लिये भी तो निज २ शोचनीय अवस्था पर दृष्टि करो। पवित्र आर्य्य कुल में जन्म लेके हमारे पूर्व्व पुरुषों ने केवल धर्म्म-बल से बली वो तप के प्रभाव से त्रिकालज्ञ बन कर शरीर धारण का गूढ़ उद्देश्य साधन कर गये औ संसार में ऐसे कीर्त्ति स्तम्भ सब स्थापन कर गये जो अब तक हम उन्हों के नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं। उन्हीं के पुण्य बल से उन्हों की कृपा से अब तक हम आर्य्य जाति का पहचान देते हैं। इस संसार में दो प्रकार के सन्तान देखने में आते हैं। किसी पुत्र से तो कुल उज्ज्वल होता है, किसी की बुरी रीति नीति से कुल की अधोगति होती है। बहुतेरे स्थान में यह प्रत्यक्ष देखही पड़ता है। आर्य्य कुल में हम सब कैसे २ लड़के उत्पन्न हुए, सो तो हमारे शरीर वो मन की अवस्था देखने ही से सुझ पड़ता है। हम अब

হইতে পারে। আমরা এক্ষণে এরূপ বিষয় বিকারে বিমোহিত ও সংসারাসক্ত হইয়া পড়িয়াছি, যে ক্ষণ কালের জন্য আপনাদিগের অবস্থা উন্নতির চিন্তা করিবার অবসরও পাইতেছি না। মন প্রবল সংসার স্রোতে পড়িয়া অহর্নিশি বিচলিত, এক মুহূর্ত্তের জন্যও বিশ্রাম নাই। আমাদের বর্ত্তমান অবস্থা ভাবিলে আর্য্য সন্তান বলিয়া পরিচয় দিতে লজ্জা বোধ হয়। তাঁহাদের পবিত্র কুলে পবিত্র গৃহে জন্ম পরিগ্রহ করিয়া যদি আমরা তাঁহাদের আচরিত পথ অনুসরণ করিতে না পারিলাম, তবে আমরা বৃথা কেন তাঁহাদের কুলজাত বলিয়া তাঁহাদের পবিত্র নাম কলঙ্কিত করি।

আমাদের এই রূপ অবনতির কারণ কি। এক সময়েই বা কেন এই আর্য্য বংশের এত সম্মান ও গৌরব ছিল এবং এক্ষণেই বা কি কারণে আমাদের এরূপ দুর্দ্দশা উপস্থিত। দেখিতে পাওয়া যায়, এক মাত্র ধর্ম্ম বলেই আর্য্য বংশীয়েরা জীবন সুখের চরম সীমায় উপস্থিত হইয়াছিলেন, এবং সেই একমাত্র ধর্ম্মাভাবেই আবার সেই আর্য্য বংশীয় আমাদের এরূপ হীনাবস্থা ঘটিয়াছে যে সময়ে তাঁহাদের ধর্ম্মে এরূপ গাঢ় অনুরাগ ছিল এবং এসময়ে আমাদেরই বা এরূপ ধর্ম্মে বিরাগ ঘটিবার কারণ কি। মনকে অভ্যাস দ্বারা যে দিকে লইয়া যাইবে সেই দিকেই যাইবে। বাল্য কাল হইতে যে রূপ সংস্কার জন্মিবে মানুষের প্রকৃতি সেই রূপ গঠিত হইবে। এই জন্যই বুদ্ধিমান লোকে বাল্য কাল হইতে সন্তান দিগকে সুশিক্ষিত করেন। বালক গণ যেরূপ শিক্ষা পাইবে সেই রূপ শিখিবে। আজ কাল আমাদের মধ্যে অর্থকরী বিদ্যা ভিন্ন অন্য কোন বিদ্যা শিখাইবার জন্য পিতা মাতা বা শিক্ষক দিগের আদৌ যত্ন নাই। সুতরাং সন্তান সকলও সেই রূপ বাল্যকাল হইতে বিষয় ব্যাপারে গাঢ় অনুরাগী হইয়া পড়ে। সুতরাং অন্য ২ দিকে অর্থাৎ ধর্ম্মের দিকে বিরাগ আপনাআপনি উদয় হয়। সেই অবস্থায় পতিত হইয়াই আমাদের এরূপ অধোগতি হইয়াছে। পূর্ব্বকার আর্য্য ঋষি গণ একান্তে নিবাস ও বনের ফল মূল দ্বারা জীবনাতি

ऐसे विषय के विकारों में विमोहित वो संसार में फंसे रहे हैं. जो क्षण भर के लिये भी हमारी अवस्था की उन्नति के अर्थ अवसर नहीं मिलती है। मन प्रबल संसार के प्रवाह में पड़कर दिन रात विचलित हो रहा है एक मुहूर्त्त का भ विश्राम नहीं। हमारा वर्त्तमान अवस्था को सोचने पर अपने को आर्य्य सन्तान कहलाने में लज्जा बोध होती है। उन्हीं के पवित्र कुल में जन्म लेकर यदि हम उनके चलाई हुई पंथ पर न जा सकें, तो व्यर्थ क्यों हम आर्य्य वंशी कहला के उस पवित्र नाम को कलंकित करें।

हमारी इस भांति अवनति का कारण क्या है? क्यों एक समय में इस आर्य्य वंश का सम्मान वो गौरव बड़े तेज से चमकाये थे, फिर अब क्यों इस दूषित हुईगा हम सब को नाम हुई। स्पष्ट प्रतीति होती है जो केवल धर्म्महो के बल से आर्य्य लोग जीवन के सुख की अन्त सीमा लो पहुंच गये थे, फिर केवल उस धर्म्म ही के अभाव से हमारी ऐसी दुर्दशा आ पड़ी है। एक समय धर्म्म पर उन सब को ऐसी प्रीति रही, किन्तु हमारा चित्त इस धर्म्म पर आरूढ़ क्यों नहीं रहता है। अभ्यास के बल से मन को जिधर चाहैं उधर ले जाइये। बाल्यकाल से जैसा २ संस्कार बनता जायगा मनुष्य की प्रकृति भी वैसी २ बनती जायगी। इसी लिये बुद्धिमान लोग बाल्यकाल से सन्तानों को सुशिक्षित करते रहते हैं। जैसी शिक्षा दी जायगी, बालकों ने वैसेही सिखते रहेंगे। आज कल हमारे देश में यह बड़ा एक दोष देख पड़ता है, कि किसी ने अपने पुत्र को बिन रुपये कमाने की विद्या और कुछ सिखलाने के यत्नही नहीं करते हैं। अतएव सन्तान सब बाल्य कालही से विषय व्यापारों में क्यों नहीं फंसेंगे? सुतरां धर्म्म पर विराग स्वतःएव उदय होता है। इसी अवस्था के अनुसार चलने पर हमारी यह दुर्दशा आ गयी। प्राचीन आर्य्य ऋषि गण एकान्त स्थान में वास वो बन के फल मूल भोजन करते रहे वो भगवत की परिचर्य्या, उन के गुण कीर्त्तन वो चिन्तन करके जीवन को

পাত করিতেন ও ভগবৎ পরিচর্য্যা, তদ্গুণানু
কীর্ত্তন, ও চিন্তন করিয়াই জীবন সফল করিতেন।
সামাজিক গণও তাঁহাদের সঙ্গে থাকিয়া উপদেশ
পাইয়া সেই রূপ অনুকরণ করিতেন। আমাদের
ভগবৎ চিন্তার স্থানে সংসার চিন্তা, উদরের
চিন্তা, স্ত্রী পুত্রের চিন্তাই বলবৎ হইয়া পড়িয়াছে।
ঈশ্বরে অবিশ্বাস ইহার প্রধান কারণ। যে মনুষ্য
ঈশ্বরের উপর নির্ভর করিয়া চলে তাঁহার কি ইহ
লৌকিক কি পারলৌকিক সকল কর্ম্মই সুচারু
রূপে চলিয়া যায়। কিন্তু তাঁহার উপর অবিশ্বাসই
আমাদের অধঃপতনের প্রধান কারণ। তাঁহার প্রতি
বিশ্বাস ও নির্ভর থাকিলে মন আর সংসার ও
তাহার আনুষঙ্গিক বিষয়ের জন্য বৃথা চিন্তিত হয়
না, সুতরাং সেই নিশ্চিন্ত মন অনায়াসেই ভগবৎ
চিন্তায় অগ্রসর হইতে পারে। মানুষের মন এক,
তাই এক দিকেই চালিত হইতে পারে। মহাত্মা
তুলসী দাসজী এক স্থানে বলিয়াছেন:—

"যাঁহা রাম তাঁহা কাম নাহি
যাঁহা কাম তাঁহা নাহি রাম।
তুলসী কবহুঁ কি হো সকে
রবি রজনী এক ঠাম॥

যেমন এক সময়েই দিবা ও রাত্রি হইতে পারেনা
তদ্রূপ এক মন দ্বারা সংসার কামনা ও
ভগবচ্চিন্তা দুই কার্য্য হইতে পারেনা। আশু
সুখকরী কামনাকে আমরা নিরন্তর হৃদয়ে
স্থান দিতেছি কিন্তু এক দণ্ডের জন্যও কায়মনো
বাক্যে ঈশ্বরের দিকে অগ্রসর হইতে পা-
রিতেছিনা। এই আমাদের অবনতির কারণ।
বোধ হয় এই বাক্যটী সকলেই জানেন:—

"আপাত মধুর পাপ কর্ম্ম কালে বটে।
পরিণামে পরিতাপ অবশ্যই ঘটে॥

" ইহা জানিয়া শুনিয়াও আমরা আপাত
সুখে মত্ত হইয়া পরিণাম দুঃখ ভুলিয়া গিয়াছি।
ভগবৎ ভক্তি যদিচ প্রথমে কিঞ্চিৎ কঠোর ও
শুষ্ক বলিয়া বোধ হয় বটে কিন্তু যতই অগ্রসর হওয়া
যায় ততই আনন্দ অনুভব হইতে থাকে। অতএব
ভ্রাতৃ গণ! এক্ষণে যদি কেহ আমাদের জিজ্ঞাসা
করে যে প্রথমে সুখ ও পরে দুঃখ চাও অথবা
প্রথমে দুঃখ ও পরে সুখ চাও। তাহা হইলে বোধ
হয় সকলে সমস্বরে বলিব যে আমরা প্রথমে দুঃখ

सफल करते थे। सामाजिक गण भी उन्हीं के
संग रहके २ वो उन्हीं के उपदेश सुनके २ उन्हीं
के अनुसरण कर लेते थे। किन्तु हमी भगवत चिन्ता
के बदले, उदर की चिन्ता, स्त्री पुत्रों की चिन्ता, प्र-
बल बलवती हो चुकी है। इस का प्रधान कारण
भगवत पर अविश्वास है। जिस ने भगवत् पर अ-
पना भार डाल के दिन निबाहता है, उस के इस
लोक वो परलोक में आपसेही आनन्द मिलता है।
उस पर अविश्वास करनाही हमारे अधःपतन का
मूल है। उस पर विश्वास वो भार रहने से मन
फिर संसार के विषयों के अर्थ वृथा चिन्तित नहीं
होता है। सुतरां वह चिन्ता रहित मन अनायास
भगवत की चिन्ता करने में अग्रसर हो सक्ता है।
मनुष्य का मन एक है, वह दो काम नहीं करे!
महात्मा तुलसी दास जी ने कहा है—

जहां राम तहां काम नहीं
जहां काम तहां नहीं राम।
तुलसी कबहुं कि होसके
रव रजनी एक ठाम॥

एक ही समय में दिवा वो रजनी, नहीं हो
सक्ती है। एकही मन से संसार की कामना
वो भगवत की चिन्ता नहीं बन सक्ती है।
उसी कामना को, कि जिससे उपस्थित सुख
मिलता है, हम हृदय में रखते हैं, किन्तु क्षण
भरके लिये भी काय मन वचन से ईश्वर की
ओर आगे बढ़ने की जी नहीं चाहता है। यह
हमारी अवनति का कारण है। बोध होता है
कि यह सब कोई विदित हैं कि पाप करने
के समय तो सुख कर है किन्तु अन्त में पश्चा
त्ताप अवश्य ही होता है। यह जान बूझके
भी हम उपस्थित सुख में प्रमत्त होकर अन्त:
का दुःख भुल जाते हैं। यदि च भगवत् की भक्ति
पहले थोड़ा बहुत कठोर वो सूखी रूखी बोध
होती है, किन्तु जितने ही आगे बढ़ोगे उतनेही
आनन्द अनुभव होता रहेगा। अत एव हे भ्रातृ-
गण! अब यदि कोई हम को पुछे, कि पहले
सुख वो अन्तमें दुःख चाहते हो अथवा पहले
दुःख वो अन्तमें सुख चाहते हो? इसे बोध

হউক বা যা হউক অন্তে অনন্ত সুখ চই। কিন্তু এটি আমাদের মৌখিক কথা মাত্র, কারণ কার্য্যে আমরা যাহাতে আপাত সুখ সেই দিকেই ধাবিত হইতেছি! বস্তুতঃ জগতে যাহার একটু বুদ্ধি আছে সে যাহাতে পরিণামে সুখ হয় সেই চেষ্টাই করে। বালকগণ বাল্য কালে পরিশ্রম ও অধ্যবসায় সহ লেখাপড়া শেখে, কেননা শেষে ভাল হইবে। যুবক গণ পরিশ্রম ও কষ্ট স্বীকার করিয়া অর্থ উপার্জ্জন করেন যে শেষে সুখে থাকিব। এই ইচ্ছা প্রায় সকলের দেখা যায়, কিন্তু সুখ কিরূপে হয় তাহার তত্ত্ব অনেকেই চিন্তা করেন না সুতরাং সুখের অভিলাষে মৃগের মরীচিকার ন্যায় চারিদিকে পাগলের মত ঘুরিয়া বেড়াইতেছেন। প্রিয় ভ্রাতৃ গণ! ক্ষণ কালের জন্য স্থির হইয়া দেখ, বেশ বিবেচনা করিয়া দেখ, সে সুখ কোথায়, যাহা আমাদের পূর্ব্ব পুরুষেরা এই পুণ্য ভূমি আর্য্যাবর্ত্তে এককালে অনায়াসে মনের সাধে ভোগ করিয়া গিয়াছেন। এখন তোমরা যেখানে সে সুখের অন্বেষণ করিতেছ সেখানে সুখ নাই বরং তাহার পরিবর্ত্তে তাহার বিপরীত দুঃখই বিরাজমান রহিয়াছে। এমন মোহে অন্ধ হইয়া পড়িয়াছ, যে কোন পথে গেলে সুখকে পাইবে তাহা দেখিতে পাইতেছনা। ভারতের এই মোহ নিদ্রা কি এত গাঢ় হইয়াছে যে চারিদিক হইতে ধর্ম্মোৎসাহী মহাত্মাগণ ঊর্দ্ধ হস্তে এরূপ জাগাইয়া দিতেছেন তথাপি ও নিদ্রা ভঙ্গ হইতেছেনা। যদি যথার্থ নিদ্রা হইত তাহা হইলে বোধ হয় এত চিৎকারে অবশ্যই ভাঙ্গিত। এ যে জাগিয়া নিদ্রিতের ন্যায় রহিয়াছি, সুতরাং শত বজ্রাঘাত হইলেও আমাদের এরূপ নিদ্রা ভাঙ্গিবার নহে। হা! সন্তানের দ্বারা মাতা পিতার মুখ উজ্জ্বল হয়। কিন্তু আমরা এমনই কুসন্তান মাতার গর্ভে জন্ম লইয়াছি, যে আমরা জীবিত থাকিতেই মাতার এই হীনাবস্থা! বন্ধুগণ! ক্ষণ কালের জন্য স্থিরভাবে আমাদের ভারত মাতার অবস্থা পর্য্যালোচনা কর। অতি বৃষ্টি অনাবৃষ্টি, মহামারী দুর্ভিক্ষ মেলেরিয়া, পরাধীনতা, নীতি ও ধর্ম্মের অভাব, আচার

होना है यही उत्तर सब कोई देंगे, कि चाहे पहले दुःख या कुछ हो अन्त में अनन्त सुख हमको मिले किन्तु यह उत्तर हमारा वाग्विलास मात्र है। क्यौंकि कार्य्य के समय तो हम उसी में दौड़ते हैं कि जिसमें उपस्थित सुख है। वास्तव में संसार में जो कोई बुद्धिमान है उसने अन्त सुख के लिये चेष्टा करती है। लड़को सब बाल्य काल में परिश्रम वो अध्यवसाय से लिखते पढ़ते हैं, क्यौंकि अन्त में, सुख मिलेगा। युवक गण परिश्रम वो कष्ट करके द्रव्य संग्रह करते है, क्यौंकि अंतमें सुखी बनेंगे। ऐसीही इच्छा सब किसीही की देख पड़ती है, किन्तु सुख कहां से होय. यह कोई नहीं सोचता है। अतएव संसारके सुख के अर्थ मृग तृष्णाके समान मनुष्य गण बावड़ाये फिरते हैं। हे प्यारे भाइयों! क्षण भरके लिये स्थिर होकर देखो सोच विचारके-देखो जो वह सुख कहां मिलता है, जोकि हमारे आर्य्य महात्मा लोग पुण्य भूमि आर्य्यावर्त्त में एक समय अनायास यथा रूचि भोग कर गये। अब जहां उस सुख को ढुंढ़ते हो वंहा वह नहीं है, बरं उस के बदले उसके विपरीत दुःख ही मिलेगा। ऐसे मोहमें फंसे हो कि कौन राह पर जाने से सुख चैन मिलता है, सो भी बुझ नहीं सक्ते हो। भारत को यह मोह निद्रा ऐसी ही चढ़ गयी है, कि चारो ओरसे धर्म्मोत्साही महात्माओंने उंचे स्वरसे हात उठाये पुकार२कर जगाने को चाहते हैं, तब भीनिद्रा नहीं टुटतीहै। यदि यह सत्य निद्रा होती तो यह टुटजाती, किन्तु वास्तव मैं हम जागे हुए है। केवल निद्रितों की समान हम आखें मुदे सोये रहते हैं। अब सौ बिजली गिरने से भी हमारी निद्रा न टुटेगी। चाहिये कि सन्तानों से पिता माता के कुल उज्ज्वल होवे, किन्तु हम माता के गर्भ से ऐसे कुसन्तान उत्पन्न हुए कि हमारी जीवित दशा ही में माताकी दुर्दशा हो रहीहै। मित्र गण! क्षण भर के लिये भी स्थिर चित्तता से भारत माता की दुर्दशा पर ध्यान धरो। अति वृष्टि,

ভ্রষ্টতা আদিতে ভারত মাতার কি শোচনীয় অবস্থা উপস্থিত হইয়াছে। আমাদের জীবন থাকিতেও চক্ষের সম্মুখে মাতার এই দুরবস্থা দেখিয়াও সংসার মদে মত্ত হইয়া অনায়াসে দিন পাত করিতেছি। ধিক্ আমাদের জন্মে! ধিক্ আমাদের কর্ম্মে! ধিক আমাদের কুলে, ধিক্ আমাদের ধনে ধিক্ আমাদের মানে, ধিক আমাদের জীবনে। আর এ জীবন ধারণের কিছুই প্রয়োজন নাই। যদি এমন দুর্লভ মনুষ্য জন্ম পাইয়া এমন ধন্য ভূমি ভারত খণ্ডে জন্ম গ্রহণ করিয়া মনুষ্যত্ব লাভ করিতে না পারিলাম তবে এজীবনই বৃথা। ইহা অপেক্ষা পশু হওয়া শতগুণে ভাল। আহার, নিদ্রা মৈথুন এতিনটীতো পশু দিগেরও আছে, তবে মানুষ পশু অপেক্ষায় কোন্ বিষয়ে শ্রেষ্ঠ। মনুষ্যের সদসৎ বিবেচনা শক্তি আছে, পশুদিগের নাই। এই বিষয়েই খালি পশু অপেক্ষা মনুষ্য শ্রেষ্ঠ। সেই মনুষ্য জন্ম পাইয়া যদি আমরা সদসৎ বিবেক বিহীন হইয়া আহার নিদ্রা মৈথুনেই প্রবৃত্ত থাকি তবে আমাদের সঙ্গে পশুর ভিন্নতা কোথায়?

"আহারো মৈথুনং নিদ্রা ভয়ং ক্রোধস্তথৈবচ।
জায়ন্তে সর্ব্বজন্তূনাং বিবেকো দুর্লভঃ পরং"।

ক্রমশঃ

(প্রাপ্ত)

সমাজের সাময়িক বেগ।

শিক্ষিত সমাজে নিত্য নূতন তরঙ্গ উঠিতেছে, সময় স্রোত তাহাকে দিগ্দিগন্তে ভাসাইয়া দিতেছে। আমরা স্বাধীনতা চাই, ইংরাজ দিগের সমকক্ষ হইতে যাই, অব্যাহত বেগে স্বেচ্ছামত উন্নতির দিকে যাইতে চাই, প্রত্যেক লোকই ঈদৃশী উন্নতির জন্য ব্যস্ত। কেহ বা সামাজিক উন্নতি, কেহ বা রাজনৈতিক উন্নতি, কেহ বা ধর্ম্ম জগতের উন্নতি, এই প্রকারে শিক্ষিত ব্যক্তি গণ বিভিন্ন রীতির উন্নতির হাস্য মুখ দেখিতে চান। যাঁহারা সমাজের উন্নতি লিপ্সু, তাঁহারা সমাজকে নূতন আকারে গঠিত করিতে ও বিলাতি সজ্জায় সাজাইতে চান, যাঁহারা রাজ নৈতিক উন্নতির পক্ষপাতী তাঁহারা ইংরাজদের সহিত

अस्वास्थ्य, महा मारी, दुर्भिक्ष, म्यालेरिया, पराधीनता, नीति वो धर्म्म चर्चा का अभाव, आचार भ्रष्टता आदि से भारत माताकी यह शोचनीय दशा आ पड़ी है। हम सब जीवित रहे, साम्हने हमारी माताकी दुर्दशा देख के भी हम अनायास चैन करते रहते हैं। हमारे जन्म को धिक्कार है, हमारे कर्म्म को धिक्कार है, हमारे कुल कोधिक्कार है, हमारे धन को, हमारे मान को, हमारे जीवन को भी धिक्कार है। यह जीवन से फिर लाभ क्या? ऐसे उत्तम दुर्लभ मनुष्य शरीर पाकर के, इस भरत खण्ड में जन्म लेकर के यदि मनुष्यत्व न मिला तो यह जीवन व्यर्थही है, पशुका शरीर भी इससे उत्तम है। आहार निद्रा, मैथुन ये तो पशुओं में भी है, तो फिर पशुओं से किस विषय में हम श्रेष्ट हैं। सत् वो असत् को विचार शक्ति करके मनुष्य पशुओं से उत्तम है। यदि मनुष्य शरीर पाकर के भला बुरा का विचार न कर सके, यदि आहार निद्रा वो मैथुन ही में प्रवृत्ति बनी रही तो हमसे पशुओं की भिन्नता क्या रही?

आहारो मैथुनं निद्रा भयं क्रोध स्तथैवच।
जायन्ते सर्व्व जन्तूनां विवेको दुर्लभः परं।

शेष आगे

(प्राप्त)

समाज की सामयिक वेग।

शिक्षित समाज में नित्य नयी २ तरंग उछल उठ रही है, किन्तु समय के प्रवाह इस को कहा लेजाती है, उसको कुछ भी पता निशान नहीं मिलती है। हम को स्वाधीनता चाहिये, हम को अंगरेजों की बराबरी करनी चाहिये, बिन रोक टोक के जैसी जी चाहे वैसी उन्नति की मार्ग में जाना चाहिये। प्रति मनुष्य ही अब इस भांति उन्नति के लिये व्याकुल है। किसीने सामाजिक उन्नति, किसीने राज नैतिक उन्नति, किसीने धर्म्म जगत् की उन्नति, इसी प्रकार से शिक्षित व्यक्ति मात्र ही किसी न किसी प्रकार की उन्नति को हंस मुख देखने चाहते हैं। समाज की उन्नति चाहने हारे यह चाहते हैं, समाज को एक नयी ढंग बनावें वो बेलाती साज से साजावें, राजनैतिक उन्नति के

সমান আসনে বসিতে চান্, যাঁহারা ধর্ম্ম জগতের উন্নতি কামনা করেন, তাঁহাদের ইচ্ছা, পুরাতন ধর্ম্ম—জীর্ণ ধর্ম্ম-ভারত বাসীর বাসি ধর্ম্ম দূর হইয়া যাউক, একটী নবীন ঘরগড়া ধর্ম্ম প্রচারিত হউক। আধুনিক সমাজের উন্নতির ফল বিধবা বিবাহ, স্ত্রী শিক্ষা, স্ত্রী স্বাধীনতা ইত্যাদি। রাজনৈতিক উন্নতির ফল, সুরেন্দ্র বাবুর কারাবাস, ইলবার্ট বিলের অপূর্ব চিত্র ইত্যাদি। আধুনিক ধর্ম্মোন্নতির ফল ব্রাহ্ম সমাজ ও যথেচ্ছাচার। এক্ষণে দেখিতে হইবে এই উন্নতি ত্রিতয়ের প্রসূত ফল দ্বারা ভারতের উপকার অথবা অপকার হইয়াছে। বিধবা বিবাহ বর্ত্তমান ভারতে যে ভাবে আসিয়াছে তাহাতে ব্যভিচারের স্রোত বাড়াইয়াছে ও এক প্রকার উন্নত শ্রেণীর দ্বিচারিণী দলের সৃষ্টি ও পুষ্টি বর্দ্ধন করিতেছে। এমন বিধবা বিবাহ দেখিলাম না, যাহা নির্ব্বিঘ্নে এবং পবিত্র ভাবে সম্পন্ন হইয়াছে, স্ত্রী শিক্ষা যে রীতিতে চলিয়াছে, স্ত্রী জাতি শিষ্ট, শান্ত, নির্ম্মল স্বভাব হওয়া দূরে থাকুক তাহাদের প্রচণ্ডতা ও প্রগল্ভতা দিন২ বৃদ্ধি পাইতেছে। পাতি ব্রত্য কাহাকে বলে তাহা দিন ২ ভুলিয়া যাইতেছে। গুরু জন শুশ্রূষা, বহু পরিবার সহ একত্র বাস, পাক প্রক্রিয়া, সন্তান পালন, কুটুম্ব সেবা আদি বিষয়ে বিমুখ হইতেছে। রাজনৈতিক আন্দোলন দ্বারা ইলবার্ট বিলের যে শ্রাদ্ধ হইয়া গিয়াছে তাহাতে দেশীয়ে ও ইংরাজে মিত্র ভাব দূরে থাকুক বরং শত্রুভাব বৃদ্ধি পাইয়াছে, ইহা কাহারও অবিদিত নাই যে আধুনিক নব ধর্ম্ম প্রচার কর্ত্তারা ব্রহ্ম নামে অভিহিত হইয়া যে প্রকার একতার ও মহত্ত্বের পরিচয় দিতেছেন তাহা তিনটী সমাজের ভিন্ন২ অস্তিত্বই জগতে ঘোষণা করিতেছে। থিয়সফিষ্ট দল ভবিষ্যৎ নাস্তিকতার অলক্ষিত সূক্ষ্ম সূত্র অবলম্বন করিয়াছেন, তাঁহাদের ইন্দ্রজাল ভেদ করিয়া বুঝিয়া উঠে কাহার সাধ্য। রাজনৈতিক আন্দোলনে আপাততঃ যাহা কিছু আমাদের উপকার হইয়াছে, তন্মধ্যে ভারত বর্ষে বহুল শিক্ষা প্রচারই এক মাত্র কারণ। কিন্তু ভবিষ্যতে দুর্ব্বল প্রকৃতি দেশীয়গণ প্রবল প্রকৃতি ইংরাজের সহিত সমান আধিপত্য করিতে গেলে নিশ্চয়ই

पक्षपाती लोग अंगरेजों की बराबर आसन पर बैठने चाहते हैं, जिन्होंने धर्म्म जगत् की उन्नति कामना की करती है, उन्हों की चाह यह है, कि पुराना धर्म्म, जीर्ण धर्म्म याने भारत निवासियों के आदिम धर्म्म, जो कि उन्हों के साम्हने दुर्गन्धी है, दूर निकाली जावे वो एक ताजा बनाया हुआ धर्म प्रचारित होय। आधुनिक समाज की उन्नति के फल ये हैं, विधवा-विवाह, नारी शिक्षा, स्त्री-स्वाधीनता इत्यादि। राजनैतिक उन्नति का फल-सुरेन्द्र बाबू की कारा-निवास, इलबार्ट बिलकी अपूर्व्व चित्रकारी इत्यादि। आधुनिक धर्म्मोन्नति का फल ब्राह्म समाज वो यथेच्छाचार। अब देखना चाहिये कि इन तीनों उन्नति से जो२ फल उपजाते हैं वे हमारे उपकारी या अपकारी हुए। जिस रीति से विधवा विवाह वर्त्तमान भारत में आ अवतीर्ण हुए है, उसे व्यभिचार की प्रवाह बढ़ गयी है, एक उन्नत श्रेणी की द्विचारिणी के दल की सृष्टि वो पुष्टि बर्द्धन होती जाती हैं। ऐसी विधवा-विवाह हमें न दृष्टि में आइ, जो कि निर्व्विघ्नता वो पवित्रता से सम्पन्न हुइ। नारी शिक्षा जिस रीति चलाई जाती है, उसे स्त्रियों की शिष्ट, शान्त, निर्म्मल स्वभाव बनने की आशा तो दूर रही, उन्हों की प्रचण्डता वो प्रगल्भता दिनों दिन बढ़ही जाती है। पातिव्रत्य धर्म्म तो वे भूलही गयी। गुरुजन की सेवा, बहु परिवार सहित एकत्र वास, पाक-प्रक्रिया, सन्तान पालन, कुटुम्ब सेवन आदि व्यापारों में वे विमुख होने लगी। यह किसी का अविदित नहीं कि राजनैतिक आन्दोलन से इलबार्ट बिल का जो श्राद्ध हो चुका इसे देशी वो बेलातीयों में मित्र भाव होना तो किनारा रहा बरं शत्रुता बढ़ गयी। आधुनिक नव धर्म्म प्रचार करने हारों जिन्हों ने ब्राह्म नाम धारण किये हैं, जिस प्रकार की एकता वो महत्व का नमूना देखलायें है, सो एक समाज से तीन समाज बन जाना वो परस्पर में खट पट रहना उस का पूर्ण प्रमाण है। थियसफिष्ट दल भविष्यत् नास्तिकता को अलक्षित सूक्ष्म सूत्र को अवलम्बन कर लिये हैं। किसको सामर्थ्य है कि उनको इन्द्रजाल फोड़ तोड़ के ये बात समझ ले। राजनैतिक आन्दोलन से हमारी जो कुछ उपकार हुआ, वह भारत वर्ष में केवल ऊंची शिक्षा का फल है। किन्तु भविष्यत् काल में दुर्व्वल प्रकृति भारत निवासी गण प्रवल प्रकृति अंगरेजों से यदि बराबरी करते चले, तो आश्चर्य नहीं कि वे लोग मारे जांगे। अत-

মারা যাইবে। অতএব ইংরাজের সমকক্ষ হইবার আশা করা বৃথা।

উক্ত প্রকার ধর্ম্ম এবং সমাজ সম্বন্ধীয় আন্দোলন দ্বারা ভারতের কিছু মাত্র উপকার হইয়াছে বলিয়া বোধ হয়না বরং রাশী ২ অনর্থ উৎপন্ন হইয়াছে। যাহা হউক এক্ষণে যথার্থ ভারতের উন্নতি কি প্রকারে হইতে পারে তদ্বিষয়ে চিন্তা করা আবশ্যক। ভারতবর্ষ আর্য্য নিবাস বলিয়া চিরকাল প্রসিদ্ধ। আর্য্যেরা এক সময়ে ভারতবর্ষে উন্নতির উচ্চ শীর্ষে উঠিয়াছিলেন, ধর্ম্মই তাহাদের প্রধান বল, সহায় ও সম্পত্তি ছিল, ইহা সকল দেশের সকল শাস্ত্রই স্বীকার করিতেছে। আধ্যাত্মিক উন্নতিকেই তাঁহারা উন্নতি বলিয়া স্বীকার করিতেন। এক্ষণে আমরা সেই পৈতৃক সম্পত্তি "ধর্ম্মের" যথার্থ সদ্ব্যবহার করিনা বলিয়াই আমাদের এই দুর্গতি। সেই ধর্ম্মের পূর্ণ পরিচর্য্যা ব্যতিরেকে লক্ষ ২ ব্রাহ্ম সমাজ হইলেও বা লক্ষ ২ সমাজ সংস্কর্ত্তা আসিলেও এই পতিত ভারতের অবস্থা কেহ ফিরাইতে পারিবেনা। তাই বলিতেছি, শিক্ষিত মহোদয় গণ! যাহাতে আবার সেই স্বর্গীয় আর্য্য দিগের মাহাত্ম্য ভারতে পুনর্ল্লক্ষিত হয়, তদ্বিষয়ে চেষ্টা করুন। ব্রাহ্ম গণ! নিজ নির্ম্মিত ধর্ম্মমত পরিত্যাগ কর। আইস, ভাইয়ে ২ মিলিয়া সদাচার, সদাহার ও সদ্ধর্ম্মের পাদ পূজা করিতে থাক। জগৎ চমকিত চক্ষে দর্শন করুক, যে ভারতে আবার আর্য্য জন জ্যোতিঃ বিকাশিত হইতেছে। আমাদের সন্তপ্ত হৃদয় সুশীতল হইয়া যাইবে। *

কলিকাতা। কস্যচিৎ কবিরত্নস্য।

(প্রাপ্ত)

উৎসব সমাচার

মুঙ্গের আ, ধ প্র, সভা।

১৯এ হইতে ২১এ মাঘ, এতদ্দিবস ত্রয়ে অত্র

एवं अंगरेजों की समकक्ष होने की आशा निरर्थक है। उस र निधर्म समाज के बारे में जो कुछ हुल्लड़ उड़ाया गया, उस से भी तो कुछ उपकार देख नहीं पड़ता है। बरं बहुत सा अनर्थ उत्पन्न हो रहा है। जाहो, अब यहां देखना चाहिये कि किस रीति से भारत खंड को यथार्थ उन्नति हो सके। भारत वर्ष बराबर से आर्य्य निवास करके प्रसिद्ध है। भारतवर्ष के आर्य्य सज्जन गण एक समय उन्नति की उंची सीमा तक पहुंचे थे। धर्म्म ही उन्हीं का प्रधान बल सहाय वो सम्पत्ति रहा। सब देश की कहानी से इस बात की सत्यता सूचित होती है। अब हम उस धर्म्म रूप पैत्रिक द्रव्य की जो उत्तम रीति आचरण नहीं करते हैं, इसी से हमारी यह दुर्द्दशा आ पड़ी है। फिर उस धर्म्म की पूरी परिचर्य्या किये बिना चाहे लाखन ब्राह्म समाज बने या लाखो समाज संस्कारक आवे इस पतित भारत की अवस्था कभी सुधरने वाली नहीं। इसी से हम कहते हैं कि हे शिक्षित महोदय गण! जैसे उन स्वर्गीय आर्य्य जनों की महिमा फिर भारत में देख पड़े उसी की चेष्टा कीजिये; हे ब्राह्म गण! निज बनाये धर्म मत को छोड़ दो. भाईयों से मिल कर सदाचार, सदाहार वो सद्धर्म का पद-पूजन करते रहो. जगत चमकी तो हुई आंखों से देखे, कि भारत में फिर आर्य्य जनों की ज्योतिः प्रकाश हो रहा है। हमारे सन्तप्त हृदय भी सुशीतल हो जायगा। *

कलकत्ता। कस्यचित कविरत्नस्य।

प्राप्त।

उत्सवों को समाचार

मुंगेर आ० ध० प्र० सभा.

माघ सुदी ५ मी से लेकर ७ मी पर्य्यन्त तीन दिन

* কবিরত্ন মহাশয় আর্য্য সাহিত্য সংসারে লব্ধ প্রতিষ্ঠ পুরুষ। তিনি বর্ত্তমান সমাজের দুরবস্থা দর্শনে দুঃখিত হৃদয়ে যাহা লিখিয়াছেন, তাহা প্রকটিত করিলাম, কিন্তু তাঁহার ব্যক্তিগত মতামতের জন্য আমরা দায়ী নহি।

ধ, প্র, সং।

* कविरत्न महाशय आर्य्य साहित्य संसार में प्रतिष्ठित पुरुष हैं। उनने वर्त्तमान समाज की दुर्दशा देख कर दुःखित हृदय से जो कुछ लिखा हमने प्रकाश किया किन्तु उनके निज मत के गुण वा दोष के लिये हम उत्तर दाता नहीं हैं।

ध प्र स।

সভার ৮ম বার্ষিক উৎসব সুসম্পন্ন হইয়া গিয়াছে। এতদুপলক্ষে সরস্বতী দেবী মূর্ত্তির অর্চ্চনা, ব্রাহ্মণ ভোজন, নগর সংকীর্ত্তন, সুনীতি সঞ্চারিণী সভার বার্ষিক অধিবেশন, নীতি বিষয়িণী বক্তৃতা, বালক বর্গকে মিষ্টান্ন বিতরণ, পণ্ডিত দিগের সভা, বিচার ও বিদায়; সভান্তর্গত সংস্কৃত পাঠশালায় বার্ষিক পরীক্ষায় উত্তীর্ণ বালক বর্গকে পারিতোষিক দান, সদালোচনী সভার উৎসব, স্তোত্রপাঠ, উপদেশ ব্যাখ্যান, সংগীত আদি হইয়াছিল। বারাণসী হইতে ভা, আ, ধ, প্র, সভার সংস্থাপক ও সম্পাদক মহাশয়ের সমাগমে ও তাঁহার কয়েকটী উপাদেয় সারগর্ভ ও ভক্তি ভাব পূর্ণ বক্তৃতায় অত্র সভা বিশেষ উপকৃত হইয়াছিলেন। ভিন্ন২ স্থানীয় কৃতবিদ্য ভদ্র মহোদয় গণ সভাস্থ হওয়ায় সভার গৌরব বৃদ্ধি করিয়াছিলেন।

জনৈক সভ্য।

দাঁইহাট হরি সভা।

১৫ই হইতে ২০এ পর্য্যন্ত এই সভায় ৪র্থ বাৎসরিক উৎসব মহা সমারোহে সম্পন্ন হইয়া গিয়াছে এই উৎসব কালে শ্রীমন্নারায়ণের পূজা, ১২ দল নগর সংকীর্ত্তন, সভায় ও গ্রামের স্থানে২ অন্নক্ষেত্র, শ্রীমদ্ভাগবৎ ব্যাখ্যা, গৃহে২ প্রভাতী গান, কীর্ত্তনীগণ কর্তৃক কৃষ্ণলীলাগান, রাত্রিতে হরিশ্চন্দ্র ও অভিমন্যুবধ এতন্নাটক দ্বয়ের অভিনয় হইয়াছিল। প্রত্যহ ভা, আ, ধ, প্র. সভার সম্পাদক মহাশয়ের অমৃতময়ী ধর্ম্ম, নীতি, দর্শন, বিজ্ঞান ও ভক্তি পূর্ণ ভিন্ন২ বিষয়িণী বক্তৃতা রাশি দ্বারা এই উৎসবোপলক্ষে এতদ্দেশ বাসীগণ একটী নবীন জীবন লাভ করিয়াছেন। সভার কার্য্যকালে স্ত্রীপুরুষে প্রায় ৫০০০ লোক স্তব্ধ ভাবে বক্তৃতার সুধা রস পানে আনন্দিত হইয়াছিল। গ্রামস্থ গৃহস্থ ভদ্র মহিলা বর্গের ধর্ম্ম তৃষ্ণা বৃদ্ধি করিবার জন্য উক্ত মহাত্মা একদিন শ্রীবাবু হরিনারায়ণ মুখোপাধ্যায় মহাশয়ের গৃহ প্রাঙ্গণে একটী সরল ও হৃদয় গ্রাহিণী বক্তৃতা করিয়াছিলেন। হরিবাবু অত্র হরিসভার জীবন স্বরূপ তাঁহার উৎসাহ, উদ্যম, চেষ্টা ও অজস্র অর্থ ব্যয়েই এই মহা মহোৎসব হইয়া গেল।

শ্রীকেদার নাথ ভট্টাচার্য্য।

[illegible] सुन्दर गीत [illegible] सम्पन्न हो गया इस उत्सव काल में सरस्वती देवी मूर्ति की पूजा, ब्राह्मण भोजन, नगर कीर्तन, सुनीति सञ्चारिणी सभा का वार्षिक अधिवेशन, नीति के बारे में वक्तृता बालकों को मिष्टान्न वितरण, पण्डितों की सभा-शास्त्रार्थ वो विदाय, सभान्तर्गत संस्कृत पाठशाला की वार्षिक परीक्षा में उत्तीर्ण हुए बालकों को पुरस्कार दान, सदालोचनी सभाका उत्सव, स्तोत्र पाठ, उपदेश व्याख्यान, संगीत आदि समस्त ही सुन्दर रूप हुए। वाराणसी से भा० आ० ध० प्र० सभा के संस्थापक वो सम्पादक महाशय के आने से वो उनको मधुर, सार गर्भित वो भक्ति भावमय पूर्ण कई व्याख्यानसे इस सभाने अत्यन्त उपकार माना। भिन्न२ स्थानसे आये हुए कृतविद्य महाशय गण सभामें सुशोभित होकर सभाका गौरव बढ़ाये थे।

जनैक सभ्य।

दाँईहाट हरि सभा।

माघ सुदी एकादशी से लेकर पूर्णिमा तक छैः दिन इस सभाकी चौथे वर्ष वार्षिक उत्सव बड़े धुम धाम से हो गया। श्रीमन्नारायणजी की पूजा, १२ दल नगर संकीर्तन, सभागृह में वो ग्राम के भिन्न२ स्थानों में अन्नकूट, श्रीमद्भागवत की व्याख्यान, गृह गृहमें प्रभाती भजन, कीर्त्तन वालेकी कृष्ण लीला की गान, रात्रि कालमें "हरिश्चन्द्र" वो "अभिमन्यु वध" ये दो नाटक का अभिनय हुआ था। प्रति दिन भा. आ. ध. प्र. सभाके सम्पादकजी की अमृतमयी वक्तृतायें से जो कि धर्म्म, नीति, दर्शन, विज्ञान वो भक्ति भाव से भरी रही, इस अवसर में यहां के सब जन एक नवीन जीवन प्राप्त हुए सभा में स्त्री वो पुरुष मिलाके प्राय ५,००० लोग स्थिर भावसे वक्तृता की सुधारस पीकर आनन्दित हुए थे। ग्रामस्थ गृहस्थ भद्र महिला वर्गकी धर्म्म तृष्णा बढ़ाने के लिये उक्त महात्मा ने एक दिन श्रीबाबू हरि नारायण मुखोपाध्याय महाशय की गृह में एक वक्तृता, जो कि अतीव सरल वो मनलोभावनी हुई, करीथी। हरिबाबू इस सभा के जीवन रूप है। उन्हीं के उत्साह, उद्यम, चेष्टा वो अजस्र अर्थ व्यय से यह महा महोत्सव हो गये।

श्रीकेदार नाथ भट्टाचार्य्य।
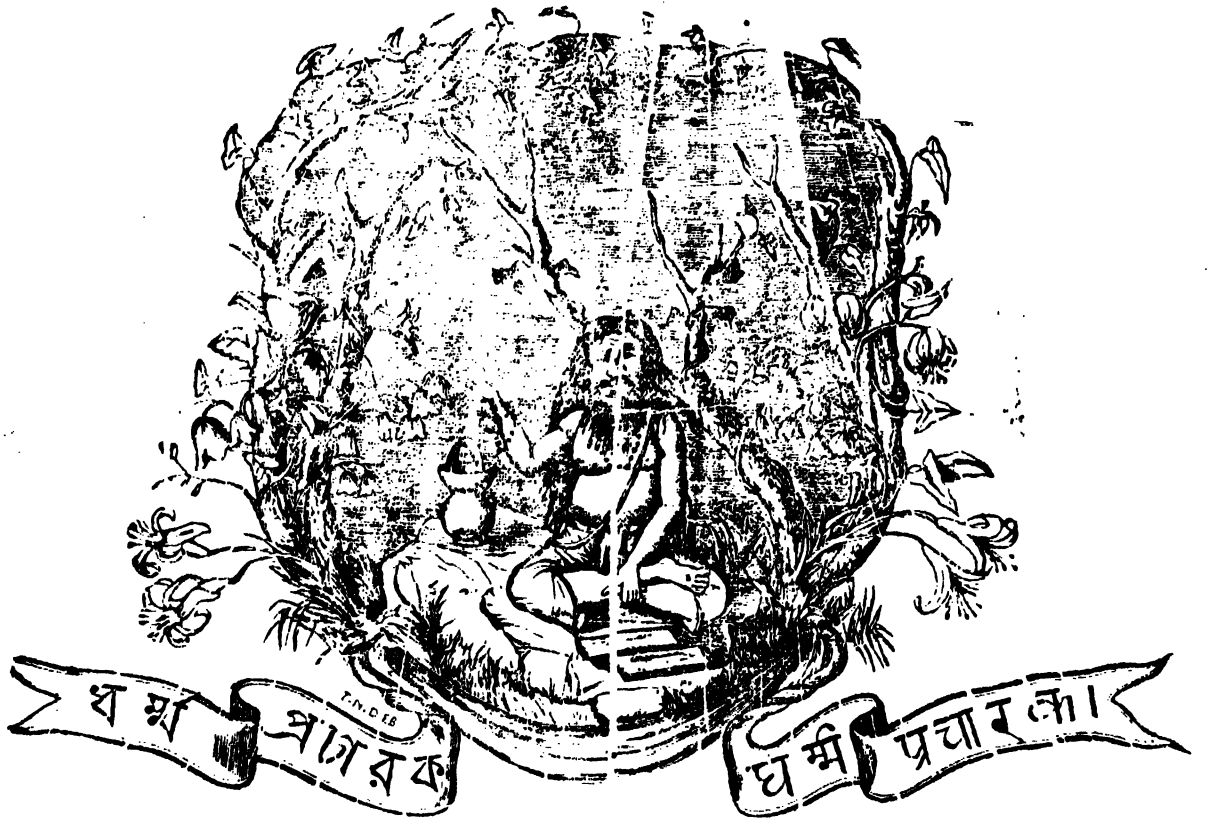
Printed at the Dharmamrita Press. Missir Pokhra, Benares.

" একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেহপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি ॥"

৩য় ভাগ। শকাব্দা ১৮০৫।
১১শ সংখ্যা। ফাল্গুন—পূর্ণিমা।

বিষ্ণু সংহিতা।

ওঁ শ্রীগণেশায় নমঃ।

বিষ্ণুমেকাগ্র মাসীনং শ্রুতি স্মৃতি বিশারদম্।
পপ্রচ্ছু র্মুনয়ঃ সর্ব্বে কলাপ গ্রাম বাসিনঃ ॥১॥

শ্রুতি স্মৃত্যাদির প্রকৃত তাৎপর্য্যবেত্তা বিষ্ণুকে স্থির ভাবে উপবিষ্ট দেখিয়া কলাপ গ্রাম বাসী মুনি গণ জিজ্ঞাসা করিলেন।

কৃতে যুগেহ্যপক্ষীণে লুপ্তো ধর্ম্মঃ সনাতনঃ।
তত্রৈব শীর্য্যমাণেচ ধর্ম্মো ন প্রতিমার্গিতঃ ॥২॥

সত্য যুগাবসানের সঙ্গে সঙ্গেই সনাতন ধর্ম্ম বিলুপ্ত হইয়াছে এবং উহা বিনষ্ট হইলেও কেহই এতদ্ধর্ম্মের সংস্কার করে নাই।

ত্রেতা যুগে ত্বথ সংপ্রাপ্তে কর্ত্তব্যশ্চাস্য সংগ্রহঃ।
যথা সংপ্রাপ্যতে হস্মাভিস্তত্ত্বতো বক্তুমর্হসি ॥৩॥

এক্ষণে ত্রেতা যুগ সমাগত, এ জন্য ইহার নষ্টোদ্ধার করা নিতান্ত প্রয়োজন, অতএব যে উপায়ে

" एक एव सुहृद्धर्म्मो निधनेऽप्यनुयातियः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्तु गच्छति ॥

३य भाग। शकाब्दा १८०५।
११श संख्या। फाल्गुण—पूर्णिमा।

विष्णु- स्मृति

ओं श्रीगणेशायनमः।

—o—

विष्णु मेकाग्र मासीनं श्रुति स्मृति विशारदम
॥ पप्रच्छु मुनयः सर्वे कलापग्रामवासिनः ॥ १॥

श्रुति यो स्मृतियों के सर्व तत्त्व वेत्ता विष्णु को एकाग्र बैठे हुए देखकर कलाप ग्राम के रहने वाले मुनियोंने पूछा।

कृते युगे त्वपक्षीणे लुप्तो धर्म्मः सनातनः ॥
तत्रवैशीर्य्यमाणेच धर्मो न प्रतिमार्गितः ॥ २॥

सत्य युग व्यतीत होने पर सनातन धर्म्म विलुप्त हो गया। उस का अभाव वा नाश होने पर भी कोई उस धर्म्म का खोज न किया।

त्रेतायुगेऽथ संप्राप्ते कर्तव्यश्चास्य संग्रहः
यथा सम्प्राप्यतेस्माभि स्तत्त्वतो वक्तुमर्हसि ॥ ३॥

अब त्रेता युग प्राप्त हुआ है, इस लिये इस का नष्टोद्धार अवश्य करना चाहिये। अतएव बताइये

আমরা উহা প্রাপ্ত হইতে পারি তাহা বলিয়া দিন।

বর্ণাশ্রমাণাং যো ধর্ম্মো বিশেষবৈশ্চৈব যঃ কৃতঃ।
ভেদস্তথৈব চৈষাং য স্তন্নো ব্রূহি দ্বিজোত্তম ॥৪।

বর্ণাশ্রম সমূহের যে ধর্ম্ম তন্মধ্যে পরস্পরের বিশেষ ও ভিন্নতা কিরূপ আছে, হে দ্বিজোত্তম! তত্তাবৎ আমাদিগের নিকট ব্যাখ্যা কর।

ঋষীণাং সমবেতানাং ত্বমেব পরমো মতঃ
ধর্ম্মস্যেহ সমস্তস্য নান্যো বক্তাস্তি সুব্রত! ॥৫।

হে সুব্রত। এখানে যত ঋষি সমবেত আছেন, তন্মধ্যে তুমিই শ্রেষ্ঠ, কেননা সমস্ত ধর্ম্মের যথার্থ তাৎপর্য্য ব্যাখ্যাতা তুমি ভিন্ন আর কেহই নাই।

শ্রুত্বা ধর্ম্মং চরিষ্যামো যথাবৎ পরিভাষিতম্।
তস্মাৎ ব্রূহি দ্বিজ শ্রেষ্ঠ! ধর্ম্মকামা ইমে দ্বিজাঃ ॥৬

হে দ্বিজ শ্রেষ্ঠ! এই সকল ব্রাহ্মণ গণ ধর্ম্ম পিপাসু, তোমার কথিতানুরূপ আমরা ধর্ম্ম আচরণ করিব, অতএব তুমি ব্যাখ্যা কর।

ইত্যুক্তো মুনিভিস্তৈস্তু বিষ্ণুঃ প্রোবাচ তাংস্তদা।
অনঘাঃ শ্রূয়তাং ধর্ম্মো বক্ষ্যমাণোময়াক্রমাৎ।

মুনি গণ কর্ত্তৃক এবম্প্রকার উক্ত হইলে পর মহাত্মা বিষ্ণু তাঁহাদিগকে বলিলেন, হে অনঘ মহাত্মাগণ! আমি ক্রমশঃ ধর্ম্মাচারাদি বলিতেছি, তোমরা শ্রবণ কর।

ব্রাহ্মণঃ ক্ষত্রিয়ো বৈশ্যঃশূদ্রশ্চৈব তথাপরে।
এতেষাং ধর্ম্ম সারং যদ্বক্ষ্যমাণং নিবোধত ॥৮॥

ব্রাহ্মণ, ক্ষত্রিয়, বৈশ্য, শূদ্র এবং অন্যান্য সকলের ধর্ম্মতত্ত্বের সারাংশ আমি ব্যাখ্যা করিতেছি, তোমরা তাহাতে অবধান কর।

ঋতৌ ঋতৌ তু সংযোগাদ্ ব্রাহ্মণো জায়তে স্বয়ম্।
তস্মাদ্ব্রাহ্মণ সংস্কারং গর্ভাদৌ তু প্রয়োজয়েৎ ॥৯।

প্রত্যেক ঋতু কালে অর্থাৎ স্ত্রী রজস্বলা হইলে ১৬ দিনের মধ্যেই (স্ত্রীর শুদ্ধতার পর) পবিত্র ভাবে সংযোগ করিলে ব্রাহ্মণ আত্মা গর্ভে উপগত হয়েন, এই জন্য গর্ভের প্রথমেই ব্রাহ্মণ সংস্কার সম্পন্ন হওয়া উচিত।

সীমন্তোন্নয়নং কর্ম্ম ন স্ত্রীসংস্কার ইষ্যতে।
গর্ভস্যৈব তু সংস্কারো গর্ভে গর্ভে প্রয়োজয়েৎ ॥১০।

প্রথমতঃ গর্ভাধান, তৎপরে সীমন্তোন্নয়ন অর্থাৎ অষ্ট মাঙ্গল্য (গর্ভ হইবার ৬ মাস পরে ইহা করিতে হয়), কারণে। এতাবৎ স্ত্রীসংস্কার নহে,

कि किस उपाय से हम सब को वह मिल सके।

वर्णाश्रमाणां यो धर्म्मो विशेषश्चैव यः कृतः ॥
भेदस्तथ व चैषां य स्तन्नो ब्रूहि द्विजोत्तम ॥ ४ ॥

वर्णाश्रम का जो धर्म्म है, उसमें विशेष क्या है, जो परस्पर भिन्नता क्या है, हे द्विजोत्तम? यह सब हम को कहिये।

ऋषीणां समवेतानां त्वमेव परमो मतः॥
धर्मस्येह समस्तस्य नान्यो वक्तास्ति सुव्रत ॥ ५ ॥

यहां जितने ऋषि हैं, उनमें आपही सब से श्रेष्ठ देख पड़ते हैं, क्योंकि समस्त धर्म्म के तात्पर्य्य पूरी रीति व्याख्यान करने हारे, हे सुव्रत, आप से दुसरा कोई नहीं।

श्रुत्वा धर्मं चरिष्यामो यथावत्परिभाषितम्॥
तस्माद् ब्रूहि द्विजश्रेष्ठ धर्मकामा इमे द्विजाः॥ ६ ॥

हम सब ब्राह्मण गण धर्म्म के प्यासु हैं आप के कथनानुसार हम सब धर्म्म आचरण करेंगे, अतएव हे द्विज श्रेष्ठ? आप बोलिये।

इत्युक्तो मुनिभिस्तैस्तु विष्णुः प्रोवाच तांस्तदा।
अनघाः श्रूयतां धर्म्मो वक्ष्यमाणो मया क्रमात्

उन मुनियों के इस रीति से कहने पर उस समय महात्मा विष्णु ने बोला कि, हे निस्पाप ऋषि गण! मैं क्रमसे धर्म्माचार आदि कह जाता हूं, आप सब सुनते रहिये।

ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्चैव तथापरे।
एतेषां धर्म सारं य द्वक्ष्यमाणं निबोधत॥ ८ ॥

ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र औ अन्यों के धर्म्म का सारांश मैं कहता हूं आप सब दत्तचित्त हो के कथन पर ध्यान दीजिये।

ऋतौ ऋतौ तु संयोगाद् ब्राह्मणो जायते स्वयम्। तस्माद् ब्राह्मण संस्कारं गर्भादौ तु प्रयोजयेत् ॥ ९ ॥

प्रत्येक ऋतु काल में अर्थात् स्त्री रजस्वला हो, तब से १६ दिन के भीतर शुद्धता के उपरान्त स्त्री संयोग करने से ब्राह्मण होता है, अत एव गर्भ के पहलेही ब्राह्मण का संस्कार करना चाहिये।

सीमंतोन्नयनं कर्म न स्त्री संस्कार इष्यते।
गर्भस्यै व तु संस्कारो गर्भ गर्भे प्रयोजयेत्॥ १० ॥

प्रथमतः गर्भाधान (फुलचौका) तब सीमन्तोन्नयन अर्थात् अष्टमाङ्गल्य वा आगरणी) यह गर्भ के ६

গর্ভ-সংস্কার নামে অভিহিত হইয়া থাকে। প্রতি বার গর্ভকালে ইহার অনুষ্ঠান হওয়া আবশ্যক।

জাত কর্ম্ম তথা কুর্য্যাৎ পুত্রে জাতে যথোদিতম্।
বহির্নিষ্ক্রমণংচৈব তস্য কুর্য্যাচ্ছিশোঃ শুভম্॥

পুত্র জন্মিবা মাত্র জাত কর্ম্ম যথা বিধানে সম্পন্ন করিবে, তদনন্তর বালককে সূতিকাগারের বাহিরে লইয়া যাইবার সময় বহির্নিষ্ক্রমণ নাম শুভসংস্কারের অনুষ্ঠান করিবে।

ষষ্ঠে মাসে চ সংপ্রাপ্তে অন্ন প্রাশনমাচরেৎ
তৃতীয়ে ঽব্দে চ সংপ্রাপ্তে কেশ কর্ম্ম সমাচরেৎ॥১২॥

শিশু ছয় মাসের হইলে তাহার অন্ন প্রাশন দিবে ও তৃতীয় বর্ষ প্রাপ্ত হইলে তাহার মস্তক মুণ্ডন করাইবে।

গর্ভাষ্টমে তথা কর্ম্ম ব্রহ্মণস্যোপনয়নং।
দ্বিজত্বে ত্বথ সংপ্রাপ্তে সাবিত্র্যামধিকারভাক্॥১৩॥

গর্ভকাল হইতে গণনা করিয়া অষ্টম বর্ষে ব্রাহ্মণ বালকের উপনয়ন অর্থাৎ যজ্ঞোপবীত হইবে। বালক এই সংস্কার দ্বারা দ্বিজ ও গায়ত্রী মন্ত্রের অধিকারী হইবে।

গর্ভাদেকাদশে সৈকে কুর্য্যাৎ ক্ষত্রিয় বৈশ্যয়োঃ।
কারয়েৎ দ্বিজ কর্ম্মাণি ব্রাহ্মণেন যথাক্রমং॥১৪॥

গর্ভ কাল হইতে গণনা করিয়া একাদশ বর্ষে ক্ষত্রিয়ের ও দ্বাদশ বর্ষে বৈশ্যের দ্বিজ কর্ম্ম যজ্ঞোপবীতাদি সংস্কার ব্রাহ্মণের দ্বারা অনুষ্ঠান করাইতে হইবে।

শূদ্রশ্চতুর্থো বর্ণস্তু সর্ব্ব সংস্কার বর্জ্জিতঃ।
উক্তস্তস্যাতু সংস্কারো দ্বিজেস্বাত্ম নিবেদনম্॥১৫॥

চতুর্থবর্ণ শূদ্র দিগের এতাবৎ কোন সংস্কারই করিতে হইবেনা। দ্বিজ সেবাই অর্থাৎ দ্বিজ দিগের উপদেশানুরূপ কার্য্য করাই তাহাদের পরম ধর্ম্ম।

(বর্ত্তমান কালে শূদ্রগণকে দ্বিজ গণ ঘৃণিত চক্ষে দেখিয়া থাকেন। এমন কি অতি কদাচারী ব্রাহ্মণও সদাচারী শূদ্রকে নীচ মনে করেন। শূদ্রগণ দ্বিজ বর্গের অনুজ তুল্য স্নেহের পাত্র। কনিষ্ঠ ভ্রাতা জ্যেষ্ঠ ভ্রাতার যে রূপ সেবক, শূদ্রগণ দ্বিজগণের তাদৃশ সেবক জানিতে হইবে। সেবক বলিলে ঘৃণিত পাত্র বুঝায় না। কনিষ্ঠ জ্যেষ্ঠের অনুগমন

महिने के पश्चात् होताहै) यह संस्कार स्त्रीका नहीं, किन्तु गर्भही का होताहै। अतएव प्रति गर्भ में ससय यह करना चाहिये।

जात कर्म तथा कुर्यात्पुत्रे जाते यथोदितम्।
वहिर्निष्क्रमण चैव तस्य कुर्याच्छिशोः शुभम्॥ ११॥

सीमन्तोनयन के अनन्तर जात कर्म्म अर्थात् जन्म का संस्कार बालक होतेही शास्त्रोक्त विधि के अनुसार करना, तत्पश्चात बालक को बाहर लेजाने का भी बहिर्निष्क्रमण नाम संस्कार करना चाहिये।

षष्ठे मासि च संप्राप्ते अन्न प्राशन माचरेत्।
तृतीये ऽब्दे च संप्राप्ते केशकर्म समाचरेत्॥ १२॥

छठे महिने में अन्न प्राशन (अन्न खिलानको) और तीसरे वर्ष में चौल करना अर्थात् चोटी रखना, ये दो संस्कार करना चाहिये।

गर्भाष्टमे तथाकर्म ब्राह्मणस्योपनायनं॥ द्विजत्वे त्वथ संप्राप्ते सावित्र्या मधिकारभाक्॥ १३॥

गर्भ से आठवें वर्षमें ब्राह्मण का उपनयन अर्थात् जनेऊ करना, अब यह द्विज होताहै। द्विज होने पर गायत्री का अधिकार मिलताहै।

गर्भादेकादशे सैके कुर्यात्क्षत्रिय वैश्ययोः॥
कारयेद् द्विजकर्माणि ब्राह्मणेन यथाक्रमम्॥ १४

गर्भ से ग्यारह में वर्षमें क्षत्रिय और बारहवें में वैश्य को द्विज कर्म्म अर्थात् जनेऊ आदि ब्राह्मण के द्वारा करालेना चाहिये।

शूद्रस्तु चतुर्थो वर्णस्तु सर्व संस्कारवर्जितः॥
उक्तस्तस्य तु संस्कारो द्विजेष्वात्मनिवेदनम्॥ १५

शूद्र जो चौथा वर्णहै, इसका कोई संस्कार करना न पड़ेगा। द्विज की सेवामें तत्पर रहना अर्थात् द्विजों के उपदेशानुसार कार्य्य करना इसका धार्म का परम धर्म्म है

आज कल द्विज गण शूद्र जनों को घृणित मानते है अधिक क्या, अत्यन्त कदाचारी ब्राह्मण भी सदाचारी शूद्र को नीच समझताहै। शूद्रगण द्विज लोगो के अनुज समान स्नेह पात्रहै। छोटा भाई बड़े भाई के जिस भांति सेवक है, शूद्रगणकों उसी रीति द्विज समूह के सेवक जानना चाहिये। यह न समझना कि सेवक होने ही से घृणाका पात्र होता है। छोटा भाई बड़े के पीछे चलेगा, बड़ा

করিবে, জ্যেষ্ঠের আচরণ দেখিয়া কনিষ্ঠ শিক্ষা করিবে, জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠকে তদুচিত আচরণের আজ্ঞা করিবেন, কনিষ্ঠ ভক্তি পূর্ণ হৃদয়ে জ্যেষ্ঠের প্রিয় কার্য্য সাধন করিবে॥ ইহাতে উচ্চ ও নীচ ভাব কোথা হইতে আসিল। অভিমানই ব্রাহ্মণ দিগকে সম্মানের উচ্চ শীর্ষ হইতে ধরাতলে আনিয়া ফেলিয়াছে। দ্বিজ গণ! অভিমান ত্যাগ কর, শূদ্র বর্গের সহিত জ্যেষ্ঠ কনিষ্ঠ ভ্রাতার ন্যায় সমাদর ও স্নেহ সহ সদ্ব্যবহার কর। আপনাকে প্রভু ও শূদ্রকে দাস এরূপ শাস্ত্র বিরুদ্ধ ভাব হৃদয়ে স্থান দিও না।)

যো যস্য বিহিতো দণ্ডো মেখলাজিন ধারণম্।
সূত্রং বস্ত্রঞ্চ গৃহ্নীয়াদ্ব্রহ্মচর্য্যেণ যন্ত্রিতঃ॥১৬॥

ব্রহ্মচর্য্য অর্থাৎ উপনয়ন হইয়া গেলে যাহার যে রূপ বিহিত আছে, তদনুরূপ দণ্ড, মেখলা অজিন অর্থাৎ মৃগ চর্ম্ম, সূত্র (যজ্ঞোপবীত) ও বস্ত্র গ্রহণ করিবে।

ক্রমশঃ

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

কোন মানসিক ক্রিয়াও বারম্বার উত্তেজিত করিলে শেষে আপনা হইতেই সেই ক্রিয়া বারম্বার হইতে থাকে।

রস রুধিরাদিস্থিত পদার্থ সকল, যেরূপ যান্ত্রিক ক্রিয়াদ্বারা শক্তি প্রাপ্ত হইলে উক্ত প্রকারে সমধিক শক্তি সম্পন্ন হইয়া অনেক কাল পর্য্যন্ত আপনই কিম্বা যান্ত্রিক ক্রিয়ার সামান্য সাহায্য লইয়াই পরিণাম কার্য্য নির্ব্বাহ করিতে পারে এবং যন্ত্র সকল যেরূপ আত্মার ক্রিয়া দ্বারা ক্রমাগত বেগবান্ হইলে পরে আপনিই অথবা আত্মক্রিয়ার কিঞ্চিৎ সাহায্য প্রাপ্তেই স্ব স্ব কার্য্য নিষ্পন্ন করিতে পারে, সেই রূপ, যান্ত্রিক ক্রিয়াও আবার রসরুধিরাদিস্থিত পদার্থ সকলের তাদৃশ পারিণামিক ক্রিয়াদ্বারা—ক্রমশঃ সাহায্য প্রাপ্ত ও পরিবর্দ্ধিত হইয়া অতি সামান্য রূপ নিজের বল প্রয়োগ দ্বারাই অধিক পরিমাণে আপন কার্য্য নিষ্পন্ন করে। এবং রস রুধিরাদিস্থিত পদার্থ সকলের অংশ পরিণাম ক্রিয়াদ্বারা যান্ত্রিক ক্রিয়া

का किया हुआ आचरण देखकर छोटा भाई सीखेगा। बड़े भाई छोटे भाई को उचित आचरण करने की आज्ञा करेंगे, छोटे भाई भी भक्ति से पूर्ण हृदय से बड़ों का प्रिय कार्य्य साधन करता रहेगा। इस में ऊंची नीची किधर से आई ? अभिमान ही ब्राह्मणों को इन दिनों में मर्य्यादा की ऊंची पहाड़ पर से भूमि तल में आन गिराया। हे द्विज गण! अभिमान को छोड़ो शूद्रों के साथ जैसा कि बड़े भाई वो छोटे भाई के समान आदर वो स्नेह से सद्व्यवहार करते रहो। अपने को प्रभु वो शूद्र को दास ऐसा शास्त्र के विरुद्ध भाव को कभी हृदय में स्थान न दो।

यो यस्य विहितो दण्डो मेखला जिनधारणम्॥
सूत्रं वस्त्रं च गृह्णीयाद्ब्रह्मचर्य्येणयंत्रितः॥ १६॥

ब्रह्मचर्य्य अर्थात् उपनयन होने पर प्रथमाश्रममें जो जो जिस को दण्ड (यष्टि) मेखला वा अजिन अर्थात् मृग चर्म्म कहते हैं, वह वो सूत्र (यज्ञोपवीत) औ वस्त्रग्रहण करे।

शेष आगे

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व प्रकाशित के आगे)

यदि किसी मानसिक क्रिया को भी उस्का दें जाय तो अन्त में वह क्रिया भी आप हो आप बारम्बार होती रहती है।

रस रुधिर आदि में स्थित पदार्थों ने जिस रीति यंत्र की क्रिया करके शक्ति पाने पर उस प्रकार से अधिक शक्ति सम्पन्न हो दीर्घ काल तक आप ही अथवा यांत्रिक क्रिया की सामान्य ही सहायता लेके अन्त क्रिया निबाह सक्ते हैं वो यंत्र सब जिस रीति आत्मा की क्रिया करके लगातार वेग युक्त होने पर आपही अथवा आत्मक्रिया की थोड़ी ही सहायता पाकर निज२ कार्य्य निबाह सक्ते हैं, उसी प्रकार से यांत्रिक क्रिया भी फिर रस रुधिर में स्थित पदार्थ सबों को उस रीति अन्त की क्रिया के द्वारा क्रमे क्रम सहायता पाकर वो वर्द्धित होकर थोड़ी ही सी अपना बल देने से अधिक परिमाण कार्य्य करते रहते हैं और रस रुधिर स्थित पदार्थ सबों को उस भांति परिणाम क्रिया करके यांत्रिक क्रिया उसी

উত্তেজিত হইলে তাদৃশ যান্ত্রিক ক্রিয়াদ্বারা অথবা যদি বিশুদ্ধ যান্ত্রিক ক্রিয়া সম্ভব তবে তদ্দ্বারাও আবার মানসিক ক্রিয়ার উত্তেজনা হইয়া মানসিক বেগ অতি সামান্য বলবান্ হইলেও অধিক পরিমাণেই সেই ক্রিয়ার ফল সম্পাদন করে। এই প্রকার পরস্পরের সাহায্যে পরস্পরের ক্রিয়ার উত্তেজনা হয়। মনে কর, তুমি ভৌম পদার্থ আহার করিলে উহা শরীরের অভ্যন্তরে নীত হইয়া শরীরের যে যে অবয়বে ঐ ভৌম পদার্থ আছে তাহাদের সহিত রাসায়নিক আকর্ষণে ও সজাতীয় আকর্ষণে পরস্পর মিলিতে লাগিল। পাকস্থলী প্রভৃতি যন্ত্র সকল পোষণ ক্রিয়া সম্পাদিকা জীবনী শক্তি দ্বারা (vitality) স্ব স্ব কার্য্যে প্রবৃত্ত হইয়া পদার্থ সকলের পূর্ব্বোক্ত মত শক্তির উৎপাদন করিল; তখন সেই শক্তি দ্বারা তোমার শারীরিক যন্ত্র সকল যে শক্তি প্রয়োগ করিতেছিল, সেই শক্তিরই সাহায্য এবং সমধিক উত্তেজনা হইতে থাকিবে। সুতরাং তোমার আত্মার ক্রিয়াদ্বারা ঐ সকল যন্ত্রের পরিচালনের যে ফল, উহাতেও সেই ফলই উৎপন্ন হইতে পারে। আবার যন্ত্রের ঐরূপ ক্রিয়া হওয়াতে যন্ত্রাধিরূঢ় আত্মার ক্রিয়া ও অগত্যাই যান্ত্রিক ক্রিয়ার সঙ্গে ২ তদনুযায়ী স্ফূরিত হইতে থাকে। এই কারণেই মানুষের শারীরিক প্রকৃতি (constitution) বিভিন্ন প্রকার হইয়া থাকে. এই কারণেই মনুষ্যগণ ইচ্ছানুসারে সদসৎ প্রবৃত্তিকে বিনিয়োগ করিতে পারেনা।

ক্রমশঃ

আর্য্যদিগের উপাসনা প্রণালী।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

শুক্ল, কৃষ্ণ, রক্ত আদি বর্ণের কি কি গুণ বা ক্ষমতা আছে, তাহা এখানে যথাবশ্যক আলোচনা করা বিধেয়। একটী বর্ণ যেরূপ পার্থিব, বায়বীয়, আকাশীয় ও নেত্রের স্নায়বীয় প্রক্রিয়া দ্বারা যে ভাবে প্রণীত হয়, অপরটীর প্রক্রিয়া ও গতি তাহা হইতে স্বতন্ত্র। পূর্ব্ব ২ সংখ্যা পাঠে পাঠকগণ

जित होती यांत्रिक क्रिया से अथवा यदि विशुद्ध यांत्रिक क्रिया होतो, उससे भी फिर मानसिक क्रिया की उत्तेजना होने से मानसिक वेग अति साधारण होने पर भी अधिक परिमाण फल उस क्रिया का सम्पादन करता है। इसी रीति परस्पर की सहायता से परस्पर की क्रिया उत्तेजित होती है। सोचिये कि आपने कोई भौमपदार्थ भोजन किया वह शरीर के भीतर पैठने पर शरीर के जहां जहां भौम पदार्थ है, तहां तहां वह रासायनिक आकर्षण के द्वारा अथवा सजातीय आकर्षण करके उन्हीसे मिलने लगा। पाकस्थली आदि यंत्रसब जीवनी शक्ति (vitality) जिससे पोषण क्रिया सम्पादित होती है, निज निज कार्य्य करके प्रवृत्त होकर उन पदार्थों को पूर्व्वकथित शक्ति को उत्पन्न किये; फिर उस शक्ति के द्वारा आपके शारीरिक यंत्र सब जिन शक्ति यों को प्रयोग कर रहे थे, उसी शक्ति की सहायता वा अधिक तर उत्तेजना होती रहेगी। अतएव आप की आत्मा की क्रिया करके उन सब यंत्र के चलाने से जो फल होताहै, उससे भी वही फल हो सक्ताहै। यंत्रकी उसी रीति क्रिया होने पर यंत्र पर आरूढ़ आत्मा की क्रिया भी यांत्रिक क्रिया के संगही संग तदनुरूप करने लगती है। इसी हेतु से मनुष्य की शारीरिक प्रकृति (Constitution) भिन्न २ प्रकार की होती है, इसी हेतु से मनुष्य गण अपनी२ इच्छा के अनुसार भली बुरी प्रवृत्तियों को विनियोग नहीं कर सक्ते हैं।

शेष आगे।

आर्य्य सज्जनों की उपासना-प्रणाली।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

शुक्ल, कृष्ण, रक्त आदि वर्ण का क्याक्या गुण वो शक्ति है अब उसी को यथावश्यक आलोचना करनी चाहिये। कोई एक वर्ण जिस रीति से पार्थिव, वायवीय, आकाशीय वो नेत्र की स्नायुयों की प्रक्रियायें से जिस भांति [illegible] पड़ताहै, दुसरे वर्ण की प्रक्रिया वो गति उस

বর্ণানুভূতির কিয়ৎ পরিমাণে সঙ্কেত অবগত হইয়া থাকিবেন। এক্ষণে বর্ণ বিশেষের গুণ বিশেষে মানবের মনে কিরূপ কার্য্য হয়, তাহাই বিচার করিতেছি। রক্ত বর্ণে আকর্ষণ শক্তি অধিক। ইহা অন্যান্য বর্ণাপেক্ষা প্রবল। যেখানে একত্রে বিবিধ বর্ণের সমাবেশ, তথায় দেখিবেন, তন্মধ্যস্থ লোহিত বর্ণ চক্ষুর দ্বারা মনকে নিজ অভিমুখে প্রথমে আকর্ষণ করিবেই করিবে। মনকে বিচলিত করিবার ক্ষমতা লোহিত বর্ণে বিদ্যমান দেখিতে পাওয়া যায়। মন যদি ক্রিয়া বর্জ্জিত ও স্তম্ভিত থাকে, চক্ষু রক্ত বর্ণের অভিমুখীন হইলেই মন চঞ্চল ও ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইবে। শ্যামবর্ণ চাক্ষুষী বৃত্তি দ্বারা মনকে দৃঢ় করিয়া দেয়। ইহা বোধ হয় অনেকেই অনুভব করিয়াছেন, যে চিত্ত যখন উদ্বেজিত হয়, সেই সময়ে প্রকাশ রহিত অবরুদ্ধ দ্বার প্রকোষ্ঠ মধ্যে বিশ্রাম করিলে চিত্ত সহজেই স্থির হইয়া আসে। শ্যাম বর্ণ ধারণা দ্বারা উদ্বেলিত চিত্ত চঞ্চলীভূত চিত্ত যেন স্তরে স্তরে দৃঢ়ীভূত হইতে থাকে। শ্বেত বর্ণ চক্ষুকে বড় অধিক পরিমাণে আকর্ষণ করিতে পারেনা অথবা আকর্ষণ করিতে আদৌ অসমর্থ বলিলেও হয়।

সেতারের ষড়জের তার যেমন অল্প আঘাতেই বহু দূর পর্য্যন্ত বিচলিত হয় শিথিল ভাবে যেমন একবার এ দিক, একবার ও দিক যাতায়াত করে, মন অথবা মনের বৃত্তি সকল লোহিত বর্ণের সংশ্রব মাত্রেই বা সামান্য চিন্তা দ্বারাই বিচলিত বা ব্যাপারোদ্যত হইয়া উঠে। সেতারের পঞ্চমের তার আবার যেমন সবলে আঘাত করিলেও শীঘ্র বিচলিত হয়না, ঘন ২ কম্পিত হইবে বটে; কিন্তু শিথিল ভাবে নহে, তদ্রূপ শ্যাম বর্ণ চিন্তনে মন এত দৃঢ় হয় যে তাহাকে চালিত করিলে সে কম্পিত হইয়াও চঞ্চল স্বভাব প্রাপ্ত হয় না। শুক্ল বর্ণে আকর্ষণ শক্তি নাই, সুতরাং চিত্ত তদ্দ্বারা বিশেষ উদ্বেজিত হয়না। যাঁহারা আধ্যাত্মিক গুহ্যতত্ত্বদর্শী, তাঁহারা নিজ ২ সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম দর্শন

सो स्वतंत्र है। पूर्व्व पूर्व्व संख्या के पठन से वर्ण अनुभव करने के बारे में पाठकों थोड़ी बहुत इसारे विदित होचूके हैं अब किसी २ वर्ण के किसी किसी गुण की विशेषता से मनुष्यके मन में किसी रीति क्रिया होती है सो विचारना चाहिये। आकर्षण करने की शक्ति रक्त वर्ण में अधिक है। यह वर्ण अन्यान्य वर्णों से अत्यन्त प्रवल है. जहां एकट्ठे बहुत से वर्ण रहते हैं. वहां देख लीजिये कि उन में से रक्तवर्ण चक्षु के द्वारा मन को प्रथमेही अपने ओर खेचलेगा। मन को चालायमान करने की शक्ति रक्त वर्ण में विद्यमान देख पड़ती है। मन यदि क्रिया वर्ज्जित वो स्तम्भित बने रहे, रक्त वर्ण के ओर दृष्टि गिरने ही से मन चंचल वो कार्य्य में प्रवृत्त हो जायगा। श्याम वर्ण का यह गुण है कि चक्षु की शक्तिके द्वारा मन को दृढ़ बना डालता है। बोध होता है, कि बहुतेरे जन यह अनुभव किये होंगे, जो जब चित्त उद्वेजित होता है उस समय प्रकाश रहित वो द्वार बंध की हुई कोटरी में विश्राम करने पर चित्त सहजे ही स्थिर हो आता है। श्याम वर्ण की धारणा से उद्वेग प्राप्त हुआ चित्त चंचली भूत चित्त मानीये कि क्रम से दृढ़ता को प्राप्त हो जाता है। श्वेत वर्ण चक्षु को अधिक परिमाण आकर्षण नहीं कर सक्ता है, अथवा यह भी कहा जाय तो अधिक नहीं कि श्वेत वर्ण एक दम आकर्षण शक्ति से रहित ही है।

सेतार का जो षड़ज तार है, वह जैसा अल्प मात्र ही आघात से बहुत दूर तक विचलित होता है, शिथिल भाव में जैसा एक बेर इधर, एक बेर उधर ऐसी गति होती है. मन अथवा मन की वृत्तियां लोहित वर्ण से सम्बन्ध होत ही वा सामान्य चिन्ता ही के द्वारा विचलित वा क्रिया करने में उद्यत हो जाते हैं। फिर यह भी देखिये कि सेतार के पंचम की तार जैसा बल से आघात करने पर भी शीघ्र विचलित नहीं होता है. बेर २ कंपती रहेगी, किन्तु शिथिलता से नहीं, उस भांति श्याम वर्ण के चिन्तन से मन इतना दृढ़ बन जाता है जो उस को चलाने पर वह कंप कर भी चंचल स्वभाव को प्राप्त न होगा। शुक्ल वर्ण

পটু চক্ষু দ্বারা পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন যে প্রতি মনুষ্যের চক্ষু, নাসা, অঙ্গুলী, মস্তকাদি হইতে নানা বর্ণের ধূম্রবৎ অনবরত নির্গত হইয়া যাইতেছে। ক্রোধন স্বভাব অহংকৃত, স্থূলবুদ্ধি, অনভিজ্ঞ ব্যক্তির মস্তক হইতে যেন গাঢ় কৃষ্ণ বর্ণের আভা প্রবাহিত হইতেছে, কামুক গণের মস্তক হইতে ঈষৎ লোহিত, তপস্যাবান্ মহাত্মার মস্তক হইতে জ্যোতির আভা, বিশ্বাসী ভক্তের মস্তক হইতে শ্যামলাভা, নির্বিকার চিত্ত, আনন্দ পূর্ণ মানবের মস্তক হইতে শুভ্র আভা ঊর্দ্ধ স্রোতে প্রবাহিত হইয়া যাইতেছে। বিশেষ ২ প্রকৃতির বিশেষ ২ রূপ ও বিশেষ ২ বর্ণ আছে। এই গম্ভীর গবেষণার অভ্যন্তর দিয়াই অন্তঃশ্চক্ষুশালী মহাত্মা গণ, রাগ রাগিনীর সুমূর্ত্তি দর্শন করিয়া জগতে প্রচার করিয়াছেন। যাহা প্রকৃতি হইতে উৎপন্ন, তাহা রূপ বিশিষ্ট হইবেই হইবে। প্রকৃতির কোন শক্তিই রূপ ও গুণ বর্জ্জিত নহে। সত্ত্ব, রজঃ ও তমোগুণ ময়ী প্রকৃতি অর্থাৎ মহামায়া হইতেই সৃষ্টি, স্থিতি ও প্রলয় কারিণী শক্তিত্রয়ের অর্থাৎ ব্রহ্মা, বিষ্ণু ও মহেশ এতত্ত্রিতয়ের আবির্ভাব ও বিকাশ। ইহাঁরা রূপ ও গুণ বিশিষ্ট, ওঁহারাই রূপ ও গুণ মূলক জগতের স্রষ্টা, পাতা ও সংহর্ত্তা; ইহাঁরাই সৃষ্টি, স্থিতি ও বিনাশ ধর্ম্ম শীল জীবের উপাস্য।

নিদ্রাকালে আমাদের মন ও তদধীন বৃত্তি সকল ক্রিয়া বর্জ্জিত ও সুপ্তবৎ অবস্থিতি করে: বিশেষতঃ সংসারের বিবিধ ব্যাপার ও চিন্তা দ্বারা মনের পবিত্র ভাব সকল নিতান্ত অভিভূত হইয়া অন্যান্য সমস্ত চিন্তার অন্তস্তলে মূর্চ্ছিত থাকে। নিদ্রা হইতে জাগ্রত হইবামাত্র পবিত্র তেজ, পবিত্র বল পবিত্রভাব, পবিত্র প্রবৃত্তি সংগ্রহ না করিয়া সংসারকার্য্যে উদ্যত হইলে আমরা সমস্ত বিঘ্ন বাধা অতিক্রম পূর্ব্বক কিরূপে সংসার সমুদ্র মন্থন করিয়া অমৃত লাভ করিতে সমর্থ হইব! এই জন্য মনে বিশুদ্ধ বীর্য্যের উদ্ভাবনা ও উদ্দীপনা করিবার

में आकर्षण शक्ति है वो नहीं अतएव उनको तम से उद्दीपित नहीं होता है। जो लोग आध्यात्मिक गम्भ तत्त्व को जानते हैं वे हैं, उन्होंको निज निज नेत्रों से जो कि सूक्ष्म से परम सूक्ष्म पदार्थों को देख सक्ते हैं, परीक्षा कर देख चुके हैं कि प्रति मनुष्य के नेत्र नासा, अंगुली, मस्तक आदि से भिन्न वर्णों का तेज धुआं के तरह सदाई निकल जाता है। जिनने बड़े क्रोधी या अहंकृत या, स्थूलबुद्धि अथवा मूढ़ हैं, उस के मस्तक पर से गाढ़ा एक प्रकार के कृष्ण वर्ण तेज प्रवाहित होता है, उस ने बड़ा कामुक है उस के सिर पर से फिकालाल, तपस्वी महात्मा के सिर पर से उज्ज्वल तेज, विश्वासी भक्त के सिर पर से श्यामल वर्न का तेज, जिन का चित्त विकार वर्जित है या आनन्द से पूर्ण है उन के मस्तक पर से श्वेत आभा ऊर्द्ध प्रवाह से उड़ चली जाती है। भिन्न२ प्रकृति का भिन्न२ रूप वो भिन्न२ वर्ण है। इस गंभीर गवेषणा अर्थात् गाम्भीर्य अनुसन्धान ही रूप दर्पण के द्वारा अन्तश्चक्षुवाले महात्मा लोगोंने सुरस्वर के भी मूर्ति देखकर संसार में प्रचार किया है। प्रकृति से जो कुछ उत्पन्न हुआ वह अवश्य ही रूप विशिष्ट होगा। ऐसा कोई शक्ति प्रकृति का नहीं है, जिस का रूप वो गुण न होगा। सत्व, रज वा तमोगुण मयी प्रकृति अर्थात् महामायाही से सृष्टि, स्थिति वा प्रलय करने वाली तीनों शक्ति का अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, वो महेश इन तीनों का आविर्भाव वो विकाश हुआ है। वे तीनों ही रूप वो गुण विशिष्ट हैं, ये तीनों ही रूप वो गुण से भासित होता हुआ जगत के स्रष्टा, पाता वो संहर्ता हैं, येही सृष्टि, स्थिति वो विनाश धर्म्मशील जीवों के उपास्य हैं।

सोजाने पर हमारा मन वो उस के अधीन वृत्तियां सब क्रिया रहित वो सुप्त पड़े रहते हैं, विशेषतः संसार के भांति भांति के कार्य्य वो चिन्ता करके मन के पवित्र भाव सब नितान्त अभिभूत हो के सारी चिन्ता में दबेहुए अचेतन पड़े रहते हैं। निद्रा से हम जागतेही पवित्र तेज, पवित्र बल, पवित्र भाव, पवित्र प्रवृत्ति के संग्रह किये बिना यदि संसार के कार्य्य में उद्यत हों, तो किस उपाय से हम समस्त विघ्न बाधा अतिक्रम पूर्व्वक संसार समुद्र को मथन करके अमृत पा सकेंगे? इस लिये मन में विशुद्ध वीर्य्य की उद्भावना वो उद्दीपन

জন্য, সুষুপ্ত মুষ্টিত-অভিভূত পবিত্র তেজো রাশিকে কার্য্য ক্ষেত্রে পুনরভ্যুত্থিত করিবার জন্য নিষ্ক্রিয় চিত্তকে ক্রিয়া শীল করিবার জন্য প্রভাতে রক্তবর্ণ ব্রহ্মার পবিত্র মূর্ত্তি ধ্যেয় ও ভজনীয়। ব্রহ্মার ধ্যানাদি দ্বারা মনোবৃত্তি নিচয় পবিত্র ভাবে সঞ্চালিত ও ক্রিয়া ব্যাপারে প্রবৃত্ত হইলে এবং ক্রমশঃ বৃত্তি সকল সম্পূর্ণ শক্তি সং ক্রিয়া করিতে মার্ত্তণ্ডের প্রখর কিরণ মালায় যখন নিতান্ত উদ্বেলিত ও পূর্ণ মাত্রা প্রাপ্ত হয় তখন তত্তাবৎকে ঘনীভুত-দৃঢ়ীকৃত বা স্থিরভাবাপন্ন করা অত্যন্ত আবশ্যক, এই জন্য মধ্যাহ্নে মনোহর শ্যাম সুন্দর বিষ্ণুর মোহন মূর্ত্তি ধ্যান করা বিধেয়। কিন্তু উক্ত দৃঢ়ীকৃত সঙ্কুচিত ভাব সর্ব্বদা থাকিলে কার্য্যক্ষেত্রে বৃত্তি নিচয় নিজ ২ কার্য্যের পর্য্যায় সময়ে স্ফুরিত হইতে কষ্ট অনুভব করে, এজন্য বৃত্তি সমূহকে কিঞ্চিৎ শিথিলীকৃত অথবা নিরুদ্বেগ করিয়া দেওয়া ও সরল অবস্থায় আনয়ন করা নিতান্ত প্রয়োজন হয়। তজ্জন্যই সন্ধ্যাসমাগমে রজত গিরিনিভ নিতান্ত নির্ম্মল মহাদেবের শুভ্র মূর্ত্তি ধ্যান করা বিহিত। এই সময়েই বৃত্তি সমূহ স্বচ্ছন্দ সুস্থ, সংযত ও সরল ভাবে কার্য্য করিতে থাকে।

এতৎ পাঠে হয়তো কেহ ২ মনে করিতে পারেন যে মনকে বিচলিত বা ক্রিয়োদ্যত, ঘনীভূত বা দৃঢ়ীকৃত এবং শিথিলীকৃত বা সরল করিবার জন্য যদি রক্ত, শ্যাম ও শ্বেত বর্ণের পরিচিন্তন বা ধ্যানের প্রয়োজন হয়, তবে তত্ত্ব বর্ণের কোন পদার্থ বিশেষ চিন্তা করিলেই সে উদ্দেশ্য সিদ্ধ হইতে পারে। পাঠক মহোদয় গণ! মনের উক্ত কয়েক প্রকার অবস্থা পরিবর্ত্তনই জীবনের উদ্দেশ্য নহে। বিশেষ ২ বর্ণের প্রভাবে প্রসূত ঐ অবস্থা গুলি আমাদের জীবনের গুরুতর সাধনের উপযোগী উপাদান মাত্র জানিবেন। পূর্ব্ব ২ সংখ্যায় প্রদর্শিত হইয়াছে যে ঈশ্বরের ভিন্ন ২ রূপ চিন্তায় ভিন্ন ২ ভাবের উদয় ও ভিন্ন ২ ফল লাভ হয় ও মনে আনন্দ স্রোত বহিয়া যায়। আমাদের প্রতি কার্য্যে, প্রতিপদ বিক্ষেপে, চিন্তার প্রতি তরঙ্গে ভগবদ্ভক্তির উদ্রেক করা অতি

करणार्थ सोया हुआ अथवा पड़ा हुआ — अभिभूत तथा प्राप्त हुआ पवित्र तेज राशि को कार्य्य क्षेत्र में फिर प्रबल करने के लिये, निष्क्रिय चित्त को क्रिया शील करने के लिये प्रातःकाल में रक्त वर्ण ब्रह्माजी के पवित्र मूर्त्ति का ध्यान वा भजन अवश्य करणीय है। ब्रह्माजी के ध्यान आदि से मन की वृत्तियां पवित्र भाव से संचालित औ क्रिया में प्रवृत्त होने पर जो वृत्ति सब क्रमे क्रम सम्पूर्ण शक्ति से क्रिया करते रहने पर जब सूर्य्य के प्रबल किरणों से निःट उद्दीजित औ पूर्ण सीमा में जा पहुंचे, उस समय उन सब को घनीभूत—दृढ़ीकृत वा स्थिर भावापन्न करना अत्यन्त आवश्यक होता है, इस लिये मध्याह्न काल में मनोहर श्याम सुन्दर विष्णु महाराज के मोहन मूर्त्ति ध्यान करना विधेय है। किन्तु कथित रूप से दृढ़ीकृत संकुचित भाव सदैव रहने से वृत्तियां सब कार्य्य क्षेत्र में निज निज कार्य्य के समय फुरने में कष्ट अनुभव करेंगी इस लिये वृत्तियों को थोड़ी सी फिर शिथिल यादि अथवा निरुद्वेग कर देना वा सरल अवस्था में ले आना चाहिये। इस हेतु संध्या के आने पर रजत गिरिनिभ नितान्त निर्म्मल महादेव के शुभ्र मूर्त्ति ध्यान करना विहित है। इसी समय वृत्तियां सब स्वच्छन्द, आनन्दयुक्त, संयत औ सरल भाव से कार्य्य करते रहते हैं।

इतना पढ़ कर किसी किसी ने शंका करेंगे कि मन को विचलित वा क्रिया में उद्यत, घनीभूत वा दृढ़ीकृत वा शिथिल वा सरल करणार्थ यदि रक्त, श्याम औ श्वेत वर्ण की चिन्ता वा ध्यान करना हो तो उसी उसी वर्ण के और किसी पदार्थ की चिन्ता करने से भी तो अभिप्राय सिद्ध हो सक्ता है। हे पाठक महोदय गण! पूर्व्व कथित रूप कैक प्रकार की अवस्था का परिवर्तन का ही जीवन का उद्देश्य नहीं है। उन अवस्थाओं को जोकि भिन्न २ वर्ण के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं, हमारे जीवन के गुरुतर उद्देश्य साधन का उपयोगी उपादान कारक जानना। पूर्व्व २ संख्या में यह देखाया गया कि ईश्वर के भिन्न २ रूप को चिन्तन से भिन्न २ भाव का उदय होता औ भिन्न २ फल मिलता है औ मन में आनन्द का प्रवाह बह जाता है। हमारे प्रति कार्य्य में—प्रति पद क्षेप में—चिन्ता के प्रति

আবশ্যক, কেননা ভক্তি দ্বারা জীব ক্রমশঃ ব্রহ্ম পদ লাভ করিতে সমর্থ হয়। আর্য্যগণ যে কোন কার্য্যেরই ব্যবস্থা করিয়াছেন, তাহার মুখ্য উদ্দেশ্য ভগবৎ প্রেম লাভ ও গৌণ উদ্দেশ্য শরীর, মন ও সমাজের স্বচ্ছন্দতা। সুতরাং ভগবদ্ভাবে মন যদি জাগ্রত, উদ্যত, ক্রিয়াশীল, ও সুস্থির না হইল, তবে তাহার জন্য এত প্রযত্ন করিয়া জীবনের কি উদ্দেশ্য সংসাধিত হইবে ?

পাঠক! কলমের চারা প্রস্তুত করিবার প্রণালী দেখিয়াছেন। প্রথমে একটী বৃক্ষের একটী পল্লব তদ্বৃক্ষ হইতে ছেদন পূর্ব্বক অপর বৃক্ষে সংলগ্ন ও বন্ধন করিয়া দেওয়া হয়। ছিন্ন পল্লবটী দ্বিতীয় বৃক্ষশাখায় সংলগ্ন থাকিয়া, তাহারই রস আকর্ষণ পূর্ব্বক ধীরে ২ পুষ্ট ও বর্দ্ধিত হইতে থাকে, কিন্তু আশ্চর্য্য এই যে এই পল্লব যে বৃক্ষ হইতে ছিন্ন হইয়াছে তাহারই গুণ লাভ করিবে, কিন্তু যাহার রসে পুষ্টি ও বৃদ্ধি লাভ করিল তাহার কিঞ্চিন্মাত্র ও প্রকৃতি গ্রহণ করিলনা। ইহার কারণ কি? প্রথমে পল্লব যে বৃক্ষের রসে জন্মিয়াছিল ও প্রথম হইতেই যে রস আকর্ষণ করিতে শিখিয়াছিল, তদ্রূপ রস গ্রহণ করাই তাহার স্বভাব বা ধর্ম্ম হইয়া গিয়াছে। সে যদি প্রথমে মিষ্ট রস টানিতে শিখিয়া থাকে, তবে মিষ্ট রস আকর্ষণ করাই তাহার ধর্ম হইয়া গিয়াছে, এক্ষণে তাহাকে অম্লরস যুক্ত বৃক্ষে আরোপিত রাখিলেও সে তাহার ধর্ম্মানুসারে অম্ল রস হইতে মধুরাংশই (যাহা তন্মধ্যে মিশ্রিত আছে) গ্রহণ ও অম্লতা দূষিত অংশ টুকু পরিহার করিবে। এতদ্রূপ মন প্রত্যহ প্রাতে, মধ্যাহ্ন ও সায়াহ্নে ভক্তিভাবে যদি ভগবানের পবিত্র শান্তি সুধারস আকর্ষণ করিতে ২ উহা আপনার ধর্ম্ম করিয়া লয়, তবে সে যে কোন কার্য্যে কেন প্রবৃত্ত হউক না, তাহা হইতে সে ভগবৎভাব-সাধুভাব-আনন্দামৃতই লাভ করিবে। ভক্তি রসে সে পুষ্ট, বর্দ্ধিত ও প্রফুল্ল হইয়া জীবনের সার্থকতা সাধন করিবে।

ক্রমশঃ

तरंग में भगवत् भक्ति को जागाना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि भक्ति करके क्रमे क्रम जीव को ब्रह्म पद भी मिल सक्ता है। आर्य्य सज्जन गण जिस किसी कार्य्य को व्यवस्था कर गये भगवत् प्रेम लाभ उनका मुख्य उद्देश्य वो शरीर, मन वो समाज का कल्याण उस का गौणउद्देश्य माने गये। अतएव भगवत् भाव से मन यदि जाग्रत, उद्यत, क्रिया शील वो सुस्थिर न हुआ तो तदर्थ इतना प्रयत्न करके जीवन का कौन सा उद्देश्य सिद्ध होगा?

पाठक महाशय! गाछ का कलम बनाने की रीति आप देखे हो होंगे। पहले एक वृक्ष के एक पल्लव को उस वृक्ष से छेदन करके दुसरे एक वृक्ष पर लगा कर बंध दिया जाता है। छिन्न पल्लव दुसरे वृक्ष को शाखा पर रह कर उसी के रस खींच के धीरे २ पुष्ट वो वर्द्धित होता रहता है, किन्तु आश्चर्य्य यह है, जो पल्लव जिस वृक्ष से काटा गया वह उसी वृक्ष का गुण प्राप्त होता है, किन्तु जिस के रस से पुष्ट होता वो बढ़ता गया उस की प्रकृति कुछ भी न लिया। इस का कारण क्या है? पल्लव पहले जिस वृक्ष के रस से उपजा था वो पहले हो से जिस रस को खींचने सिखा था, उसी भांति रस लेना उस का स्वभाव वा धर्म्म बन गया। पहले यदि वह मिठो रस खींचना सिखा हो, तो मिठो रस खींचनाही उस का धर्म्म बन गया। अब उस को अम्ल रस युक्त वृक्ष पर आरूढ़ रखने से भी वह निज धर्म्मानुसार अम्ल रस से मधुरांश को (जो कि उस में मिला हुआ है) ग्रहण वो अम्लता करके दुषित भाग को परित्याग कर देगा। इस रीति से मन प्रति दिन प्रातःकाल, मध्याह्न काल वो संध्या के समय में भक्ति पूर्व्वक यदि भगवन की पवित्र शान्ति सुधारस पीते २ उसी को अपना धर्म्म समझ लें तो फिर चाहे जिस किसी कार्य्य में प्रवृत्त हो जाय, उस से वह भगवत्-भाव-साधु भाव-आनन्द रूप अमृत हो लाभ करेगा। भक्ति रूप रस से वह पुष्ट, वर्द्धित वो प्रफुल्लित होकर जीवन को सफल कर लेगा।

शेष आगे।

(প্রাপ্ত)

শিবরাত্রি।

চতুর্দ্দশী নিশিতে ভারতে যেন কি একটী আলোক দৃষ্টি গোচর হইল। আজ শেষ রাত্রিতে অস্তাচল গত ম্লান শশধর যেন একটী জ্যোতিঃ হৃদয়ে বিকাশিত করিয়া দিলেন! আজ সমস্ত কার্য্যালয় বন্ধ, আর্য্যধর্ম্মীগণ সাংসারিক সর্ব্ব কার্য্য পরিহার পূর্ব্বক কোন্ পবিত্র আনন্দে মত্ত? আজ বিশ্বেশ্বরের সাম্রাজ্যে শৈব, শাক্ত, বৈষ্ণব, গাণপত্য, নানকপন্থি আদি সর্ব্ব সম্প্রদায়ই উপবাস পূর্ব্বক আশুতোষের আরাধনায় নিশি পালন রূপ কঠোর ব্রত উদযাপন করিলেন। আজ জন সমাজে কেবল মাত্র "জয় বিশ্বনাথ জীকী জয়" "শিব শিব শম্ভো" ভিন্ন আর কিছুই শ্রবণ গোচর হইতেছেনা। আজ ভারতে কি পবিত্র উৎসবই উপস্থিত! আজ ভারতের স্থানে ২ প্রসিদ্ধ শিবালয় সমূহে নানা দিগ্ দেশীয় যাত্রী সমূহের সমাগম হইতেছে, এবং তীর্থেন্দু কাশী ক্ষেত্র কোলাহলে ও দ্রব্য সামগ্রীতে পরিপূর্ণ ও বিশ্বেশ্বরের মন্দির লোকারণ্য হইয়া পড়িয়াছে। পাঠক গণ! বলিতে পারেন কেন আজ হিন্দুগণ এরূপ কঠোর ক্লেশ স্বীকার করিতেছেন। যাঁহারা শাস্ত্র বিধি শিরোধার্য্য করিয়া নিজ কর্ত্তব্য বোধে ব্রতী, তাঁহারা তো অতীব মহাত্মাপুরুষ—সুতরাং তাঁহাদিগের উদাহরণ বর্ত্তমান আচার ভ্রষ্ট সমাজে প্রদর্শন করাইলে তাঁহাদের অমর্য্যাদা করা হয়। যাঁহারা পুণ্য কামনায় ব্রতী তাঁহাদের কথাও ছাড়িয়া দিউন। যাঁহারা অভ্যাস বশতঃ করিয়া থাকেন তাঁহাদের দৃষ্টান্তও দেখিবার আবশ্যক নাই। কিন্তু বর্ত্তমান সভ্য সমাজ যাঁহারা হিন্দু দিগের এতাদৃশ ক্রিয়া কলাপকে "প্রেজুডিস্" বলিয়া থাকেন তাঁহা দিগের জন্যই আজ আমরা এতৎ প্রস্তাবের অবতারণা করিলাম। বর্ত্তমান শিক্ষিত সমাজ আজ যে অগভীর, মলিন বিজ্ঞান আবরণের অন্তরালে দাঁড়াইয়া আর্য্য শাস্ত্রের বিধিব্যবস্থা অতীব তুচ্ছ বোধ করিতেছেন, যাহার জন্য তাঁহারা আপনাদিগকে শিক্ষিত সম্প্রদায় বোধে

(प्राप्त)

शिव चतुर्द्दशी का व्रत।

——०——

भारत वर्ष में इस चतुर्द्दशी के रात्रि में कैसा नीं एक ज्योति प्रगट देख पड़ा। आज रात्रिके अन्त भाग में मलिन चन्द्रमा ने अस्ताचल पर आरूढ़ होकर हृदय में मानों एक दीपक वर दे गया। आज सारे कार्य्यालय बन्ध हैं। आर्य्यधर्म्मी गण समस्त कार्य्य छोड़ कर पवित्र आनन्द भोगने का मत्त हो रहे हैं। आज विश्वेश्वर के साम्राज्य में शैव, शाक्त, वैष्णव नानक पंथी आदि समस्त सम्प्रदायही विन भोजन किये आशुतोष की आराधना में निशि पालन रूप कठोर व्रत उद्यापन किये। आज जहां जाओ तहां केवल "जय विश्वनाथजीकी जय" "शिव शिव शम्भो" छोड़ के दुसरी बातही कान में नपड़तीहै। हा! आज भारत भूमि में कैसाही पवित्र उत्सव दिखाई देख पड़ते हैं। आज भारत के स्थान स्थान के प्रसिद्ध शिवालयों में नाना दिगदिगन्त से यात्रिलोग के समाज चले आते हैं। तीर्थेन्द्र श्रीकाशीजी कोलाहल वो भांति भांति की सामग्री से परिपूर्ण सुशोभित हो रही है। विश्वेश्वरजी की मन्दिर अनगिनती लोगों से समाकीर्ण हो गयी है। ये मेरे पाठक सज्जन! आप कह सक्ते हैं कि आर्य्य लोग क्यों सहकर आज इस कठोरव्रतका पालन करते हैं? जिनहों ने इस लिये करते हैं कि शास्त्रविधि को टरना न चाहिये वे तो अत्यन्त महा पुरुष हैं, हम उन्हों के दृष्टान्त इस वर्त्तमान भ्रष्ट समाज में देखा कर उन्हों की मर्य्यादा घटाने नहीं चाहते हैं। जिन्हों ने केवल पुण्य की कामना से व्रत करते हैं उन्हों की बात भी छोड़ दीजिये। जिन्हों ने बराबर के अभ्यास वस होकर व्रत करते हैं, उन्हों के दृष्टान्त भी देखना कुछ आवश्यक नहीं। किन्तु वर्त्तमान सभ्य लोग, जिन्हों ने आर्य्यजनोंकी इसी रीति क्रिया समूह को "प्रेजुडिस" कर मानता है, उन्हीं की सेवा के अर्थ आज हमको इस प्रस्ताव की अवतारणा करनी पड़ा। आज कल के शिक्षित लोग जिस विज्ञानकी परदे के आड़ से आर्य्य शास्त्र की विधि वो व्यवस्था अत्यन्त तुच्छ कर मानते हैं, जिस के बल से उन्होंने अपने "शिक्षित सम्प्रदाय" मान

বৃথা অহংকৃত হইয়া থাকেন আজ আমরা আর্য্যগণের গভীর গবেষণার ফল, জগতের মনোহর চিত্র, তাঁহাদিগের ঐ বিজ্ঞানেরই মধ্য দিয়া দেখাইতে চেষ্টা করিব যে শিবরাত্রির প্রয়োজন আছে।

এতদ্বিষয় অনুধাবন করিতে হইলে প্রথমতঃ জ্যোতির্ব্বিজ্ঞান পর্য্যালোচনা করা আবশ্যক। পৃথিবী ও তৎপরিস্থ জীব জন্তুর সহিত চন্দ্র, সূর্য্য ও অন্যান্য গ্রহ নক্ষত্রাদির কিরূপ সম্বন্ধ এবং কালভেদে কি প্রকার পরিবর্ত্তন উপস্থিত হইয়া থাকে তাহা বিশেষ রূপে আলোচন করা আবশ্যক। পৃথিবীর সহিত চন্দ্র সূর্য্যের গতি সম্বন্ধে যে কিরূপ ফল উৎপন্ন হইয়া থাকে তাহা প্রতিদিন (বিশেষতঃ অমাবস্যা ও পূর্ণিমায়) গঙ্গায় জোয়ার ভাটা দেখিলে সকলেই অবগত হইতে পারেন। শারীরিক রস অধিক পরিমাণে সঞ্চয় হয় বলিয়াই এই সময়ে জলদোষজ অধিকাংশ ব্যাধির বৃদ্ধি হইয়া থাকে। ইহা চিকিৎসক মাত্রেই মুক্ত কণ্ঠে স্বীকার করিবেন। এই জন্যই মহানুভব শাস্ত্রকর্ত্তারা একাদশ্যুপবাসাদি দ্বারা শরীর আবশ্যক রূপে নীরস করিতে ব্যবস্থা করিয়া গিয়াছেন। অধিকন্তু এই জন্যই অনেকে অমাবস্যাদির ব্রতও করিয়া থাকেন। ঋতু পরিবর্ত্তন কালেও এইরূপ লঙ্ঘন দেওয়া আবশ্যক। কেননা উপবাস দ্বারা সদা ক্রিয়াশীল শারীর যন্ত্রাদি কিঞ্চিৎ বিশ্রাম পাইয়া প্রকৃতিস্থ হয় সুতরাং কালের পরিবর্ত্তনে দেহের কোন বিকার জন্মাইয়া স্বাস্থ্যের কোন প্রকার হানি করিতে সক্ষম হয় না। কিন্তু আবার এই উপবাস পবিত্র ভাবে দেবার্চ্চনা দ্বারা করিতে পারিলে মনঃ প্রকৃতির আরও অধিক উন্নতি সাধিত হইতে পারে। ইহা অধ্যাত্ম তত্ত্বানুশীলন পরায়ণ পুরুষগণ নিরূপণ করিয়াছেন। পুনরপি ইহাও জানা আবশ্যক, যে বসন্ত কালে শরীরে রস বিকার উপস্থিত হয়, তজ্জন্য এতৎ কালে গাত্র কণ্ডু, বসন্ত আদি চর্ম্ম রোগের আতিশয্য দৃষ্ট হইয়া থাকে। এই জন্য আর্য্যগণ গ্রীষ্মাবসান ও শীতারম্ভের সন্ধিস্থল শরৎকালে "জন্মাষ্টমী" এবং শীতাবসান ও গ্রীষ্ম ঋতুর প্রারম্ভের সন্ধিস্থল

कर निरर्थक अहंकार में फूले रहते हैं, आज हम आर्य्य जनों की गम्भीर गवेषणा का फल, धर्म्मजगत की मनोहर चित्र, उनका के विज्ञान के मार्ग से यह दिखलाने की चेष्टा करेंगे कि शिवरात्रि व्रत की विशेष आवश्यकता है।

ये सब बातें पर ध्यान देने के पहिले ही ज्योतिर्विज्ञान की आलोचना करनी चाहिये। पृथ्वी वो उस पर रहनेवाले जीवों से चन्द्र, सूर्य्य वो अन्यान्य ग्रह नक्षत्र आदि का क्या सम्बन्ध है वो काल के अनुसार इनमें क्या क्या परिवर्त्तन होता रहता है, ये सब विशेष करके देखना चाहिये। पृथ्वी से चन्द्र सूर्य की गति के संबन्ध करके क्या२ फल उपजता है सो नित्य दिन (विशेषतः अमावस्या वो पूर्णिमा में) गंगाजी की जवार वो भाटे देखने से प्रतीत होती है। शरीर में रसभाग बढ़ जाता है इसी से शरीर में उस समय रसज बहुतसी बिमारी बढ़ जाती है। चिकित्सक मात्र ही इस बात को अंगीकार करेंगे। इसी लिये महानुभव शास्त्र कर्त्ता ने एकादशी आदि के दिन सह कर शरीर को सुखाने की व्यवस्था दी है। अधिकन्तु इसी लिये बहुतेरे मनुष्य अमावस्या आदि का भी व्रत करते हैं। ऋतु परिवर्त्तन के समय इस भांति एक आध दिन लंघन लेना अत्यन्त आवश्यक है। क्यों कि शरीर के यंत्र सब सदैव क्रिया करते करते थक जाते हैं, मध्य२ में किंचित विश्राम करने पर वे सब प्रकृतिस्थ हो जाते हैं: फिर समय के परिवर्त्तन से कोई विकार शरीर के स्वास्थ्य की हानि नहीं कर सकी है। किन्तु यदि कोई निराहार रह के देवता की पूजा पवित्रभाव से करें तो उससे उनकी प्रकृति की उन्नति अधिक हो सकती है। अध्यात्म तत्त्व के जानने हारे मनुष्यों ने इसको भलि भांति सिद्धान्त कर चुके। पुनरपि यह भी जानना चाहिये कि वसन्त ऋतु में शरीर में रस-विकार उत्पन्न होता है, इस लिये इस ऋतु में गात्र कंड़, माता की बिमारी आदि चर्म्म रोग अधिक देख पड़ते हैं। इस हेतु से आर्य्य गण ग्रीष्म के अन्त वो शीत के प्रारम्भ इन दोनों के संधिस्थान शरत ऋतु के जन्माष्टमी में वो शीत के अन्त वो ग्रीष्म के प्रारम्भ इन दोनों के संधि-

বসন্ত কালে "শিব রাত্রি" ব্রতের ব্যবস্থা প্রচলিত করিয়া গিয়াছেন। এতদুপলক্ষে সংযম, উপবাস, পূজাদি বিধেয়। এক্ষণে জিজ্ঞাসা করিতে পারেন, এ সময়ে অন্য দেবোপাসনা না হইয়া মহাদেবের আরাধনা হইবার উদ্দেশ্য কি? যে দেবতার যে শক্তি আছে সেই শক্তি লাভ করিবার অভিপ্রায়েই মনুষ্য গণ তাঁহার অর্চ্চনা করিয়া থাকেন। এবং বসন্ত কালে মনুষ্যের মনোবৃত্তি সকলের অধিক স্ফূর্ত্তি বিশেষতঃ কামাদি বৃত্তি সকল অতীব প্রবল হইয়া উঠে সুতরাং এক্ষণে কাহার উপাসনা করিলে এই সকল অনর্থ হইতে উদ্ধার হইতে পারা যায়? নিশ্চয়ই মহেশ্বরের মহোৎসব অবশ্য কর্ত্তব্য। যিনি দৃষ্টি মাত্রেই কন্দর্পকে ভস্মীভূত করিয়াছিলেন, যিনি মৃত্যুঞ্জয়, যিনি বিষ পরিপাক করিয়া নীলকণ্ঠ, যিনি আশুতোষ, এবং মঙ্গলময় বলিয়া শিব নামে অভিহিত হইয়া থাকেন, তিনি ভিন্ন এই রসোল্লাস জননী বাসন্তী প্রকৃতির তীব্র শর হইতে কে রক্ষা করিবে? জিতেন্দ্রিয়তা, আরোগ্য, দীর্ঘ জীবন, অনাময় আদির প্রার্থী হইয়া বিশ্বপতি বিশ্বেশ্বরের আরাধনা না করিয়া আর কাহার করিবে?

এই বসন্ত কালে শিবচতুর্দ্দশীতে সংযম পূর্ব্বক শিব পূজা করিলে জীব শিব রূপ ধারণ করে অর্থাৎ শিব সদৃশ গুণশালী হয়। মনের অকপট প্রবল বেগ উপাসককে উপাস্য তুল্য করিয়া দেয়।

মুঙ্গের আ, ধ, প্র, সভায়

শ্রীযুক্ত বাবু মহেন্দ্র নাথ রায় মহাশয়ের বক্তৃতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

যিনি দুর্ল্লভ মনুষ্য জন্ম পাইয়া শ্রীগুরুর চরণ রূপী নৌকা আশ্রয় করিয়া এই ঘোর ভব সমুদ্র পার নাহন তিনিই আত্মঘাতী।

মহাত্মা তুলসী দাসজী রামায়ণে এক স্থানে কহিয়াছেন—

> এহ তনু কর ফল বিষয় ন ভাই।
> স্বর্গহু স্বল্প অন্ত দুঃখ দাই॥
> নরতনু পায়ে বিষয় মন দেহি।
> পলটি সুধাতে শঠ বিষ লেহি॥

এমন সুন্দর মনুষ্য তনু বিষয় সুখ উপভোগের

स्थान वसंत काल में शिव चतुर्द्दशी व्रत की व्यवस्था करे गये हैं। इन अवसरों में संयम, उपवास, पूजा आदि करनी चाहिये।

अब किसीने यह पुछ सक्ता है, कि अन्य देवता को छोड़ कर इस काल में महादेवजी की पूजा क्यों होती है? यह सिद्धान्तीकृत है कि जिन देवता में जो कुछ शक्ति रहती है, उसी शक्ति मिलने की आशा में मनुष्य उन देवता को पूजते हैं; सो इस वसन्त काल में मनुष्यों की मन की वृत्तियां अधिक स्फुरित होती हैं; विशेषतः कामआदि रिपुगण अत्यन्त प्रबल होते हैं, कहिये अब कौन् देवता को पूजने पर इन अनर्थों से मनुष्य बंच सक्ते हैं? एतदर्थ महादेव जीको महोत्सव अवश्य ही करणीय है। जिनने अपनी दृष्टि के तेज से कामदेव को भस्मी भूत किया, जो स्वयं मृत्युंजय हैं, जिन्होंने कालकुट को पीकर नीलकंठ करके प्रसिद्ध हुए आशुतोष जिनका नामहै मंगलके आलय, इसीलिये जिनका नाम "शिव" है उन्हें छोड़ के, इस वासन्ती प्रकृति के, जो कि रस उल्लास को उत्पन्न करने वाली है, चोखे बाणों से कौन बचावेंगे। जितेन्द्रियता, आरोग्य, दीर्घजीवन, अनामय, आदि को जिन्होंने चाहते हैं, वे विश्वेश्वरजी की आराधना छोड़ के फिर किस की पूजेंगे?

इस वसन्त काल के शिव चतुर्द्दशी के दिन संयम पूर्व्वक शिवजी की पूजा करने से जीव शिव रूप बन जाते हैं अर्थात् शिव के समान गुण विशिष्ट हो जाते हैं। छल कपटादि से रहित मन की प्रबल वेग उपासक को उपास्य के समान बना देती है।

मुंगेर आ, ध, प्र. सभा में श्री बाबू महेन्द्रनाथ रायजी की वक्तृता

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

जिसने दुर्ल्लभ मनुष्य जन्म पाकर श्रीगुरु के चरण रूपी नाव का आश्रय कर संसार समुद्र के पार न उतर जावे वही आत्म घाती हैं।

महात्मा तुलसी दासजी ने रामायण के एक स्थान में कहा है—

> यह तनु कर फल विषय न भाई।
> स्वर्गहु स्वल्प अन्त दुःख दायी॥
> नर तनु पायी विषय मन देहि।
> पलटी सुधाते शठ विष लेहि॥

इस सुन्दर मनुष्य का शरीर विषय सुख

জন্য আমরা পাইনাই। এমন কি স্বর্গসুখ ইহার নিকট অতি তুচ্ছ আর শেষে দুঃখ দায়ক। কারণ "ক্ষীণে পুণ্যে মর্ত্যলোকে বিশন্তি" পুণ্য ক্ষয় হইলেই স্বর্গ হইতে অধঃপতন হয়। এমন নর তনু পাইয়া যে বিষয়ে মন দেয় ও বিষয় সুখে মত্ত হয় সে সুধা পরিত্যাগ করিয়া গরল গ্রহণ করে। ইহার প্রমাণ আরও অনেক স্থানে শুনিয়াছি ও শুনিয়া আসিতেছি কিন্তু দুর্ভাগ্য বশত জানিয়া শুনিয়াও সেই বিষময় বিষয়ানন্দ উপভোগেই উন্মত্ত রহিয়াছি। উন্মত্তকে যেমন কেহ কোন কথা বলিলে অথবা কোন উপদেশ দিলে তাহা সে ধারণা করিতে অক্ষম হয় সেই রূপ মহাত্মা দিগের উদার ও নীতিগর্ভ উপদেশ সকল আমাদের পূর্ণ হৃদয়ে অর্থাৎ বিষয় চিন্তা দ্বারা পূর্ণ হৃদয়ে স্থান পাইতেছে না। সেই জন্য বলিতেছি একবার ক্ষণ কালের জন্য নিশ্চিন্ত হইয়া নিজ ২ অবস্থার উপর ও আপন ২ কর্ত্তব্যা কর্ত্তব্যের উপর দৃষ্টি করিয়া দেখ। এখনও সময় আছে এমন সময় পেয়ে হেলা করিয়া হারাইও না। শেষে পশ্চাত্তাপ করিতে হইবে আর তখন কোন ফলোদয় হইবেনা। কি উপায়ে আমরা এই আসন্ন বিপদ হইতে উত্তীর্ণ হইতে পারি তাহাই চিন্তনীয়। যাঁহাদিগের চিত্ত কিঞ্চিৎ পরিমাণে সংসার হইতে অবসর লইয়াছে ও যাঁহারা সময়ে ২ নিজ নিজ কল্যাণ কামনায় তীর্থাটন, ব্রত ও ভগবৎ গুণানুকীর্ত্তন ও শ্রবণে আগ্রহ প্রকাশ করিয়া থাকেন, তাঁহাদিগকেই কিছু বলিবার ইচ্ছা করিতেছি আর যাঁহারা সংসার সুখকেই একমাত্র জীবনের প্রধান উদ্দেশ্য জানিয়া বিষয় সুখেই উন্মত্ত তাঁহাদিগকে বলিয়া কি করিব? তাঁহারা এসব কথায় সহসা কর্ণপাত করিবেননা।

শ্রেয় কার্য্যে অনেক বিঘ্ন, বুদ্ধিমানগণ তজ্জন্য শীঘ্র ২ তাহা সাধন করিয়া লয়েন। কারণ

भोगने के लिये हम को न मिला, अधिक क्या, स्वर्ग का सुख भी इस के सामने अतीव तुच्छ वा अन्त दुःखदाई है, क्योंकि "क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोक विशन्ति", पुण्य क्षय होने पर स्वर्ग पर से फिर धरती में आने पड़ता है। इस नरतनु पा कर जिसने विषय में फँस जाता है वो विषय सुख में मगन होता है, वह अमृत छोड़ के गरल पीता है। इस का प्रमाण कितने स्थानों में सुना गया वो सुना जाता है, किन्तु अभाग्य यह है कि जानबुझ के भी हम विषमय विषयानन्द भोगनेहो में उन्मत्त रहे हैं। उन्मत्त मनुष्य को यदि कोई कुछ कहे वा उपदेश करे तो वह उनको बात पर ध्यान नहीं दे सक्ता ह उसी रीति महात्माओं के नीति पूर्ण उपदेश हमारे भरे हृदय में अर्थात विषय चिन्ता से भरे हृदय में स्थान नहीं पाते हैं, इसी लिये हमारी प्रार्थना है, कि निज २ अवस्था पर वो क्या करनीय वो क्या अकरनीय है उस पर सब कोई क्षण भर के लिये भी ध्यान देवें। अब तक अवसर है; ऐसा शुभ समय पा करके काम में अवहेला न करना। कौन् उपाय करने पर हम इस उपस्थित आपत् से बंच सक्ते हैं, सो ही चिन्तनीय है। जिन्हों के मन संसार से थोड़ी बहुत अवसर पाई है वो जिन्हों ने समय समय में निज २ कल्याण की कामना करके तीर्थाटन, व्रत भगवत् गुण कीर्त्तन वो श्रवण में आग्रह करते हैं, उन्हीं को कुछ कहने को चाहते हैं औ जिन्हों ने सांसारिक सुखही को केवल जीवन धारण का प्रधान उद्देश्य मान रखा वो विषय सुख में मगन रहा, उन्हों को कहने पर फिर क्या होगा! उन्हों ने उन बातों पर कुछ भी ध्यान नहीं देंगे। श्रेय कार्य्य में अनेक विघ्न हैं। बुद्धिमानों ने इस लिये श्रेय कामों में बड़ी शीघ्रता करते है। क्योंकि जीवन की कुछ भी स्थिरता नहीं। प्रति मुहूर्त्तही में काल जीवन को संक्षेप कर डालता है। अतएव हे भ्रातृगण! व्यर्थ दिन न बीताना चाहिये। सब जन सर्व्वथा तैयार बने रहो वो अपना २ कल्याण कर लो।

मनुष्य शरीर मिलना परम दुर्लभ है। अब सोचना चाहिये कि किस साधन से कलियुग

এ জীবনের কিছু মাত্র স্থিরতা নাই। কাল প্রতি মুহূর্ত্তেই জীবনের হ্রাস করিতেছে। অতএব ভ্রাতৃবর্গ! আর বৃথা দিন নষ্ট করা উচিত নহে সকলে প্রস্তুত হও ও আপন ২ কল্যাণ সাধন করিয়া লও। এমন জন্ম আর পাইবে কি না তাহার স্থিরতা নাই। এখন ভাবিয়া দেখ কোন্ সাধনে জীব এই ঘোর কলিকালে অনায়াসে উদ্ধার হইতে পারে। কারণ আমরা যেরূপ অলস ও উৎসাহ হীন হইয়া পড়িয়াছি তাহাতে যে কোন প্রকার প্রাণায়াম আদি কঠিন সাধন আমাদের দ্বারা হইয়া উঠিবে এরূপ বোধ হয় না। আমরা মনে করি যে যদি কেহ আমাদিগকে একটি সহজ উপায় বলিয়া দেয় তবে আমরা সেই প্রণালীতে চলিয়া পরম পদ প্রাপ্ত হই। কিন্তু আমরা যেরূপ শিথিল প্রযত্ন তাহাতে সম্পূর্ণ অন্তরের সহিত ভগবৎ ভক্তি করিতে পারিনা, কারণ যথার্থ যদি আমরা তাঁহাকে পাইবার জন্য ব্যাকুল হই ও প্রাণ যদি যথার্থ তাঁহার জন্য কাঁদে, তাহা হইলে তিনিতো নির্দ্দয় নন, তাঁহার একটি নামই দয়াময়, তিনি তখনই তাহাকে স্নেহের সহিত আপনার ক্রোড়ে স্থান দেন। কিন্তু কৈ, কয় জন আমাদের মধ্যে সেরূপ করিতে পারিতেছি। যত দিন না সকল প্রকার বিষয়ের আশা ভরসা ছাড়িয়া কায়মনো বাক্যে তাঁহার শরণাগত হইতে পারিব তত দিন তাঁহার কৃপা লাভে আমরা বঞ্চিত থাকিব, তত দিন আমাদিগকে নিরাশ্রয় অনাথের ন্যায় পিতৃ মাতৃ হীন শিশুর ন্যায় এইসংসার অরণ্যে অশেষ ক্লেশে দিনপাত করিতে হইবে ও জন্মমৃত্যু রূপ বন্ধন গ্রস্ত হইয়া থাকিতে হইবে। ভ্রাতৃগণ! যদি জগতে যথার্থ কল্যাণ চাও ও যদি মনুষ্য জন্মের সার্থকতা চাও ও যদি অনন্তসুখে, ইহলৌকিক ও পারলৌকিক সুখ উপভোগ করিতে চাও, যদি পিতা মাতা ও জন্মভূমির মুখ উজ্জ্বল করিতে চাও, তবে জাগ্রত হও এখনও সময় আছে, তাঁহার শরণাপন্ন হও। তাঁহার চরণে শরণ লইলে কোন প্রকার বিঘ্ন বাধা তোমাকে কষ্ট দিতে পারিবেনা। শরণাগতের লজ্জা তিনি আপনি রক্ষা করেন। মহাত্মা তুলসী দাসজী একস্থানে কহিয়াছেন—

"জো জাকো শরণ লিয়ে সো রাখে তাকি লাজ।
উলট-জলে মছলি চলে বহি যায় গজরাজ॥"

মৎস্য হস্তী অপেক্ষা অতীব ক্ষুদ্র ও হীনবল কিন্তু স্রোতঃস্বতী নদীতে হস্তী পড়িলেও ভাসিয়া যায় কিন্তু মৎস্য ক্ষুদ্র ও দুর্ব্বল হইয়া স্রোতের বিপরীত দিকে অনায়াসে সুখে বিচরণ করিতে

में जीवों का अनायास उद्धार हो सक्ता है। क्योंकि हम सब जिस भांति अलसी वो उत्साह वर्ज्जित हो गये हैं, इसे किसी प्रकार का योग अर्थात् प्राणायाम आदि कठिन साधना हम सब से बन नहीं सक्ती है। हम चाहते हैं कि किसी ने आकर हम को कोई सहज उपाय बतावे कि जिस से हम अनायास परम पद को प्राप्त हो जाय। किन्तु हमारा प्रयत्न जैसा अल्प है, उसे सम्पूर्ण अन्तःकरण से भगवत् पर हमारी भक्ति उपजती ही नहीं। यदि हम अन्तुगत्या उन को प्राप्ति के लिये व्याकुल होते वो यथार्थ ही यदि हम तदर्थ रोते तो वे भी झट से हम को गोध पर उठा लेते, क्योंकि वे परम दयाल हैं, भक्तों के समीप उन को करुणा अपार है। किन्तु हमारी वैसी भक्ति कहां? जब तक हम विषय की आशा छोड़कर काय मन वचन से उन के शरणागत नहीं सकेंगे, तब ली उन की कृपा कैसे मिलेगा। तब लो हम सब को निराश्रय अनाथ के समान पितृ-मातृ हीन शिशु के समान इस संसार रूपी अरण्य के मध्य में अशेष क्लेश से दिन व्यतीत करना पड़ेगा वो जन्म मरण रूपी बंधन में रहना होगा। भाइयों! यदि संसार में यथार्थ कल्याण चाहो, यदि मनुष्य शरीर को सफल करना चाहो, यदि अनन्त सुख, इहलौकिक वो पारलौकिक सुख भोगना चाहो, यदि पिता माता वा जन्मभूमि का मुंह उज्ज्वल करना चाहो, तो जाग उठो, अब तक समय है. शीघ्र ईश्वर के शरणागत हो जाओ. उनके शरणागत होने से कोई विघ्न बाधा तुम को पाड़ावने न सकेगा। शरणागतों की लज्जा व स्वयं निवारण करते हैं। महात्मा तुलसीदासजी ने एक स्थान में लिखा है, कि—

"जो जाको शरण लिया सो राखे ताकी लाजा
उलट जल मछली चलि बहे जाय गजराज।" मछली तो हाथी से अत्यन्त क्षुद्र वो बल विहीन है, किन्तु बहती हुई नदी में हाथी भी गिरे तो बह जाता है किन्तु मछली क्षुद्र वो दुर्ब्बल होने पर भी प्रवाह के उलट ओर आनन्द से विचर सक्ती है, क्योंकि वह

পারে। কারণ সে তাহার শরণাগত, এমনকি একদণ্ডের জন্য তাহাকে ছাড়েনা সেই রূপ এসো আমরা সেই শরণাগত রক্ষক পরমেশ্বরের শরণাপন্ন হই। এই সংসারে কত লোক অন্যের শরণাপন্ন হইয়া কত বিপদ হইতে উদ্ধার হইয়া যাইতেছে আর যে সেই সর্ব্ব শক্তিমান সর্ব্বেশ্বরের শরণাপন্ন হয় তাহার আর ভাবনা কি? ভগবান্ শ্রীকৃষ্ণ অর্জ্জুনকে কহিয়াছিলেন—

সর্ব্ব ধর্ম্মান্ পরিত্যজ্য মামেকং শরণং ব্রজ।
"অহং ত্বা সর্ব্ব পাপেভ্যো মোক্ষয়িষ্যামি মাশুচঃ"

শরীর, মন, ইন্দ্রিয় প্রভৃতির যাবতীয় ধর্ম্ম পরিহার পূর্ব্বক একমাত্র আমারই শরণাপন্ন হও, সমস্ত পাপ হইতে আমি তোমাকে মুক্ত করিব। এরূপ ভগবানের শ্রীমুখ বচন শ্রবণ করিয়াও কি আমাদের আশার সঞ্চার হইবেনা? যাহাতে তাঁহার শরণাপন্ন হইতে পারি তাহারই একান্ত চেষ্টা করা উচিত। কিন্তু যতক্ষণ না আমাদের নিজের নিরাশ্রয় অবস্থা জানিতে পারি ও যতক্ষণ না তিনিই একমাত্র সার আর জগতে সমস্তই অসার এরূপ মনে দৃঢ় নিশ্চয় না করিতে পারিব তত দিন কোন মতে তাঁহার শরণাগত হইতে পারিবনা। অর্থাৎ যতক্ষণ মনে যথার্থ বিবেক উদ্দীপিত না হইবে, তৎক্ষণ লক্ষ উপায় করিলেও যথার্থ রূপে অন্তরের সহিত তাঁহার শরণাপন্ন হইতে পারিব না। এক্ষণে বিবেক কি রূপে উদয় হইতে পারে। ভগবানই সৎ জগৎ মিথ্যা এই জ্ঞান বিবেক। আমরা তদ্বিপরীত নিশ্চয় করিয়া বসিয়া আছি; আমরা জগৎ সত্য ব্রহ্ম মিথ্যা এই রূপ স্থির করিয়া লইয়াছি, সেই জন্যই আমরা জগতের সমস্ত বিষয়েই বিশেষ আসক্ত প্রকাশ করিতেছি কিন্তু ভগবৎ প্রাপ্তির নিমিত্ত আমরা সে পরিমাণে কিছুই করিতেছিনা যদিও আমাদের মধ্যে কাহারও ২ তৎপদ প্রাপ্তির কিয়ৎ পরিমাণে ইচ্ছা আছে ও চেষ্টা করিয়া থাকেন কিন্তু তাহা বিশেষ ফল দায়ক হইতেছেনা, তাহার কারণ এই যে যে পরিমাণে আমরা সংসার সুখ ও স্বচ্ছন্দতার জন্য ব্যস্ত ও উৎসাহিত, তাহার শতাংশের একাংশও আমরা ভগবৎ ভক্তি ও তৎ কৃপা লাভের জন্য চেষ্টিত নহি সুতরাং আমাদের সে চেষ্টা কোন মতে ফলবতী হইতেছে না। আমাদের যথার্থ বিবেক উদয় হইলেই আমরা সত্য বস্তু প্রাপ্তির জন্য যত্ন ও চেষ্টা করিব, আর তখনই আমাদের সেই চেষ্টা ফলবতী হইবে।

सही का शरणागत है, वो क्षण भर के लिये भी वह नहीं छोड़ता है। उसी रीति, आइये, हम सब उन शरणागतों के रक्षक परमेश्वर के शरणापन्न हो जांय। कितने मनुष्य तो साधारण लोगों की शरण ले ले कर कितने विपत् से बच जाते हैं, और जिसने सर्व्वशक्तिमान पर्म्मेश्वर का शरणागत होवेंगे, उन को फिर क्या चिन्ता है? श्रीभगवान् श्रीकृष्ण महाराज ने अर्ज्जुन को कहा था, कि—

"सर्व्व धर्म्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्व्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि माशुचः॥"

शरीर, मन, इन्द्रिय आदि के समस्त धर्म्म को त्याग करके केवल मेरे ही शरण ले लो; समस्त पापों से तुम को मैं छोड़ा दूंगा। भगवत के मुखार-विन्द से ऐसी वचन सुन कर भी क्या हमारी आशा न बढ़ेगी? जिसे उन के शरणागत हो सके ऐसी चेष्टा करनी चाहिये किन्तु हम जो निराश्रय हैं, यह जब तक हम को सुझ न पड़ेगा, जब तक यह सूचित न होगा कि वही एकमात्र सार हैं और सारे संसार असार है, जब तक उन्हीं को रक्षक करके सम्पूर्ण विश्वास न होगा, तब तक किसी प्रकार से उन के शरण में आ नहीं सकेंगे। अर्थात् जब तक मन में वस्तु सत्या विवेक न उपजे तावत पर्य्यन्त चाहे लाखों उपाय करो, सम्पूर्ण रीति से कभी उन के शरण में आ नहीं सकेंगे। अब यही विचारना चाहिये कि किस रीति से विवेक होवे? केवल भगवान ही सत् है और जगत् मिथ्या है, इस भांति ज्ञान ही का नाम विवेक है। किन्तु हमारी सिद्धान्त तो इस का विपरीत हैं। जगत सत्य और ब्रह्म मिथ्या है, यही तो मुझे सुझ पड़ता है। अतएव संसार के तावत् वस्तु पर हमारी आसक्ति बनी बनायी रहती है, भगवत् के लिये चित्त क्षण भर भी व्याकुल नहीं होता है। यदि हमारी सज्जनों में से दो एक ऐसे निकलेंगे कि जिन्हों ने उस पद प्राप्ति के अर्थ भर सक चेष्टा करते रहते हैं, किन्तु उस में सम्पूर्ण फल नहीं मिलता है, क्योंकि हमारा चित्त संसार के सुख और आनन्द में जितना प्रसन्न बना रहता है, उस के एक शतांश भी चेष्टा भगवत् भक्ति व कृपा लाभार्थ नहीं है। अतएव हमारी चेष्टा का फल कहां से मिले। विवेक का उदय होने ही से सत्य परम पदार्थ के निमित्त चेष्टा बढ़ती है, उसी समय हमारी चेष्टा सफल होती है। नहीं तो हम कितनीही चेष्टा वा आग्रह क्यों न करें हम को कभी नहीं फल मिलेगा। अतएव पहले तो यही चेष्टा अवश्य करनीय है कि जिस से

অন্যথা আমরা যতই চেষ্টা ও আগ্রহ করি না তাহাতে কোন ফল হইবার নহে। অতএব প্রথমে যাহাতে আমাদের বিবেকোদয় হয় তাহার চেষ্টা করা উচিত। এক্ষণে কি উপায়ে সেই সর্ব্ব সাধন মূল বিবেক উদয় হয় তাহাই বিচার্য্য। সংশাস্ত্র অধ্যয়ন ও শ্রবণ, সৎসঙ্গ ও সৎচর্চ্চা ও নাম সঙ্কীর্ত্তন দ্বারা বিবেক উদয় হইবে। যথার্থ বিবেক হইলে বৈরাগ্য আপনাপনি উদয় হইবে সংসারে বিরাগ হইলেই সত্য বস্তু ভগবদনুরাগ অর্থাৎ প্রেম আপনাপনি আসিয়া পড়িবে। তখন অনায়াসেই দেব দুর্ল্লভ পরম পদ প্রাপ্ত হইয়া অনন্ত সুখ সাগরে নিমগ্ন হইব। তখনই যথার্থ মনুষ্য জন্মের সফলতা হইবে। তখনই আপনাপন পিতা মাতা ও জন্ম ভূমির মুখ সমুজ্জ্বল করিতে পারিব। অতএব হে ভ্রাতৃ গণ! ক্ষণ কালের জন্যও স্থির হইয়া আপনার অবস্থার উপর দৃষ্টি কর। ক্রমশঃ

প্রাপ্ত পুস্তকের সমালোচনা।

রত্ন-রহস্য। মান্যবর শ্রীযুক্ত ডাক্তার রাম দাস সেন মহাশয় কর্ত্তৃক সঙ্কলিত। ইহাতে বৃহৎ সংহিতা, মণি পরীক্ষা, শুক্রনীতি, মানসোল্লাস, অমর বিবেক, মুক্তাবলী, অগ্নি পুরাণ আদি নানা শাস্ত্র হইতে মূল্যবান্ মণি, মুক্তা, মহারত্ন, উপরত্ন আদির অবশ্য জ্ঞাতব্য অনেক গুলি প্রমাণ সহ বিবরণ সংগৃহীত হইয়াছে। পুস্তক খানি গম্ভীর গবেষণা পূর্ণ ও সুরুচির পরিচায়ক। ইহা দ্বারা সাহিত্য ভাণ্ডারের শোভা ও ভারতের গৌরব বৃদ্ধি হইয়াছে।

দেব দূত। কলিকাতা সংস্কৃত প্রেস ডিপজিটরি হইতে প্রকাশিত। "গোহত্যাই ভারতবর্ষের সর্ব্বনাশের মূল" লেখক উত্তেজনা পূর্ণ হৃদয়-ভেদী স্বরে এই কথাটী ভারতকে বুঝাইতে চেষ্টা করিয়াছেন। যে উদ্দেশ্যে পুস্তক খানি প্রকাশিত হইয়াছে ভগবান্ তাহা সুসিদ্ধ করুন। পুস্তকের সকরুণ ভাষা কঠোর হৃদয়কেও দ্রব করিতে সমর্থ। ভারতবাসী গণ! আর্য্য গণ! স্বদেশ হিতাভিলাষী গণ! হিন্দু ধর্ম্মাভিমানী গণ! একবার পুস্তক খানি পাঠ কর। গো ঘাতক গণ! গো ভক্ষক গণ! তোমাদেরও বিনয় করিয়া বলি একবার মনোনিবেশ করিয়া পুস্তক খানি পাঠ কর।

हमारो विवेक वृद्धि बढ़ जाय। अब देखा चाहिये कि किस उपाय से यह विवेक जो कि सर्व्व साधना का मूल है, उदय हो सके। संसार की ओर सम्पूर्ण वैराग्य बढ़ने हो से भगवत पर प्रेम वो अनुराग आपही आप बन जायगा। उस समय देवताओं को भी दुर्ल्लभ उस परम पद को अनायास प्राप्त होकर अनन्त सुख सिन्धु में मगन हो जायेंगे। उसी समय मनुष्य जन्म की सफलता होगी, उसी समय निज २ पिता माता वो जन्मभूमि के मुंह को उज्ज्वल कर सकेंगे अतएव भाइयों! क्षण भर के लिये भी अपनी २ अवस्था पर ध्यान धरो।

शेष आगे।

प्राप्त पुस्तकों की समालोचना।

— o —

रत्न रहस्य। माननीय श्रीमान् डक्टर रामदास सेन जी ने संग्रह किया। इसमें वृहत् संहिता, मणिपरीक्षा, शुक्रनीति, मानसोल्लास, अमर विवेक, मुक्तावली, अग्निपुराण आदि भांति भांति के शास्त्रों में से बहुतेरे प्रमाण सहित मणि, मुक्ता, महारत्न, उपरत्न, आदि के विवरण, जो कि जानने का परम योग्य है, प्रगट किये गये हैं। यह पुस्तक गम्भीर गवेषणा से पूर्ण वो सुरुचि की परिचायक है। इससे साहित्य भाण्डार की शोभा, वो भारतीय गौरव की वृद्धि हुई है।

देव दूत कलकत्ता—संस्कृत प्रेस डिपजिटरी से (बंग भाषा में) प्रकाशित हुआ। "गोहत्याही भारतवर्ष के समस्त अनर्थ का मूल है," लेखक ने बड़ी उत्तेजना से पूर्ण हृदयभेदी ध्वनी से भारत को यही बात समझाने के लिये चेष्टा करी है। जिस अभिप्राय से यह पुस्तक प्रकाशित हुई है, भगवान उस उद्देश्य को सम्पूर्ण करें। पुस्तक की सकरुण भाषा कठोर हृदय को भी द्रवीभूत करती है। हे भारतवासी गण। हे आर्य्य गण। हे स्वदेश के हिताभिलाषीगण। हे हिन्दु धर्म्माभिमानीगण! इस पुस्तक को एक बेर पढ़ो! हे गोघातकगण! हे गो भक्षक गण! विनति से तुम को भी कहते हैं, कि एक बेर तुम भी इस पुस्तक को दत्तचित्त होकर पढ़ लो।

Printed at the Dharmamrita Press. Missir Pokhra, Benares.

" একএব সুহৃদ্ধর্ম্মো নিধনেঽপ্যনুযাতি যঃ।
শরীরেণ সমন্নাশং সর্ব্বমন্যত্তু গচ্ছতি।"

৬ষ্ঠ ভাগ | শকাব্দা ১৮০৫।
১২শ সংখ্যা | চৈত্র—পূর্ণিমা।

বিষ্ণু সংহিতা।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

ব্রাহ্মে মুহূর্ত্তে উত্থায় চোপস্পৃশ্য পয়স্তথা।
ত্রিরায়ম্য ততঃ প্রাণাং স্তিষ্ঠেন্ মৌনী সমাহিতঃ॥

ব্রহ্মচারীর কর্ত্তব্য—ব্রাহ্ম মুহূর্ত্তে অর্থাৎ দুই তিন ঘণ্টা রাত্রি থাকিতে শয্যা হইতে উঠিবে, মুখ প্রক্ষালন ও স্নান করিবে। অতঃপর তিন বার প্রাণায়াম পূর্ব্বক সমাহিত চিত্তে মৌনী হইয়া অবস্থিতি করিবে।

অব্দৈবতৈঃ পবিত্রৈস্তু কৃত্বাত্মপরিমার্জনম্।
সাবিত্রীঞ্চ জপং স্তিষ্ঠেদাসূর্য্যোদয়নাৎ পুরা॥

তদনন্তর পবিত্র জল যে মন্ত্রের দেবতা, সেই মন্ত্র উচ্চারণ পূর্ব্বক অন্তঃশুদ্ধি ও আত্ম শুদ্ধির জন্য মার্জ্জন করিয়া সূর্য্যোদয় পর্য্যন্ত গায়ত্রী জপ করিতে থাকিবে।

অগ্নিকার্য্যং ততঃকুর্য্যাৎ প্রাতরেব ব্রতং চরেৎ।
গুরবে তু ততঃ কুর্য্যাৎ পাদয়োরভিবাদনম্॥

" एक एव सुहृद्धर्म्मों निधनेऽप्यनुयातियः।
शरीरेण समं नाशं सर्व्वमन्यत्त, गच्छति॥

६ष्ठ भाग। | शकाब्दा १८०५।
१२श संख्या | चैत्र—पुर्णिमा।

विष्णुस्मृति

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

ब्राह्मे मुहूर्त उत्थाय चोपस्पृश्य पय स्तथा॥
त्रिरायम्य ततः प्राणां स्तिष्ठे न्मौनि समाहितः
॥१७॥

ब्रह्मचारी के कर्म—ब्राह्म मुहूर्त अर्थात् प्रभातमें पूवा २ घड़ी रात रहते उठना और जल स्पर्श अर्थात् मुख प्रक्षालन और स्नान करना और त्रिवार प्राणायाम करके एकाग्र चित्त और मौनी होकर बैठना॥ १७॥

अब्दैवतैः पवित्रै स्तु कृत्वा त्म परिमार्जनम्॥
सावित्रीं च जपां स्तिष्ठे दासूर्यो दयना त्पुरा॥१८॥

फिर पवित्र जल जिनको देवता है ऐसे मंत्रोंसे अंतः शुद्धि वा आत्म शुद्धिके हेतुमार्जन (जल छिडकना) करके सूर्योदय तक ब्रह्मचारि गायत्री जप करता हुआ रहे॥ १८॥

अग्निकार्यं ततः कुर्यात्प्रातरेव व्रतंचरेत्॥ गुर-वेतु ततः कुर्या त्पादयो रभिवादनम्॥ १९॥

শ্রবণ করিলাম, যাহা ছিলাম তাহাই আছি, কিছুই হইলনা। যাহারা কিছুই না করে তাহারাও যেমন, আমিও তেমনি, কেবল বিশেষ এই মাত্র যে "আমি একজনকর্ম্মী," এই বলিয়া বৃথাভিমান দ্বারা আত্মা স্ফীত হইতেছে। রাগ, দ্বেষ, ঈর্ষা, অসূয়া, মাৎসর্য্য, মিথ্যা, কাপট্য প্রভৃতি কুপ্রবৃত্তি গুলি যাদৃশ ছিল তদ্রূপই আছে বরং প্রবল হইয়াছে। সমস্ত কার্য্যানুষ্ঠানের ফল স্বরূপ শান্তি কি, তাহা জানিলাম না, প্রকৃত সন্তোষ, বৈরাগ্য, জ্ঞান, সরলতা ও অকৃত্রিম দয়া প্রভৃতি সাধু প্রবৃত্তি, একবারও মনে স্ফুরিত হইল না। কি জন্য হইলনা? যদি প্রকৃত রূপে কার্য্যানুষ্ঠান করিয়া থাকি, তবে কেন তাহার ফল পাইলাম না? যদি বলি ইহলোকে উহার ফল হইলনা বটে কিন্তু পরলোকে অবশ্যই হইবে। একথাও সঙ্গত নহে কারণ ইহলোকে আত্মা ও অন্তঃকরণের যাদৃশ অবস্থা বা প্রবৃত্তি উপচিত করিব, পর কালে তাহাই শান্তি, সন্তোষাদি স্বর্গীয় সুখের বীজ স্বরূপ হইবে ইহকালে যদি আত্মা ও মনের কিছু মাত্র ভাল অবস্থা না দেখা যায় তবে পরকালেও তদনুরূপ হইবে, ইহাতে অণু মাত্র সন্দেহ হয় না। বাস্তবিক প্রকৃত রূপে কার্য্যানুষ্ঠান করা হয়না বলিয়াই তাহার কোন ফল পরিলক্ষিত হয়না। আজীবন সন্ধ্যার অনুষ্ঠান করা হয় সত্য, কিন্তু সে কেবল জল ক্রীড়া মাত্র, আভ্যন্তরিক কোন ব্যাপারই হয়না। জীবাত্মায় ও পরমাত্মায় সন্ধি (নিতান্ত সন্নিহিত ভাব) স্বরূপ সন্ধ্যা তো একবার ও মনে জাগেনা। পূজা, আহ্নিকাদি, করা হয় সত্য, কিন্তু কেবল পত্র, পুষ্প, ও নৃত্য গীতাদি বাহ্যিক আড়ম্বরেই পরিপূর্ণ, হৃদয় দ্বারাতো একবারও তাঁহার নিকট উপনীত হইতে পারিলাম না, অশ্রু পরিপ্লুত লোচনে মনের দুঃখ তাঁহাকে জানাইতে শিখিলাম না, মর্ম্মভেদী কুপ্রবৃত্তি সকল তাঁহার নিকট বলি দান করিলাম না, সুতরাং ফলের প্রত্যাশা কোথায়? বাহ্যিক এবং মানসিক ইহারা যুগপৎ অনুষ্ঠিত হইলেই আত্মাকে চরিতার্থ করিতে সমর্থ ইহাদের একটীর অভাবে আর একটী ফল দানে অসমর্থ। যাঁহারা প্রকৃত আত্মোন্নতির

आदि समस्त कार्य्य अनुष्ठान करते आये, बालपनसे भांति२ के व्रत उपवास आदि कर आये, जनम से पुराण इतिहास का पठन वो श्रवण करे आये, किन्तु उसे मुझे कुछ भी न हुआ, बुद्धि वो अवस्था जैसी थी वैसीही रही। जिन्होंने पूजन आदिका नाम तक नहीं लिया उससे भी मुझसे कुछ भी भिन्नता देख नही पड़ती है। विशेषता यही सुझ पड़ी कि" मैं कर्म्मी हूं," यह एक वृथाभिमान मुझ पर चढ़ बैठा। राग, द्वेष, ईर्षा, असूया, मात्सर्य, मिथ्या, कपटाई, आदि कुप्रवृत्तियां जैसीकी तैसी ही रही वरं प्रबल होगयी। शान्तिकी, जोकि समस्त कार्य्यानुष्ठान का फल है, समाचार ही कुछ न मिली। प्रकृत सन्तोष, वैराग्य, ज्ञान, सरलता वो अकृत्रिम दया आदि साधु प्रवृत्तियां एकवेर भी मनमें भासित नहीं होती है। इसका क्या कारण है? यदि यथा विधि कार्य्यानुष्ठान किये करते तो क्यों नही फल मिला? यदि कहा जाय कि फल इसलोक में नहीं परलोक में अवश्य ही मिलेगा। यहभी असम्भव है। क्योंकि इस लोक में आत्मा वो अन्तःकरणकी अवस्था वा प्रवृत्ति जैसी बनती रहेगी, परकाल में वेही सब शान्ति, सन्तोष आदि स्वर्गीय सुख की बीज रूप होंगे। वर्त्तमान शरीर में यदि आत्मा वा मनकी अवस्था कुछभी उत्तम सूचित न हो, तो परलोक में भी फिर वैसी रहेगी, इसमें क्या सन्देह है? वास्तविक यथा विधि कार्य्यके अनुष्ठान जो नहीं होताहै, इससे कुछभी फल नही देख पड़ताहै जीवन भर संध्याका अनुष्ठान किया जाता है सही, किन्तु वह केवल जल खेलही होतीहै, अन्तःकरणका काम कुछभी नही होताहै। जीवात्मा वो परमात्मा की संधी (अत्यन्त सन्निकर्ष भाव) रूप संध्या तो एकवेर भी स्मरण नही होता है। आह्निक पूजा की जाती है सही, किन्तु वह केवल पत्र, पुष्प, वो नृत्य गीत आदि बाह्यिक आडम्बर ही से परिपूर्ण है, हृदय द्वारा तो एक वेर भी हम उनकी समीपी नही हो सक्ते है। अन्तःकरण से तो एकवेर भी उनको आत्म निवे-

অভিলাষী, তাঁহাদিগকে আধ্যাত্মিক ব্যাপারে মুখ্য লক্ষ্য রাখিয়া বাহ্যিক ক্রিয়াকে আধ্যাত্মিক ব্যাপারের সহায় মাত্র জানিয়া সদাচার ও সদ্ব্যবহারাদির অনুষ্ঠান পূর্ব্বক ভক্তি ও শ্রদ্ধা সহ সন্ধ্যা পূজা, জপ প্রভৃতি সৎ কার্য্যের অনুষ্ঠান করিতে হইবে। বাহ্যিক অনুষ্ঠান ও সদাচারাদি না থাকিলে কেহ কদাচ আধ্যাত্মিক অনুষ্ঠানে সমর্থ হয় না। পক্ষীর দুইটী পক্ষ না থাকিলে যেমন এক পক্ষে আকাশে উঠিতে পারেনা, তদ্রূপ বাহ্যিক ও আভ্যন্তরিক অনুষ্ঠান ভিন্ন মনুষ্য জগৎ পরিত্যাগ পূর্ব্বক চিদাকাশে উঠিতে সমর্থ হয় না।

আর্য্য শাস্ত্র বিজ্ঞান।

(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

এইক্ষণ আর একটি কথা বলা আবশ্যক। আমাদের এই পৃথিবীতে যে সকল গ্রহ নক্ষত্রের ক্রিয়া হইয়া থাকে, তাহা সর্ব্বদা এক প্রকার নহে। গ্রহ নক্ষত্রগণ পৃথিবীর চতুর্দ্দিকে লম্বমান রহিয়াছে। ন্যূনাধিক রূপে সকলেরই পৃথিবীকে একত্রী করণের চেষ্টা (আকর্ষণ) আছে। তন্মধ্যে এক প্রকার পরিবর্ত্তন আছে। প্রত্যেক দিনে, প্রত্যেক হোরায়, প্রত্যেক নবাংশে, প্রত্যেক দ্বাদশাংশে ও প্রত্যেক ত্রিংশাংশে পৃথিবীর সহিত গ্রহ নক্ষত্রের সম্বন্ধের কিছু ২ ইতর বিশেষ ও অন্যথা হয়।

শনি, বৃহস্পতি, মঙ্গল, সূর্য্য, শুক্র বুধ, চন্দ্র এই সপ্ত গ্রহ ও উপগ্রহ মধ্যে সূর্য্য অবধি পর পর প্রত্যেক চতুর্থ গ্রহ ও উপগ্রহের দিন ও হোরাদি সময় ভেদে পৃথিবীর সহিত সম্বন্ধের অতিশয়তা হয়। অর্থাৎ অদ্য (রবিবার) রবির সহিত পৃথিবীর সম্বন্ধের আতিশয্য, আগামী কল্য (সোমবার) চন্দ্রের সহিত অধিক সম্বন্ধ, পরশ্ব (মঙ্গলবার) মঙ্গলের সহিত পৃথিবীর অধিক সম্বন্ধ, তার পর দিন বুধের সহিত, তৎপর দিন গুরুর সহিত ইত্যাদি।

हन न कर सकें, सर्व्व छेदों कु वासियां की तो उनके सामने वलि न दे सकें, अतएव फल की आशा कहां? वाह्य वो मानसिक दोनों उपाय से कार्य्य के अनुष्ठान होनेसे आत्मा चरितार्थ होंगे नहीं तो एक के विना दूसरा निष्फल है। जिन्होंने प्रकृत आत्मोन्नति के अभिलाषी हैं, उन्होंको चाहिये कि आध्यात्मिक क्रियायें पर विशेष दृष्टि रखें वो वाह्य क्रियायें को आध्यात्मिक व्यापारों के सहायक मात्र जानकर सदाचार, वो सद्व्यवहार आदि के अनुष्ठान करें वो भक्ति वो श्रद्धा पूर्व्वक संध्या, पूजा, जप आदि उत्तम कार्य्य करते रहैं। वाह्यिक अनुष्ठान वो सदाचारादि विना कभी आध्यात्मिक अनुष्ठान नहीं बनता है। दो पक्ष विना जैसा पक्षी केवल एकही परसे आकाश पर नहीं चढ़ सक्ता है तद्रूप वाह्यिक वो आभ्यन्तरिक अनुष्ठान विना मनुष्य कभी जगत् छोड़के चिदाकाश पर नहीं चढ़ सक्ता है।

आर्य्य शास्त्र विज्ञान।

(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

यहां यह बात भी प्रगट रहनी चाहिये कि पृथ्वी पर ग्रह नक्षत्र आदिकी क्रिया जो कुछ होती है, सो सदैव एक प्रकार की नहीं। ग्रह नक्षत्र गण पृथ्वी के चारो ओर लटक रहे हैं। पृथ्वीको अपने अपनेसे मिलाने की चेष्टा अल्प या अधिक परिमाण, सब किसीको है। उसमें एक प्रकार का परिवर्त्तन है। प्रति दिनमें, प्रति घंटेमें, प्रति नवांशमें, प्रति द्वादशांश में, प्रति त्रिंशांशमें पृथ्वी से ग्रह नक्षत्र आदिको सम्बन्ध की थोड़ी बहुत घट बढ़ वो भिन्नता होती है।

शनि, बृहस्पति, मंगल, सूर्य्य, शुक्र, बुध, चन्द्र, ये सात ग्रह वो उपग्रहों के मध्य में सूर्य्य से आरम्भ करके प्रति चतुर्थ ग्रह वो उपग्रहसे पृथ्वीका सम्बन्धकी अधिकता दिन वो होरा आदिके अनुसार होती है। अर्थात् आज (रविवार) सूर्य्यसे पृथ्वीके सम्बन्धकी अधिकता है, कल् (सोमवार) चन्द्रमा से अधिक सम्बन्ध परसु (मंगलवार) मंगल से अधिक सम्बन्ध है, दुसरे दिन बुधसे, तदनन्तर बृहस्पति से इत्यादि—

এই রূপ, অদ্যকার প্রথম হোরায় সূর্য্যের সহিত পৃথিবীর অধিক সম্বন্ধ, কল্য প্রথম হোরায় চন্দ্রের সহিত অধিক সম্বন্ধ, পরশ্ব মঙ্গলের সহিত ইত্যাদি। এই রূপ নবাংশ, দ্বাদশংশাদিতে জ্ঞাতব্য। এই নিমিত্ত রবি হইতে প্রত্যেক চতুর্থ গ্রহ পর পর এক এক দিন ও হোরাদির অধিপতি। "মঙ্গলাধঃ ক্রমেণৈব চতুর্থা দিবসাধিপাঃ" ইত্যাদি। পরন্তু এখানে ইহা মনে করিবেন না যে যখন পৃথিবীর এক এক গ্রহের সম্বন্ধের আধিক্য হয় তখন অন্যান্য গ্রহের সহিত সম্বন্ধ থাকে না কিম্বা অত্যন্ত কমিয়া যায়। যে আকর্ষণ শক্তি দ্বারা আকৃষ্ট হইয়া পৃথিবী আপন কেন্দ্রাপকর্ষিণী শক্তি দ্বারা সূর্য্যের চতুর্দ্দিকে পরিভ্রমণ করিতেছে সেই শক্তি যে দিন বা যে হোরাদিতে চন্দ্র ও অন্যান্য গ্রহের আকর্ষণ অপেক্ষায় পৃথিবীর উপর অধিক কার্য্য করে সেই দিনের নাম রবিবার, আর যে হোরাতে অন্যান্য গ্রহ গণের আকর্ষণ অপেক্ষা সূর্য্যের আকর্ষণ পৃথিবীর উপর অধিক কার্য্য করে তাহার নাম সূর্য্যের হোরা। যদিচ সমস্ত গ্রহ নক্ষত্রের সমষ্টি শক্তি অপেক্ষা সূর্য্যের শক্তিই সর্ব্বদা পৃথিবীর উপর আধিপত্য করিতেছে সন্দেহ নাই, তথাপি অন্যান্য গ্রহের আকর্ষণ শক্তি দ্বারা সূর্য্যের আকর্ষণ সময় ২ আপন অবস্থা অপেক্ষা কিছু অল্প ও সময়ে ২ প্রকৃত অবস্থা প্রাপ্ত না হইতে পারে, এমত নহে। বাস্তবিক যখন স্বকীয় অবস্থা অপেক্ষা সূর্য্যের বল কিছু হ্রাস হইতে (পৃথিবীর উপর) দৃষ্ট হয় তখন পৃথিবীর উপর অন্যান্য গ্রহ গণ অধিক কার্য্য করিতেছে ইহাই বুঝিতে হইবে। যখন অন্যান্য গ্রহের শক্তি পৃথিবীর উপর একটু অধিকার প্রাপ্ত হয়, তখনই সূর্য্যের আকর্ষণ পূর্ব্বাবস্থা অপেক্ষা কিছু অল্প কার্য্য করিতে থাকে। মনে কর! একজন বীর্য্যবান্ ব্যক্তি তোমার হস্ত ধরিয়া টানিতে লাগিল, তুমি তোমার সম্মুখের দিকে পলায়নের চেষ্টা করিতে লাগিলে, সুতরাং তোমার শরীরে নূতন এক শক্তি উৎপন্ন হওয়ায় আকর্ষণ কারীর চতুর্দ্দিকে তুমি ঘুরিতে লাগিলে। এক্ষণ যদি ৩।৪টী ছোট

इसी रीति आज प्रथम होर में पृथ्वीका सम्बन्ध सूर्य्यसे अधिक है, कल प्रथम होरे में चन्द्रमा से अधिक सम्बन्ध परसु मंगल से इत्यादि। इसी रीति नवांश में, द्वादशांश में भी जानना। इसी लिये रवि से आरम्भ करके प्रति चतुर्थ ग्रह क्रम से एक एक दिन वो होरा का अधिपति होता है। "मंगलाधः क्रमेणैव चतुर्था दिवसाधिपाः"। इत्यादि। पर यह न मानिये कि जब पृथ्वी में एक एक ग्रहके सम्बन्ध का आधिक्य होताहै, उस समय अन्यान्य ग्रहोंसे सम्बंध छुट जाताहै अथवा अत्यन्त कम् हो जाता है. किन्तु जिस आकर्षण शक्ति करके आकृष्ट होकर पृथिवी निज केन्द्राकर्षणी शक्ति के प्रभावसे सूर्य्यके चारो ओर घूम रहीहै. वही शक्ति जिस दिन वा जिस घड़ी में चन्द्र वा अन्यान्य ग्रहके आकर्षण से अधिक पृथ्वी पर कार्य्य करती है. उसी दिनका नाम रवि वार औ जिस होरेमें अन्यान्य ग्रहोंके आकर्षण से अधिक सूर्य्य का आकर्षण पृथ्वी पर होताहै, उसीका नाम सूर्य्यका होरा है।

यद्दिच समस्त ग्रह नक्षत्र की सम्पूर्ण शक्ति यांसे अधिक सूर्य्य की शक्ति पृथ्वी पर आधिपत्य करती है, तथापि यह भी कुछ आश्चर्य्य नहीं कि अन्यान्य ग्रहोंके आकर्षण शक्तिके द्वारा सूर्य्यका आकर्षण जब तब निज अवस्था से कुछ न्यून वा प्रकृत अवस्था को प्राप्त हो सक्ताहै। वस्तुतः जब सूर्य्य का बल निज अवस्थासे कुछ कम (पृथ्वी पर) देख पड़ता है, तबही जानना कि पृथ्वी पर अन्यान्य ग्रहों की शक्ति अधिक असर करीहै। जब अन्यान्य गृहों की शक्ति पृथ्वी पर फैल जाती है. उस समय सूर्य्यका आकर्षण पूर्व्वावस्था से कुछ न्यून हो जाती है। मानो किसी वीर्य्यवान् पुरुष ने तुम्हारे हाथ पकड़ खींचने लगा औ तुम भी साह्मने से भागने की चेष्टा करने लगे अतएव तुम्हारे शरीरमें कोई एक नवीन शक्ति उत्पन्न होने पर तुम खींचने वालों के चारों ओर घूमने लगोगे। इसी समय यदि कोई छोटे

বালক আসিয়া তোমার হস্তান্তর ধরিয়া এদিক ওদিক আকর্ষণ করে, তবে সেই আকর্ষণে. বীর্য্যবান্ ব্যক্তির আকর্ষণ অল্প বোধ হইলেও তোমার উপর কি তাহা কার্য্য করিতেছে না? তুমি কি তাহা অনুভব করিতে পার না? তৎকালীন কি এই সকল ক্ষুদ্র ২ আকর্ষণ দ্বারা বীর্য্যবান্ ব্যক্তির আকর্ষণ সময় ২ কিছু ন্যুনাধিক হয় না? পূর্ণিমা ও অমাবস্যার সময় যে সমুদ্রের জোয়ার ভাঁটা হয় তাহা বোধ হয় কাহারও অবিদিত নাই। তখন কি সূর্য্যাকর্ষণ অপেক্ষা চন্দ্রাকর্ষণ অধিক হয়? তাহা নহে, তখন চন্দ্রাকর্ষণ পৃথিবীর উপর কার্য্য করিতে পারে এই মাত্র।

অন্যান্য গ্রহের বার ও হোরাদিও এই রূপ—যে দিন অন্যান্য গ্রহ অপেক্ষা চন্দ্রের ক্রিয়া পৃথিবীর উপর অধিক হয় সেই দিন সোমবার, যে হোরাতে চন্দ্রের ক্রিয়া অধিক হয় তাহার নাম চন্দ্রের হোরা। ইত্যাদি।

ক্রমশঃ।

তীর্থ দর্শন।

(প্রাপ্ত)

আমাদের শাস্ত্রে তীর্থের এত মহিমা কি জন্য বর্ণিত হইয়াছে তাহা স্থির ভাবে পর্য্যালোচনা করা আবশ্যক। পূজ্যপাদ ঋষিগণ সাধারণ লোকের মধ্যে ধর্ম্মভাবের উদ্দীপনা করিবার জন্য যে সকল ব্যবস্থা করিয়াছেন তাহা যে অতীব হিতকর তৎপক্ষে সন্দেহ নাই। ভূয়োদর্শন প্রভাবে তাঁহারা স্থির করিয়াছেন যে বিষয় ব্যাপারের মধ্যে অবস্থিতি করাতে মন হইতে ধর্ম্মভাব বিলুপ্ত প্রায় হইয়া যায়, সংসারের প্রলোভনে পড়িয়া সাধু বিগর্হিত কার্য্য করে এবং সর্ব্বদা বিষয়ের আলোচনা করাতে মন অসাড় হইয়া পড়ে। এই দুরবস্থা হইতে মনকে উদ্ধার করিবার জন্য তীর্থ দর্শন আবশ্যক। আমাদের শাস্ত্রকার গণ সংসার আশ্রমকে প্রধান আশ্রম বলিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। তাহার কারণ এইযে, সংসারের মধ্যে থাকিয়া

लड़के आकर तुम्हारा दुसरा हाथ पकड़ कर इधर उधर खींचे तो उस आकर्षण से वीर्य्यवान पुरुष का आकर्षण अल्प बोध हो तो क्या यही सूचित होगा, कि वह तुम पर असर नहीं करता है? इसको अनुभव तुम क्या नहीं कर सक्ते हो? उस समय छुद्र छुद्र आकर्षण करके वीर्य्यवान पुरुष का आकर्षण क्या बीच२ में थोड़ा बहुत न्यूनाधिक नहीं होता है? पौर्णमासी वो अमावस्या के समय जो समुद्रका जल बढ़ता वो घट जाता है ये तो सब कोई विदित है। उस समय क्या सूर्य्याकर्षण से चन्द्राकर्षण अधिक होता है? नहीं। इतना ही है, कि उस समय चन्द्राकर्षण पृथ्वी पर असर कर सक्ता है।

अन्यान्य ग्रह के वार वो होरादिको नियम भी इसी रीति जानना। जिस दिन अन्यान्य ग्रहके अपेक्षा चन्द्रमा को क्रिया पृथ्वीपर अधिक होती है, उसी दिनका नाम सोमवार है; जिस होरेमें चन्द्रमा की क्रिया अधिक होती है, उस होरा का नाम चन्द्र का होरा है। इत्यादि।

शेष आगे।

तीर्थ दर्शन।

(प्राप्त)

हमारे शास्त्रों में तीर्थ की महिमा बहुत सी कही गयी है, कारण इसका क्या है सो पर्य्यालोचना करनी चाहिये। पूज्य पाद ऋषियों ने सब जनों के हृदयमें धर्म्म भावकी उद्दीपना के अर्थ जितने व्यवस्था करेगये, सो समस्तही अतीव हितकर है तामें सन्देह नहीं। भूयो दर्शन के प्रभावसे उन्होंने यह सिद्धान्त किये रहे कि विषयों के व्यापार में लगे रहने पर मनसे धर्म्म भाव छूट जाता है, संसार के फंदे में लटक कर मन साधुता के विरुद्ध कार्य्य में प्रवृत्त होता है औ सर्व्वदा विषयों के चिन्तन से मन निस्तेज बन जाता है। इस दुर्दशा में गिरा हुआ मनको उद्धार करने के अर्थ तीर्थ दर्शन करना आवश्यक है।

সমগ্র কর্ত্তব্য কর্ম সাধন করা ধর্ম্মবীরের কার্য্য। পিতা মাতার প্রতি কর্ত্তব্য, স্ত্রী পুত্রের প্রতি কর্ত্তব্য, প্রতিবাসী গণের প্রতি কর্ত্তব্য এবং আপামর সাধারণের প্রতি কর্ত্তব্য যিনি সম্যক্ রূপে পালন করিতে পারেন তাঁহার ক্ষমতা সামান্য নহে। তিনি একটী বিস্তীর্ণ সাম্রাজ্যের শাসন কর্ত্তা অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ। কিন্তু এই সংসার রূপ সাম্রাজ্যকে শাসন করিবার জন্য মনুষ্যের ধর্ম্ম বল প্রয়োজন। সংসার মধ্যে থাকিয়া ধর্ম্মশাস্ত্র আলোচনা করতঃ অনেক জ্ঞান লাভ করা যায় বটে, অনেক উপদেশ প্রাপ্ত হওয়া যায়—কিন্তু, নানা স্থান দর্শন না করিলে, নানা প্রকার লোকের আচার ব্যবহার ও হৃদগতভাব হৃদয়ঙ্গম করিতেনা পারিলে এবং বিশেষ২ স্থানে যেসকল মহাত্মা অবস্থিতি করিতেছেন তাঁহাদের নিকট হইতে ধর্ম্মোপদেশ গ্রহণ করিতে নাপারিলে প্রকৃত শিক্ষা লাভ হয়না। শাস্ত্র হইতে যে জ্ঞান লাভ করাযায় তাহা ভূয়োদর্শনের অভাবে সুদৃঢ় হইতে পারেনা। বিশেষতঃ মনুষ্যের মনের ভাবই এই যে প্রত্যহ এক প্রকার পদার্থ, একপ্রকার মনুষ্য দর্শনে তৃপ্তি লাভ করিতে পারে না। ঈশ্বরের সৃষ্টির মধ্যে কি না আশ্চর্য্য? আমরা প্রতিদিন যাহা দেখি তাহাতে কি ধর্ম্মভাবের উদ্দীপন হয়না? প্রভাত কালীন সূর্য্যের জবাকুসুম সঙ্কাশ রূপ, পূর্ণিমা রজনীর চন্দ্রমার রজতময়ী কান্তি এবং তিমিরাচ্ছন্ন নিশায় নক্ষত্র মালা শোভিত আকাশ, বিশ্বপতির অপার মহিমা প্রচার করিতেছে। কিন্তু কোন্ ব্যক্তি এ সমুদয় দর্শন করিয়া ঈশ্বরের সত্ত্বা অনুভব করে এবং তাঁহার উপাসনায় নিমগ্ন হয়? সংসারের জ্বালায় সকলে প্রপীড়িত হইয়া হাহাকার করিতেছে এমন সংযত আত্মা কে যে এ যাতনাকে তুচ্ছ করিয়া ভগবানের প্রতি মনোনিবেশ করে? বিশেষতঃ প্রতিদিন নয়ন গোচর হইতেছে বলিয়া, সকল পদার্থ কি কাহাকে আকর্ষণ করিতে সক্ষম হয়? কিন্তু, যদি গগণ উদ্ভাসিত করিয়া একটী ধূমকেতু উদয় হয় অথবা সূর্য্য গ্রহণ প্রকাশ

हमारे शास्त्र कारोंने गृहस्थाश्रम को सब आश्रमों के प्रधान करके वर्णन किये हैं, क्योंकि गृहमें रह कर समग्र धर्म्म कर्म्म साधन करना बड़े वीर का कार्य्य है। पिता माता के प्रति कर्त्तव्य, स्त्री पुत्रादिके प्रति, परोसीयों के प्रति औ आपामर साधारण जनों के प्रति जो जो कुछ करनीय है, जिस पुरुष ने वे सब समग्र रीतिसे पालन करसके उनका शक्ति कुछ सामान्य नहीं है। मानो उसने एक सुविस्तृत साम्राज्य के अधिपति से श्रेष्ठ है। किन्तु इस संसार रूपी साम्राज्य को शासन करने के लिये मनुष्य को धर्म्म बल चाहिए। यद्दिच धरमें रहकः धर्म्म शास्त्रको आलोचना से अनेक ज्ञान, अनेक उपदेश पाया जाता है, किन्तु नाना स्थान को देखे बिना, नाना प्रकार लोगों की रीति नीति औ आचार, भाव जाने बिना औ स्थान२ में जो महात्मा लोग बिराज करते हैं उन्हों से धर्म्मोपदेश पाये बिना सच्ची शिक्षा नहीं मिलती है। शास्त्र पढ़ पढ़के जो कुछ ज्ञान का लाभ होता है। सो भी भूयोदर्शन बिना पक्का नहीं बन सक्ता है। विशेषत. मनुष्य की प्रकृति ही ऐसी है कि प्रति दिन एकही रंग की पदार्थ, एकही रंग के मनुष्य देखर के तृप्त नहीं मानती है। भगवान् की सृष्टि के मध्यमें जो कुछ देखो सबही चमत्कार है। प्रतिदिन हमको जो कुछ देखने में आता है इसमें धर्म्म भाव हमारी क्या नहीं बढ़ जाता है? प्रातःकाल के सूर्य्यका जबाकुसुम सङ्काश रूप, पौर्णमासी चन्द्रमा की रजतमायी दिव्य शोभा औ अन्धकारसे ढापा हुआ रात्रि, कालमें नक्षत्रों से सुशोभित आकाश मंडल विश्वपतिकी आश्चर्य महिमा प्रचार कर रहे हैं। किन्तु किसलिये ये सब देखके भगवान् की सत्ता का अनुभव करता है औ उनकी उपासना में मग्न हो जाता है? विषयोंके को बखेड़े में दिक होकर सब लोग हा-हा-कार रहे हैं, ऐसा संयमी पुरुष कौन है, कि सब यातना को तुच्छ समझके भगवान् पर ध्यान धरे? विशेषतः जितना पदार्थ नित्य देख पड़ते हैं, उससे हमारे चित्त तो नहीं खींचा जाता है। किन्तु यदि आकाश मण्डलमें अपका कोई एक पुच्छल तारा उदय हो

পায়, তাহা হইলে, কে না নির্নিমেশ নেত্রে ইহা দর্শন করিয়া থাকে? মনুষ্যের সৃজনে কি বিশ্ব বিধাতার সামান্য ক্ষমতা প্রকাশ পাইয়াছে? রমণী গর্ভে জীবের সঞ্চার হইতে পূর্ণ অবয়বে পরিণত হওয়া পর্য্যন্ত তাঁহার কত কৌশল কত মঙ্গলভাব প্রতীয়মান হয়, তাহা কে আলোচনা করিয়া থাকে? কিন্তু, যদি একটী চারি হস্ত বিশিষ্ট মনুষ্য জন্ম গ্রহণ করে, তাহা দেখিবার জন্য কে না উৎসুক হয়?

মনুষ্যের বিষয় জড়িত মনকে নব ২ ভাবে পূর্ণ করিবার জন্য নানা স্থান দর্শনের বিশেষ প্রয়োজন। এ জন্য আমাদের বিজ্ঞ শাস্ত্রকারেরা তীর্থ দর্শনের ফল মাহাত্ম্য বিশেষ রূপে কীর্ত্তন করিয়াছেন। ইউরোপের পণ্ডিতেরা স্থির করিয়াছেন যে, নানা স্থান দর্শন করা শিক্ষার একটী প্রধান অঙ্গ। এবং এই জন্য বিদ্যালয় পরিত্যাগ করিবার পর কৃতবিদ্য ব্যক্তিগণ ইউরোপের অন্তর্গত অপরাপর প্রদেশ ভ্রমণ করতঃ অভিজ্ঞতা লাভ করিয়া থাকেন। পার্থিব জ্ঞান লাভ করা ইউরোপিয় দিগের উদ্দেশ্য। কিন্তু, আমাদের শাস্ত্রকারগণ যে ব্যবস্থা করিয়াছেন ইহা দ্বারা সাংসারিক ও পারমার্থিক উভয়বিধ জ্ঞানই লাভ হইয়া থাকে।

যে সকল স্বাভাবিক শোভায় শোভিত স্থানে, তুষার মণ্ডিত পর্ব্বতে, কল্লোলিনী স্রোতঃস্বতী তীরে অথবা বিচিত্র বনে কোন যাগ যজ্ঞ, বা তপোনুষ্ঠানাদি পবিত্র কার্য্য হইয়াছিল এমন স্থানই তীর্থ রূপে পরিণত হইয়াছে। এক কালে পূত আত্মা ঋষি গণ যে সকল বনে অবস্থিতি করিতেন তাহাও তীর্থ রূপে পরিগণিত হইয়াছে। এ সকল স্থান দর্শন করিলে ও তথায় বাস করিলে যে তত্রস্থ প্রকৃতির পবিত্র ভাব মনোমধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া মানবকে নির্ম্মল হৃদয় করিয়া দেয় ও ধর্ম্মভাবের উদ্রেক করে তৎপক্ষে সন্দেহ মাত্র নাই। তীর্থ দর্শনের আনুসঙ্গিক আরও কএকটী উপকার আছে। পদব্রজে ভ্রমণ করাই তীর্থ দর্শনের নিয়ম। ইহা দ্বারা অন্তঃকরণ মধ্যে সাহসের সঞ্চার হয় এবং নানা স্থানের লোকের আচার ব্যবহার দর্শন করিয়া

हो अथवा सूर्य्यका ग्रहण लगे, तो कौन् नहीं उसको निर्निमेष नेत्र से देखता है? मनुष्य बनाने में विश्व विधाता की सामर्थ्य क्या कुछ कम प्रगट हुई है? स्त्रीके गर्भ में जीव के संचार से लेकर पूर्ण अवयव बनना तक् भगवत् की कितनी कारीगिरि कितने मंगल भाव प्रतीत होते हैं, इसकी आलोचना कौन् करें? किन्तु यदि कोइ चार हात वाले मनुष्य जनमें तो उसको देखने के लिये कौन् नहीं दौड़ता है?

फंदे में बंध हुआ मनुष्य के मनको नवीन नवीन भावमे परिपूर्ण करने के लिये नाना स्थान दर्शन करना आवश्यक है। इसे हमारे विज्ञ शास्त्र कर्त्ताओं ने तीर्थ दर्शन की फल महिमा विस्तार कर वर्णन कीये हैं। युरोप के विद्यावानों ने सिद्धान्त कर चुके हैं कि देश देशान्तर पर्य्यटन करना शिक्षा का एक प्रधान अंग है। इसी लिये पाठावस्था के अनन्तर युरोपके कृतविद्य पुरुषों ने वहांके भिन्न२ प्रदेश पर्य्यटन करके परम अभिज्ञता प्राप्त कर लेते हैं। पार्थिव ज्ञान लाभ करना युरोपीओं का उद्देश्य है किन्तु हमारे शास्त्र कर्त्ताओं ने जैसी व्यवस्था की है इससे सांसारिक वो परमार्थिक दोनों प्रकारका ज्ञान मिलता है।

जो सब स्वाभाविक शोभा से सुशोभित स्थानोंमें, तुषार मण्डित पर्व्वतों पर, कल्लोलिनी के तट पर अथवा विचित्र वनमें किसी याग, यज्ञ वा तपस्या का अनुष्ठान आदि पवित्र कार्य्य हुआ रहा ऐसे ऐसे स्थान ही तीर्थ करके प्रसिद्ध हुए। जहां जहां पवित्र आत्मा ऋषि गण किसी समय में विराज किये रहे, वह सब स्थान भी तीर्थ करके प्रसिद्ध होने गये। इन सब स्थानों के दर्शन से अथवा वहां निवास करने से उन स्थानोंकी प्रकृतिका पवित्र भाव अन्तःकरण में प्रविष्ट होकर हृदय को निर्म्मल कर देता है वो धर्म्म भावको उसका ताहै, इस में सन्देह नहीं। इसके साथ ही साथ तीर्थ दर्शन से और भी थोड़ा बहुत उपकार है। पांव पांव चलना तीर्थ दर्शन का नियम है। इससे अन्तःकरण में बड़ा साहस बढ़ जाता है औ नाना स्थानके

সমধিক জ্ঞান লাভ হইয়া থাকে। দুঃখের বিষয় এই যে তীর্থের উপকারিতা হৃদয়ঙ্গম করিতে না পারিয়া আমরা ইহাকে কুসংস্কার বিশিষ্ট বিবেচনা করিয়া থাকি। কেহ২ বলিতে পারেন যে প্রাকৃতিক শোভা সন্দর্শন করিতে আমরা প্রস্তুত আছি কিন্তু তাই বলিয়া আমরা যাত্রীদের ন্যায় কাষ্ঠ এবং প্রস্তর নির্ম্মিত মূর্ত্তি দর্শন করিয়া বেড়াইতে পারিনা। পবিত্র মূর্ত্তি সমূহ দর্শনে কি ফল হয় তাহা এ প্রস্তাবের আলোচ্য নহে, সুতরাং এ আপত্তি খণ্ডনার্থ এক্ষণে যত্ন করিলাম না। যাঁহারা মূর্ত্তি পূজা না করেন এমন সন্ন্যাসীদিগকেও তীর্থাটন করিতে দেখা যায়। সাধু বা অসাধু, জ্ঞানী বা মূর্খ, জড় বুদ্ধি বা কবি তীর্থ আনন্দ দানে কাহাকেও ত্রুটী করেনা। যাহাহউক মূর্ত্তি পূজনেচ্ছা না থাকিলেও তীর্থ দর্শন করা যে শ্রেয়ঃ তাহা স্ফুটীকৃত করিবার জন্য একটি দৃষ্টান্ত দিতেছি;——

ইতি পূর্ব্বে আমি পুষ্কর তীর্থ দর্শন করিতে গিয়াছিলাম। একটী, সুবিস্তীর্ণ জলাশয়ই পুষ্কর তীর্থ। ইহার চারি দিক ক্ষুদ্র২ পর্ব্বতে বেষ্টিত। এই জলাশয়টীতে স্নান করিয়া পূর্ব্ব পুরুষ দিগকে পিণ্ড দান করিতে হয়। এতৎস্থানে অনেক গুলি দেবালয় আছে, তন্মধ্যে সাবিত্রী এবং ব্রহ্মা ও গায়ত্রীর মন্দির বিখ্যাত। সাবিত্রীর মন্দির একটী পর্ব্বতের উপর স্থাপিত। এই স্থানে ব্রহ্মা গায়ত্রীকে গ্রহণ করিয়াছিলেন বলিয়া, সাবিত্রী ক্রোধে অধীরা হইয়া পর্ব্বতে অবস্থিতি করিলেন।

এই ভাবটী চিন্তা করিতে২ আমার মন সন্দেহ দোলায় আন্দোলিত হইতে লাগিল। ভাবিলাম, কি আশ্চর্য্য! আমাদের উপাস্য দেবতা একটী পরিণীতা রমণীকে ত্যাগ করিয়া আর একটীকে গ্রহণ করিলেন, এই পার্থিব ভাবটিকে চিরস্মরণীয় করিবার জন্য কি পুষ্কর একটী তীর্থ রূপে পরিণত হইল? এবং যে দেবতা এই সাধু বিগর্হিত কার্য্য করিলেন, তিনি আমাদের আরাধ্য দেবতা হইলেন? আবার

आचार व्यवहार देखने से अधिक ज्ञान मिलता है। खेद यह है कि तीर्थ की उपकारिता समझे बिना इसको हम बुरे संस्कारों का काम करके मान लेते हैं। कोइ कोइ यह कहेगा कि हम तो प्राकृतिको शोभा देखने में प्रस्तुत हैं किन्तु यात्रियों के समान हम काष्ट वो पत्थर का बनाया हुआ मूर्ति सब देख देख के फिर नहीं सक्ते हैं। (पवित्र मूर्त्तियों को दर्शन से क्या सुफल मिलता है, सो इस प्रबन्ध का आलोच्य नहीं. सुतरां इस आशंका निवारण के अर्थ अभी यत्न न किया गया) जो लोग मूर्त्ति का पूजन नहीं भी करते हैं ऐसे सन्नयासिगण भी तीर्थाटन किये करते हैं। चाहे साधु या असाधु होय, ज्ञानी या मूर्ख होय, जड़ बुद्धि या कवीश्वर होय. आनन्द देने में तीर्थ किसी को कमी नहीं करते हैं। जो हो, मूर्ती पूजा की इच्छा न रहे पर भी तीर्थ दर्शन करना जो आवश्यक है, उसी को प्रगट करने के लिये यहां एक दृष्टान्त दिया जाता है।

थोड़े दिन व्यतीत हुए कि हम पुष्कर तीर्थ दर्शनार्थ गये रहे। वहां एक जलाशय है, पुष्कर राज करके प्रसिद्ध है। इसके चारो ओर छोटे२ पहाड़ोंसे वेष्टित है। यहां स्नान करके पूर्व्व पुरुषों को पिण्ड दान करने की विधि है। यहां देव मन्दिर बहुत हैं, उन स में सावित्रीजी का औ ब्रह्मा वो गायत्री का मन्दिर सब मे प्रधान है। सावित्री जी का मन्दिर एक पर्व्वत पर है। इस तीर्थ में ब्रह्माजी, गायत्री का ग्रहण किये रहे, इस से सावित्री क्रोधसे वेवश होकर पहाड़ पर जा बैठी। इस आशय को सोचते विचारते हमारा मन सन्देह से डोलने लगा। सोचा कि यह कैसे बड़ी आश्चर्य है कि हमारे उपास्य देवतान् एक विवाहिता रमणी को छोड़के दुसरी स्त्री को ग्रहण करी। इसके स्मरणार्थ क्या पुष्कर तीर्थराज बन गया और जिस देवता ने ऐसा साधुता के विरुद्ध कार्य्य किया, वे हमारे आराध्य देवता बन गए। फिर यह मनमें

মনোমধ্যে উদয় হইল না, ইহার মধ্যে কোন নিগূঢ় ভাব অবশ্যই নিহিত আছে। আমাদের পূজনীয় শাস্ত্রকার গণ যে প্রণালী স্থির করিয়াছেন তাহাতে মন্দভাব থাকিবার সম্ভাবনা নাই। মনোমধ্যে, এবম্প্রকার আন্দোলন হইতেছে, এমন সময়ে এই ব্যাপারের প্রকৃত তাৎপর্য্য হৃদ্গত হইল।

ব্রহ্মা পুরুষ স্থানীয় এবং সাবিত্রী শুভ বাসনা স্বরূপা স্ত্রী। পুরুষ বাসনাযুক্ত হইয়া আত্ম তত্ত্ব বিস্মৃত হইয়াছিলেন। পরে মহাযজ্ঞে ব্রতী হইয়া গায়ত্রী রূপা ব্রহ্ম বিদ্যা প্রাপ্ত হইলেন। ব্রহ্মাত্ম জ্ঞান লাভ করিলে, মনুষ্য বাসনা মুক্ত হয়? সুতরাং সাবিত্রী ব্রহ্মাকে ত্যাগ করিয়া দূরে অবস্থিতি করিতে লাগিলেন এবং ব্রহ্মা ব্রহ্মবিদ্যা রূপিণী গায়ত্রীকে লইয়া আত্মানন্দ উপভোগ করিতে লাগিলেন।

আর্য্যদিগের উপাসনা প্রণালী পর্য্যালোচনা করিলে প্রতীয়মান হইবে, যে ইহার প্রত্যেক অঙ্গ কোন না কোন আধ্যাত্মিক গূঢ় ভাব ব্যঞ্জক। ইহাকে হেয় জ্ঞান করিবার পূর্ব্বে ইহার তাৎপর্য্য গ্রহণ করিতে চেষ্টা পাওয়া উচিত।

মুঙ্গের আ, ধ, প্র, সভায়
শ্রীযুক্ত বাবু মহেন্দ্র নাথ রায় মহাশয়ের বক্তৃতা।
(পূর্ব্ব প্রকাশিতের পর)

সৃজন, পালন ও সংহার কর্ত্তা ভগবানের উপাসনা গুণানুবাদ করিবার জন্যই এমন দুর্ল্লভ জন্ম পাইয়াছি। আহার, নিদ্রা, মৈথুনের জন্য এ দেহ প্রাপ্ত হই নাই। সংসারে যে কোন ব্যক্তি যাহার দ্বারা কিঞ্চিৎ পরিমাণে উপকৃত হয় সে আমরণ তাহার উপকারীর শরণাপন্ন থাকে ও অহর্নিশি তাহার গুণানুবাদ ও কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে— আর আমরা এমন কৃপানিধানের দয়ায় অহর্নিশ পালিত ও রক্ষিত হইয়াও অনায়াসে তাঁহাকে ভুলিয়া থাকি, এ কি আমাদের সামান্য ভ্রম? এ কি সামান্য মূর্খতা? এখানে আমরা কয় দিনের জন্য আসিয়াছি? এতো আমাদের বিদেশ। যেমন অরণ্যে শীকার খেলিতে ২ কোন এক জন্তুর

झलकाया कि इसका कोई निगूढ़ मर्म्म अवश्य होहैं। हमारे पूजनीय शास्त्र कर्त्ताओं ने जो-सी रीति बांधी है, उस में बुराई कहां से आवेगी? ऐसा आन्दोलन करने से इसका यथार्थ अभिप्राय झलक आया।

'ब्रह्माजी पुरुष वो सावित्री शुभा वासना हैं। पुरुष जब तक वासना युक्त बने रहे, तब तक आत्म तत्व भूले रहते हैं फिर महायज्ञ में व्रती होकर गायत्री रूपा ब्रह्म विद्या को प्राप्त हुए। ब्रह्मात्म ज्ञान मिलने पर मनुष्य वासना से मुक्त हो जाता है। सुतरां ब्रह्माजी को छोड़ कर के सावित्री जी बड़ी दूर भागी औ ब्रह्माजी ब्रह्म विद्या रूपिणी गायत्री के साथ मिल कर आत्मानन्द भोगने लगे।

आर्य्यसज्जनों की उपासना की रीति पर्य्यालोचना करने से यह प्रतीति होती है कि इस के प्रति पद में कोई न कोई आध्यात्मिक गूढ़ भाव है। इस को तुच्छ मानने के पहिले इस का गूढ़ तात्पर्य्य समझने की चेष्टा करनी चाहिये।

—o—

मुंगेर आर्य्य धर्म्म प्रचारिणी सभा में श्री बाबू महेन्द्र नाथ रायजी की वक्तृता।
(पूर्व्व प्रकाशित के आगे)

—o—

ऐसा दुर्लभ मनुष्य शरीर हमको केवल इसी लिये मिला कि सृजन पालन वो संहार करनेहार भगवान को हम भजन करेंगे। आहार, निद्रा, मैथुन आदि के अर्थ यह शरीर नहीं मिला। रीति यही है, कि संसार में यदि किसी ने और किसी से थोड़ी बहुत उपकार पावे तो वह आमरण उनके शरणागत रहकर दिनरात उनकी गुणानुवाद किया करता वो कृतज्ञ बना रहता है। हम सब परम कृपानिधान की दया में दिन रात प्रतिपालित वो रक्षित होकर भी अनायासे उनको विस्मृत हो चैन उड़ाते हैं। यह क्या हमारा सामान्य भूल-सामान्य मूर्खता है? हम कितने दिन के लिये इस संसार में आये है? सच पूछिये तो

পশ্চাৎ যাইতে ২ আপনারে দেশ ঘর ছাড়াইয়া দূর দেশে গহন কাননে সম্মুখে সন্ধ্যার অন্ধকারে কিংকর্ত্তব্য বিমূঢ় হইয়া ও নিতান্ত নিরাশ্রয় অবস্থায় পতিত ব্যক্তি অনন্য গতি হইয়া এক মাত্র ভগবানের শরণাপন্ন হয়, কোন প্রকার ভয় মনে উদয় হইলে কেবল হা পরমেশ্বর! হা জগদীশ্বর! ত্রাহি মাং, ত্রাহিমাং, উচ্চৈঃস্বরে চীৎকার করিতে থাকে, সেই রূপ আমরাও আশা রূপিনী হরিণীর পশ্চাৎ ২ এই দূর দেশে অর্থাৎ সংসারারণ্যে আসিয়া পড়িয়াছি। এখানে সুখ সাধনের জন্য মায়া কল্পিত অনেক প্রকার দ্রব্য সম্মুখে দেখিতেছি ও উপ ভোগ করিতে পাইতেছি কিন্তু হৃদয়ের চঞ্চলতা কিছুতেই যাইতেছেনা। যাহা পাইলে আর কিছুই পাইবার ইচ্ছা থাকেনা, এরূপ যথার্থ আনন্দ কিছুতেই পাইতেছি না সুতরাং সদাই চিন্তা সাগরে নিমগ্ন। চতুর্দ্দিক হইতে কাম, ক্রোধ আদি প্রবল শত্রু সব ভীষণ মূর্ত্তি ধারণ করিয়া বিভীষিকা দেখাইতেছে। এক্ষণে যত ক্ষণ না আমরা অনন্য গতি হইয়া সেই অনাথ শরণ আর্ত্তি হরণ ভগবান্ নারায়ণের শরণাপন্ন ও তাঁহার অভয় চরণারবিন্দে আশ্রয় গ্রহণ করিতে পারি এবং কাতর স্বরে ত্রাহি মাং মধুসূদন! ত্রাহি মাং মধুসূদন; বলিয়া উচ্চৈঃস্বরে তাঁহাকে ডাকিতে না পারি ততক্ষণ পর্য্যন্ত আমাদের কল্যাণের আর দ্বিতীয় উপায় নাই। সংসারে প্রত্যেক জীব আপন আপন সুখ ও কল্যাণের জন্য লালায়িত। সেই জন্য বলিতেছি সেই সুখের যথার্থ উপায় যে রূপ শাস্ত্রে কথিত আছে, তাহার অনুষ্ঠান কর, দেখ, সুখ পাও কি না। আর বৃথা মরীচিকার ন্যায় সংসারে অনর্থ সেই সুখের আশায় ঘুরিওনা। অনেক দিন ঘুরিলে, কৈ কণা মাত্রও সুখ ভোগ করিতে পারিলে? জীবনের অধিকাংশই তো সংসারের দাসত্ব করিয়া কাটাইলে, অনেক প্রকার চতুরতা দ্বারা অর্থ উপার্জ্জন করিলে, কিন্তু বল দেখি ভাই, সত্য করিয়া বল দেখি, কতটুকু যথার্থ সুখ প্রাপ্ত হইয়াছ। এই সব মহাজন মণ্ডলী! তোমরা তো ভাই অপর্য্যাপ্ত অর্থ সংগ্রহ করিয়াছ। ২।১ টী ঘর একে বারে টাকার তোড়ায় পূর্ণ করিয়া রাখিয়াছ,

यह हमारे लिये परदेस है। जैसा कोई वनमें शिकार खेलते खेलते किसी जानवार के पीछे दौड़ के अपना घर बाड़ छोड़कर बहुत दूर जा पड़ते, संध्या काल, साम्ने अन्धकार देखकर घबड़ा जाता औ निताम्त निराश्रित के समान केवल भगवत् के शरण आ जाता है, औ भय होने से केवल हा जगदीश्वर! हा परमेश्वर! त्राहिमां! त्राहिमां! उच्चै स्वरसे पुकारता रहता है। हम सब भी आशा रूपी हरिणी के पीछे२ इतना दूर तक अर्थात् संसार रूपी अरण्य में आ पहुचे हैं। विषय सुख साधन के लिये यहाँ माया कल्पित अनेक प्रकार के सामान देख पड़ते हैं, औ हम भांति भाँति हैं। किन्तु हृदय किसी प्रकार से स्थिर नहीं होता है। जो सामग्री मिलने से और किसी पदार्थ के अर्थ इच्छा नहीं होती है, ऐसा यथार्थ आनन्द कहीं नहीं मिलता है। सुतरां हम सदैव चिन्ता समुद्र में मगन रहते हैं। चारो ओर से काम क्रोध आदि प्रवल शत्रु गण भीषण मूर्त्ति धारण करके भय देखलाते रहते हैं। जब लों हम अनन्य गति होकर उन् अनाथ शरण आर्त्ति हरण भगवान् नारायण के शरणापन्न नहीं, औ उनके अभय चरण कमल के आश्रय ले न सकेंगे औ खेद पूर्ण हृदय से जब लों "त्राहि मां मधुसूदन! त्राहिमां मधुसूदन! करके उच्च स्वरसे उनको पुकार न सकेंगे तब लों हमारी कल्याण की आशा कहाँ! संसार में सब किसीने अपना २ सुख वा कल्याण चाहता है। हम लिये हम कहते हैं, शास्त्र में सुख मिलने का जो जो उपाय बताये गये, उन सबका अनुष्ठान करो, देखो तो सुख मिले या नहीं,। मृग तृष्णा के समान निरर्थक संसार में न घुमा करो। बहुत दिन तो चक्कर खाते आये! कणा भर क्या सुख कहीं मिला? जीवन को अधिक अंशको तो संसार की सेवा में बिताये। अनेक प्रकार की चतुरता से द्रव्य कमाये, किन्तु कहिए तो भाइ, सच्चो सच कहिये, यथार्थ सुख कितना मिला? यहां तो बड़े२ बैठे सब बैठे हुए हो आप सब तो बहुत धन एकट्ठे किए हो, दो एक कोठरी रुपये से भर रखे हो, महल, इमारत, बड़े धूम धामसे बनाये हो। प्रति दि-

বাটী, ইমারত, বড় ধুমধামের সহিত নির্ম্মাণ করিয়াছ, প্রতি দিন গাঢ় মনোযোগের সহিত অনেক রাত্রি পর্য্যন্ত হিসাব কিতাব করিয়া থাক, বল দেখি কি পরিমাণে সুখ উপভোগ করিতেছ। আমরা তো তোমাদের মনে করি তোমরাই বড় সুখী। যদি সত্য কথা বল তো তোমারাও এই বলিবে যে আমরা সুখী নহি। কারণ অর্থ না থাকার এক দোষ, অর্থ থাকার অনেক দোষ। অর্থ থাকিলে, কিসে তাহা বৃদ্ধি হইবে, কিসে চৌর ডাকাইত হইতে উহা রক্ষা হইবে, ও অর্থ মদে হয়তো অনেকে অন্ধ হইয়া অনেক পাপাচরণ করিতে ত্রুটি করেন না, সুতরাং উহা দ্বারা সুখের আশা কোথায়? আর যথার্থ সুখ তাহাকেই বলে, যে সুখের বৃদ্ধি ভিন্ন হ্রাস নাই ও নিবৃত্তি নাই। সুতরাং এরূপ সুখ অর্থ, পুত্র, পরিবার, কলত্র ও অন্যান্য কাহারও দ্বারা প্রাপ্ত হইবার সম্ভাবনা নাই। নানক জী এক স্থানে কহিয়াছেন।

" নানক দুখিয়া সব সংসারা
সো সুখিয়া যো নাম আধারা "॥

সংসারে সকলেই দুঃখী, কেবল সেই ব্যক্তিই সুখী যে এক মাত্র নারায়ণের নামকে আশ্রয় করিয়াছে, নামই সম্বল করিয়াছে। সাংসারিক বিষয়াদি হইতে মনকে নিবৃত্ত করিয়া যে ব্যক্তি অহরহ ভগবৎ গুণানুবাদ ও নাম কীর্ত্তন করিয়া জীবন যাপন করিতে পারেন, তিনিই শান্ত তিনিই যথার্থ সুখী, তিনিই সংসারে মনুষ্য জন্মের সাফল্য লাভ করিতে পারেন।

আমাদের অবনতির প্রধান কারণ এই, যে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত গণ যাঁহাদের এক মাত্র ধর্ম্ম উপদেশ দেওয়াই বৃত্তি, তাঁহারা আপনার বৃত্তি পরিত্যাগ করিয়াছেন। তাঁহাদের মধ্যে সত্ত্ব গুণের অংশ হ্রাস হইয়া রজো ও তমো গুণের বৃদ্ধি হইয়াছে সুতরাং অন্যান্য ব্যক্তি উপদেশ অভাবে ইচ্ছা থাকিলেও আপনার উন্নতি করিতে পারে না। যত দিন না আমাদের দেশে ব্রাহ্মণ পণ্ডিত গণ পূর্ব্বকার ন্যায় এক মাত্র ধর্ম্ম উপদেশ ও ধর্ম্ম আলোচনা

किताब ठीक करते रहते हो, कहिये तो भला, आप सब कितना सुख भोगते हैं? हमतो आप सब को परम सुखी जानते हैं, यदि मिथ्या न कहिये तो आप को भी यही कहना पड़ेगा कि हम सब भी दुखी हैं, क्यों कि द्रव्य न रहे तो एक ही दोष है, किन्तु द्रव्य रहने से अनेकानेक दोष देख पड़ते हैं। द्रव्य रहने पर यही चिन्ता सदैव बनी रहती है, कि कैसे इसकी वृद्धि होगी, कैसे चोरों से इसकी रक्षा होगी वो धन मद से अंधा होकर बहुतेरे लोग पापाचार करने में भी त्रुटी नहीं करते हैं, सुतरां उससे सुख की आशा कहां? यथार्थ सुख तो उसीका नाम है, कि जिस सुख की न्यूनता वो निवृत्ति के बदले दिनों दिन वृद्धि होय। सुतरां ऐसा सुख धन, पुत्र, कलत्र वो अन्यान्य परिवारों से कब मिल सक्ता है? एक स्थान में नानक जी ने बोला है।

नानक दुखीया सब संसारा।
सो सुखी या जो नाम आधारा॥

संसार में सब कोइ दुखी है, केवल सुखी वही है कि जो नारायण के नाम का आश्रय किया है। सांसारिक विषयों से मनको हटा कर जो सदैव भगवत् नाम संकीर्त्तन करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं वेही शान्त हैं, वेही सुखी यथार्थ हैं, उन्हीका जन्म संसार में सफल हुआ।

हमारी दुर्द्दशा का प्रधान कारण यह है, जो ब्राह्मण पण्डित गण, जिन्हों की केवल यही वृत्ति रही, औरों को धर्म्म का उपदेश करें, अपनी वृत्तिको छोड़ दिये हैं। उन सबों में सत्व गुण कम हो गया, वो रज, तम गुण की वृद्धि हुई है। सुतरां अन्यान्य लोगों को इच्छा रहे पर भी बिना उपदेश पाये आपनी अपनी उन्नति नहीं कर सक्ते हैं। जब तक हमारे ब्राह्मण पण्डित गण प्राचीन काल की रीति से केवल मात्र धर्म्मोपदेश देना, धर्म्म की चर्चा करना अपना मुख्य कार्य्य न समझेंगे तब

করেন, তত দিন আমাদের উন্নতির আর উপায় নাই! সেই উদ্দেশেই ধর্ম্মোৎসাহী মহাত্মাগণ স্থানে ২ আর্য্য সভার সংস্থাপন করিয়াছেন। যাহাতে ধর্ম্ম জিজ্ঞাসু গণের কল্যাণ সাধিত হয় ইহাই সভা সমূহের মুখ্য উদ্দেশ্য।

ভ্রাতৃ গণ! যদি কল্যাণ চাও, যদি সংসারে যথার্থ সুখ চাও, তবে বেড়াইতে হইবে না, যেখানে ভগবৎ চর্চ্চা ও ভগবৎ গুণানুবাদ হয়, সহস্র কার্য্য পরিত্যাগ করিয়া তথায় যাইবে। শুনিতে ২ প্রেমের উদ্দীপনা হইবে। এক বারেই হইবার সম্ভাবনা নাই।

"লয় লাগত লাগত লাগে।
ভয় ভাগত ভাগত ভাগে" ॥

কোন এক খানি দর্পণে ময়লা লাগিলে যেমন ঘষিতে ২ ক্রমে তাহার ময়লা ছুটিয়া পরিস্কার হইয়া যায় অথবা এক খণ্ড লোহা ঘা মারিতে ২ ভাঙ্গিয়া যায়, সেই রূপ সদাসর্ব্বদা ভগবদ্ গুণানুবাদ শুনিতে ২ হৃদয় রূপ দর্পণে যে বিষয় চিন্তা রূপী ময়লা লাগিয়া গিয়াছে, তাহা এই রূপ ভগবৎ চর্চ্চা রূপ ঘর্ষণ দ্বারা পরিষ্কার হইয়া যাইবে। তখন অনায়াসেই সর্ব্ব ঘট বাসী ভগবান্ কে হৃদয় মধ্যেই প্রত্যক্ষ করিতে পারিবে। তখন আর এ তীর্থ ও তীর্থ, এ ঠাকুর বাড়ী ও ঠাকুর বাড়ী ঘুরিবে না। তখনই যথার্থ সুখ ও শান্তি উপভোগ করিবে। কলি কালে তীর্থ ব্রত, জপ, পূজা, পাঠ, যোগ, ধ্যান, প্রাণায়াম, প্রভৃতি না করিলেও একমাত্র ভগবৎ গুণানুবাদ শ্রবণ ও কীর্ত্তন দ্বারা এই দুর্গম ভব সমুদ্র গোষ্পদের ন্যায় অনায়াসে পার হইতে পারিবে। এমন সুযোগ থাকিতে হেলায় হারাইলে কাজে কাজেই কষ্ট ভোগ করিতে হইবে। ইচ্ছা করিয়া আপনার হাত যদি অগ্নিতে দাও অবশ্যই পুড়িয়া যাইবে ও কষ্ট পাইবে। সেই রূপ জানিয়া শুনিয়াও যদি ভগবৎ চিন্তা ও গুণানুবাদ না করিয়া বিষয় চিন্তায় ও বিষয় সুখে উন্মত্ত থাক তাহার ফল পরিণাম দুঃখ অবশ্যই ভোগ করিতে হইবে। বুদ্ধিমান লোক যে কোন কার্য্য করেন, তাহার পরিণাম ফল কি হইবে, তাহা স্থির করিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হন। আর অজ্ঞানী লোকে অগ্রে

तब हिन्दु समाज की उन्नति की आशा कम है। इसी लिये धर्म्मोत्साही महात्मा ओंने स्थान स्थानमें आर्य्य धर्म्म सभा स्थापित करते जाते हैं। सभा समूह का यही उद्देश्य है कि धर्म्म जिज्ञासा करनेहारों का कल्याण साधन करें। भाइयों! यदि निज २ कल्याण चाहो, तो झुट मुट घुमो मत्। जहां भगवत् की चर्च्चा वा भगवत् गुणानु वाद होतो है, सहस्र २ काम छोड़के वहां जाइये। सुनते २। प्रेम की उद्दीपना होगी। क्षण भर में कोइ काम नहीं बनता है।

लय लागत लागत लगे।
भय भागत भागत भागे॥

दर्पण पर जो मैला लग जाता है, मलते २ वह छुट हो जाता इस में सन्देह नहीं। लोहा कैसाही क्यों न कठिन हो, प्रबल आघात से वह भंग हो जाता है। उसी भांति भगवत् के नाम सुनते २ हृदय रूपी दर्पण में जो विषय चिन्ता रूपी मैल लग गया है, वह अवश्य ही छुट जायगी। तब सब घट निवासी भगवान् को हृदय के मध्य ही में प्रत्यक्ष कर सकोगे, उस समय तीर्थ तीर्थ में, मठ मठ में फिरना न पड़ेगा। उसी समय यथार्थ सुख वो शान्ति भोग सकोगे। कलियुग में तीर्थाटन, व्रत जप, पूजा, पाठ, योग, ध्यान, प्राणायाम आदि न करे पर भी केवल भगवत् गुणानुवाद के श्रवण वो कीर्त्तन से इस दुर्गम संसार रूपी समुद्र को गोष्पद के समान अनायास पार उतर जा सकोगे। ऐसी सुविधा रहे पर भी क्यों व्यर्थ काल नष्ट करते हो! अपनी इच्छा से यदि अपना हात आगमें डालो तो अवश्य ही जर जायगा वो तुमको कष्ट होगा। उसी भांति जान बुझके भी यदि भगवत् की चिन्ता वो गुणानुवाद के बदले विषय की चिन्ता वो विषय सुखमें उन्मत्त रहो, उसका फल अन्त में दुःख अवश्य ही भोगने पड़ेगा। ज्ञानी मानों का यह पहचान है, कि परिणाम विचार करके काममें प्रवृत्त हों वो मूर्खों का हि

পশ্চাৎ বিচার না করিয়া কার্য্যে প্রবৃত্ত হয়, সুতরাং তাহাকে পদে ২ কষ্ট ভোগ করিতে হয়। অতএব ভ্রাতৃগণ! আমরা তো বড় ২ বুদ্ধিমান ও জ্ঞানী, এরূপ অভিমান সকলেরই আছে। আমি যাহা বুঝি ও যাহা করি এমন বোধ হয় সংসারে আর কেহ বুঝেনা অথবা করেনা। এই অভিমান আমাদের সমস্ত অনর্থের মূল হইয়া পড়িয়াছে। যদি আমাদের অপেক্ষা বয়সে কম অথবা জাত্যংশে ছোট কোন ব্যক্তি ধর্ম্ম কথা বলে, তবে ঘৃণা করিয়া সেস্থান পরিত্যাগ করিয়া যাইবেন অথবা একবারে সে দিক মাড়াইবেন না। ব্যাস, বাল্মীকী সনক, সনাতন প্রভৃতি মহাত্মারা যাহা করিয়া গিয়াছেন ও কহিয়া গিয়াছেন, তাহা আমাদের নিকট তুচ্ছ হইয়া পড়িয়াছে। মহাভারতে অনেক স্থলে দেখিতে পাওয়া যায় নৈমিষারণ্য প্রভৃতি পুণ্য ক্ষেত্রে ৬০।৭০ হাজার ঋষি একত্রিত হইয়া কেবল ভগবত কথামৃত পান করিয়া দিন যাপন করিতেন। যতই শুনিতেন, শ্রবণ লালসা ততই বৃদ্ধি হইত। রাজা পরীক্ষিত মহাত্মা শুকদেব প্রমুখাৎ শ্রীমদ্ভাগবৎ শ্রবণ করিতে ২ এরূপ বিমোহিত হইয়া পড়িয়াছিলেন যে নিকটে দেবতা গণ অমৃতের কলস আনিয়া দিলেও তিনি ভগবৎ কথামৃতের নিকট দেব দত্ত অমৃত তুচ্ছ বোধ করিয়া তাহা গ্রহণ করেন নাই। এমন অপূর্ব্ব ভগবৎ কথা আজকাল আমাদের নিকট শ্রবণ যোগ্য নহে। আমাদের শাস্ত্র, আমাদের বেদ লইয়া বিদেশীয় ম্লেচ্ছ জাতিরা কত আন্দোলন করিতেছে, কত প্রশংসা করিতেছে! আমরা আমাদের ঘরে এরূপ অপূর্ব্ব অমূল্য ধন থাকিতে কাঙ্গালের ন্যায়, অনাথের ন্যায় চারিদিকে, কখন খ্রীষ্টান, কখন ব্রাহ্ম, কখন থিয়োজফিষ্ট দিগের দলে ঘুরিয়া বেড়াইতেছি। ইহা কি অল্প আক্ষেপের বিষয়! ভ্রাতৃ গণ! এখনও আপনাপন অবস্থার উপর ক্ষণকালের জন্য লক্ষ্য কর, এবং সাধু মহাত্মা গণের প্রদর্শিত ও আচরিত পথ অনুসরণ করিয়া মানব জন্মের সাফল্য করিয়া লও। দেখিতে ২ আয়ুনের দিন তো ফুরাইয়া আসিল। ক্রমে ২ আয়ু ও গণ ও বুদ্ধি নিস্তেজ হইয়া আসিতেছে।

लगाता है कि आगे पीछे सोचे बिना काम करने लगे. सुतरां सदैव उनको कष्ट भोगने पड़ता है।

भाईयो! हम सब को यह अभिमान तो बना बनाया हुआ हैं, कि हम सब से बढ़ चढ़ के ज्ञानी वा बुद्धिमान हैं। हम जो कुछ समझते वो करते हैं ऐसा और किसी से नहीं बनता है। समस्त अनर्थं का मूल हमारा यही अभिमान है। यदि हमसे कोई कम अवस्था के अथवा कोई हमसे न्यून जाति के पुरुष धर्म्म सम्बन्धी कुछ कहें वा सुनावे तो घृणा वश होकर उठ उस स्थान को छोड़ देते हैं या तो वहां आना ही बंध कर देते हैं। वेद व्यास, वाल्मीकी, सनक, सनातन आदि जो कुछ अनुष्टान करते गये, हम वे सब तुच्छ मानते हैं। महा भारत में देखते हैं कि नैमिषारण्य में ६०।७० सहस्र ऋषि एकट्ठे हुए वो प्रेमसे भगवत् की कथामृत पान करते रहे। जितना ही सुनते गये, उतना ही प्यास बढ़ती गयी। राजा परीक्षित ने श्रीमद्भागवत् श्री शुक देव जीसे जब सुनते रहे, उस समय वे ऐसे विह्वल होगये थे, कि देवता लोग उनके लिये अमृत के घट लाये किन्तु परीक्षित कथामृत पीते २ देवता ओंके अमृत को कुछ भी नहीं समझे। ऐसी रसीली भगवत् की कथा आज हमारे समीप अतीव नीरस बुझ पड़ी हमारे शास्त्र, हमारे वेद की चर्चा करते २ विदेशी लोग तो कैसे परम सुखको प्राप्त होते वो प्रशंसा करते हैं, भी हम अपने घरके अपूर्व्व वो अनमोल धनको छोड़के कंगालोंके समान, अनाथों के समान इधर उधर या ते कभी ब्राह्म समाज में, कभी इसाइ में कभी थियसफियों में घुस जाते है! यह क्या थोड़ी खेदका विषय है? भाईयों? अब भी अपनी २ अवस्था पर थोड़ा बहुत ध्यान धरो औ साधु महात्मा की देखाइ हुइ मार्गको अनुसरण करो वो मनुष्य चोला को सफल कर लो देखते देखते परमायु तो क्षीण होता आता है वो बुद्धि भी निस्तेज होती जाती है। मार्ज्जार जैसा मूषिक

যেমন মার্জ্জার মূষিক কে লক্ষ্য করিতে ২ তাহার উপর লাফাইয়া পড়িয়া আহার করিয়া ফেলে, সেই রূপ কালও লক্ষ্য করিতেছে। এক দিন তোমাদের উপর পড়িয়া প্রাণ সংহার করিবে। অতএব আর বৃথা সময় নষ্ট করিও না। কিছুদিনের জন্য আপনার কল্যাণ সাধনে তৎপর হও। অন্য সকল সাংসারিক কর্ম্মের সঙ্গে ২ পরকালের সম্বল কিছু করিয়া লও। * * *

पर लक्ष्य करके उसपर कूद पड़ता वो [illegible] खा डालता है, उसी रीति काल भी इस म[illegible] तीव्र दृष्टि करता रहता है, एक दिन झपे[illegible] के प्राण निकाल लेगा। अतएव और व्यर्[illegible] व्यतीत न करना, थोड़े बहुत कालके लि[illegible] अपना कल्याण मार्ग पर आरूढ़ हो। संस[illegible] कार्य्य के साथ ही साथ परलोक की पुंजी क[illegible]

বিদেশীয় প্রতিনিধি কার্য্যাধ্যক্ষ (এজেন্ট) গণের নাম

শ্রীযুক্ত বাবু কেদার নাথ গঙ্গোপাধ্যায়	ভাগলপুর।
„ যদব চন্দ্র বন্দ্যোপাধ্যায়	মতিহারী।
„ জগবন্ধু সেন	লাহোর
„ হরিদাস মুখোপাধ্যায়	রামপুরহাট
„ বিহারি লাল রায়	জামালপুর
„ রমেশ চন্দ্র সেন	ঐ
„ হেম চন্দ্র দাস	ঐ
„ মতিলাল সেন	মুরশিদাবাদ
„ পূর্ণচন্দ্র মুখোপাধ্যায়	বাঁকিপুর
„ রাজ কৃষ্ণ দাস	বহরমপুর
„ ইন্দ্রনারায়ণ চক্রবর্ত্তী	গয়া।
„ অক্ষয় কুমার চট্টোপাধ্যায়	৬৬ নং কালেজ ষ্ট্রীট, কলিকাতা

উক্ত মহোদয় গণকে তত্তৎস্থানীয় গ্রাহক মহাশয় গণ মূল্যাদি দান করিলে, আমি প্রাপ্ত হইব।

विदेशी प्रतिनिधि कार्य्याध्यक्ष (एजे[illegible]) महाशयों के नाम।

श्री युक्त बाबू केदार नाथ गंगोपाध्याय	भाग[illegible]
„ यदव चन्द्र बन्द्योपाध्याय,	म[illegible]
„ जगद्बन्धु सेन	[illegible]
„ हरि दास मुखोपाध्याय,	रामपु[illegible]।
„ बिहारी लाल राय,	जाम[illegible]।
„ रमेशचन्द्र सेन,	
„ हेम चन्द्र दास	
„ मति लाल सेन	मुरशि[illegible]।
„ पूर्ण चन्द्र मुखोपाध्याय	बां[illegible]।
„ राज कृष्ण दास	ब[illegible]।
„ अक्षय कुमार चट्टोपाध्याय,	६६ नं, कालेज ष्ट्रीट, क[illegible]।

इन महोदयों के पास तत्तत् स्थानों के ग्राहक महा[illegible] मूल्यादि दें तो मैं पाऊंगा।

ধর্ম্ম প্রচারক সংক্রান্ত নিয়মাবলী।

১। যদি কোন ধর্ম্মাত্মা আর্য্য ধর্ম্মের প্রতিষ্ঠা রক্ষা ও প্রচার নিমিত্ত বাঙ্গালা অথবা হিন্দী ভাষায় বা উভয় ভাষাতেই কোন বিষয় লিখিয়া প্রেরণ করেন, তবে লিখিত বিষয়টী সারবান বিবেচিত হইলে, আনন্দ ও উৎসাহ-সহকারে ধর্ম্ম প্রচারকে প্রকাশ করা হইবে।

২। ধর্ম্ম প্রচারকের মূল্য ও এতৎ সংক্রান্ত পত্রাদি আমার নামে পাঠাইতে হইবে। পত্র বিয়ারিং হইলে, গৃহীত হইবে না।

৩। মূল্য সাধারণতঃ পোষ্টাল মনিআর্ডারে বা পোষ্টাল নোটে পাঠাইবেন। ডাক টিকিটে মূল্য পাঠাইতে হইলে, অর্দ্ধ আনা মূল্যের টিকিট প্রেরণ করিবেন।

৪। ধর্ম্ম প্রচারকের ডাক কর সহ অগ্রিম বার্ষিক মূল্যের নিয়ম তিন প্রকার।

উত্তম	কাগজে	মুদ্রিত	বার্ষিক	[illegible]	পশ্চাৎ	।৵০
মধ্যম	ঐ	ঐ	„	২৷৵০	„	।০
সাধারণ	ঐ	ঐ	„	১৷৵০	„	৵০

ধর্ম্ম প্রচারক কার্য্যালয়। মিসির পোখরা। বারাণসী } শ্রীপূর্ণানন্দ সেন কার্য্যাধ্যক্ষ।

धर्म्म प्रचारक सम्बन्धी नियमावली।

१। यदि कोई धर्म्मात्मा आर्य्यधर्म्म की प्रतिष्ठा र[illegible] प्रचार करने के निमित्त बङ्गला अथवा देवनागरी [illegible] दोनों भाषाओं में कोई प्रस्ताव लिखके भेजें तो लिखि[illegible] सारवान ज्ञात होने से आनन्द औ उत्साह सहित ध[illegible] में प्रकाश किया जायगा।

२। धर्म्म प्रचारक पत्र का मौल्य और इस पत्र सम्बन्धी[illegible] मेरे पास भेजना होगा। पत्र वैरिं हो तो नहीं[illegible]

३। मौल्य चाहे पोष्टाल मनि आर्डार या पो[illegible] भेजें। यदि टिकिट भेजें तो आध आनिया टि[illegible]

४। धर्म्मप्रचारक का डाक कर सहित अग्रि[illegible] तीन प्रकार के है।

उत्तम कागज पर छपा हुआ वार्षिक		३।=[illegible]
मध्यम	„	२।=[illegible]
साधारण	„	१।=[illegible]

धर्म्म प्रचारक कार्य्यालय। मिसिर पोखरा, बाराणसी। } श्रीपूर्णानन्द[illegible] कार्य्याध्यक्ष।

☞ এই পত্র প্রতি পূর্ণিমাতে ভারতবর্ষীয় আর্য্য ধর্ম্ম প্রচারিণী সভার উৎসাহে প্রকাশিত হইয়া থাকে।

☞ यह पत्र प्रति पूर्णिमा में भारतवर्षीय आ[illegible] सभा के उत्साह से प्रकाशित होता है।

৮।৬৭ Printed at the Dharmamrita Press. Misir Pokhra. Benares